भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA

H

वर्ग संख्या
Class No. 891.4314
पुस्तक संख्या
Book No. T933 Kla
रा० पु० ३८
N. L. 38.
MGIPC—S4—13 LNL/64—30-12-64—50,000.



कुण्डलियारामायण सटीक।

गोस्वामि तुलसीदासकृत।

इस अत्युत्तम रामायण में श्रीदशरथनंदन कौशल्याहृदयानन्द वर्द्धन श्रीरामचन्द्रजी का चित्तानन्दीय चरित्र जन्म से लेकर राजगद्दीपर्यंत कुण्डलिया छंदों में वर्णित है

उसीका

बारहबंकी नव्वाबगंज प्रदेशान्तर्गत डेहवा मानपूर के नम्बरदार श्रीकूर्मवंशी रामरस रसिक श्री बैजनाथजी ने प्रत्यक्षर का भाषा में तिलक किया है

बाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से

पहिलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
जनवरी सन् १८९२ ई० ॥

इस किताब का हक़ महफ़ूज़ है बहक़ इस छापेखाने के ॥

२० जुज़ है

इस मतबे में जितने प्रकार की रामायण छपी हैं उनमें से कुछ इस में लिखी हैं ॥

यह प्रसिद्ध पुस्तक गोस्वामि तुलसीदासजीकी काव्य भारतवर्ष में है जिसके पढ़ने पढ़ाने से मनुष्य इस लोक में जीवन्मुक्त होकर अन्त में मुक्ति पाता है और इसके काण्ड पाठशालाओं में भी पढ़ाये जातेहैं और यह पुस्तक हरएक के घरमें होनी चाहिये और बहुत से छापेखानोंमें यह पुस्तक लाखों प्रति छपी है इस छापेखानेमें बहुत से रूपोंमें यह पुस्तक छपी है सो नीचे लिखे के अनुसार यह पुस्तक मिलेगी ॥

रामायण मूल तुलसीकृत बहुत मोटे अक्षरों की

बहुत मोटे अक्षरोंमें है जिसको बालक और वृद्ध सुगमता से पढ़सक्ते हैं ऐसे मोटे अक्षरों की आजतक कहीं नहीं छपी तसवीरों और क्षेपकसमेतहै॥

रामायण मूल तुलसीकृत

जो बहुतसी प्रतियोंसे शुद्ध कीगई कोई दोहा चौपाई रहने नहीं पाया और इसके काण्ड अलग २ भी मिलते हैं ॥

रामायण तुलसीकृत मूल, छोटी

इसमें नवीन रीतिसे सूचीपत्र सहित चित्रोंका रूपक बांधकर आदिमें सम्पूर्ण रामायण का सारांश दिखलाया गयाहै वह आदिमें युद्धकी ऐसी रचना आजतक किसी दूसरी रामायणों में नहीं देखी गई अवलोकन कर्त्ता पुरुष हाथमें लेतेही आनन्द में डूबजावेंगे ॥

तथा मोटे और चिकने कागज़ की

और इसके काण्डभी अलग २ मिलते हैं ॥

रामायण टीका रामचरणदासकृत किताबनुमा व पत्रानुमा

इस बिस्तृत टीकाको अयोध्यानिवासि रामचरणदासजी टीकाकार ने निज देश भाषामें करके रामायणको ऐसा सुगम करदिया किजो थोड़ी भी विद्या रखतेहों वे रामायणका पर्ण आशय समझजावें और गूढ़ाशयों



NATIONAL LIBRARY
No. 5879
DATE 3.3.62
CALCUTTA

अथ कुण्डलिया रामायण सटीक ॥

श्रीजानकीवल्लभोजयति ॥ श्लोक ॥ जलधरद्युतिगात्रं पूर्णचन्द्राभवक्त्रं
अमलकनकवर्णपीतवस्त्रंदधानं ॥ तडितनिकरभासंजानकीवामभागं गुण
निधिपररूपंरामचन्द्रंभजेहं १ ॥कुण्डलिका ॥ दासतिसूरिष्टणोतिथंसनल
भतेचयदन्तु । सुरनरमुनयःशारदानिगमागमाःवदन्तु ॥ निगमागमाःवद
न्तुशम्भुविधिहरिभिःवन्दित । कृपयाभोभूपालसुलभकृतजीवअनन्दित ॥
नन्दतिअधमअनाथपाथनिधियस्यअगमगति । वर्णयामिविधिकेनवैद्यना
थोस्मिमन्दमति २ वल्लभसवसंसारकोसेवतसुलभउदार । परब्रह्मपरमा
त्मारघुकुलमणिअवतार ॥ रघुकुलमणिअवतारकृपाकरिसबजगपालत ।
महिसुरमुनिदुखदेखिदयाकरिखलदलघालत ॥ घालतदोपदरिद्रशरणकछु
नाहिंनदुर्लभ । बैजनाथछलछांड़िनमतपदसीतावल्लभ ३ सीतावल्लभनाम
कहिसुखीहोतजनदीन । रामवल्लभानामलियरघुबरहोतअधीन ॥ रघुबर
होतअधीनपीनबलजीमेंआवत । त्यागशांतिसंतोषज्ञानसज्जनतापावत ॥
पावतपदपरमात्मसहजमिटिहैभवभीता । बैजनाथहगकोरदयाकरिहेरत
सीता ४ देवहिज्ञानसुभक्तिबुधिविद्यातोपविचार । धर्म्मकर्म्मदमतासुधृति
समताशीलअचार ॥ समताशीलअचारमारविषयादिकयावत । क्रोधलोभ
मदमोहतमहिरविवचनदुरावत ॥ आवतसहजअनंदजासुकरुणाहरि सेव
हि । बैजनाथशिरनायचरणवन्दतगुरुदेवहि ५ कृपावारिधरस्वामिममवि
दितफकीरेराम । अवधजन्मभूपासबसिदक्षिणमुखकोधाम॥ दक्षिणमुखको
धामरामरसरसिकरँगीले । मन्त्रमहाउपदेशिविषयविषधरकोकीले ॥ कीलो
मनकामादिज्याहिधरेशीशत्याहिचरणपर । बैजनाथकृतअर्थकृपाबलकृपाबा
रिधर ६ तुलसीदासपवित्रमनप्रभुचरणनलौलीन । दोहारोलायुक्तकरिकुण्ड

खिकारचिदीन ॥ कुण्डलिकारचिदीनरामयशजलभरिपावन । सुनतहरत त्रयतापकहतभवशोकनशावन ॥ सावनघनसमवृष्टिशालिसज्जनमनहुल सी । बैजनाथकरजोरिनायशिरवन्दततुलसी ७ सम्वतनगश्रुतिश्रंकशशिरवि वासरअसुनीप । कार्तिकशुक्लत्रयोदशीकुण्डलिकासुप्रदीप ॥ कुण्डलिका सुप्रदीपजिलाबारहबंकीघर । डेहवासहितसुग्राममानपुरहैममनम्बर ॥ नम्बरनववांतिलकग्रन्थकरताकोयहमत । बैजनाथमतिसरिसकहतसन्तन लयसंमत ८ ॥

मू० । दहनअमंगलसकलदुखगजमुखसबसुखदानि । मतिग तिरतिरघुपतिचरणविघ्नहरणकीबानि १ विघ्नहरणकी बानिजानिसज्जनसबगावत । भक्तिमुक्तिवरदेशशेषशं करसुरध्यावत २ शंकरध्यावतशेषसुररिपुगणखलजन गहन । कहतुलसिदासशंकरसुवन भजतभक्तभवभय दहन ३ । १ ॥

टी० । सिद्धदायक देव वन्दनात्मक मंगलाचरण है अर्थात् रामनाम के प्रभावते मंगलकर्त्ताजानि प्रथम गणेशजी को बन्दना करते हैं कैसे हैं गणेश सकल अमंगल तथा दुःखके दहन भस्मकर्त्ता हैं पुनः गजमुख सब सुखके दानिहैं अर्थात् हानि वियोग राजकोपादि अमंगल तथा रुज पीडा दरिद्रतादि दुःख इनसबनको भस्म करिदेते हैं पुनः गज हाथीकैसो मुख अर्थात् पशुको मुख तौ अविवेकी चाहिये सो नहीं सुखके दानीहैं काहेते सुखदानि हैं कि विघ्नहरणकी बानिहैं सहजसुभावते विघ्न मिटाइदेतेहैं कौनकारणते ऐसा स्वभाव है कि मति गति रति रामपद मति जो बुद्धि ताकीगति रति प्रीति रघुनाथजी के चरणारविन्दन में लागि है अर्थात् हरिभक्त हैं यथा सत्योपाख्याने ॥ रामभक्तोगणाधीशोहस्तेपरशुधारकः ॥ आयुग्रेसमासीनोगजप्रष्ठेयथाहरिः १ रामभक्तिते दयावन्त स्वभाव ताते विघ्नहरिबेकी बानि सहजस्वभाव सोईजानि सबसज्जन गणेशको यश गावते हैं क्या यशगावते हैं यथा भक्ति मुक्ति वरदेश वरदायकन के ईश श्रेष्ठहैं अर्थात् अकामनको भक्ति मुक्तिदेत सकामनको मनभावत वरदेत इसीते शेष शंकर सुर इन्द्रादि देवता इत्यादि सब ध्यावत पूजते हैं २ शंकर शेष सबदेवता काहेते ध्यावते हैं कि खल रिपुगण दुष्ट विघ्नकर्त्ता समूह तेई गहनबनकी समान जीवको भटकावत तथा भव जो संसार

ताकीभय डर जन्म मरणादि इत्यादि हेतु कैसे हैं गोसाईंजी कहत जो भक्त भजत सेवाकरत ताकी भवभय तथा खल रिपुमन तिनको शंकर सुवन दहन शिवपुत्र गणेशजी भस्मकरिदेते हैं तिन गणेशको नामले मैं प्रारम्भ करतहौं निर्विघ्नहेतु ३ । १ ॥

मू० । दीनदयालदयाकरौदीनजानिशिवमोहिं । सीतारामसनेहउरसहजसन्तगुणहोहिं १ सहजसन्तगुणहोहिंयथाप्रदलाभदुःखसुख । कर्मविवशजहँजाउँतहाँसियरामकृपारुख २ रामकृपारुखनितरहौंजगतजानितसंशयहरौ । कहतुलसिदासशंकरउमादीनदयालदयाकरौ ३ । २ ॥

टी० । हे शिव दीनदयाल मोहिं दीनजानि दयाकरौ अर्थात् बिनस्वार्थ जीवनको दुःखमिटावना सो दयागुणहै भगवद्गुणदर्पणे ॥ दयादयावतां ज्ञेया स्वार्थस्तत्रनकारणं । दीन जो पौरुषहीन दुखित हैं तिनके दुःख मिटाइबेहेतु आप दयागुणभरे मन्दिरहौ ऐसाजानि प्रार्थना करताहौं ज्ञान विरागादि बलहीन ताते दीन पुनः कामादिकनकी प्रबलताते दुःखितहौं ऐसाजानि मोपर भी दयाकरौ दुःखहरौ जाते उरमें सीताराम सनेह पुनः सहज सन्तगुणहोइ अर्थात् अन्तःकर्ण शुद्धमें श्रीरघुनन्दन जनकनन्दिनी के पदकमलकी प्रीति दृढबनीरहै तथा वचन मन कर्मते सहजस्वभाव बिनउपाय कीन्हे सन्तनकेगुण उत्पन्नहोहिं १ कैसे सहज स्वभावते संत गुणहोहिं यथाप्रद आपनी बस्तु औरको देना तथा लाभ आपुपावना अर्थात् देनेमें बिषाद नहीं पावनेमें हर्षनहीं तथा दुःखमें विषाद नहीं सुख में हर्षनहीं भाव हानि लाभ सुख दुःख बराबरही मानौं पुनः कर्मविवश जहाँजाउँ शुभाशुभ कर्मनको फल भोगहेतु जहाँजाय जन्मपावौं तहाँ सिय रामकृपा रुख अन्य सब आश भरोसात्यागि केवल श्रीराम जानकी की कृपाको भरोसाराखे मन सन्मुख बनारहै २ इति रामकृपा रुखरहौं पुनः जगत्ते जनित उत्पन्न जो संशय देहव्यवहारकी सचाई ताको हरौ देहाभिमानको ममत्व छुडाय राम सनेह दृढकरि दीजिये इत्यादि गोसाईंजीकहत हे दीनदयाल शिव पार्वती दीनजानि मोपरदयाकरौ ३।२ ॥

मू० । रामचरितशतकोटिशेषशारदशिवभाखे । नारदशुकसनकादिवेदकहिबीचहिराखे १ बीचहिराखेचरितपारकहि

पावतनाहिन । कहिकहिहारेसकलरामयशकहतसिराहि
न २ नहिंसिराहिंरघुबीरगुणसोतुलसीमनमेंडरत । भज
नभाववेदनकहाकहेचरितभवनिधितरत ३ । ३ ॥

टी० । शतकोटि सौकरोरि श्लोक रामचरित अकेले बाल्मीकिजी कहे तथा शेष शारदा शिव स्वइच्छित रामचरित भाषे वर्णनकीन्हे तथा नारद शुकदेव सनकादिभी निजमति अनुसार कहे पुनः वेद रामचरित कहि बीचहिराखे इति नहींकिये १ सब आचार्य वर्णन कीन्हे परंतु रामचरित कहिके पार कोऊनहीं पावत सबै बीचहीराखे अंतकोऊनहीं पावा काहेते शंकर शेष शारदादि समर्थ यावत् आचार्यते सकल कहिकहि हारिगये कहतमें रामयश सिराहिन किसीके कहे चुकिनहींजाता इसीते सबबीचही राखे २ रघुबीर गुणनाहिं सिराहिं अर्थात् चरितनके अंतर्गत कृपा दया शील करुणा वात्सल्यता सुलभ उदारतादि श्रीरघुनाथजीके गुणानुवाद नहीं कहतमें चुकते हैं सोई विचारि श्री तुलसीदासभी वर्णन करतसंते मनमें डरत कहि नहीं सकत परंतु तामें एककारण है कि वेदनभजन करनेके भाव कहाहैं यथा सेवक सेव्यभाव पिता पुत्र पति पत्नी प्रकाश प्रकाशी शेष शेषी अंश अंशी जीव ईश इत्यादि भाव अनुकूल प्रीति पूर्वक श्रीरामचरित कहेते जीव भवनिधि भवसागर तरतभाव रामचरित पार जानेको प्रयोजन नहींहै केवल अपने जीवके कल्याण हेतु श्रीरामचरित वर्णन करतहौं ३ । ३ ॥

मू० । पुत्रयज्ञनृपकीनजोरिमुनिगणद्विजकुलवर । कहवशिष्ठभै
सिद्धदीनहविलैप्रसादकर १ लैप्रसादकरदीनदेहुभामि
निनृपजाई । सुनिदशरथमनहर्षसकलप्रियनारिबुलाई २
नारिबुलाईकौशल्याकैकेयीयुगभागकर । मनअनंदरानी
नृपतिदीन्हसुमित्रहिहाथधर ३ । ४ ॥

टी० । नृपदशरथ महाराज पुत्रहेतु यज्ञकीन्हे कौनभांति वशिष्ठ शृंगीऋषि इत्यादि मुनिगण तथा द्विजपुरके अपर ब्राह्मण तथा रघुकुलमें वर जे श्रेष्ठवृद्ध रहे इत्यादिको जोरिबटोरि यज्ञपूर्णभये पर वशिष्ठजी कहे कि हे महाराज अब तुम्हाराकार्य सिद्धभया भाव अग्नि प्रसिद्धहै हव्यदिये सोई लैकै प्रसाद महाराजके कर हाथमेंदीन १ प्रसाद करमेंदीन पुनः

वशिष्टजी आज्ञा दीन्हि हे नृपदशरथजी जाइ भामिनिदेहु यह हव्य कौश-ल्यादि रानिनको यथायोग्य भागकरि खवाइ देहुजाइ सो वशिष्ठजी के वचनसुनि दशरथ महाराजके मनमें हर्ष आनंदभयो तब राजमंदिरमें जाइ प्रियनारि कौशल्यादिको बुलाई २ नारि बुलाइ रानीसमीप आई तब महाराज अर्द्धभाग कौशल्याजीको दीन्हे चतुर्थांश कैकेयीको दीन्हे जो चतुर्थांशरहा ताके युगभागकर द्वै भाग करिकै एक कौशल्याके हाथ धरे एक कैकेयीके हाथधरे पुनः दोऊरानी अरु नृपति दशरथ मनमें आ-नंद ह्वैकै दोऊभाग सुमित्राको दीन्हे रानीतौ बहुतीहैं तामें ये तीनिउमें मुख्यताहैं काहेते कौशल्याकी लग्नचढ़ी तेलचढ़ा मातृपूजन ह्वै गया बिवाहकेदिन रावणहरिलैगया इसहेतु कौशल्याकी छोटीबहिनी सुमित्रा को बिवाह करिदीन्हे इति दैवयोग सुमित्रौमें उत्तमता आयगई जब कौशल्यामिल्लीं तब विधिवत् बिवाहभया सो पाटमहिषी येई बड़ी मानी गईं अरु कैकेयीके पिताने दशरथजीते समयपत्र लिखायलिया कि राज्या-भिषेक कैकेयीके पुत्रकोहोवै ताते कैकेयी श्रेष्ठभई इसकारण तीनिहूंउत्तम हैं इनमें जो विरोध होतातौ भागदेतही उपद्रव उठता परंतु शील स्व-भावते उत्तम पतिव्रता सबैरहीं ताते विरोध रहित परस्पर सुमतिरहे ताते पतिआज्ञा सब अंगीकार करिलीन्ही उपद्रव कछुनहींभया ३ । ४ ॥

मू०।मंगलमयीविचित्रद्युतिप्रकटभईगृहआनि । ब्रह्मसच्चिदा
नंदउरप्रकटभयेसुखखानि १ प्रकटभयेसुखखानिहानि
दारिददुखनाश्यो । देवनलह्योअनंदमहीमनमोदप्रका
श्यो२ महीमोदद्विजसकलसंतसज्जनयशगावत। ब्रह्मादि
कसबदेवअवधनृपघरचलिआवत ३ आवतवर्षतसुम
नघनतुलसीकहिजयजयजई । नाकनगरअहिपुरभुवनप्र
कटभईमंगलमई ४ । ५ ॥

टी० । इस कुंडलिकामें द्वैचरण अधिक सो कविकीइच्छा वा अतिहर्ष ते विह्वल दशामें नहीं बिचारकीन्हे ब्रह्म सच्चिदानंद सुखखानि उरमें प्र-कटभये ताते मंगलमयी बिचित्र द्युति आइ गृहमें प्रकटभई अर्थात् जो आदि मध्यांत जो सदा एकरस शुद्धरहै ताको सत्कही जामें एकरस ज्ञान ताको चित्कही सदा अखंडसुख ताको आनंदकही इति सच्चिदानंद ब्रह्म

जाको अंश सबमें व्यापक ऐसे साकेतबिहारी जिनते लौकिकपारलौकिक सबसुख उत्पन्नहोते हैं ते सुखके खानि सोई सुलभ लोकोद्धार हेतु आय कौशल्याजीके उर अंतरमें प्रकटभये ताते दशरथजीके मंदिरमें मंगलमयी उत्सवभरी पुनः बिचित्र जो किसीकी समुझमें न आवै ऐसी द्युति प्रकाश आनि प्रकटभई १ सुखके खानिप्रभु जबते प्रकटभये तबते लोगनकी हानि दरिद्र रुज बियोगादि दुःख इत्यादि नाशह्वैगयो तथा देवन आनंदलह्यो इंद्रादि देवतन परम आनंदपाये भाव अब हमारा दुःख छूटैगो तथा मही मन मोदप्रकाश्यो पृथ्वी के मनमें आनंद प्रकाश भयो अर्थात् अन्नादि उत्तम पदार्थ अधिक होनेलगे भाव अब हमारा भारउतरैगो २ अथवा महीमें मोद यह प्रकाशभया कि द्विज जो ब्राह्मण सकल तथा आत्मदर्शीसंत पुनः सज्जन हरिसनेही इत्यादि प्रभुको यश गावतेहैं पुनः शिव ब्रह्मादि जे देवता ते अवधमें नृपदशरथ महाराजके घरकोचलि आवतेहैं ३ गोसांईजी कहत कि ब्रह्मादिक सबदेवता आदते हैं अरु प्रभुकी जयजयकार कहि पुनः सवन सुमन फूल बर्षतेहैं इति अयोध्याजीमें आनंद सो पृथ्वीभरेपर विदित तथा नाक नगर जो इंद्रपुरी पुनः अहिपुर नागलोक इत्यादि भुवनभरेमें मंगलमयी आनंदभरी द्युति प्रकटभई अर्थात् सर्वत्र उत्सव देखाताहै ४ । ५ ॥

मू०।मासभयोशुभबारयोगवरनखतविराजत । तिथिनभजलमहिविमलदिशाविदिशासबभ्राजत १ भ्राजतसरयूअवधदेवगणजयउच्चारत । बर्षतसुमनप्रशंसहंसनिजबंसनिहारत २ हारतखलगणमनमलिनप्रकटभयेसुखदुखगयो । तुलसीरघुबरप्रकटभेमासएककोदिनभयो ३ । ६ ॥

टी० ।मासचैत शुभ शुक्लपक्षभयो वार भौम योग सुकर्म नखत पुनर्वसु इत्यादि वर श्रेष्ठ बिराजत पुनः तिथि नौमी इति प्रभुके उत्पन्न को समय जब आयो तब नभ जो आकाश तथा जल महि जो भूमिइत्यादि पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तरादि दिशा पुनः ईशान अग्नेय नैर्ऋत्य वायव्य इति विदिशा इति सर्वत्र विमल भ्राजत अर्थात् आठौदिशि भूमि जल आकाश अमल देखात १ जल सरयूजीमें बिशेषि अमल तथा भूमि अयोध्याजीमें अमल भ्राजत काहेते जहां इंद्रादि देवगण समूह जयजयकार करिरहे हैं पुनः सुमन फूल बर्षत प्रभुकी प्रशंसा स्तुति करतेहैं पुनः हंस निज बंश

निहारत सूर्य अपने बंशकी उन्नता देखतेहैं २ खलगण रावणादि दुष्टस-
मूह ते हारत अपनी नाशजानि मनते मलिन उदासीन भये ताते सब
संसारको दुःखगयो अरु सुख प्रकटभयो इत्यादि लोक आनंदसहित रघु-
बर प्रकटभये तासमय एक महीनाभरेको दिनभयो ३ । ६ ॥

मू०। मुनिभूपतिसुतजन्ममगननाहिंदेहसँभारत । उठेभवनक
हँदौरिबोलितबगुरुहिप्रचारत १ गुरुहिप्रचारतचलेबिप्र
सँगलैमुनिनायक। भूतभविष्यवर्त्तमानज्ञानसबजाननला
यक २ लायकसुतमुनिसमुभ्किकैजातकर्मसबबिधिकियो ।
हेमहीरनीरजसुपटमहिहयगयभूपतिदियो ३ । ७ ॥

टी० । सुतपुत्रको जन्महोना सुनि भूपति दशरथमहाराज प्रेमानंदमें
मगनभये ताते देहनहीं सँभारत अधिकप्रेम उमंगते देहकीसुधि भूलिगई
ताते हर्षबश उठिकै भवनकहँ दौरिचले जब घरमेंजाय अनूप बालक देखे
तबप्रचारत गुरुहिबोलि ललकार सहित गुरुको बुलाये अर्थात् सेवकनते
कहे शीघ्रजाइ वशिष्ठजीको बुलाइलावो १ गुरुहि प्रचारत अर्थात् शीघ्र
बुलावन सुनतही मुनिनायक वशिष्ठजी अपर विप्रनको संगलैचले कैसे
हैं मुनिनायक यथाभूत जोकाल बीतिगया है तथा भविष्य जो आगेआवै
गो वर्तमान जो बीतताहै इत्यादि तीनिहुकालकी सबबात जाननलायक
ज्ञानहै जिनके २ ऐसे त्रिकालज्ञ मुनि वशिष्ठजी आयकै लायकसुत समु-
भ्कि अर्थात् महाराजके जोपुत्रभया सो सबभाँतिते समर्थ है भाव परब्रह्म
अवतीर्णभये ऐसासमुभ्किकै अभ्युदयिकश्राद्ध जातकर्मादि के सब आचार
वेदविधिते किये अर्थात् जीवके शुद्धता हेतु गर्भाधानादि दशकर्म होते हैं
तिनमें जातकर्म बालकके जन्मसमय होता है ताके पूर्व अभ्युदयिक
अर्थात् नंदीमुखश्राद्ध होती है ताकी विधि गीतावली तथा रामायणके
तिलकमें हम लिखाहै इहांवाकोनामै नहीं ताते विधिनहीं लिखा जात-
कर्म यथा प्रथमसूतिका गृह विषे पिता अरु आचार्यजात पुनः स्वर्णेन
मधुघृतचतुःवारंबालकंभोजयति अर्थात् सोनेकी अँगूठी वा अशर्फीते घृत
सहत मिलाय भूय इतिमंत्र पढ़ि चारिबार बालकके मुखमें लगावत
पुनःकुशोदकैःबालंप्रोक्षयति कुशते जल बालकपर छिरकत पुनः अग्नि
इतिमंत्र तथा आठकंडिका बालकके दहिने कानकेलग आचार्य पठत पुनः

पंचविप्रस्थापयतिश्रित इतिमंत्रसोदेश अभिमंत्रयतिवालं अभिमंत्रयति मातांअभिमंत्रयति पुनः माता दोनीमें जललेकर आपन दक्षिण स्तन धोकर बालककी नालपर डारतआपो इतिमंत्र आचार्य पढ़त पुनः वर्ण दक्षिणादैभूमि पंचसंस्कारकरि वेदीबनाय तापरदोनीमें अग्निधरत गणेश गौरी वरुण पूजि पीपरि सरसों घृतमिलाय सांडा इतिमंत्रसो सात आहुतीदेत पुनः शतमूठी अन्नभरि द्रव्यसहित पूर्णपात्र विप्रकोदेत पुत्र पिता अभिषेक तिलदान पुनः शिवमंत्रसो छूरासूतकी पूजाकरि सूतते बांधि नाल छूराते छीनत तब प्रजनको दानदेत इत्यादि करि पुनः दशरथ महाराज हेमजो सोना अशर्फी आदि हीरादि मणि नीरजमोती आदि सुपट सुंदरिवस्त्र दुशालादि महि भूमि ग्राम क्षेत्रादि हय घोड़ा गय हाथी इत्यादि भूपतिदान सबनको दीन्हे ३ । ७ ॥

मू० । याचकजोज्यहिकाजताहिनृपपूछिदिवावत । वृंदवृंदबर
नारिविमलस्वरसोहिलगावत १ गावतसोहिलसुनतभू
प हँसिहेरिबुलावत । पटभूषणमणिमाललालसुखत्यहि
पहिरावत २ पहिरावतगजतुरगरथसर्वसदैदैछाँड़िछल ।
पुनितुलसीजहँतहँभरोरामकृपासबवाहिथल ३ । ८ ॥

टी० । याचकजन जो ज्यहिकाजकी आशाकरिआवाहै सोई मनोरथ पूछि जोमांगत सोई नृपदशरथ महाराज देवावत तथा वृंदवृंद वरनारि झुंडझुंड उत्तम सौभागिनी स्त्रीते विमल सुंदरस्वरते सोहिल सोहरगावती हैं १ सोहिलगावत सुनतही गावनहारिनकी दिशि हेरिदेखि हँसिके भूपदशरथजी सबको बुलावते हैं हँसि हेरिबेको भाव ऐश्वर्य दुराय सौलभ्यता दर्शाये जामें महाराज जानि निकट आवबेमें कोई स्त्री डर न मानै निर्भय बोलाय तिनको लहँगा सारी आदि उत्तम पट टीका बंदी ताटंकादि भूषण लालमणिनके माला इत्यादि सुखपूर्वक त्यहि स्त्रीनको पहिरावते भये २ यथा स्त्रीनको पहिरावनदिये तथा ब्राह्मण बंदीजन मागध सूत नाऊ बारी नट टाढ़ी बारमुखी कलाँउत डोम इत्यादि यावत् याचक प्रजादि सन्मुख आये तिनकीभी रुचिबूझिकै गज जो हाथी तुरंग जोघोड़े रथादि यावत् वाहन पुनः मणि सोना वसनादि देनेमें छलछाँड़ि सर्वसधन दैदै सबको पूर्ण कामकरि दीन्हे गोसाईंजी कहत कि देतेमें महाराज किसी भंडारादिमें कछुनहींराखे परंतु रघुनाथजीकी कृपातें पुनः

जहाँकी तहाँ सबवाही थलमें भरो देखात खाली कछु न भयो ३ । ८ ॥

मू० । पुरीमगननरनारिवर्णचारउप्रसन्नसबि । प्रतिगृहगावत गीतकलशमणिचौकभरीछबि १ भरीचौकगजमुक्तअगर कुमकुममृगमदघन । कुसुमसुगन्धअबीररहेउभरिदिशा विदिशितन २ दिशाविदिशिसुखभरिरह्योभामिनिबहुप्र कटीदुरी । अहिनाकभूमितलसुखभरयो जिमिसुखभोरघु पतिपुरी ३ । ९ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी को जन्मभयेते अयोध्यापुरी आनन्दमें मग्न है काहेते जानिये कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्रादि चारिहूवर्ण नारी नरादि सबी प्रसन्न हैं काहेते नारी तौ गृहप्रति घरघरमें सोहिलगीत गावती हैं तथा पुरुष ठौर ठौर सपल्लव धान्य दीप कनक कलश स्थापित करते हैं पुनः छबिकीभरी मणिनकी चौकैं पुरायरहे हैं १ कौनी मणिनकी चौक गजमुक्तनसों भरी पुनः अगर कुमकुम केसरि मृगमद जो कस्तूरी घन कपूर इत्यादि चन्दनमें घसि अरगजा तथा कुसुम जो फूल ताको सुगन्ध जल केवड़ा गुलाबादि तथा गुलाल अबीर सो पूर्वादिदिशि ईशानादि विदिशि इति आठौदिशन में भरिरहेउ है तन सबकी देहनमें लाग है २ दिशा विदिशि सर्वत्र अयोध्याजी में सुखभरिरहेउ है समुद्र जलसम पुनः भामिनी युवती बहुत प्रकटहोती हैं पुनः दुरी मन्दिरन में छिपिजाती हैं सो तरंगसी देखाती जिमि जाभाँति रघुपतिकीपुरी अयोध्याजी में सुख भयो ताहीभाँति अहि पाताललोक में नाक इन्द्रपुरी में भूमितल पृथ्वी भरेमें तैसेहीं सुखभयो सो भरिपूरिरह्यो है ३ । ९ ॥

मू० । भूपभामिनीदोउसुखदसुतसुन्दरजाये । कर्मक्रियासोकरे तोषियाचकपहिराये १ पहिरायेमनमोदचारिसुतलखि सुखराजा । रानीपरमहुलासदासदासीसबसाजा २ सा जाशहरअनन्दबड़बाजाबहुबाजनलगे । सबकोउकहत सराहिकैभागभालसुखकेजगे ३ । १० ॥

टी० । भूपभामिनी दशरथमहाराज की दोऊरानी सुमित्रा लषण शत्रु-हन तथा कैकेयी भरतको इत्यादि लोकनको सुखदेनहारे सुन्दर सुतजाये पुत्र उत्पन्न कीन्हे तिनके जातकर्मादिकी क्रिया सबकर्तव्यता कीन्हे पुनः

तोषि याचक पहिराये याचकनको भूषण बसनादि पहिराये मणि सोना मुद्रादिदै संतोषकरि अयाचक करिदीन्हे १ याचकनको दानदै पहिराये ताते सबके मनमें मोद आनन्दभयो क्यों सबको पहिराये चारिसुतलखि सुखराजा अर्थात् अबतक एकहूपुत्र न भया अब बड़ी बयसमें सुन्दर परमोत्तम चारिपुत्र साथहीपाये ताते दशरथमहाराज के मनमें परमसुख भये ताते सबको मनभावत दानदीन्हे तथा कौशल्यादि सबरानी परम हुलास आनन्दितभई पुनः दास दासीभी परमआनन्दह्वै सबमंगलसाज ध्वजा पताका बन्दनवार चित्रामादि साजते हैं २ अयोध्या सब शहरभरि मंगलसाजते सजाहैं पुनः ढोल तासा झाँझ मृदंग बीणा रबाब तबला सारंगी मँजीराइत्यादि बहुतभाँति के बाजा बाजनेलगे तासमय सबकोऊ महाराजकी सराहना प्रशंसाकरि कहते हैं कि दशरथजी के भाल माथेमें परिपूर्ण सुखकेभागजगे उदयभे ३। १०॥

मू०। भूसुरसुरगोधरनिसन्तसज्जनकेकाजे । प्रभुधारयोतनम
नुजदनुजसुनिविकलसुलाजे १ लाजेखलगणमलिनन
लिनद्विजउदयभानुकर। अघउलूकछपिगयेतेजअहिपुर
सुरपुरधर २ सुरपुरधुनिकुसुमावलीजयतिरामरघुवंशज
याजयदशरथकुलकलशअवधनरनारिकहतभय३।११॥

टी०। भूसुर ब्राह्मण सुर देवता गो गौवें धरणि पृथ्वी संत आत्मदर्शी सज्जन हरिभक्त इत्यादिके सुखके काजै प्रभु श्रीरघुनाथजी मनुजतनुधारे बालकुमारादि अवस्था ग्रहणकीन्हे सो सुनि दनुजलाजे बिकलभये दैत्य राक्षसादि अपनी पराजयको लजाने पुनः नाशहोनो जानि व्याकुलभये भाव अबनहीं बचिसक्तेहैं १ खलगण रावणादि दुष्टसमूह लजानेताते दिग्विजयी उत्साह मिटिगई मनते मलीन अर्थात् भानुउदय कोकीबन संपुटितभये तथा सुधर्म नीतिप्रकाश भयो काहेते भानुकर सूर्यरूप रघुनाथजी उदयभये तिनके प्रताप किरणिनकोपाइ नलिन द्विजकमलसम ब्राह्मण प्रफुल्लितभये पुनः अघउलूकपापकर्म घुघुवासमछिपरहे पापकर्म कहूं नहीं सुनिपरताहै काहेते अहिपुर जो नागलोक पाताल सुरपुर जो देवलोक धर जो पृथ्वी इत्यादि सर्वत्र प्रभुको तेज व्यापिगया २ जामें प्रभु अवतीर्णभये त्याहि रघुबंशकी जयहोय श्री रघुबंशशिरोमणि रघुनाथ जीकी जयहोय इत्यादिधुनि सुरपुर देवलोकमें ह्वैरही है पुनः रघुकुलरूप

मंदिरके कलश सबमें उत्तम दशरथ महाराजकी जयहोय ऐसा शब्द अयोध्याजीके नारी नर सब लोग कहिरहे हैं ३ । ११ ॥

मू० । गृहगृहबजतबधावनारिनरअवधअनंदित । चौककलश प्रतिद्वारलसतसुरतियगणबंदित १ बंदतसुरगणसुमुख बंदिगणबिप्रवेदधुनि । भरिभरिमुक्ताथारदेखिसुतभाग अधिकगुनि २ अधिकगानसोहतभवन रामजन्ममंगलसजत । नरनारिवारितनधनसबै सुरपुरजयदुंदुभिबजत ३ । १२ ॥

टी० । अवधपुर बासी नारि नर सबै अनंदित आनंदमें मग्न हैं ताही हर्षते गृह घरघरमें बधावन बाजतेहैं तथा मुक्ता मणिनकी चौकैं कंचनादिके कलशै सजे मंदिरनके द्वार द्वारनपर लसत शोभा दैरहेहैं सुर तिय गण बंदित देवनकी स्त्री शारदा शची आदि समूह अवधपुरीकी बंदना करिरहीहैं ताकी शोभा महिमा कौन कहिसकै १ काहेते महिमा नहीं कहिजात सुरगण सुमुख बंदन ब्रह्मा इंद्रादि देवता समूह मन सन्मुख किहे पुरको बंदना दंडप्रणाम करते हैं पुनः बंदीगण बिरदावली कहिरहे तथा बिप्र वेदधुनि करिरहेहैं सुत रघुनाथजी आदि पुत्रनको परम अनूप रूप देखि कौशल्यादि रानी अपनी भाग्यको अधिक गनतीहैं भाव हमारे कुलमें हमारीऐसी भाग्य किसी रानीकी नहींभई इसी हर्षते कंचनथारनमें मुक्ता भरिभरि निवछावरि करती हैं २ भवन मंदिरमें गान मंगल गीत सब साजते अधिक सोहत श्रीरघुनाथजीको जन्मभयो ताते मंगलके साज सबै सजतेहैं अवधबासी नारी नर हर्षबश सबै तन धन वारन करतेहैं अर्थात् तन प्रभुको अर्पणकरते हैं धन निवछावरिकरि याचकनको देतेहैं तथा सुरपुर जोहै देवलोक तामें प्रभुकी जयजयकार अरु दुन्दुभी बाजत हैं ३ । १२ ॥

मू० । नामधरयोमुनिहेरिरामपुनिभरतलषणवर । शत्रुशमन शुभनामदीनमुनिलिखिभूपतिकर १ भूपतिरानिनदीनमगनतनुलहेउसकलसुख । गाननिशानसमानधरणिआकाशएकरुख २ यकटकनिरखतसुमनगणमनमलीनखलगण भये । चारिचारुसुंदरसुवनसुकृतभूपतरुफलनये ३ । १३ ॥

टी० । बैशाखकृष्ण पंचमी शुक्रवार अनुराधानक्षत्र जन्मके बारहेंदिन नामकरणको उत्सवकीन्हे ताकी बिधि नामकरण बिधाने यथा अभ्युदयिकादि कृत्वा नंदीमुख प्रतिज्ञाबर्णन संकल्प स्वस्त्ययनं शांति गणेश बरुण गौरी पूजनं चतुर्दश मातृपूजनं ब्राह्मणभोजयति घृतेन हवनंकुर्यात् अश्वत्थपात्रे नामंलिखित्वा पूजनं बालस्य दक्षिणकर्णे अमुकवर्म्मासीति त्रिबारं श्रावयति अर्थात् सबरानी स्नानकरि नवीन भूषण बसन धारण कीन्हे तथा बालकनको स्नानकराय भूषणबसन पहिराय चौकनपर पूर्वमुख बैठी तब वेदबिधान सब आचारकरि मुनिबशिष्ठजी वेदतत्त्वमें हेरिकै भाव राशिके नामनहीं जो स्वरूपनमें गुणहै ताकीअनुकूल नामधरयो क्या नामधरयो कौशल्यानंदनको रामचंद्र ऐसा नामधरे तथा कैकेयीनंदनको भरत ऐसानाम धरे पुनः सुमित्राके प्रथम पुत्रको लक्ष्मण ऐसा नामधरे छोटेको शत्रुहन ऐसानाम धरयो अर्थात् चारौनाम केशरि चंदनादिते पीपरके पत्तनपर लिखि पूजनकरि बालकनके दक्षिण कानन में तीनि तीनिबार सुनायदीन्हे पुनः शुभकल्याणकर्त्ता नामजो पत्तनपरलिखे रहें सो भूपतिकर महाराज दशरथजीकेहाथमेंदैदिये आपुनामबांचिआनंदभये १ पुनः भूपदशरथ महाराजनामलिखे पत्तारानिनकोदैदीन्हे तिनको बांचि तनते प्रेमानंदमें मग्नभई मनते सकलसुख लहे उपायउ भाव परिपूर्ण मनोरथ पाय तनमें प्रेमकी पुलकावली भरिगई ग्राम स्त्री बारमुख्याढाढी कलाँउत इत्यादि को पुरमें गान तथा देवलोकके गंधर्व अप्सरा आकाशमें विमाननपर गाइरहीं पुरमें निशान बाजा ढोल तासा झाँझ मृदंगादि बाजिरहे तथा देवता दुंदुभी आदि बजायरहे इत्यादि गान निशान धरणि पृथ्वी में तथा आकाशमें दोऊ ठिकाने समान बराबरिही एकरुख परस्पर ताल शब्द एकही में मिले सुनात २ सुमन जो देवता तिनके गण समूह ते तौ प्रेमानंद वश यकटक पलारहित प्रभुको निरखि रहे हैं पुनः खलगण दुष्ट राक्षसादि समूह ते मनते मलीन आपनी हानि जानि दुःखितहैं ताते उनके मुख धूमिल परिगये भूप दशरथ महाराजके सुकृत तरु वृक्ष नये फलफले भाव ऐसा फल और किसी की सुकृतमें नहीं फले काहेते चारु नाम सुंदरताहूमें सुंदर चारि सुवन पुत्रसाथही पाये ताते सुकृत वृक्ष नये फलफले ३ । १३ ॥

मू० । सुंदरसुतवरगोदमोदभरिमातुदुलारत निरखिदनवछबि

सिंधुसकलतनमनधनवारत १ वारैतनमनदेवभूपकेभाग
सराहत। शिवसनकादिकब्रह्मक्षणहिक्षणमनसुखचाहत२
चाहतनितआवतअवधमंगलमयमूरतिलखत। रामजन्म
सुखरसरसिकतुलसिदासनयननिचखत ३ । १४ ॥

टी० । सुंदर सर्वांग सुठौर बने ऐसे वर सुत उत्तम पुत्रनको मोद आनंद भरी माता कौशल्या आदि गोदमें लिहे दुलारती हैं पुनः छबि सिंधु शोभारूप जलभरा समुद्रसम मुखको निरखत नेत्रनभरि देखत आनंद है तन मन धनादि सकल सुतपर वारन करत भाव मनलगाये तनते लालन पालन करती हैं धन निवछावरिकरि याचकनको देत १ माता तन मन वारत तथा इंद्रादि देवता भूप दशरथ महाराज की भाग्य को सराहत भाव ऐसी भाग्य अवर किसी की नहीं है दशरथ महाराज की धन्यभाग्य है जिनें परब्रह्मको पुत्रकरि पाये पुनः शिव सनकादि मुनि ब्रह्मा इत्यादि को मन क्षण क्षण प्रति प्रभु दर्शन के सुखको चाहत २ दर्शनको सुख चाहत ताते ब्रह्मा शिव सनकादि नित्यही अयोध्याजी को आवत अरु मंगलमयमूरति लखत कल्याणकर्ता स्वरूप श्रीरघुनाथजी को नेत्रनभरि देखत आनंद पाय देखतसंते तृप्त नहीं होत ताते क्षणक्षण प्रति चाहत इसीभांति गोसाईंजी कहत कि राम जन्म रघुनाथजी के बालरूपको जो सुखरूप रसहै ताके जे रसिक वात्सल्यरसवाले ते नयन निचखत नेत्रनद्वारा बालरूपकी माधुरी सदा पान करते हैं तृप्त नहीं होते हैं ३ । १४ ॥

मू० । माईबालकअनरस्योदूधपियतनहिंआजु । रोवतसोवत
नेकुनहिंदुष्टनजरिकीसाजु १ दुष्टनजरिकीसाजुरहैंनाहिंबैठे
ठाढ़े । बड़ोशोचउरभयोनीरनयननतेबाढ़े २ बाढ़ेकरुणा
कौशल्यहिहाथदिवावतधायकै । पालनगोदपिआयपय
रामसोवावतआयकै ३ । १५ ॥

टी० । कौशल्याजी कहती हैं अपर वृद्धा स्त्रीनसों हे माई आजु मेरा बालक अनरस्यो कछु रुज पीड़ित है ताते दूध नहीं पियत पुनः रोवत तौ अत्यंत परंतु नेकु थोरहू नहीं सोवत ताते यह दुष्ट नजरिको साजु है

भाव किसी दुष्टा स्त्री की नजरि लागिगई ताही के सब ढैना हैं १ दुष्टा की नजरि की यह सब साजु है ताते ऐसा रोवत हैं कि न बैठेरहैं न ठाढ़े रहैं कवि की उक्ति रघुनंदनको अनरसे जानि कौशल्याजी के उरमें बड़ो शोचु दुःखकी तर्कणा भयो ताते नयननते नीरबाढ़ आँसु प्रबाह बहे २ कौशल्याजी के करुणा दुःख बाढ़ेउ ताते वशिष्ठजी को बुलाये मुनि को आवत देखि रघुनन्दन को गोदले कौशल्याजी धाय पाँयनमें डारि पुनः रघुनन्दनके माथपर मुनिको हाथदिवाये नृसिंहमंत्रपढ़ि रक्षाकीन्हे प्रसन्न ह्वैगयेतव गोदलैपयदूधपियाय रघुनन्दनको पलनापरभाय सोवाये३।१५॥

मू० । शंभूधारयोअवधपगअंगहिभस्मलगाय। रामचंद्रमुखसुधाकरचितचकोरललचाय १ चितचकोरललचायनाद भृंगीकीकीन्हे। घरघरआगमकहतबोलिकौशल्यालीन्हे२ कौशल्यागृहबोलिकैशुभआसनआदरकरयो। सुतपाँयनतरलायमाथहाथशंभूधरयो ३।१६॥

टी० । सर्वांगमें भस्म लगाये शंभू अवधपग धरयो अवधूत वेष किहे शिवजी अयोध्याजीको आये कौनहेतु सुधाकर रामचन्द्र मुखको चकोर चित ललचाय सुधा अमृतमय किरणैहैं जाकी ताको कही सुधाकर अर्थात् शरद पूर्णचन्द्रसम श्रीरघुनाथजीकोमुख ताके अवलोकनहेतु चकोर सम चितललचातरहा त्यहि अभिलाषते अयोध्याजीको आये १ शिवजी को चित चकोरसम ललचातारहा ताते अयोध्याजीमेंआयकै भृंगीजोबाजा ताको नादशब्द कीन्हे बजावत पुरमें फिरनेलगे घरघर आगम आगे को होनहारी कहतसंते राजद्वारपर आये तिनको हालसुनि अर्थात् एक आगमी आयाहै सो जानि कौशल्याजी राजमंदिरको बुलायलीन्हे२गृहबोलि घरको बुलाय कौशल्याजी शुभमंगलमय सिंहासन आसनपर बैठाय शिवजी को आदर करयो भोजनादि कराय पुनः सुतपुत्र पाँयनतरलाय रघुनन्दनको लाय पाँयनको प्रणाम कराये तब रघुनन्दनके माथेपर शिवजी हाथधरे आशिष दये ३ । १६ ॥

मू० । साईंआछेगुणकहौजोकछुयामेंहोय।सबगतिजानतसबहिकीतुमाहिंकहतसबकोय १ सबकोईपरचोकहतबड़ेयोगनिधियोगी। जोमँगिहौंदेहौंसोइतोको करौंसुधाकोभोगी२

करौसुधाकोभोगजन्मभरिरामलषणकेपाछे।सुनिसुनिबच
नहँसतमनशंकरमातुबचनसुनिआछे ३ । १७ ॥

टी० । साईं हेस्वामी जो या बालकमेंहोइ आछेगुण सोकहौ काहेते सब कोई तुमको कहत कि सबही की सब गति भूत भविष्य बर्तमानकी सब बात जानतेहौ १ आपुके आगम कहेको परिचौ पाइकै सबकोऊ कहत बड़ेयोगनिधि योगक्रियाभरे समुद्रसम योगीहौ पुनः जो माँगिहौ सोईदेहौं तोको सुधाको भोगीकरिहौं २ राम लषणके पाछे जन्मभरि सुधाको भोग करौ अर्थात् मेरे पुत्रनके गुणकहौ तौ ऐसा अधिकथन देहौं त्यहि करिकै जन्मभरि सुधास्वादमें मगन जन्मभरिखाउ माता कौशल्याके कहे वचन सुनिसुनि आछेउत्तम बचननको सुनि मनहिंमन शिवजीहँसतेहैं ३।१७ ॥

मू० । माईबालकतोरयहबड़ोभागकोमूल। याकेदर्शनजातहैसब
अंतरकोशूल १ सबअंतरकोशूलहरीयातेसुखपैहौ। कछु
दिनबीतेसुनौएकमुनिसँगकरिदैहौ २ देहौंमुनिसँगलाय
व्याहपुनिपातीआई । दशरथसुवनबिवाहसाहितघरऐहैं
माई ३ । १८ ॥

टी० । शिवजीबोले हेमाई कौशल्या यह तोरबालक बड़ेभागको मूल भाग्य बेलि बढ़ावबेकीजरहै पुनः याके दर्शन करतसंते अन्तरको सबशूल मानसी व्यथा सबमिटिजातीहै १ अंतरको सब शूलहरी पुनः या बालक ते सबभाँतिको सुखपैहौ पुनः और होनहारी सुनौ कछुदिन बीते अर्थात् किशोर अवस्था जब ह्वैहै तब इन दोऊ बालकनको एक मुनिके माँगेते उनकेसंग करिदेहौ २ जब मुनिकेसंग लायदेहौ तिनकोकार्यकरि पुनः जनकपुरमेंजाय प्रणस्वयंबरमें धनुषतोरिहैं तहांते इनकेब्याहकी पातीआई बरातसहित महाराजको बुलावबे हेतु तब दशरथ महाराज बरात सजि जैहैं सुवन बिवाह सहित भाव चारिहु पुत्रनको बिवाहि पुत्र बधुन सहित हेमाई कुशलपूर्वक घरको लौटि आइहैं ३ । १८ ॥

मू० । अद्भुतकर्मनकरीसकलखलगणसंहारन।महिद्विजपालहि
संतशोचसुरकरहिनिवारन १ करहिनिवारणदोषमातुपि
तुआज्ञाकारी । तोरहिशिवकोधनुषसुयशातिहुँपुराबिस्ता

री २ बिस्तारीसुखसंपदासुनुकौशल्यातोरसुत। वचनमृ
षाबोलतनहींमानुप्रतीतिसनेहयुत ३।१९॥

टी०।जोमनुष्यनमें संभवनहीं देवनकोआश्चर्यमय ऐसेसकलअद्भुतकर्म करी पुनः खलगण संहारन दैत्य राक्षसादि समूह दुष्टनको नाशकरि हैं पुनः महि जो पृथ्वी द्विज ब्राह्मण तथा संतनको पालन करिहैं तथा सुर देवतनके शोच निवारणकरिहैं अर्थात् जो राजऐश्वर्य छूटिगई ताको देवाय अभय अशोचकरिहैं १ पुनः संसारभरेके दोष निवारणकरिहैं भाव धर्मनीति स्थापन करिहैं अरु आपु ऐसे धर्मधुरीण कि माता पिता के आज्ञाकारी सदा रहिहैं पितुआज्ञाते मुनिसंगजाय जनकपुरमें प्रण स्वयंबरमें शिवको धनुषतोरि तिहुंपुर सुयश बिस्तारी अर्थात् जो किसी बली को हलावा नहालैगो त्यहि धनुषको कौतुकमात्र तोरि पुनः परशुरामको मान मर्दनकरहिंगे इति बाहुबलकी प्रशंसा सुंदरयश तीनिहूं लोकन में फैलावहिंगे २ हेकौशल्या तोरसुत पुत्र सबप्रकारको सुख पुनः संपदा ऐश्वर्यविस्तारी अधिकबढ़ाई इत्यादि मेरेबचन सनेहयुत प्रीतिपूर्बक प्रतीति मानु मैं मृषा झूठ नहीं बोलतहौं ३।१९॥

मू०। कह्योकेकयीसुवनकोलक्षणसबकरदेखि। कौशल्यासुतभ-
क्तयहमनक्रमबचनबिशेखि १ मनक्रमबचनबिशेषिराम
पदप्रीतिसुहावन।सोवतजागतध्याननामरसनारसपावन
२पावनतिरहुतिव्याहिहैंयातेसुखसंपतिलहौ।सुयशसिंधु
सौंचौसुवनसमुझिरेखआगमकहौ ३।२०॥

टी०।कर हाथके सबलक्षण देखि कैकेयी के सुवन पुत्र भरतजीको कह्यो याबालक मन क्रम बचनते बिशेषकरिकै कौशल्यासुत भक्त है मन में प्रीति कर्मसों कैंकर्यता आज्ञापालन बचनते गुण गान इत्यादि अन्य भक्तनते बिशेष अधिककरी ऐसा उत्तम रामभक्त होई १ मन क्रम बचन सब आचरणते बिशेष सुहावनि शोभामय सबको देखिपरी ऐसी ललित प्रीति रामपद कमलनमेंकरी कैसी सुहावन प्रीतिकरी कि सोवत जागत सदा एकरस अंतरमें रामरूपको ध्यानराखी तथा पावन पवित्र रामनाम कोरस रसनाकरिकै अस्वादनकरी जिह्वाते सदा प्रीतिपूर्बक नामजपी २ पावन बिशेषि पवित्र तिरहुतिदेश जनकपुरमें ब्याहिहैं चारहु भाइन को बिवाहहैहै याते यहिबालकते सबप्रकार सुख सम्पदालहौ पाइहौ यहसु-

वन पुत्र सांचे सुयशरूप जलभरा समुद्र हैं इति रेख देखि ताको फल बिचारि आगमी होनहार कहतहौं ३ । २० ॥

मू० । सुनहुलषणकीमातुसुलक्षणसुवनतुम्हारे । निजभाइनसों प्रीतिप्रबलरणकेजितवारे १ जितवारेबलबाहुगुणनिपूरे सबभाई । रामसंगशुभपुरीतहाँसबहोहिंसगाई २ होहिं सगाईजनकपुरजनककन्यकाआनिकै । सत्यजानुरानीवचनभूँठनकहौंबखानिकै ३ । २१ ॥

टी० । हेलषणकी मातु सुमित्रा तुम्हारे सुवन सुलक्षण अर्थात् तुम्हारे दोऊ पुत्र उत्तम सुंदर लक्षणनते भरे हैं पुनः निज अपने भाइनसों प्रीति अर्थात् रघुनंदनते लषण प्रीतिरखि हैं तथा भरतते शत्रुहन प्रीति रखिहैं पुनः प्रबलरणके जितवारे मेघनाद लवणासुरादि जे प्रकर्षकरिकै बली राक्षस दैत्य इत्यादिको रणमें जीतनहारहैं १ बाहुबल करिकै बड़े बलिनको जीतनेवाले बली बीर पुनः धर्म नीति विद्या दया शील दीनपालता सुलभ उदारता क्षमा समता शांति धैर्य थिरतादि उत्तम गुणन करिकै सबभाई पूरे हैं पुनः शुभ मंगलमय पुरीमें रामसंग रघुनाथजी के बिवाहकेसाथै तहां एकही माडवमें सबभाइनकी सगाईहोहिं बिवाहहैहैं २ संबंधु राजा जनककी चारिकन्यका तिनके संग जनकपुरमें सगाई चारिहु भाइनके बिवाहहोइहैं तिनकोआनि बिदाकराइ कुशलपूर्वक घरको ऐहैं इत्यादि मेरे बचन सत्यमानु हेरानी मैं भूँठ बखानकरि नहीं कहतहौं सत्य है ३ । २१ ॥

मू० । सुनतीमनरानीमगनमुक्ताथारभराय । लेनकह्योहँसिकौशलारामहिंदीनछुवाय १ रामहिंदीनछुवायहाथधरिदेउ अशीशा । बालकरहुकल्याणडीठिमूठिडारहुखीशा २ खीसकरहुप्रभुरोगसकलमन्त्रनपढ़िबानी । बोलीडारेसुवनहाथजोरेसबरानी ३ । २२ ॥

टी० । शिवजीके वचन सुनतसंते सबरानी आनंदमें मगनमनहै थारमें मुक्ताभरायकै कौशल्या हँसिकै लेनकह्यो अर्थात् हे योगी भिक्षालेहु पुनः योगी के पायनमें रघुनाथजीको छुवायदन्हि १ रघुनाथजी को माथ

पांयन में छुवाय कहे कि हेयोगी बालकेमाथेपर हाथधरि आशीर्वाद देहु आशीर्वाददै बालकनको कल्याणकरहु पुनः डीठि जो नज़रि मूठि टोना आदि तिनको खीस नाशकरिडारहु २ हेप्रभु योगिराज मंत्रपढ़ि रक्षा बाधीते बालकनके सकलरोग नजरिटोना पूतनादिको खीसकरहु इत्यादि सुवन पुत्रनको पांयनतरडारे हाथजोरे सबरानी बोलीं ३ । २२ ॥

मू० । बोल्योयोगीयोगनिधिसुनहुकौशलामाय । डीठिमूठिअन
खानिअनरसनिदेहौंसकलबहाय १ देहौंसकलबहायबा
लकबहूंनहिंरोई।पलकागोदहिंडोरसुमुखसबथलशिशुसो
ई २ सबथलशिशुसुखरहीहोयनहिंकबहूंरोगी । भृंगीश
ब्दसुनायचल्योमनहँसिकरियोगी ३ । २३ ॥

टी० ।योगनिधि योगक्रिया सिद्धिनको भरा योगीबोल्यो हेमाय कौशल्या मेरेबचन सुनहुडीठि जो नज़रिमूठि जो टोना अनखानि जो दुर्भावते हाहमारत ताकी नजरि तथा अनरसानि उदासीनता इत्यादि सकलनको बहायदेहौं १ सबबाधा बहायदेहौं आनंदबशरहते बालक किसी समय कबहूं नरोई पुनः पलकापर तथा गोदमें पुनः हिंडोरा इत्यादि सब थलमें शिशु सुमुख सोई बालक प्रसन्नमुख सुखपूर्वक सोई २ सब थल में शिशु बालक सुखपूर्वकरही अबकबहूं रोगीनहोई सदा आनंदरहीइत्यादिकहिभृंगीशब्दसुनाय भृंगीबाजाबजाय हँसिकैभाव जिनकीकृपातेलोकनकोपालनहोत तिनकोमातानजरिभरावतीहैं पुनःयोगीचल्यो ३ । २३ ॥

मू० । भूपतिरानीमनमगनशिशुसबअतुलनिहारि । गोदमोद
मनगावतीरामदुलारिदुलारि १ रामदुलारिदुलारिवारि
तनमनसबडारैं । क्षौरकर्मकोसुदिनबैठिकुलगुरुहिहँका
रैं २ गुरुहिहँकारिविवेकसुफलकरिमंगलबानी । गावहिं
गीतविचित्रमोदमयभूपतिरानी ३ । २४ ॥

टी० । शिशु सब अतुल निहारि स्वरूपता स्वभाव तेज सुलक्षण इत्यादि अतुल संख्या तौलरहित देखिकै भूपति दशरथ महाराज तथा कौशल्या आदि रानी प्रेमानंदमें मनते मग्न हैं रघुनंदनको गोदमें लिहे मनमें मोद आनंदभरा रघुनंदनको दुलारि दुलारि मंगलमय गीतगावती

हैं १ रघुनाथजीको दुलारिमन तन सर्वसधन वारनकरि डारतीहैं अर्थात् मनलगाये तनसों लालन पालन करतीहैं धन न्यवछावरि करती हैं क्षौर कर्म मूड़नको सुदिन यथा तीसरे वर्ष जेठशुक्ल दशमी भृगुवार हस्तनक्षत्र कन्यालग्न इत्यादि सुंदरदिनको महाराज सभामें बैठि कुलगुरुहि हँकारें कुलकेगुरु वशिष्ठजीको बुलाय २ गुरुहि हँकारि विवेक विचार पूर्वक सफलकिये मूडनकरि अपनामनोरथपूर्णकीन्हे बाजाबंदिनकी विरदावली ब्राह्मणकी वेद धुनि इत्यादि मंगलबाणी उच्चार ह्वैरहीं बारबधू ग्राम स्त्री विचित्रगीत गावत रानिन सहित भूपति दशरथमहाराज मोद आनन्द-मय हैं ३ । २४ ॥

मू० । सन्तोषेमाँगनसकलगुरुतियद्विजपहिराय।बालककोशल
पालकेचिरंजीवसबभाय १ चिरंजीवसबभायदेतआशि
षअनुकूले । नृपरानीकेसुकृतसुतरुकरहेअरुफूले २ फू
लिअवधनारिनरतेअतिआनँदपोषे । नाकनगरअहिनग
रनारिनरमनवांछितसबतोषे ३ । २५ ॥

टी० । बंदी मागध सूत नटादि याचकनको संतोषे मन भावत दान दीन्हे पुनः गुरुवशिष्ठकी तिया तथा द्विज अपर ब्राह्मणनकी स्त्री इत्यादि को भूषण वसन पहिरायेते सब आनन्दवश सबकहत कि कोशलपाल अयोध्याको पालनहारे दशरथ महाराजके बालक सबभाय चिरंजीव रहैं चिरनाम बहुतकाल जीवहिं १ राम भरत शत्रुहनादि सबभाय चिरंजीव रहैं ऐसा आशीर्वाद अनुकूले प्रसन्न ह्वैकै सबदेत तथा प्रशंसा करते हैं कि नृपदशरथ महाराज रानीकौशल्या कैकेयी सुमित्रा इत्यादिके सुकृत सुर-तरु करहे अरु फूले पूर्वपुण्याय रूपजो कल्पवृक्षहै सो करहे कलिआने अर्थात् उत्तमपुत्रको जन्मभया पुनः फूले अर्थात् नामकरण सूर्यावलो-कन भूम्युपवेशन मूडनादि उत्सव होतेजातेहैं बिवाहमें सफल होइँगे २ अत्यंत आनन्द करिकै पोषे ताते अयोध्याजीके नारि नर परमानंद के भरेफूले फिरते हैं नाकनगर जो इन्द्रलोक अहिनगर जो पाताललोक तहांकेबासी लोग सब बांछित मनकामना पाये ताते तोषे संतोष कीन्हे भावजो अवतारभयातौ कछुकालमेंहमारे दुःखदायकको माराहिंगे ३ । २५ ॥

मू० । आँगनरानीचलनसिखावतचारयोसुतकरलाय । गिरत

परतउठिचलतहँसतपुनिरोवतरहतरिसाय १ रोवतरह
तरिसायअँगुलीटोपीडारैं । मुक्तनमालविदारिनयनभ
रिनीरनिहारैं २ नीरनिहारैंहँसतसुनतअतितोतरिबानी।
भजतभवनकोंपैठिधरतलैआँगनरानी ३ । २६ ॥

टी० । कौशल्यादि रानी रघुनंदनादि चारयोसुतन पुत्रनको करलाय हाथ पकराय आँगनमें चलन सिखावत चलतमें अरबरायकै गिरि गिरि परतपुनः उठि चलत प्रसन्नह्वै हँसत कबहूँ उदासीन ह्वै रोवत जब मन भावत न भयो तब रिसायरहत मातुके बुलाये कनियाँको नहीं आवत १ जब रिसायरहत मातनके बुलाये न आये तब माताजाय बिलगबैठी तब अत्यन्त रिसाय अँगुलीटोपी उतारि भूमिमें डारिदेत तबहूँ माता नआई तब मुक्तनमाल बिदारत मोतिनके माला गरेते तूरिफेंकि देत तबहूं जो माता न लगआई तब नयननमें आँसु नीर भरे मातनकी ओर निहारत २ नेत्रनमें नीरभरे निहारत देखि माता धायउठाय गोदमें लैलिये तब प्रसन्न ह्वै हँसतपुनः तोतरिबानी बोलत सो मातासुनत आनन्द होत पुनः भजत भवनमें पैठि भागिके अँधेरे मन्दिरमें पैठिजाइ लुकते हैं तहां ते उठायलाय रानी आँगनमें धरती हैं पुनः भागत ३ । २६ ॥

मू० । भूपहर्षिकरवायोरुचिसोंकरणबेधउपवीत । छोटेधनुषबा
णकरलीन्हेसमुभनलागेनीत १ समुभनलागेनीतिवेद
विद्यागुरुदीन्ही । धर्मकर्मगतिअगतिस्मृतिश्रुतिमगज्य
हिकीन्ही २ श्रुतिमगज्यहिकीन्हीजगतजाहिसिखायेसब
सिख्यो।धर्मप्रकटजगकरनकोपरब्रह्मनृपघरबस्यो ३ । २७

टी० । गेरहेंवर्ष बैशाखशुक्क दशमी गुरुवार उत्तराफाल्गुणी वृषलग्न में भूपदशरथ महाराज हर्षि रुचिसों आनन्द ह्वै चाह सहित कर्ण बेध कनछेदन पुनः यज्ञोपवीत करवाये अर्थात् मूंजी मेखला दंडादि धारण कराय वेदीपर बैठाय वेद विधानतें चारिहु कुमारनको जनेऊदीन्हे पुनः छोटेधनुष तथा बाणकर हाथनमें भाव बाण चलावन सीखने लगे पुनः उचित अनुचित आचरण रक्षादंड प्रजापालादिनीति समुभन लगे १ नीतिसमुभनलगे पुनः गुरु वशिष्ठ वेदविद्यादीन्हे अर्थात् चारिहूवेद न्या-यादिशास्त्र व्याकरणादि बिद्या सब देशनकी भाषा सब जीवनकी बोली

5879 dt- 3.3.62 6-00

DBA000005879HIN

इत्यादि सबपढ़ाये पुनः गतिअगति कर्मधर्म ज्यहि श्रुतिमगस्मृतिकीन्ही अर्थात् जो धर्मके कर्म करिकै स्वर्ग बैकुंठादि जीवनकी शुभगति होती है तथाजो अधर्मकर्मनकरिकै गर्भवासनीच योनिनमेंजन्म रुजनरक सांसति आदि यावत् जीवनकी अगति होतीहै इत्यादि जो वेद सुगम जानिबेहेतु स्मृतिमानवादि धर्मशास्त्र हैं सो पढ़े २ जौनेप्रभुने श्रुतिमगरचे वेद धर्म राह संसारमें प्रसिद्धकीन्हे पुनः जाहिसिखाये सब सिख्यो अर्थात् जाकी कृपाते वेदधर्म कहबेको आचार्य समर्थभये सोई परब्रह्म जगमें वेद धर्म प्रकट करने हेतु नृपघर बस्यो दशरथ महाराजके घरमें बालक है आइ वासकीन्हें ३ । २७ ॥

मू० । जाकेनामप्रभावतेजन्ममरणदुखजाय । वेदशेषशारदशि
वाशिवकोअगमदिखाय १ शिवकोअगमदेखायभेदब्रह्म
हुनहिंपायो । भक्तनकेहितसोयकौशलाउरमहँआयो २
कौशल्याकेउरबसेदशरथसुतकहिगावते । कामक्रोधमद
लोभदुखनाशैनामप्रभावते ३ । २८ ॥

टी० । जा प्रभुके नाम प्रभावते जन्म मरणादि भव दुःख जीवको छूटि जाता है यथा मरणकालयमनके मुखते हराम निसरिगया ताके प्रभावते हरिपुरवासपायो पुनः वेद शेषशारदा शिवाजो पार्वती तथा शिव इत्यादि को अगम देखाय जिनकी ऐश्वर्य महिमा नहीं जानिसकत १ शिवको अगम देखाय तथा जिनको भेद ब्रह्मौ नहीं जानिपायो सोई प्रभु भक्तन के हित कौशल्याजी के उरमें आयबसे सब के देखनमात्र गर्भबास में आये २ कौशल्याजी के उरमेंआये ताते वेद पुराणादि सब दशरथसुत कहि गावते जिनके नामप्रभावते रामनाम स्मरण करतसन्ते जीवनको काम क्रोध मद लोभादि समग्रदुःख नाशहै शुद्धहोत ३ । २८ ॥

मू० । विश्वामित्रमहाऋषयविपिनबसैंमुनिसंग । योगयज्ञहो
मादिव्रतकरतदनुजखलभंग १ करतदनुजखलभंगहृद
यमुनिमन्त्रविचारयो । हरिअवतरेसुअवधहरणमहिभार
नभारयो२ भारयोसुखउपजायकैहरिहोइनयननिविषय ।
सरयूसरिस्नानकरिगेदरबारमहाऋषय ३ । २९ ॥

टी० । क्षत्रीते ब्राह्मणभये ब्रह्माको अनादरकरि दूसरी सृष्टिरचे तथा गायत्री जपविधानमें विश्वामित्रै ऋषि लिखे ऐसे महान् ऋषि विश्वामित्र अनेकन मुनिनके संग विपिन बन गंगातट चरित वनमें बसतेरहैं जब रावण अधर्म प्रचारहेतु भूमण्डलमें राक्षस टिकाइदिया तथा चरित बन में सेनासहित ताडकासुबाहु रहतेरहैं ते ऐसा उपद्रवकरैं कि जब विश्वामित्र यमनियमादि योगक्रिया तथा व्रत होम यज्ञादि करनेलगैं तबखल दनुज दुष्ट राक्षस भंगकरिदेवै १ खल दनुजनको भंगकरतेदेखे तब मुनि विश्वामित्र हृदयमें मन्त्रविचारयो यह विचार दृढकियो कि महिभारयो भारनहरण हरि अवध अवतरे भूमिके भारी भारन रावणादिको हरण श्रीरघुनाथजी अयोध्याजी में अवतारधरे तहाँजाय महाराजते माँगिकै राम लषणको लावौं ते रक्षाकरैं तब यज्ञकरौं २ पुनः हरिहोई नयनन विषय रघुनन्दनको सुन्दर स्वरूप नेत्रनभरि देखिहौं इति भारीसुख उरमें उपजायकै मनोरथ करतसन्ते चले अयोध्याजी में पहुँचि सरिनदी जो श्रीसरयूजी में स्नानकरि पुनः महाऋषय विश्वामित्रजी महाराज के दरबारके द्वारपैगये द्वारपाल के हाथ खबरि जनाये ३ । २९ ॥

मू० । सुनिराजासहसाउठेमिलेधायपरिपाँय । लैआयेभीतरभ
वनशुभआसनबैठाय १ शुभआसनबैठायनारियुतमुनि
वरपूजे । उदयभयोनिजभागमोहिंसमसुकृतनदूजे २ दू
जोआपुनजानियेपदरजकोसेवकसदा । कहियकृपाकरि
काजनिजकरहुंतुरतमंगलप्रदा ३ । ३० ॥

टी० । विश्वामित्रको आगमनसुनि राजादशरथजी सहसा शीघ्रही उठे धायकै मुनिके पाँयनपरि प्रणामकरि मिले भाव ऋषि उठाय हृदय में लगायलीन्हे पुनः राजमन्दिर के भीतरलाये तहाँ शुभआसन मंगलीक सिंहासनपर बैठाये १ शुभ आसनपर बैठारि पुनः नारियुत कौशल्यादि रानिनसहित मुनिवरपूजे मुनिनमें श्रेष्ठ जो विश्वामित्रजी तिनकी षोडशोपचार पूजाकीन्हे पुनः महाराजबोले हे मुनीश्वर आपुके दर्शनभयेते निज मेरी बडीभाग्य उदयभई मोहिंसम आजु सुकृत दूजे किसीकी नहीं है अर्थात् महाभाग्य मेरी उदयभई तबतौ आपु ऐसे महात्माआय दर्शन दीन्हेउ २ पुनः महाराज बोले हे मुनीश दूजो आपुनजानि दूसरा कोई भाव मेरेमें न आपुजानिये केवल आपुकी पदरज पाँवनकी धूरिको सेवक

सदाहौं अर्थात् लघुदासकरि सदा जानिये पुनः जिसहेतु आपुआयेहौ सो निज आपिताकाज कृपाकरि कहिये सो मंगलप्रदा प्रकर्ष करिकै मंगलको देनहारा आपुको काज ताको सुनतसन्ते तुरतही परिपूर्ण करोंगो भाव नेकहू बिलम्ब न करिहौं ३ । २० ॥

मू० । सुनिभूपतिद्विजमित्रगायमहिशोचनिवारन । ममआश्र
मखलदनुजकरतउतपातअपारन १ पारनपावहिंमुनिवि
कलरयनदिवससंकटपरै । धर्मजातश्रुतिसेतुसकलबल
खलहरै २ हरैविपतिदारुणजबैरामलषणजोदेहुमाति । तु
मकहँयशइनकोसुफलगुणहुनमनसुनिभूमिपति३ । ३१ ॥

टी० । द्विज ब्राह्मण तिनके मित्र सदा हितकर्ता तथा गाय अरु महि जो पृथ्वी इत्यादि के शोच दुःख तर्कणा ताके निवारण मिटायदेनहारे अर्थात् हे धर्मधुरीण भूपति महाराज दशरथजी मेरेवचन सुनिये मम मेरे आश्रमपर खल दनुज दुष्ट राक्षस अपारन जोकहेते पारनहीं पाइयत ऐसे अधिक उत्पात करतेहैं १ ऐसे राक्षस घेरेरहते हैं कि रैनि दिवस रातिउ दिन महासंकटमें परे सब मुनि बिकलहैं ताते दुःख सिंधुते पार नहीं पावते हैं पुनः श्रुति सेतु वेदकी मर्यादा धर्म नाशहूनजात भाव धर्माचा- चरण कछु भी नहीं करनेदेत खल सकल बल हरैं अर्थात् मुनिनको बल योग जप तपस्या हवनादि सो दुष्ट राक्षस करने नहीं देत ताते मुनिनको सब बल हरेलेतेहैं २ इत्यादि दारुण बिपत्ति सब मुनिनको है सो तब हरैं नाशहोइँ जब ऐसी दयामय मतिकरौ राम लषणको हमें माँगेदेहु येजाय राक्षसनको मारैं तब हमारी बिपत्ति छूटी पुनः तुमको भी पावन यशहोई अरु इन बालकनको सब मनोरथ सफलहोई भाव इसबातमें सिवाय लाभ के हानि नेकहू किसी को नहीं है ऐसा बिचारि हे भूपति मनमें गुणहुना हानि कछु न बिचारहु हर्ष सहित देहु ३ । ३१ ॥

मू० । सुनतैराजासूखिगोकमलबदनकुम्हिलान । नाहकमुनि
दाहयोहदयमांगहिजीवनप्रान १ मांगहिजीवनप्राणराम
लक्ष्मणकिमिदेऊं । जाहिनिरखिरहे नयनपलकानिरखत
नाहिंलेऊं २लेउअयशपातकसबैसुनिमुनिमनमेंगुणिकहै।
मांगहुतनधनधेनुमहिरामदियेकिमितनुरहै ३ । ३२ ॥

टी० । रघुनंदनको वियोगकारक अप्रियवचन मुनिके कहे सुनतै राजा दशरथजी सूखिगयो कमलवदन कुम्हिलान अर्थात् यथा प्रफुल्लित कमलपालकी झारलागे मुरझाय जात तथा वचनपालपाय कमल सम मुख महाराज को सूखिगयो करुणावश शोचकरनेलगे मुनि नाहक हृदयदाहेउ बेअपराधही विश्वामित्र हमारे हृदयमें विरहाग्नि दाह उपजाये काहेते मेरे प्राणन के जीवन जिआवनहारे माँगतेहैं १ मेरे प्राणन के जीवन राम लक्ष्मणको माँगते हैं तिनको किमि कैसे देउँ काहेते जाहि निरखिरहै जिनको देखतसंते मेरे प्राण तनमें रहतेहैं पुनः निरखत नयनपलक नहिं लेउँ अर्थात् रघुनंदनके मुखचंद्रकी माधुरी अवलोकित संते चकोरवत् नैत्रनते पलक नहीं लगावताहों २ सबै पातकअरु अयशलेउँ सबप्रकार के पाप अपयश सो सहिलेहों रघुनंदनको न देहों इति पूर्व मुनिके वचन सुनि महाराज मनमें गुणि विचारकरि प्रसिद्ध मुनिसों कहत कि तनु मेरी देह माँगौ धन मणि सोनादि धेनु गाई महि पृथ्वी इत्यादि माँगउ सो हर्ष सहित देउँ अरु रामदिये किमि तनुरहै जो रघुनंदनको देदेउँ तौ मेरे तनमें प्राण कैसे रहैं ३ । ३२ ॥

मू० । कहबशिष्ठराजासुनहुसुतमुनिपतिकहँदेहु । इनकीकृपाकृ
पालकीकुशलआयहैंगेहु १ कुशलआयहैंगेहदनुजसब
करहिंसंहारन। सिद्धशुद्धकरिहोमसुयशजगमेंविस्तारन २
विस्तारनमंगलसुवनआनभांतिनाहिंमनगुनहु । सौंपहु
विश्वामित्रकोंकहबशिष्ठभूपतिसुनहु ३ । ३३ ॥

टी० । विश्वामित्र के सन्मुख महाराज की दशा देखि अनेक विघ्न विचारे तिनके निवारण हेतु वशिष्ठजी कहे कि हे राजा दशरथजी सुनहु मुनिपति जो विश्वामित्रजी तिनको सुत पुत्रनको देहु यामें कछु हानि नहीं है काहेते इन विश्वामित्र कृपाल कृपागुण मंदिरकी कृपाते तुम्हारे पुत्र कुशल पूर्वक गेह घरको आइहैं १ कौन भांति कुशल गेह को आयहैं दनुज सब करहिं सँहारन दनुज राक्षसादि यावत् यज्ञ विघ्नकर्त्ता हैं तिन सबको रघुनंदन नाशकरिदेइँगे पुनः होम मुनिको यज्ञ ताको शुद्ध सिद्ध करि विधिपूर्वक पूर्णकरि जगमें सुंदर यश विस्तारन करि हैं अर्थात् मुनिनके सुख हेतु यज्ञ रक्षाकरि दुष्टनको मारिहैं ताते इनको सुयश संसार में फैली सब जन गानकरि हैं २ हे महाराज तुम्हारे सुवन पुत्र मंगल

बिस्तारन प्रसिद्ध उत्सव संसार में फैलावनेवाले हैं आनभांति नहिं मन गुनहु अर्थात् केवलमाधुर्य्यमें कोमल राजकुमारै न बिचारहु ऐश्वर्य ते परब्रह्मको अवतार हैं लोकमें दुष्टनको नाशकरि भूभार उतारि वेदको धर्म स्थापन करहिंगे ऐसा बिचारि हर्षसहित बिश्वामित्र को पुत्र सौंपहु देदेहु इत्यादि बशिष्ठजी कहे कि हे भूपति दशरथ मेरे बचन सुनहु मानहु ३ । ३३ ॥

मू० । गुरुबशिष्ठकेबचनकोकैसेतजैंनृपाल । रामलषणकोबोलि कैसौंपेमुनिहिकृपाल १ सौंपेमुनिहिकृपालशीशसबसभा नवायो । कौशिकदियोअशीषमनहुंजपतपफलपायो २ पयबहायबारिजनयनउठेमौनधरिभवनको । उत्तरकछून मुखकढ्योगुरुबशिष्ठकेबचनको ३ । ३४ ॥

टी० । बशिष्ठजीगुरुहैं तिनकेबचननको नृपालकैसेतजैं दशरथमहाराज गुरुके बचननहीं त्यागिसकेहैं ताते रामलषणकोबोलि लषणलाल सहित रघुनन्दनको बुलाय कृपाल मुनिहिं सौंपे कृपागुण मन्दिर मुनि बिश्वामित्रको देदीन्हे १ कृपाल मुनिहि पुत्रसौंपि पुनः सबसभासहित महाराज शीश नवायो मुनिके प्रणामकीन्हे कौशिक बिश्वामित्रजी महाराज को अशीश दीन्हे मनहुं जपतप फलपाये प्रभुको पायकैसे आनन्द भये मानहुं जन्मभरि जो कछु मंत्रजप तपस्यादि कीन्हे त्यहि सुकृतको फल पाये हर्षसहित चले २ इहांदशरथमहाराज पुत्रबियोगदुःखते बारिजकमल सम नयनते पंयआँसु जल बहाय सभातेउठे भवन घरके भीतरको चले गये बशिष्ठजी के बचन को उत्तर कछु मुखते न कढ्यो गुरू को बचन अंगीकारकीन्हे ३ । ३४ ॥

मू० । बेदमंत्रदैसकलअंगशत्रुनकेमारण । नींदभूखअरुप्यास त्रासतसबअशुभनिवारण १ अशुभनिवारणपंथसुपथमंगलमयसुन्दर । बड़ोभागनिजसमुझिकरतआयसुप्रभुसादर २ सादरपूछतबेदगतिमृगतरुभूधरभूमितल । पाठ करावतगुणकहतबेदमंत्रदैदैसकल ३ । ३५ ॥

टी० । शत्रुनको मारन योग्य बाणबिद्या बलाबलादि सकल अंग

ताकेमंत्र बिश्वामित्रजी प्रभुकोदै सबभाँति सबलकीन्हे कौनकौन सबलता नींद भूख प्यास अशुभ अमंगल कर्त्ता यावत् बिघ्न तिनसबको निवारण मिटाइ देने योग्य बाणविद्या १ अशुभ पंथ निवारण अमंगलकर्त्ता पन्थ मिटाइ सुन्दर मंगलमयपंथदेनेवाली भावविद्याकेप्रभावते सबभांतितेया-नन्दबनारहे सो विद्यापायनिज आपनोबड़ोभाग्य समुझिप्रभु श्रीरघुनाथ जी सादर आदरसहित मुनिको आयसु करत श्रद्धासहित आज्ञापालन करत २ सादर वेदगति आदरसहित बेदतत्त्वको भेद पूछते हैं तथा बाल स्वभावते बनमें मृगनकी जाति तरु वृक्षनकेनाम भूधर पर्वत भूमितल पूछते हैं यथा यहकौन मृगा है यह काहेको वृक्ष है यहकौन पर्वत इस भूमिकाको क्यानामहै इत्यादि मुनिते पूछतजात सो बतावत पुनः मुनि बाणबिद्यामय बेद के सकल मंत्र दैदै प्रभुसों पाठ करावत पुनः उसी मंत्रके गुणकहत यथा यह अग्निबाण सबको भस्म करिसक्ता यहबायु बाण सबको उड़ाइ सक्ता इत्यादि ३ । ३५ ॥

मू० । मारयोबीचहिताड़काएकबाणश्रीराम । मुनिचितवतचकृ-
तखड़ेगईहर्षिसुरधाम १ गईहर्षिसुरधामरामकोमुनिमन
चीन्हे । आश्रमनिजप्रभुपूछियज्ञआरंभितकीन्हे २ कीन्हे
यज्ञअरंभप्रभुधनुधरिबाणसुधारिकै । खलसुबाहुमारीच
सँगधायोधूमनिहारिकै ३ । ३६ ॥

टी० । बीचराह में ताड़का मिली ताको एकहीबाणते श्रीरघुनाथजी मारे छाती में बाण लागतही देहत्यागि हर्षि कै अर्थात् बिमान पर चढ़ि सुरलोक को गई ताकी गति मुनि चकितह्वै खड़े चितवतरहे एकबाणते वाको मरिजाना स्वर्गजाना आश्चर्य माने पुनः धीर्यकीन्हे १ क्याधीर्य कीन्हे अबतक मुनि माधुर्य रूपमें भूलेरहे जब ताड़का हर्षि सुरधाम गई तबमुनि मनते दृढ़ करि रघुनाथजी को चीन्हे ऐश्वर्य रूपको बोधभया पुनः आश्रममें आनि मुनि प्रभुसों पूछि यज्ञ आरंभ कीन्हे २ जबमुनि यज्ञ आरम्भ कीन्हे तब प्रभु धनुषपर बाण सुधारिकै रक्षाहेतु आगे खड़े भये यज्ञको जो धूम उठा ताको निहारि भंगकरिबे हेतु खल महादुष्टसु-बाहु मारीच सेनासंगलै क्रोधकरि मुनि आश्रम को धायो ३ । ३६ ॥

मू० । दलमारेसबलषणअनलशरजारिसुबाहै । प्रभुमारीचहि

उदधिपारकरिबाणचलाहै १ बाणचलाहैअफलसुफलक
रिहोमबिधानै । वर्षतसुरशुभकुसुमअशीशतकृपानिधा-
नैं २ कृपानिधानहिजानिकैयज्ञभागदैअमियफल । धनु-
षयज्ञथलजनककेचलेरामऋषित्यागिथल ३ । ३७ ॥

टी० । राक्षसन को दल जो संगमें रहा ताको लक्ष्मणजी मारे पुनः अनल शर अर्थात् अग्निबाणते प्रभु सुबाहुजारे सुबाहुको भस्मकरि पुनः प्रभुको बाण ऐसा वेगतेचलाहै जो मारीचको उड़ाय उदधिसमुद्र के पार करिदियो १ कैसाबाण चलाहै अफल बिनागाँसिकोरहा सबबिघ्न निवा-रणकरि होमकी जो बिधि बिधानरहै ताको सुफलकरिदीन्हे यज्ञ पूर्णभई खलनाशभये ताते आनंद ह्वै सुर जो देवता ते कुसुम फूल बर्षते हैं पुनः कृपानिधानैं कृपा गुणभरेमंदिर जो श्रीरघुनाथजी तिनको आशीशत देव-तासब आशीर्वाद देतेहैं २ कृपानिधानको रक्षाकर्त्ता जानिकै यज्ञभागको अमियफल दै अर्थात् बहुत दिनपर स्वतंत्रह्वै यज्ञको भागपाये ताते देवता अत्यंत प्रसन्नह्वै अमृतकी समान नाशरहित उत्तम फलदीन्हे भावरामा-नुराग दृढ मुनिको करि दीन्हे ३ । ३७ ॥

मू० । गौतमऋषिकीभामिनीतनपषाणज्यहिठौर । गयेलषणरघु
बंशमणिमुनिकौशिकशिरमौर १ मुनिकौशिकशिरमौरपू-
छिबूझोसबकारण । दारुणदाहबिचारिपाँवधरिकीन्हनि-
वारण २ कीननिवारणपाँयकीजयकहिउठिद्युतिदामिनी ।
तुलसीबिनतीमृदुकरतगौतमऋषिकीभामिनी ३ । ३८ ॥

टी० । गौतमऋषिकी भामिनी स्त्री अहल्या पतिशापते वाकोतन पा-षाण पत्थरह्वै ज्यहिठौरपरीरहै तहाँको लषणसहित रघुबंशमणि श्रीरघुनाथ जी तथा मुनिनके शिरमौर कौशिक विश्वामित्रजी सहितगये १ मुनिन के शिरमौर कौशिकते पूछिकै सब कारणबूझो शापहोनेको सबहाल प्रभु [illegible] तापहै ऐसा विचारि पाँवधरि निवारण कीन्ह श्रीरघुनाथजी अहल्या को दुःखितजानि पदरज छुवाय पापशापते उद्धारकरि पावन नवीन दिव्यदेह करिदीन्ह २ जब प्रभु वाकोशोक निवारणकीन्हें तबपाँयकी जयकहि द्युति

दामिनि उठी अर्थात् दामिनीकी ऐसी ज्योतिहै जाकेतनमें ऐसीदिव्यदेह अहल्या श्रीरघुनाथजीके पाँयनकी जयजयकारकरिउठी पुनः गोसाईंजी कहत कि गौतमऋषिकी भामिनी अहल्याउठि प्रभुको प्रणामकरि हाथ जोरि प्रेमपुलकावली सहित मृदुविनती करत कोमलबाणीते श्रीरघुनाथ जीकी स्तुतिकरनेलगी ज्ञानगम्यश्रीरघुनाथजीकीजयहोयइत्यादि ३।३८॥

मू० । जयजयजगदातारप्रभुहरणघोरमहिभार । दीनबन्धुदानवदहनसबगुणरूपउदार १ सबगुणरूपउदारभजत शिवशुकसनकादी । पावतथाहनचरितमध्यअन्तहुनहिं आदी २ आदिजन्मजड़कुकृतकरिभईशापपापनमई । आजुपरसिपदपद्मरजरामसुकृतमंदिरभई ३ । ३९ ॥

टी० । अहल्या बोली हे प्रभु जगदातार जगको सबफल देनेके दानी तथा महि घोर भारपृथ्वीपर रावणादि महाभयंकरभारहैं तिनके हरणहार आपुकी जयहोय जयहोय हेदीनबन्धु दानव दहनपौरुषहीन दीनजन के बन्धु समान हितकर्त्ता तथा दुष्टदैत्य राक्षसादि बनको भस्मकर्त्ता सब गुणरूप उदार कृपा दया क्षमा शील बात्सल्य सौहार्द करुणादि अनन्त कल्याण गुण सहित उदाररूप याचकमात्र को परिपूर्ण दान देनहारहौ १ सबगुणको भरा जोउदाररूपहै ताको शिव शुकदेवसनकादि इत्यादि सब भजत मनेंद्री लगाये आपुको सेवन करते हैं पुनः आपुके चरित आदि मध्य अन्त अर्थात् पूर्वकैसा चरित कीन्हेउ अब क्या करते हौ आगे क्या कबतक करौगे इत्यादि की थाह कोऊनहीं पावत भाव आपुको चरित अपार अगाध समुद्रसमहै तामें सबआचार्य पिपीलिका सम है २ आदि जन्मजड़ अर्थात् जाको आपनी हानि लाभ तथा दुःख सुख मोहते न सूझै ताको जड़कही यथा जड़ः अज्ञः द्वे अत्यन्त मूढस्य यदुक्तं इष्टंवा निष्टंवा सुखदुःखेवान चेद्दयोमोहात्विन्दतिपरवशगः सभवेदिहजड़संज्ञकः पुरुष इत्यादि जड़स्वभाव जन्म के पूर्वअवस्था में कुकृत करि कुकर्म करि अर्थात् बिना बिचार करिलीन्हे परपाति में रतभई भावजब हमारे पति स्नानहेतु गंगातट गये तबमुनि को रूपधरि इन्द्रआया तब बिचार करनारहै कि स्नानको चलिकै रतिके हेतु मुनि क्योंआये जो मुनिहौ तौ बतावो पूर्वहमते आपुते क्याबार्त्ताभई इत्यादि बिबेक कीन्हे छलप्रसिद्ध

है जाता सो बिचार नहींकीन्हेउ वाकेसंग रतिकरि पापमयी शापितभई सो महादुःख रहै सो आजु रामपद पद्मरज परसि सुकृत मन्दिर भई अर्थात् हे श्री रघुनाथजी आपुके पदकमलनकी धूरि लागेते पुण्य मय मन्दिर पावन भई ३ । ३९ ॥

मू० । शापपापकोदुर्गकठिनरचिकर्मनराख्यो । मनबुधिचिदहम
शृंगभरेअघबस्तुनिचाख्यो १ बस्तुसकलमलराशिकाम
मदम्भसुभटघन । सुकृतसत्यरणजीतिकर्मकोअमलसबै
तन २ तनपगसुरगुणगायप्रभुरजवत्तदरुखअनलगहि ।
रिपुहिसाहितममकर्मनृपशापपापकोदुर्गदहि ३ । ४० ॥

टी० । कर्मन पाप शापको कठिन दुर्गरचिराख्यो अर्थात् मेरे कुत्सित कर्मसोई बलराजाहै ताने शापमय कठिन अतुटदुर्ग जो कोट ताको रचि राख्यो भावपाप शापते पाषाणभया तन और कौन शुद्धकरि सक्तारहै इति कठिनदुर्ग तामें मनबुद्धि अरु चित्त अहम्जो अहंकार येचारौ शृंगकंगूरा हैं ते कैसे पुष्टरहे कि वस्तुनिचाख्यो अघभरे अर्थात् जो असत् वस्तुइ विषयबश इंद्रिनद्वारा वाकी स्वाद ग्रहणकिया ताको जो पाप समूह सो मनादि में भरे ताते मटिभर धुससम पुष्ट मनादि शृंग है १ पुनः मनोरथ चिंतवन बुद्धि सों बिचार अहंकार ते अपनपौ इत्यादि सब पुरुषस्त्री परधन हरण परहानि अपबाद तन पोषतादिमें रत इत्यादि सकलबस्तुमल जोपाप ताकी राशिढेरीताकोपाइ पुष्टबली जोकामअनेक भांतिकामना तथा मद जाति विद्या धनादि पाइ हर्षबढावना तथा दंभ पुजावने हेतु झूठा वेष बनावनाइत्यादि धन बहुतसे सुभट वीरहैं तिन को लैकै सुकृत जो सत्कर्म सत्य धर्म आचरण इत्यादि को रणमें जीति अर्थात् असत् मनोरथादि प्रचंडपरि इंद्रिय विषय व्यापार में लगाय धर्म आचार को निर्मूल नाशकरिदियो तब अमल तन जो रहासो असत् कर्मन को होगया अर्थात् पूर्वका कछु सुकृत रहा ताके सम्बन्धते जोकोई इंद्रिय सत्कर्ममें भी लागतीरहैं सो नष्टहोनेते सर्बांगतनेंद्री असत्कर्मन में लगे भावकिसीभांति मैंपावननहीं हैसक्तीरहौं तहां आपुअनुग्रहकीन्हे २ कैसे अनुग्रह कीन्हे हेप्रभु आपुके तनमेंजोपांयहैं तिनके जोगुण हैं तिन को सुरदेवता ब्रह्मादि गायरहेहैं ऐसेजो पद हैं तदरुख अनलगहि तौने

पाँयन को मेरी सन्मुख करना रूपजो अग्नि है ताको गहिकै मम कर्म नृपरिपुहि सहित शापपाप को दुर्ग रजवत् देहभस्मकरि दीन्हेउ अर्थात् पदरज मेरे शीशमें लगाय पाँयन को प्रभावरूप अग्नि लगाय मेरे शत्रु कुटिल कर्म जो सबलराजा रहा त्यहि सहित पापशापको जोदुर्घट कोट पाषाणको तन ताको धूरि सम सहजही भस्मकरि मोकोशुद्धकरि दीन्हेउ इत्यनुग्रह ३ । ४० ॥

मू० । अभिमतफलदातारदेवतरुवरसमकारन। कर्मकुमतिमल लागकृपाकरिकीननिवारन १ कीननिवारनपापभईमुनिघर कीभामिनि । अबवरदीजियमोहिंचरणरतिदिनअरुयामि नि२दिनअरुयामिनिरतरहौंचरणहरणमहिभारहौ । तुल सिदासबरपायकहिजयरघुपतिदातारहौ ३ । ४१ ॥

टी०। हेश्रीरघुनाथजी आपुअभिमत फलदातार मनवांछितफल देनहारे हौ कौनभाँति देवतरुवर समदेवनको वर श्रेष्ठ तरुवृक्ष जो कल्पवृक्ष ताकी समान बेस्वार्थ सहज स्वभावते मनोकामना पूर्णकरि देतेहौ सन्मुख होत शरण मात्रही काहेते सबभूतमात्रके आदि कारण सबको उपजावन हारेहौ कर्म कुमति मललाग मेरी मतिकुत्सित भई अर्थात् बिनाबिचारे कुकर्म कीन्हेउँ ताहीते मलपाप मेरे लागिगया ताको आपु कृपाकरि निवारणकीन पापछुड़ायदीन्हेउ १ पापनिवारणकीन्हेउ पुनः शुद्धह्वै मुनि घरकी भामिनी नवीन पावन स्त्री सम मुनिकीपत्नी भइउँ इति लौकिक स्वार्थ तौ सब आपने किया अब परमार्थ हेतु वरदीजिये मोहिं कौन वर दिन अरु यामिनि चरणरति हे रघुनाथजी आपुके पद कमलनमें दिनौ राति मेरी प्रीति बनीरहै २ पुनः अहल्या कहत हे श्रीरघुनाथजी आपु महिभार हरणहारहौ अर्थात् भूमि को भार महापाप ताको नाशकर्त्ता हौ भाव सहजै कृपासिंधु हौ ताते कृपाकरि ऐसा मेराचित्त शुद्ध सनेही करि दीजिये जामें दिनौ राति आपुके पद कमलनमें रतरहौं इति सुनि प्रभु एवमस्तु कहे गोसाईंजी वर्णन करत कि मनभावत वरपाइ सब भांति आनंद ह्वैकै अहल्या कहत जय रघुपति दातारहौ जगत्भरे को मन वांछित देबेको महादानी ऐसे श्रीरघुनाथजीकी सदाजयहोय जयहोय कहि प्रणाम करि पति धामको गई ३ । ४१ ॥

मू०। लखिगतिसुरमुनिहर्षि बर्षिशुभसुमनसराहत । अशरण शरणसमर्थघोरभवसिंधुनिबाहत १ सिंधुनिबाहतअगम सुगमबरदायकलायक।कुमतिकुकर्मकुरेखकपटकलिकलुष नशायक २ कलुषनशायकरामप्रभुतुलसिदासभजितजि करष । मनबचउरकर्मनिभजहुलखिगतिसुरमुनिमनह- रष ३।४२॥

टी०। गतिलखि सुरमुनिहर्षि सुमनबर्षि सराहत पाप शापमयीअहल्या की सुंदरि गतिभई प्रभुकी कृपाते पावनह्वै पतिको प्राप्तभई सोदेखिदेवता मुनि आनंदह्वै मंगल फूल वर्षत अरु प्रभुको प्रशंसा करतेहैं क्या सराहत अशरण शरण समर्थ जासभीतको सहायक कोऊनहींहै ऐसे अशरण को अभयकरि शरणमें राखनेको समर्थ तथा शरणमात्र भवसिंधु निबाहत भवसागरते पारकरिदेत १ भवसिंधुते निबाहत अर्थात् जन्म मरण दुःख छुडावत पुनः अगमवर सुगमदायकलायक हैं अर्थात् जो वरदान ब्रह्मा शिवादिको देनेमेंअगमहै नाहीं दैसक्तेहैं सोई वरदान सुगमसहजही दैदेने के लायक श्रीरघुनाथजी हैं कौन अगमवरहैजाकोसुगमदेनेलायकहैं कुम- ति अर्थात् जो जीवनकी बुद्धि कुमारगमें लगीहै ताते परधन परस्त्री पर अपबाद परहानि हिंसा वृथाजीवनको दंड इत्यादि जो कुकर्मकरतेहैं पुनः पूर्व असत्कर्मनको फल दुखभोगनेकी कुरेखा शीशमें ब्रह्मा लिखिदियाहै पुनः कपट अर्थात् कहते सुबचन साधुवेष अरुकर्म दुष्टनके करते हैं पुनः कालिकलुष कलियुगके जो करालपापहैं इत्यादि किसीके मिटायबेयोग्य नहीं तिनसबको नशायक नाशकरिदेनहारे अर्थात् शरणमात्र जीवनके कुमति कुकर्म कुरेखा कपट कलिकलुष इत्यादि नाशकरि शीघ्रहीजीवको शुद्धसनेही बनायलेते हैं २ कलुषनशायकरामप्रभु पापनको नाशकरन हारे श्रीरामै प्रभुहैं हेतुलसिदास देहाभिमानी जीव कर्षतजि तिनहिंभजि कर्ष जो मानमर्षतादि कठोर स्वभाव ताको त्यागि प्रभुकोभजु कौनभांति मन बच उर कर्मनिमन पद कमलनमें लगाये मुखते गुणगान उरमेंरूप को ध्यान कर्मनते कैंकर्यता इसभांति भजु काहेते जिनकी कृपातेअहल्या की सुंदरिगति देखि देवता मुनि मनते हर्षितभये ३। ४२॥

मू०। चलेहर्षिमुनिसंगरामलक्ष्मणमगमाहीं।बनउपबनमृगाविहं

गविटपलखिपूंछतजाहीं १ पूंछतमुनिसबकहतन्हायसुर-
सरिरघुराई।कहतकथाइतिहासजनकपुरपहुँचेजाई२पहुँचे
प्रभुपुरनिकटलखिबागतड़ागनिअतिभले। खगमृगमधुप
समाजयुतजनकनगरदेखनचले ३ । ४३ ॥

टी०। लक्ष्मणजी सहित श्रीरघुनाथजी हर्षि आनंदहै मुनि विश्वामित्र के संग मगमाहीं रास्तामें आगेको चले बन जो आपहीभये उपबन जो समूह वृक्षलगा येते बनसमभये तहाँ मृगा विहंग जो पक्षी कोकिला मोर चकोर शुकसारिकादि तथा विटप आँब अनार कदंब कचनार विल्वादि वृक्ष इत्यादि पूंछतजाहीं यथा यहकौनबनहै यहमृगकौनजातिहै यहकौन पक्षीहै यह कौनवृक्षहै इत्यादि पूंछत राहमेंचलेजातेहैं १ रघुनाथजी जो पूंछत ताकोउत्तर मुनि विश्वामित्रजी कहतजातसंते सुरसरि जो गंगाजी तहाँ पहुँचे रघुराई न्हाय रघुनाथजी मुनिन सहित स्नानकीन्हे पुनः रघुनाथजी सों मुनि पुराणनके इतिहास कथाकहत चले जातसंते जाइ जनकपुरमें पहुँचे २ पुरके निकट पहुँचि प्रभु श्रीरघुनाथजी बाग तड़ाग नि अतिभले लखि सुमन बाटिका बाग बन तथा पक्के ताल अमलजल कमलफूले इत्यादि बाहेरहि अत्यंत शोभा देखि हर्षे काहेते बन बागन में खग पक्षी तथा अनेक भांतिके मृगनकी समाजयुतहै तथा तड़ागन में कमलनपर बाटिकनमें फूलनपर मधुप भ्रमरनकी समाजयुतहै पुनः जनकनगर देखन पुरको चले ३ । ४३ ॥

मू०।बापीसुभगसरोजयुतसरवरविविधमराल।मानौंअगणितमा
नसरशोभादेतविशाल १ शोभादेतविशालविमलजलसु
धासपूरे।मणिगणपुरटबँधाननारिनरमज्जतभूरे२मज्जतसु
रमुनिआयजनुपर्वमानसरपायजग। लहतचारिफलपरशि
जलजापीबापीसरसुभग ३ । ४४ ॥

टी०। बापी जो बावली सो सुभग सुंदरी ऐश्वर्यमय बनी सरोज युत फूले कमलनसहित तथासर जो ताल तेवर उत्तम बने तिनमें विविध मराल अनेकहंस बैठे कैसे सोहत मानहु अगणित गनती रहित बहुत मानसरहैं ते विशाल बड़ी शोभा देरहे वा बड़े भारी ताल शोभा देते हैं १ कैसे विशालशोभा देते हैं सुधास अमृत सम स्वादिष्ट विमल जलते

पूरेभरेहैं पुनः मणिगण पुरट बँधान पुरट जो सोना अनेक रंगकी मणी जटित सीढ़ी बँधीहैं तहां भूरेनाम बहुत नारि नरमज्जत स्नान करते हैं ते कैसे शोभितहोते हैं २ यथा सोमबारी अमावस महावारुणी इत्यादि पर्बमें जगत् बिषे मानसरपाइ जनु सुर देवता मुनि ऋषिनसंयुक्तमज्जन करते हैं तिस जलको पराशि अंगमें लागने ते जापजो मंत्रजाप करने वालेहैं ते अर्थ धर्म काम मोक्षादि चारि फल लहत पावते हैं ऐसीबापी जो बावली सर जो तड़ागते सुभगहैं ३ । ४४ ॥

मू० । सुन्दरचहुँदिशिबागबनकुसुमितफलितअपार।जनुसुरधर कीबाटिकाबसीसहितपरिवार १ बसीसहितपरिवारकीरको किलधुनिराजे । पथिकनलेतबुलायत्रिविधविधिपवनसमा जै २ पवनसमाजैसुरभिसुखजनुवसंतऋतुगृहसघन। कह तुलसिदासप्रभुपुरनिरखिसुन्दरचहुंदिशिबागबन३।४५॥

टी० । जनकपुरकीचारहुदिशिबागें अरु वन सुन्दर कुसुमितफूले फलित फले अर्थात् बागन बननमें वृक्ष गुल्मलता ऐसे फूले फले हैं जिनकोक- हिकैकोऊ पारनहीं पायसकत कैसेशोभित होतजनु सुरधरकी सुरदेवता तिनकी धर जो भूमि अर्थात् देवलोककी बाटिकाबागेंहैं ते परिवार छोटे बड़े सहित तेई आय इहां बसी हैं १ देवलोककी बाटिका परिवार सहित बसी तिनमें कीर सुवा तथा कोकिलादि बोलत तिनकी धुनिराजै मधुर शब्द शोभा दैरहाहै तथा त्रिविध विधि शीतलमंद सुगंधादि पवन की समाज पक्षिन को शब्द कैसा मनोहर है यथाजातसंते पथिकनको बु- लाये लेत भाव राहगीरन को मनमोहितहोत ठाढ़े है शोभा देखते हैं २ काहेते पथिक मोहि जातेहैं त्रिविध पवनकी समाज तथा सुरभि जो सुगंध सो सुखदैरही है कौनभांति जनुवसंतऋतु गृह सघन बसंतकेबास करिबेको सघन मन्दिर है गोसाईंजी कहत जनकपुरके चारहु दिशिबाग बन ऐसे शोभितहैं जाको मनलगाय प्रभुदेखते हैं ३ । ४५ ॥

मू० । परेनृपतिसजिसैनमत्तगजरथहयराजत। नृत्यगानसुखथा नसुभगदुंदुभिवरबाजत १ बाजतबंदीसूतयूथयूथनिभट गाजैं । वनितादिकशुभगानकरहिंसुरतियलखिलाजैं २

लाजैलखिअमरावतीसुरपुरकीशोभाहरे। विविधवृन्दइंद्रादिसुरसैनसाजिजनपुरपरे ३ । ४६ ॥

टी० । जनकपुरके चारिहूदिशि बाहिर सरसरित समीपबागननमें सेना हाथी घोड़े रथ पैदरादि चतुरंगिनी सेनासजे नृपतिराजालोगपरे हैं तहांगज हाथीहयघोड़े बँधेरथखड़े इत्यादि राजत शोभादेरहेहैंतथा सुखथाननमें नृत्य गान अर्थात् तंबूगड़े कनातै घेरीं नमगीरातनेतिनमें हांड़ी भाड़भक्काडेटंगीं नीचे ऊंचा कोमल बिछौनाबिछा तापर मसनदलगी गिरदा गिलिमधरे आगे चौघड़े चंगेरखासदान पानदान अतरदान पीकदानधरे तहां मंत्री सुभटन सहित राजालोग बैठे सेवक चमर छत्र व्यजनादि सेवा साज लिहे खड़े हैं इति सुखके स्थाननमें वार मुख्यादि नृत्यगान करिरही हैं कहींसुभग सुंदरी वरश्रेष्ठ दुंदुभी बाजिरहीहैं १ यथा नगारादि बाजा बाजत तथाबंदीजन विरदावली कहिरहे हैं सूतराजनके बंशकी प्रशंसा करिरहेहैं तथा यूथ यूथनि भटगाजैं झुंडझुंड योधा गर्जतेहैं तालदैरहेहैं तथा बनिता पुरकी युवती आदि शुभगान करहिं मंगलीक गीतगायरहीहैं तिनको रूपदेखि गान सुनि देवतनकी स्त्री लजाती हैं २ लाजैलखि अमरावती जनकपुर ऐसा शोभामय है कि सुरपुर देवपुरिनकी शोभा हरे लेतीहै ताते अमरावती इंद्रपुरी साऊ जनक पुरको देखि लजाइजात भाव मेरे में ऐसीशोभा नहीं है काहेते जेअनेकन राजालोग टिके हैं ते कैसे शोभित होतेहैं यथासुर देवता इंद्रादि तेविविधवृंद अनेक प्रकारके वृंद यूथसेनसजे विभव सहित तेई वरुण कुबेर इंद्रादि आइ जनकपुरके आसपासपरे हैं ३ । ४६ ॥

मू० । धवलधामचित्रनिखचितकलशमनहुँरविज्योति । जगमगातखंभनिपुरटप्रकटदामिनीहोति १ प्रकटदामिनीहोति मोतिमणिभलकभरोखनि । भामिनिभूषणसजतमनहुंसुरतियतनधोखनि २ धोखनितनसुरबामसबधामधाम सबथलनचति । जनकनगरछबिमयचकृतहाटबाटमणिमयंखचति ३ । ४७ ॥

टी० । धवल धाम चित्रनिखचित उज्ज्वल रंगके जो मंदिर तिनमेंअनेक रंगकी चित्र विचित्र चित्र सारीखैंचीहैं तथा मंदिरके शीशपर जोकलश

हैं सो कैसे प्रकाशमान हैं मनहुं रवि सूर्यनकी ज्योतिसी प्रकाश होती है तथा पुरट जो सोना ताके बनेहुये खंभनिमें जो हीरादि मणीजटित हैं ते कैसी जगमगात यथा दामिनी प्रकटहोतीहै १ यथा खंभनमें दामिनी सी ज्योति प्रकट होतीहै तथामणि मोती झरोखन में झलकते हैं तिनके भीतर मंदिरमें भामिनी जो दिव्य स्त्री आपने अंगनमें भूषण धारण किहे हैं सो सजत शोभा दैरहेहैं अथवा अंगनमें साजि रहीहैं शृंगार करती हैं ते कैसी सुंदरी मनोहर देखातीहैं मनहुँ सुरतियतन धोखनि अर्थात् देव लोकके धोखे जनकपुर में देवनकी युवती आयगई हैं यहमाधुर्य है तथा ऐश्वर्य में जनकपुरकी स्त्री ऐसीदिव्य शोभामय हैं जिनके आगे देवनकी स्त्री मानौ धोखेहैं जो खेतमें झूंठही बनायके ठढ़ियाय दीनी जातीहैंतैसी देखात २ सुरबाम जो देवतनकी स्त्री तिनके तन जिनके आगे धोखनि सी लागत ऐसी पुरमें सबस्त्री ते धाम धाम मंदिर मंदिर प्रति सबथल नाचती हैं ऐसा जनकनगर छबिमयी है तहांकी हाट जो बजार बाटजो गली इत्यादि सर्बत्र मणिमय चित्रसारी ऐसी खचितहैं जाको देखिलोग चकृतह्वै जातेहैं ३ । ४७ ॥

मू० । सुनिश्रवणननरपालऋषयआगमनअनंदित । भूसुरबर
गुरुज्ञातिसाथमुनिपदशिरबंदित १ बंदतिनृपहिबिलोकि
मिलेकौशिकमुनिनायक । भयेबिदेहबिदेहनिरखिद्वउसुत
सबलायक २ सबलायकरघुनायकहिनरपतिनिरखिबिशा
लको।देखिभानुकुलभूषणहितनमनबशनरपालको३।४८॥

टी० । बिश्वामित्र ऋषय को आगमन श्रवणन काननसों सुनि भाव विश्वामित्र महामुनि नगरकोआये इत्यादिक शब्दकानमें परतही नरपाल अनंदित महाराजजनकजी परमआनन्द है बरश्रेष्ठ भूसुर जो ब्राह्मण गुरु सतानन्द तथा ज्ञाति जो बंधुवर्ग इत्यादि साथलै चले जाइ मुनि पदशिर बंदित महाराज जनक पाँयनपर शीशधरि बिश्वामित्र जी को प्रणाम कीन्हे १ नृपहि बंदत बिलोकि मुनिनायक कौशिक मिले अर्थात् महाराजजनकजी को प्रणामकरते देखि मुनिनमें श्रेष्ठ जो बिश्वामित्रजी ते उठाय उरमें लगाय मिले कुशल पूंछि निकट बैठारे तासमय दोऊसुत सबलायक निरखि बिदेहबिदेहभये अर्थात् दोऊ राजकुमारनको रूपस्वभाव तेज प्रतापादि समर्थ देखि प्रेमानंद ते बिदेहजी बिशेषिबिदेह

भये भाव ब्रह्मानंद रूपमेंलगे रहें ताते देहकी सुधि भुलाये रहे जबराम प्रेम प्रवाहमें मगनभये तब ब्रह्मानंद भी भूलिगया २ बिशाल बड़े सुंदर तेजवंत सबलायक भानुकुल भूषणहि रघुनायकहि निरखि देखि नरपति नरनको पालनहारे तनमनतेबशभये अर्थात् सूर्यकुलमें भूषणसम प्रकाश कर्त्ता ताहूमें उत्तम जो रघुबंशतामें उत्तम जो श्रीरघुनाथजी तिनको प्रत्यंग निरखि देखि जनकमहाराज मनते सबअंतःकरणकरिकै तनतेसब इन्द्रियन करिकै रघुनन्दनके बश ह्वैगये निरखब अंतरकी दृष्टि ते देखब नेत्रनते नरपति शब्द उचितहै नरपाल पूर्वशब्द अंतमें आवने की रीति कुण्डलिकामेंहोत तातेपुरोक्त अथवा कथितपद दूषणनहींहोताहै ३।४८॥

मू०। बिबशरावभयेप्रेमथकेनिरखततनशोभा । लोचनभयेचकोररामसुखशशिरसलोभा १ लोभासकलसमाजपरस्पर चाहतरामै । धीरजधरिनृपकहतबूझिमुनिसबगुणधामै २ सबगुणतेजप्रतापमयकाकेसुरतरुफलनये । कहियकृपा करिकृपानिधियेबालककाकेभये ३ । ४९ ॥

टी०। रावजनकमहाराज तनकी शोभा निरखतसंते नेत्रथके मनते बिबश बिशेषि प्रेमकेबशभये कौनभांति महाराजके लोचननेत्र चकोरभये राममुख शशिरसलोभा रघुनाथजीको मुखचन्द्रकेप्रेमरसमें लोभाइकैयक टकरहे १महाराजकेसाथ यावत्जनआयेरहैं सोसमाजभरि लोभान काहेते परस्पर चाहत रामै रघुनाथजीके अवलोकन सनेहवार्त्ता सबआपुसमें करतेहैं पुनः सबगुणधामै मुनिबूझि अर्थात् योगज्ञान बिराग जपतप इत्यादि सब उत्तम गुणकेभरे मन्दिर हैं ऐसा मुनि विश्वामित्रको समर्थ समुझि भाव ऐसे तपोधनी समर्थको जहांतक उत्तमबस्तु प्राप्तहोइ सो सब उचित है तामें आश्चर्य न मानाचाहिये ऐसाविचारि धीरजधरि नृप जनकजी कहत २ जनकजी कहत कि रूप शीलादि सबगुणनकेभरे तेज प्रतापमय अर्थात् जो सहायरहित अकेले सबलोकभरेको परास्त करिसकै अरु किसी की दृष्टि सन्मुख न ह्वैसकै ताको तेजकही पुनः जाकी कीरति यश सुनि शत्रुके उरमें तापहोइ तथा सब जगत्डरै ताको प्रतापकही ऐसे तेज प्रतापकेभरे ये जो दोऊकुमार हैं सो काके सुरतरु फलनये अर्थात् कौने सुकृतीके सुकृतरूप कल्पबृक्षमें सुन्दर उत्तम नये फलफले हैं भाव ऐसे

फल किसीने नहीं पावा हे मुनि कृपानिधि कृपाकरि सबहाल कहियें ये दोऊबालक काके उत्पन्नभये ३ । ४९ ॥

मू० । केमुनिमणिनृपमणिकिधौंयोगयज्ञफलआहिं । गणपतिपशुपतिलोकपतिममसंशयमनमाहिं १ ममसंशयमनमाहि ज्ञानगतिगिराविनाशी । बरवसइनवशहोततजतसुखरस अविनाशी २ अविनाशीअवलोकियेयुगलरूपनिजसँगरधौ।कहियप्रकटसंदेहमनकेमुनिमणिनृपमणिकिधौं३।५०॥

टी० । कै मुनिमणि किधौं नृपमणि अर्थात् किसी मुनिके कुलके शिरोमणि उत्पन्नभये ताके योगके फल हैं किधौं काहू नृप राजाके कुल के शिरोमणि उत्पन्नभये ताकी यज्ञके फलआहिं भाव किसी मुनीश्वरने समूह योग क्रियादिकिया ताको फल बंशशिरोमणि इन कुमारनकोपाये अथवा किसी राजाने बडभारी यज्ञकिया ताको फल बंशशिरोमणि इन कुमारनकोपाये अथवा गणपति गणेशजी पशुपति शिवजी ये दोऊ नररूपधारी हैं अथवा लोकपति अर्थात् बैकुण्ठलोक के पति भगवान् तथा पाताललोक के पति शेषजी ये दोऊ मूर्तिमान हैं इत्यादि मेरेमनमाहिं संशय है भाव जोमैं कहतहौं सोईहै वा नहींहै १ काहेते ममभेरे मनमाहिं संशय है कि इनके देखतसन्ते ज्ञानकी जो गतिहै बिवेक विरागादि तथा गिरा जो बाणी इत्यादि विनाशी विशेषि नाशह्वैगई कौनभाँति कि मेरा मन अविनाशी सुखरस तजत अरु बरवस इनके बशहोत अविनाशी जो ब्रह्म ताको सुखरस जो ब्रह्मानन्द ताको मनत्यागेदेत अरु जबरइन इन कुमारन के बशहोत अर्थात् ब्रह्मानन्दत्यागि इनके प्रेमप्रवाह में ऐसामन मगनभया कि पुष्टाक्षर बाणीनहीं मुखते कढत २ काहेते मेरी ज्ञानगति अरु बाणी विशेषिनाशभई अविनाशी नाशरहित अर्थात् दिव्यशोभा अवलोकि देखतसन्ते ये कुमार युगल दोऊरूप निजसंगरधौ निज आपने संग मेरेमनको रधौ परिपक्व प्रेमलगायलीन्हे अर्थात् रधपाके रधधातुको रींधन अर्थहोता है यथा चतुर रसोईदार भातु दालिको रींधि परिपक्व करिलेत तथा मेरेमनको प्रेम परिपक्वकरि आपने संगकरिलीन्हे तौ ये कौन हैं यह मेरेमनमें संदेह है ताको मिटायबेहेत प्रकट इनको हाल कहिये मुनिमणि मुनिन के बालक हैं किधौं नृपमणि काहू राजा के बालक हैं

सो प्रसिद्धकरि कहिये वेष राजन को संग मुनि के ताते दोऊ नामलैपूंछे अपूर्वरूप तेजते मनुष्यरूप में देवरूपकी शंका ३। ५०॥

मू०। जपतपव्रतरतधर्मजगतजहँलगिशुभकर्मनि। दयाक्षमादिकनेमक्रियाआचारचारगनि १ चारवेदसबभेदयोगसिधिसाधतयोगी। आतमअनुभवरूपब्रह्मसुखपावतभोगी २ पावतभोगीयोगबशसोप्रकटतकबहुँकहिये। सोफलमुनिनायककिधौंजपतपबलतेप्रकटकिये ३। ५१॥

टी०। गायत्री आदि बिधिपूर्बक जप तथा जलशयन पंचाग्नि आदि तपस्या तथाएकादशी चान्द्रायणचतुर्मासादिव्रततथासत्यशौचतपदानादि जो धर्म हैं तामेंरत प्रीतिकिहे पूजापाठ संध्या तर्पण तीर्थाटन दानादि जहांलगि शुभकर्म्म जगत्में हैं सो सबकरि तथा दया अर्थात् बे प्रयोजन जीवनकी रक्षा तथा क्षमादिक जो यमहैं यथा योगशास्त्रे ॥ तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्य्यापरिग्रहायमाः॥ अर्थात्अपराधौकिये जीवकोनमारैभूठन बोलै अस्तेयनाम चोरी न करै ब्रह्मचर्य इंद्रियजीतेरहै परिग्रह विषयनको संगत्यागेरहै पुनः नियमकीक्रिया यथायोगशास्त्रे॥ शौचसंतोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानिनियमाः इत्यादि क्रियाकरै पुनः अपने वर्णआश्रमादि की जो रीति वेदमें लिखीहै ताही अनुकूल चलना यही आचारहै अर्थ पंचकेयथा ॥ सदाचार्योपदेशात्तु प्राप्तोपायतयापुनः ॥ विपरीतान्निवृत्तोथ वर्णादिविहितंचरन् ॥ सोआचाररीतिपरचारनामचलना १ पुनःचारौवेद यथा ऋक्यजुरथर्वण इत्यादिके सबभेद अर्थात् वेदाध्ययनकी विधि जैसी मनुस्मृतिके चौथे अध्यायमें लिखी है ताहीभांति पढ़ना तथा योगीजन योगसिद्धीकेअर्थ यमनियमआसन प्रत्याहार प्राणायामध्यानधारणासमाधि इत्यादि क्रिया साधते हैं पुनः योगविराग विवेकादिकरि आत्मरूपको जो अनुभवतदाकार जो ब्रह्मसुख ताको भोगकरता भोगीते पावते हैं २ ब्रह्म सुखके भोगी योगक्रियाबशते जो ब्रह्मानंदपावते हैं सो प्रकटत कबहुँ कहिये अर्थात् सदा एकरसनहीं रहिसक्ताहै कबहूं किसीदिन किसीसमय सो ब्रह्मानंद हृदयमें प्रकटह्वैआवता है सोई ब्रह्मानंदको फलपरब्रह्ममूर्तिमान ताको किधौं मुनिनायक विश्वामित्रजी आपने जप तप बलते प्रकटाकिये मूर्तिमान परब्रह्मरूप सबको नेत्रनते दिखाय दिये ३। ५१॥

मू० । अलखअगोचररूपहरिजोवरणतश्रुतिशेश । जाकेहितविधिदेवमुनिध्यावतगणपमहेश १ ध्यावतगणपमहेशयोगयत्ननहिंपावत । जपतपव्रतकृतकर्मधर्मधनहृदयबसावत २ हृदयबसतबहुरूपजबसकलसिद्धिसबसुःखभरि । प्रकटकीनखइरूपमुनिअलखअगोचरभूपहरि ३ । ५२ ॥

टी० । अलख जो लखि नैं जाय अर्थात् किसीकी दृष्टिमें नहीं आवत पुनः अगोचर अर्थात् गोचरकही इंद्रियनकी विषयशब्द स्पर्शरूपरसगंधादि तिनकरिकै नहीं प्राप्तह्वैसकेहैं ऐसा जो हरिरूप जो श्रुति वेद तथा शेषादि जो रूप वर्णन करते हैं पुनः जारूपकी प्राप्तीहित विधि ब्रह्मादि सब देवता पुनः सनकादि शुकदेवादि मुनितथा गणप गणेश महेश शिवजा इत्यादिध्यावतेध्यान भजनादिकरतेहैं १ गणपमहेशादि यमनियम आसन प्रत्याहार ध्यानधारणा समाधि इत्यादि योगकी यत्ननकरि ध्यावतेहैं ताहूपर जारूपको नहींपावतेहैं तथा गायत्री आदि मंत्र विधिवत् जपपंचाग्नि आदि तप चांद्रायणादि व्रत इत्यादि पूजा पाठ संध्या तर्पण तीर्थवास दानादि कर्म कृतनाम करते हैं तथा सत्यशौचाचारादि धर्मरूप धनहृदय में बसावत सबभांति उत्तम पावनह्वैजाते हैं २ कैसे उत्तम ह्वैजातेहैं कि विषय वासना देहाव्यवहार मनकी चंचलतात्यागि जबकर्म योगविरागादि दृढ़साधनकरि अणिमादिक सिद्धी ब्रह्मानंदस्वतंत्रताअचाह संतोषादि सबप्रकारको सुख अंतरभरिहोता है तब वहरूप हृदयमें बसता है ऐसा जो अलख अगोचर भूप हरिसब रूपनमें राजा सोई परब्रह्मरूप ताको मुनि बिश्वामित्र जी भूतलमें मूर्तिमान् प्रकटकीन्हि प्राकृत दृष्टिते देखते हैं ३ । ५२ ॥

मू० । कीधौंमदनबिशेषसंगमुनिनायकबशकीन । ऋषितपतेजत्रतापतेसेवतपदलवलीन १ सेवतपदलवलीनशंभुकोवैरसँभारयो । चाहतआपुसहायमंत्रमनमांझविचारयो २ चारयोविधिसेवासजैयुगुलरूपछबिदेखिये । बारबारभूपतिकहैंसुनिमुनिमदनविशेषिये ३ । ५३ ॥

टी० । कीधौं येदोऊकुमार विशेषकरिकै मदन कामदेवहैं तेसंगमें रहिकै मुनिनायक बिश्वामित्रको आपने बशकरिलीन कौनहेत ऋषिके तप

करिकै तेज प्रताप समूहहै ताहीते लवलीन तन मन लगाय मुनिकेपद सेवते हैं १ काहेते कामदेव लवलगाये मुनिकेपद सेवत ताको प्रयोजन यह कि शंभुको बैर सँभारयो अर्थात् शिवजी कामको स्थूलतन भस्मकरि दियोहै सोई बैर सँभारयो भाव शिवको जीति लेनो चाहत ताहेत मन मांझमंत्र विचारकीन्हेउ अर्थात् राजनीतिकी यह रीति है कि जो आपु अबलहै तौ किसी सबलकी सेवाकरि वाकीसहायलै सबलशत्रुको जीतत इत्यादिमंत्र मनमें विचारि तपोधनी विश्वामित्रते आपु आपनी सहाय चाहत २ शिवको जीतिबे हेत कामदेव मुनिते सहायता चाहत इसहेतु सदा संगरहि मन क्रम वचन इति चारिहु विधिते सेवासजै वा सेवन अर्चन बंदनदास्यता इतिचारिउ विधिते सेवा करते हैं ऐसे युगल दोऊ रूपकी छबि देखिये देखि परती इत्यादि भूपति जनकजीबारम्बार कहते हैं हेमुनि मेरेवचन सुनिये येजो दोऊबालक हैं ते विशेषि करिकै मदनकाम द्वैवै हैं ३। ५३ ॥

मू० । सदाज्ञानवैराग्यसोंरत्योरहतमनमोर । ब्रह्मसच्चिदानंदघन
चितवतचंद्रचकोर १ चितवतचंद्रचकोररूपहरिसुथलथि
रानो । निरखतबालकनयनतौनसुखजातनजानो २ जातन
जानोब्रह्मसुखछक्योप्रेमअनुरागसो ।सोमनइनकेबशरह्यो
लह्योनज्ञानविरागसो ३ । ५४ ॥

टी० । महाराज कहत हेमुनि काहेते मेरेमनकी संदेह नहीं जाती है कि मेरोमन सहज स्वभावते सदा सर्वकालमें एकरस ज्ञान वैराग्यमें रत्योप्रीति किहेरहत पुनः ब्रह्मव्यापक हरिरूप सच्चिदानन्दघन सत् जो त्रयकाल एकरस चित्कहे सदा चैतन्य आनंद जामें घनसमूह ऐसा ब्रह्म सच्चिदानंदघन सोई चंद्रमा समताको सदा चितवतरहौं चकोरकीनाईं १ यथा चंद्रको चकोर तैसेही चितवत संते हरिरूप सुथल थिरानो सुथल जो अमल मेराहृदय तामें हरिरूप थिरानो सदा एकरस बास किहेरहै अर्थात् ब्रह्मानंदमें सदा मगनरहौं तौनसुख ब्रह्मानंद कैसाभया कि इन बालकनको नयननिरखत नेत्रनसों देखतसंते जो अपूर्व आनंद उत्पन्न भया ताके प्रभावते ब्रह्मसुख जातनजानेउ भावब्रह्म सुख कब जातरहा सो मैंना जानिपायों २ ब्रह्मसुख जातनजानेउ जब प्रेम अनुरागसों छक्यो अघानेउ काहेते ज्ञान विरागसों वैसा सुख नहीं पायों सोसुख इन

बालकन के बश मनरह्यो तत्रलह्योपायो भाव इनके देखनेमें अधिकसुख पायो ३ । ५४ ॥

मू० । सुनतभूपकेप्रियवचनपुलकिकहैंमुनिराज । जोकछुकहौसु सत्यसबतुमहिंविदितसबकाज १ तुमहिंविदितसबकाजरा जदशरथकेजाये । मखहितआनेमाँगिआपुकेनगरसिधा ये २ नगरसिधायेआपुकेरामलषणधनुशरधरे । महिरक्षक भक्षकअसुरसुनतभूपआनँदभरे ३ । ५५ ॥

टी० । भूप जनकमहाराजके कहे प्रिय श्रवण रोचक मधुर वचनसुन- तहीं मुनिराज विश्वामित्रजी प्रेमते पुलकि कहत हेविदेहजी तुमहिं वि- दित सबकाज जोकछु होनहार है सोसब जानतेहौ १ तुमहिं सबकाज विदित भाव आपुतौ सर्वज्ञहौ परंतु जोपूछेउ ताते कहतहौं राज दशरथ केजाये अर्थात् जो महाराज पूछे कि मुनिनके बालकहैं वा राजकुमार हैं तापर कहत कि ये कौशलेश दशरथ महाराजके पुत्रहैं जोकहौ इहां विभव रहित कैसे आये सो आपनी इच्छाते नहीं आये हैं मखहित माँगिआने आपनी यज्ञकी रक्षाकरिबे हेत मैं महाराज दशरथते माँगि इनबालकनको आपने आश्रमको आनेउ तहाँ ताड़कासुबाहु आदिको मारि यज्ञकी रक्षा कीन्हें पुनः आपुके नगर सिधाये अर्थात् धनुषयज्ञ देखिबेहेत आपुके नगर को आये २ आपुके नगर सिधाये धनुशरधरे रामलषण नाम अर्थात् मेरे संगआये ताते अपर विभव रहित केवल धनुषबाण धारणकिहे जे श्याम- गात बड़ेहैं इनको राम ऐसानाम है इनके छोटेभाई गौरअंग तिनको लक्ष्मण ऐसानामहै इति माधुर्य कहि पुनः ऐश्वर्य दर्शावत महिजो पृथ्वी ताके रक्षकभार उतारनहार कौनभांति असुर भक्षक असुर जो दैत्यराक्षसा- दि तिनके नाशकर्त्ता भाव परब्रह्म रघुवंश कुलमें अवतीर्ण भयेहैं इत्यादि सुनत भूपजनक महाराजके उरमें आनंद भरिभयो भाव विशेषि धनु भंजैंगे ३ । ५५ ॥

मू० । भागजानिअनुरागनृपचलेलिवायनिकेत । आदरआश्रम आनिकैपूजेप्रेमसमेत १ पूजेप्रेमसमेतनिरखिनरनारिसुखा री । रघुकुलभूषणदेखिसराहतसुकृतसँभारी २ सुकृतपुंज

राजाजनककहिपुरनरपदलागही । कोजानैकाकेसुकृतयाग भागअनुरागही ३ । ५६ ॥

टी० । रघुनंदनके औगमनते आपनी बडीभारी भाग्य उदय जानि अनुराग अचलप्रीति सहित नृपजनक महाराज रघुनंदन सहित मुनिको संगमेंलैके निकेत जो मन्दिर तहांकोचले आश्रम आपने मन्दिरको आनिकै आदर प्रेमसमेत पूजे अर्थात् आसन अर्घ्यपाद्य मधुपर्क आचमन गंधाक्षत दल फूल धूप दीप नैवेद्य बंदनादि प्रेमसमेत कीन्हें १ महाराज प्रेमसमेत पूजनकीन्हें तासमय निरखि नरनारि सुखारी अर्थात् मुनिके संग श्यामगौर सुन्दरस्वरूपवंत राजकुमारको देखि पुरकेस्त्री पुरुष परम आनंदभये कैसे आनंदभये रघुकुलके भूषण श्रीरघुनाथजी को देखि सब आपनी सुकृति सँभारि सराहतभाव हमलोगनकी बडीभारी भाग्य उदय भई तौतोऐसे परम सुन्दर राजकुमार नेत्रनकी विषय करिपाये इत्यादि प्रशंसा करते हैं २ पुनः सब कहते हैं कि राजाजनक सुकृतपुंज हैं अर्थात् महाराज जनकजी बडे सुकृती हैं जोकछु सुख देखैमेंआवे ताको कछु आश्चर्य न जानिये ऐसाकहि पुरनर पदलागते मुनिको प्रणाम करते हैं पुनः कहत कोजानै काकेसुकृत यहनहीं जानिजात कि कौनकी सुकृत पुण्याय उदयभई जाकीवश ये राजकुमार यागभाग अनुरागहीं अर्थात् धनुष यज्ञ पूर्णभयेको जो भागहै जानकीजीको बिवाह तापर ये राजकुमार अनुराग किहे इहांको आयेहैं यह काहूकी सुकृति उदयहै ३ । ५६ ॥

मू० । कमलनयनश्रीरामछबिमरकतमणिघनश्याम । सुभगगौर लक्ष्मणदहनदामिनिवरणललाम १ दामिनिवरणललाम अंगअगणितछबिसोहैं । जनकनगरनरनारि चकृतअद्भुतछबिजोहैं २ जोहैंमनमोहैंसकलकोहैपावैपारकबि । तुलसिदासबैननिकहैकमलनयनश्रीरामछबि ३ । ५७ ॥

टी० । नवलनील कमलसम नयन श्रीरघुनाथजीके तनमें छबिकैसी मरकत मणिसम चिक्कन चमकदार तथा सजलघन सम श्यामवरण तथा दामिनिवरण दहन अर्थात् दामिनीकी प्रकाश आपनी शोभाते मंद करने वाले अथवा दहन अग्निवरण तथा दामिनिवरण लक्ष्मणजी सुभग अत्यंत सुन्दरगौर अंग ललाम कहे श्रेष्ठ हैं १ कैसे दामिनिवरण ललाम हैं कि

जिनके अंगनमें अगणित संख्या रहित छवि अर्थात् द्युतिलावण्यता स्वरूपता सुन्दरता रमणीकता कांति माधुरी मृदुता सुकुमारतादि अंगन प्रति सोहतहै इत्यादि राजकुमारनमें जो अद्भुत आश्चर्यमय जोछबि है ताको जनक नगरके नरनारी चकृतहै जांहैं देखतेहैं २ जोहैं मनमांहैं सकल जो देखताहै तेतौ सबै मनते मोहिजाते हैं गोसाईंजी कहत कि जब देखनहार सबै मोहिजाते हैं तौ को ऐसा कविहै जो कमलनयन श्रीरघुनाथजी की छवि बयनानि वचननसों कहै पुनः कहिकै पारपावहि भाव यथार्थ शोभा प्रभुकी कहनेवाला कोऊऐसा कविनहीं है जोकहि सिराहि ३ । ५७ ॥

मू० । देखेमुनिसँगआजरीबालकयुगुलअनूप । श्यामगौरसुन्दरबदनमनहुमदनयुगरूप १ मनहुमदनयुगरूपविरचिविधिस्वकरबसाये । निजसुकृतकेपुञ्जजनकपुरदेखनआये २ देखनआयेकुवँरद्वउविधिरचिराख्योकाजरी। सियवरयोग्यसँयोगयह समुझिदेखुसखिआजरी ३ । ५८ ॥

टी० । पुरकीस्त्री परस्पर वार्त्ता करतीहैं हेरीसखी आजु युगुल अर्थात् द्वयअनूप बालक मुनि विश्वामित्रके संगमें मैं देखे अनूप जिनकी समता को दूसरारूप किसीलोकमें नहीं है कैसेहैं एक श्यामवरण एक गौरवरण सुन्दर सर्वांग सुठौरबने तथा सुन्दर चंद्रसम बदन मानहु मदन कामदेव युग द्वयरूप धारण किहे है १ मानहु मदन युगरूपहै ताको विधिस्वकर विरचि बसाये अर्थात् पूर्व कामदेवको शिवजीने उजारि दियारहै अरु कामै द्वारा सबसृष्टिकी रचनारहै इसहेत ब्रह्माजी मानौं स्वकरनाम आपने हाथ विरचि विशेषि रचिकै मदन युगरूप कामदेवके द्वयरूप बनाय पुनःलोक में बसाये तेई निज आपनी सुकृतके पुंज बड़ी सुकृतिहैं जिनके ताते धनुष यज्ञ देखने हेत जनकपुरको आये हैं २ हेरीसखी जोकछु काज होनहारहै सोविधि ब्रह्मा पूर्वहीं रचिराख्यो इसीहेत दोऊकुवँर धनुषयज्ञ देखने हेत आये हैं काहेते सियवर योग्य सँयोग यह अर्थात् राजकुमारन को इहां आवना यह जो संयोग है तामें यही होनहार देखिपरता है कि सियवर योग्य अर्थात् जानकीजी की योग्य जैसा वर चाहियत रहै तैसेही श्याम राजकुमारहैं ताते हेरीसखी आजुही समुझि देखुऐसेही होइगो ३ । ५८ ॥

मू० । अपरकहतसखिसत्यहैएककठिनहठिकर्म । प्रणविदेहको

धनुषयहउठैनगिरिसमधर्म १ उठैनगिरितेगरूबालमृदु
अतिसुकुमारे । सोअसमंजसकठिनमेटिकोयोगसँवारे २
सावँरकुवँरप्रतापबलमुनिगणकहतसुमत्यहैं । शंभुप्रताप
विदेहकीपुण्यभंजिधनुसत्यहैं ३ । ५९ ॥

टी० । पूर्ववालीके वचनसुनि अपरसखी कहत हे सखी आपको वचन सत्य है परन्तु एक हठिको कर्म कठिन है काहेते विदेह महाराज को यह प्रण है कि जो धनुषतोरै ताके संग कन्याको बिवाहकरी अरु यह शिवको धनुष गिरिसम धर्म यामें पर्वतकी समान गुरुता धर्म है भाव बड़े कठिन वली योधा रावण बाणासुरादि नहीं उठायसके सो धनुष जो राजकुमार ते न उठैतौ कैसे संयोग है सक्ताहै १ काहेते संदेह संयोगमेंहोत बालमृदु बालक कोमल किशोर अवस्था तापर अत्यंत सुकुमार अरु धनुष गिरि पर्वत ताहूते अधिकगरू सो जोनउठै तौ कैसे संयोग होई सोई मेरेमनमें कठिन असमंजसहै ताकोकौन ऐसाहै जो असमंजस मेटिकै योग सँवारै बिवाहकरावै २ ताके बचनसुनि पूर्व कहनेवाली सखी पुनः समाधान करत हेसखी असमंजस किसहेतकरतीहौ काहेते सुमति सुंदरीमतिवाले मुनिगणकहतेहैं कि सावँरकुवँर श्यामबरण जो राजकुमारहैं तेबलप्रताप करिकै परिपूर्ण हैं अर्थात् कैसेहू दुर्घट कार्यपरै ताको करिडारबे में नेकहू श्रम न आवै ताको बलकही तथा जाकोसबजग आपहीडरै ताको प्रताप कही इत्यादि बलप्रतापते भरिपूरि श्यामराजकुमार हैं इसी बात को बहुतसुमतिवाले मुनिजनकहतेहैं ताहूपर शिवजीके प्रतापते विदेह महाराजकी जोपुण्यहै ताहीते सत्यधनुभंजिहैं श्यामराजकुमार निश्चय करिकै शिवधनुषको तोरि डरिहैं ऐसा बिचारि संदेह त्यागौ ३ । ५९ ॥

मू० । आयसुपायमुनीशकोभोरलषणरघुराय । सुमनहेतउपवन
गयेश्यामगोरद्वउभाय १ श्यामगोरद्वउभायजानकीजाय
निहारे । गिरिजापूजनहेतमध्यउपवनपगधारे २ पगधारे
नयननिलखेराजकुमारनिहारिकै । सोसुखतुलसीकहैकिमि
कहिनजायमुखचारिकै ३ । ६० ॥

टी० । मुनीश जो विश्वामित्रजी तिनको आयसु आज्ञापायकै भोरही लषण अरु श्रीरघुनाथजी श्याम गौर दोऊभाय सुमनहेत उपवनगये फू-

लनकेहेत फुलवारीको गये १ उपवनमें दोऊभाई जायकै जानकीजीको निहारे चाहसहित नेत्रनभरिदेखे कौनहेत आई गिरिजापूजनहेत उपवन के मध्य पगधारे पार्वतीजीके पूजनहेत बागके मध्यमें आई २ किशोरीजी बागके मध्यमें पगधारे तहां राजकुमारनको निहारिकै लखे प्रत्यंग की शोभानिहारिकै नेत्रनसों देखे भाव आवरन बहानारहित सन्मुख ठाढ़ेह्वै देखे सो सुख वासमयमें जो जानकीजी के मनमें आनन्दभयो ताको चारि मुखनकरिकै ब्रह्मानहीं कहिसक्तेहैं ताकोतुलसीदास किमिकहै अर्थात्चारि मुखकेपुनःआदिआचार्यते तौकहीनहींसक्तेहैंतहांमैंअल्पज्ञकैसेकहौं३।६०॥

मू० । रामसियाकोमिलनसुख वेदनपावहिंपार । प्रीतिप्रेमपर मितिसुमति प्रीतमगतिरतिसार १ गतिरतिसार बिचार कहतथकिरहतबिचारी । सोमैंकहौं बिवेककवनमतिगति संसारी २ मतिगतिशंकरशारदाकहिनसकतसुखसरसको। तुलसिदासक्यहिबिधिकहैरामसियासुखदरशको३।६१॥

टी० । श्रीरघुनंदनजनकनंदिनीके मिलनसमयजो सुखभयाताको कहतसंते वेदभी पारनहींपाइसक्तेहैं काहेते किशोरीजीमें तोप्रीतिके प्रेमअंग की परमितिमर्यादा अर्थात्हदहै तथाप्रीतमजो श्रीरघुनाथजी तिनकीप्रीति कीगति जो यासमयमें रीतिहै सो रतिसार प्रीतिको सारांश अर्थात् प्रणयहैं तहां प्रीतिमें आठअंगहैं यथादो० । प्रणय प्रेमआशक्ति पुनि लगनलाग अनुराग । नेहसहित सबप्रीतिके जानवअंगविभाग ॥ ममतवतवममप्रणय यहसौम्यदृष्टिहिहोइ । प्रीतिउमगसोप्रेमहै विह्वलदृष्टीसोइ ॥ चित्त अशक्तआसक्तिसोइ यकटकदृष्टीताहि । बनीरहैसुधिलगनकी उत्कंठादृग माहि ॥ जाकेरसमेंलीनचित चोपदृष्टिलोलाग । जासुप्रीतिमेंचितरंगो मत्तदृष्टिअनुराग ॥ मिलनिहँसनिबोलनिभली ललितदृष्टिसोनेह । प्रीति होइसर्वांगउर दृष्टिअधीनसदेह ॥ तहां परिपूर्ण प्रीतिकी जो उमंग है ताको प्रेमकही सोतौ जानकीजी में परिपूर्ण है तथा हमतुम्हारे हैं तुम हमारेहौ इत्यादि प्रीतिको जो सारांश है प्रणयसो सहजसुभावते रघुनाथ जीमें है पुनः सुमतितौ दोऊमेंहै काहेते इधरतौ लक्ष्मणजी आज्ञानुकूल उत्तम सेवक हैं तथा उधरसखी परम उत्तम किशोरीजीकी आज्ञानुकूल हैं इधर किशोरीजी की इच्छा है कि श्याम राजकुमारै हमको पतिमिलैं

इस हेत बारम्बार प्रीति उमगतीहै सोई रोमांच कंठारोध आंसु आदि नेत्रनमें इत्यादि सर्वांगमें प्रेम परिपूर्णहै तथा रघुनाथजी निश्चय जानते हैं कि धनुष हमही तोरैंगे ये हमारिही पत्नीहोइँगी सो मानसमें प्रसिद्ध कहेहैं कि मेरे शुभअंग फरकतेहैं इति आपनी मानिलेना प्रणयहै १ गति रतिसार बिचारि अर्थात् रति जो प्रीति ताको सार जो प्रणयताहीमय गतिसहज स्वभावतेरीति प्रभुमें बिचारि कहत समय कबिनकी जो बुद्धि है सो बिचारी थकितह्वै जातीहै तातेवाणी नहीं कहत सोई बातमें कौन विवेकते कहौंकाहेते मतिगति संसारी मेरीतौ बुद्धि संसारमें लगीहैबिषय सुखको व्यापारकरि रहीहै २ जाको मतिकी गति करिकै अर्थात् बुद्धिकी प्रवीणता ते शंकर शारदा सोभी सरस रससहित जा सुखको नहीं कहि सकत सोई राम सियाके दरशको सुख तुलसी कौन बिधि कहै ३।६१ ॥

मू० । पूजिबिबिधबिधिपाँयपरि विनतीसीयसुनाय । आदिअंत
त्रयलोकतू स्वबशबिहारिणिमाय १ स्वबशबिहारिणिमाय
मनोरथजानतिहीके । प्रकटप्रभावप्रतापअगमबरदानश
चीके २ शचीशारदाहरितिया सेयसेयसबसुःखभरि । जय
जयजयगिरिपतिसुता बिबिधबिनयसियपायँपरि३ । ६२॥

टी० । अर्घ्यपाद्य आचमन स्नान गंध फूल धूप दीप नैवेद्यादि बिबिध अनेक बिधिते पार्वती को पूजि पुनःसीयपायँनपरि बिनती सुनाये स्तुति करनेलगी माय हेमातु आदि जोकाल बीतिगया अंत जोआवनहार तथा वर्त्तमान इति तीनिहूं कालमें स्वर्ग भूमिपतालादि त्रयलोकनमेंतू स्वबश बिहारिणि अर्थात् किसीकी परवश नहींहौ आपनी इच्छाते बिहार करने वालीहौ १ हे स्वबश बिहारिणिमाय मेरे हृदयके जो मनोरथ हैं सोआपु जानतीहौ भाव अंतर्यामिनीहौ प्रभाव जो महिमा तथा प्रताप जो ऐश्वर्य सो लोकमें प्रकट सबजानतेहैं क्याजानतेहैं अगम जो किसीकोदेनेकी गम्य नहींहै जोदैसकैं ऐसे अगमवरदान अर्थात् पतिव्रत धर्मशची आदिकनको देनहारीहौ २ शचीजो इंद्रानी तथा शारदाजो ब्रह्मानी हरिकीतिया इत्या- दि सबै आपुको सेय पूजनकरि भरिपूर सुखपाई भाव बिवाह समय गौरिकीपूजा सबै करती हैं यह वेद विधानकी रीतिहै गिरिपति हिमाचल ताकीसुताहे पार्वतीजी आपुकी जय जय जयहोय इत्यादि बिबिध बिनय सुनायपुनः सीय पायँपरी ३ । ६२ ॥

मू० । वचनप्रसादसुपायसियहर्षिचलीनिजधाम । सोछविहृदय
निरूपकरिगुरुपहँगवनेराम १ गुरुपहँगवनेरामजानकी
भवनसिधाई । सुमनदियेमुनिहाथरामकहिकथासुनाई २
कथासुहाईसुनतमुनि सतानंदआवतभये । जनकविनय
कहिमोदलहिरामलषणआशिषदये ३ । ६३ ॥

टी० । सुबचन प्रसादपाय हर्षिसिय निजधामचली पूजाकरि पार्वती जीसोंसुंदर आशीर्वादपायआनंदहै श्रीजानकीजी आपनेमंदिर कोचलींसो छविहृदय निरूपकरि सोई जानकीजी की सर्वांग शोभा आपने हृदयमें बखानकरतसंते रामगुरुपहँ गवनेश्री रघुनाथजी गुरुबिश्वामित्र के पास कोचले १ जबजानकी जीभवनको सिधाईंतबरघुनाथजी गुरुपासको चले जाइकै सुमनफूलमुनिके हाथमेंदीन्हें पुनः रामकहि कथा सुनाई बागको समग्र वृत्तांतरघुनाथजी यथार्थ मुनिसों कहिदीन्हें अर्थात् गिरिजापूजन हेत जनकनंदिनी बागको आईरहैं तिनको देखत संते हमकोदेरलगी २ जो बागकीसुंदरि कथारघुनाथजी सुनाईताको मुनिबिश्वामित्रजी सुनतहीरहैं ताहीसमय तहांकोजनकजीके पठाये तेसतानंद आये तेजनकविनय कहि अर्थात् विश्वामित्र ते कहे कि राजकुमारन सहित आपको जनकजी बोलावते हैं पुनः मोदलहि अर्थात् दोऊभाई प्रणामकीन्हें सोदेखि आनंद पाय राम लषणको आशीर्वाद दिये अथवा निश्छल जो कथा रघुनाथजी कहिरहे सो सुनतै संते सतानंद आय जनक विनय कहे तब मोद पाय विश्वामित्र दोऊभाइनको आशीर्वाद दिये यथा तुम्हारा मनोरथ सफल होय ३ । ६३ ॥

मू० । आजुभूपबनिबनिचलेरंगभूमिशिरमौर । पावकपानीपवन
महिसुरनरमुनिइकठौर १ सुरनरमुनिइकठौरआपुकोजन-
कबुलायो । कौतुकदेखनचलियसतानँदवचनसुनायो २
वचनकहेमुनिरामसोचलहुतातअवसरभले । काकोयश
दशदिशिविदितआजुभूपबनिबनिचले ३ । ६४ ॥

टी० । क्या जनक विनयसुनाये यथा जे राजनमें शिरमौर भूप महाराजते बनि बनि आपनी राज साज ऐश्वर्य सहित साजि साजि रंगभूमि को चले पुनः पावक जो अग्नि पानी पवन महि जो भूमि सुर जो देवता

तथा नर मुनि इत्यादि देखने हेत सब यकट्ठा हैं १ तहाँ सुर नर मुनि सब इकठौरहैं ताते राजकुमारन सहित आपुको जनकजी बुलायोहै ताते कौतुकलीला देखनेहेत आपहू चलिये इत्यादि बचन सतानंद विश्वामित्र ते सुनाये २ जनकजीको बुलावन सुनि मुनि विश्वामित्रजी रघुनाथजी सों वचनकहे भले अवसर अच्छे समयपर बोलावआयाहै हे तात रंगभूमि को चलहु आजु भूपतौ सबै बनि बनि चलेहैं परंतु देखैं काको यश दश दिशि विदितहोइ भाव देखीकौनधनुषतोरै ताकोयश सर्वत्रफैलै ३ । ६४ ॥

मू० । रामलषणकौशिकसहितसतानंदअगवान । चलेरंगभूमिहिसकलमंगलमोदनिधान १ मंगलमोदनिधाननारिनरगृह तजिधाये । नगरबगरमेंबातभूपसुतदेखनआये २ देखि जनकपरिपगनिपूरिप्रेमआनँदलहित । आसनआदरदेय करिरामलषणकौशिकसहित ३ । ६५ ॥

टी० । रघुनाथजी लक्ष्मणजी पुनः कौशिक विश्वामित्र सहित सतानंदको अगवान आगेकरि मंगल प्रसिद्ध उत्सव मोद मानसीआनंद ताके निधान स्थान श्रीरघुनाथजी सकल समाज सहित रंगभूमिहि चले १ मंगल मोदके निधान मंदिर जो जनकपुरके नारि नर तेगृहतजि घरछाँड़ि सब रंगभूमिको धाये किसहेत कि नगरकी बगर जो राहैं तिनमें यहबात प्रसिद्धभै कि भूपसुत अर्थात् विश्वामित्रके साथ जेआयेहैं तेई राजकुमार या समयमें रंगभूमि देखनहेत आये हैं यहहाल सुनि राजकुमारनको देखनहेत सबधाये २ इहाँ विश्वामित्रको देखि जनकजी पगनिपरि प्रणाम करिप्रेमपूरि आनँदलहित अर्थात् राजकुमारनको देखि प्रेमउमँगि सर्वांग में भरिगया पुनः रंगभूमिमें आये तौ हमारी प्रतिज्ञाभी पूर्णकरेंगे यह बिचारि परम आनंदपाये पुनः कौशिक सहित राम लषणको आदरदेय आसन दिये अर्थात् विश्वामित्र लषणलाल सहित रघुनाथजीको आदर दैकै प्रीति पूर्वक वार्त्ता करि पुनः उत्तम मंचपर बैठारे ३ । ६५ ॥

मू० । रामरूपनृपदेखिकैद्युतिमुखकीभइक्षीन । रविप्रतापनिरख तमनौउडुगनज्योतिमलीन १ उडुगनज्योतिमलीनदीन बलहीनबिराजत । जड़खलदलदलमलेउसाधुसुरसज्जन

गाजत २ गाजतदुंदुभिसुमनसुरमगननारिनरपेखिकै । थकितचकृतपलनहिंलगतरामरूपनृपदेखिकै ३ । ६६ ॥

टी० । पूर्ण प्रकाशवंत श्रीरघुनाथजीको देखिकै अपरनृप राजनके मुखकी द्युति जो प्रकाश सो क्षीन मंदपरि गई कैसे क्षीनभई यथा रवि प्रतापनिरखत सूर्यनकोप्रताप देखतसंते उडुगन जो नक्षत्र तिनकी ज्योति जाभाँति मलीन होत १ यथा सूर्यनके सन्मुख उडुगनकी ज्योति मलीन होतीहै तैसेही रघुनाथजीको देखि अपरराजा दीन बलहीन विराजत पुरुषारथ बल रहित बैठेहैं तथा खलदल समूह दुष्ट यावत्रहे ते दलमलेउ सभीतभयो यथा रविदेखि अंधकार तैसेही प्रभुकोदेखि राक्षसादि डरायकै भागनेलगे पुनः यथा रविके उदयमें चकवाक कमल आनंद होतेहैं तथा रघुनाथजी को देखि साधुजन सुर देवता सज्जन हरिभक्तिकरनेवाले ते गाजत प्रसन्नतासहित वार्त्ता करनेलगे २ दुंदुभिगाजत नगाराआदि अनेक बाजा बाजनेलगे तथा रघुनाथजी को रंगभूमिमें बैठे पेखिनाम देखिकै सुरसुमन देवता फूल वर्षनेलगे तथा पुरके नरनारि मगन प्रेममें डूबेहैं कौनभांति रामरूप नृप देखिकै थकित चकृत पलनहिं लगत अर्थात् परब्रह्म परमात्मासाँई नृपनाम नरराजरूपते बैठेहैं तहां ऐश्वर्य्य यद्यपि छपायेहैं परंतु माधुरीमें तौ ऐश्वर्य दर्शित होती है सो अद्भुत छटा देखिकै लोगचकृतभये नेत्रनमें चकचौधी आयगई पुनः हितपूर्वक अवलोकत संते थकितभये सर्वांग शिथिल ह्वै यकटक रहिगये पलक किसीकी नहीं लगती है ३ । ६६ ॥

मू० । जोजाकेउरभावनादेख्योरामशरीर । कउशिशुकउप्रभु मित्रअरिस्वामिसखाबलबीर १ स्वामिसखाबलबीरधीर धरिप्रभुहिनिहारैं । वर्षतसुरशुभकुसुमदेवमुनिजयतिउचारैं २जयतिउचारि समाजलखिजनकबुलाईजानकी । सतानंदआनीतुरतखानिसकलकल्याणकी ३ । ६७ ॥

टी० । समाज विषे यावत् जन बैठे ठाढ़े किसी भाँति वर्त्तमान हैं तिनमें जाके उरांतरमें जो भावना अर्थात् जौनेभावते जा भाँति को ईश्वरको रूप भावतारहै तैसेही राम शरीर रघुनाथजीको स्वरूपताने देख्यो कोऊ शिशुबालककरि देख्यो यथा रानिन सहित जनकजी पुनः

कोऊ प्रभु पालनहार करिदेख्यो यथा हरि भक्तन पुनः कोऊ मित्रहित करता करि देख्यो यथा देवतादि आरत अर्थार्थी पुनः कोऊअरि आपना नाशकरता करि देख्यो यथा राक्षसादि पुनः कोऊ स्वामी करि देख्यो यथा दासभाव वाले रामसेवक तथा सखाभाववाले सखाकरि देख्यो पुनः जेबल बीरता गर्वित राजा रहे ते बली बीर करि देख्यो १ इत्यादि स्वामि सखा बलबीर करि धीर्यधरि प्रभुको सबै निहारते हैं अरु सुर शुभ कुसुम देवता मंगलीक फूल वर्षत पुनः देवता मुनि जयजयकार शब्द उच्चारण करत २ देवादि जयति उच्चारि रहेहैं ताको सुनि पुनः सब समाज बैठीहै ताको लखि देखि समयजानि जनक महाराज जानकी जी को बुलाये आज्ञा दीन्हि तब सतानन्द तुरतही आनी रंगभूमि को लिवायलाये कैसी हैं श्रीजानकीजी सकल कल्याणकी खानि अर्थात्सब भांतिको कल्याण जिनते उत्पन्न होताहै ३ । ६७ ॥

मू० । मिथिलापुरकेनारिनरसियरघुबीरनिहारि । विनतीकरहिं विरंचिसनअंचलअंजलिधारि १ अंचलअंजलिधारिदेहुबरदानबिधाता । रामजानकीयोग्यजोरिमिलवहुयहनाता २ नातजुरैनृपप्रणटरैभूपतिजायलजायघर । यहसंयोग बिचारिकहिमिथिलापुरकेनारिनर ३ । ६८ ॥

टी० मिथिलापुर के बासी नारिनर सब सियरघुवीर निहारि अर्थात् वरण स्वरूप अवस्था स्वभाव कुल तेज परस्परचाह इत्यादि सब उत्तमता एकतुल्य ऐसे श्रीरघुनंदन जनक नन्दनी को देखि अंचल अंजलि धारि विरंचिसन विनती करहिं अर्थात् स्त्री तौ अंचल पसारि तथा पुरुष अंजलिधारि हाथपसारि ब्रह्मासन विनती करतेहैं १ स्त्री अंचल पसारि पुरुष हाथपसारि मांगतेहैं कि हे बिधाता कृपाकरि यह बरदानहमकोदेहु कौनबरदान कि जनकनंदनी के योग्य बर रघुनन्दनहैं यह पति पत्नीको नाताजोरी मिलावहु भाव जानकीजीको बिवाह रघुनन्दनके साथहोय यह बरदान देहु २ नातजुरै नृप प्रणटरै अर्थात् इसभाँतिते बिवाह होय जामें जनकजीके प्रणकी बाधानरहै भावरघुनन्दनके हाथते धनुष टूटि जाय सो देखि सबराजा लजायकै अपनेघरनकोजाय इति निर्विघ्नबिवाह होवैयहसंयोग बिचारिकैमिथिलापुरके नारिनरकहिरहेहैं विधाताते ३ । ६९

मू० । मालजलजयुगहाथअतुलछबिसियपगधारी । जगतजन
निसुखखानिनिरखिमोहेनरनारी १ नारिमध्यबरजानकी
रघुबरपदअनुरागहिय।देखतसुरनरमुनिमगनदीन्हेनयन
निमेखसिय २त्यागिसकुचरामहिलखेनयनमूंदिछबिहृदय
भरि । रंगभूमिसियपगधरेमालजयुगहाथधरि ३ । ६९ ॥

टी० । जलजकमलनकीमाल अर्थात् जयमाला युगदोऊहाथनमेंलिहे अतुल छबिहै जिनमें ऐसी श्रीजानकीजी रंगभूमिमें पगधारी भावतीभई कैसी हैं जगत्जननि सबसंसारको उत्पत्ति पालनहारी पुनः सुखखानि सबभाँतिको सुख जिनते उत्पन्न होताहै ऐसी ऐश्वर्य माधुर्यरूपमें दर्शित होत ऐसीअद्भुत छटा देखत संते प्राकृत नरनारी सबै मोहिगये १ नारि मध्यबरनारी जोसखी जनहैं तिनके मध्य श्रीजानकीजी बरनाम उत्तम हैं पुनः हृदयमें रघुपति पदको अनुराग अचल प्रीतिहै इत्यादि उत्तमोत्तम रूप देखिकै सुरनरमुनि मगन देवता मनुष्य मुनीश्वरादि प्रेममें बूड़िगये अरुसीय नयननमें निमेषदीन्हे काहेते जानकीजी पलकनते नेत्रबंद करि लीन्हे २ त्यागि सकुच रामहिलखे पुनः छवि हृदयभरि नयनमूँदि लिये अर्थात् प्रथमतौ जानकीजी लोग कुटुंब सबको संकोचत्यागि नेत्रन भरि रघुनाथजीको भलीभांति सर्वांग निहारिकै देखिलीन्हे जब श्यामसुन्दर स्वरूपकी छबि नेत्रनद्वारा पैठि हृदयमें भरिपूरि गई तब पलकनते नेत्र बंदकरि भीतरही देखनेलगी यही अनुरागको रूपहै इसभांति दोऊ हाथन में जलज कोमाल कमलनको बनाहुआ जयमाला धारण किहे जानकी जी रंगभूमिंमें पगधरे ३ । ६९ ॥

मू० । जनकबोलिबंदीसकलकह्योकहौप्रणजाय । देवदनुजमहि
पतिमनुजसबकोदेहुसुनाय १ सबकोदेहुसुनायभाटदशस
हससिधाये । चहुँदिशिहाथपसारिसुनहुभूपतिचितलाये २
चितलायेप्रणजनककोधनुषधरयोयहरंगथल । करउठाय
भंजैनृपतिबरैजानकीवाहिपल ३ । ७० ॥

टी० । बंदीजन यावत्रहे तिन सकलको बोलि आपने निकट बुलाय जनक महाराज कहे कि जाय राजसभामें हमारा प्रणकहौ तहां देवता दैत्य मनुष्य इत्यादि यावत् महीपति राजाहैं तिनसबको सुनाय देउ १

जब जनकजी कहे कि हमारा प्रण सबको सुनायदेउ सो आज्ञापाय दश सहस्र दशहजार भाट सिधाये चले तहां राजसभा में जाय चारिहूंदिशि हाथ पसारि बोले हे भूपति राजालोगो चित्त लगाय हमारे बचनसुनौ २ श्रवण द्वारा चित्त लगायकै जनक महाराजको प्रणसुनौ धनुप्रधरयो यह रंगथल रंगभूमिमें कठोर शिवको धनुष धरोहै ताको जो नृपतिकरउठाय भंजै जो राजा हाथोंते उठाय याको तोरि डारै सो वाही पल जानकी को बिवाहै ३।७०॥

मू०। हरगिरितेगरुजानियेकमठपृष्ठतेखोर। महिसँगरच्योविरंचिजनुसकलबज्रतनतोर १ सकलबज्रतनतोरिमोरिमुरि गयेदशानन। बाणासुरसेसुभटभयेभज्जितकहुजानन २ जाननकउयाकोमरमशिवहिछांड़िकोतानिये। निजबल हृदयबिचारिकैहरगिरितेगरुजानिये ३।७१॥

टी०। हरगिरि शिवके बास को पर्वत जो कैलास ताहूते गरू या धनुषको जानिये पुनः कमठ पृष्ठतेखोर कछुवाकी पीठीते अधिककठोर है तथा अचल कैसा है यथा बज्रको तनतोरि ताही को जोरिमानौ बिरंचि महिसंग ब्रह्माने पृथ्वी के साथही रचिदिया है १ काहेते जानिये कि बज्रको सकल तनतोरिकै याको ब्रह्माने रचाहै कि मोरियाको तोरि कै दशानन सब भांति बलकरि हारिमानि रावण मुख फेरिगया तथा बाणासुर ऐसासुभट महाबली सोऊ भज्जितभये अर्थात् ऐसाचोरायभागे जाको जात समय कोऊ जानिनहींपावा कबगये २ शिवहि छाँड़ियाको मरमकोऊ जानन अर्थात् याधनुषको गुप्तहाल एक शिवजी जानतेहैंजिन याको चढ़ाये हैं अरु शिवको बराय और कोऊ सुरनर नागादि याकोहाल नहीं जानताहै कि कैसा गरू कठोर है हे राजालोगो याधनुषको तानिये उठायकै खैंचिये परंतु निज आपनाबल हृदयमें विचारि लीजिये कि हमारे इस माफिक बलहै भावजो कैलास उठावा ताको उठावा यह नहीं उठिसका इस विचारते हरगिरि जो कैलास ताहूतेगरूइस धनुषको जानिये बलहोय उठाइये ३।७१॥

मू०। नृपसमाजप्रणकहतहौं रेखावचनखँचाय। रंकराजशिर ताजस्वइलेहैधनुषउठाय १ लेहैधनुषउठायजगतमहँकी

रतिहोई । जयमालाउरडारिजानकीव्याहैसोई २ स्व इधनुधरिबलसमुझिनिजमुखमेंकारिखनहिंलहौं । बीरधीर धनुसोगहैनृपसमाजमेंप्रणकहौं ३ । ७२ ॥

टी० । बंदी बोलेकि महाराजको जो प्रणहै ताको नृपराजनकीसमाज में हमरेखा खँचायकै बचन कहते हैं भाव जो हमकहते हैं सोई निश्चय जानौ क्या प्रणहै यथा शिवको धनुष जो उठाय लेहै सोरंक अर्थात् चहै कंगालहोय व राजाहोय या समाजमें सोई शिरताज होयगो १ कैसे शिरताजहोयगो कि जो धनुष उठायलेहै ताकी प्रथम तौ जगत महँ कीरति होई सबै प्रशंसा करहिंगे पुनः वाहीके गरेमें कन्याजयमाला डारैगी सोई जानकी को बिवाहै २ कीरति जयमाल सहित कन्या बिवाहै यहलाभ तौ बड़ीहै परन्तु निज आपना बलयाके उठायबे योग्य समुझिलेई सोई धनुषको धरीउठाइबे हेत हाथ लगाई नातरु मुख में कारिखनहिंलहौ अर्थात् जो धनुष उठावने गया अरु न उठा यह उपहास रूपकारिखन लिह्यो याते बेहतर बैठरहना है ताते धीर्यवंत जो बीरहोय सोई धनुगहै उठावने हेत हाथ लगावै इत्यादि नृपजो राजा तिनकी समाजमें महाराजको प्रण हम कहते हैं ३ । ७२ ॥

मू० । नहिंछीवैकरधनुषयेसबकोकहौंबुझाय । जिनभूपनरणमंडिकैरिपुबलदेखिभगाय १ रिपुबलदेखिभगायगायद्विज संतनमानहिं । परतियपरधनहेतदेतशठहठवशप्रानहिं २ प्राणहिदेतसमर्पिकैममताबशपातकबये । कारिखलागहि मुखनमेंनहिंछीवैकरधनुषये ३ । ७३ ॥

टी० । पुनः बंदीबोलेकि सबको बुझाय सबराजनको समुझायकैहम कहतेहैं ये धनुषकर नहिंछीवै यतिआचरणवाले राजा शिवधनुषको हाथते छुवैं नहीं कौने आचरणवाले जिन भूपनरण मंडिकै अर्थात् शत्रुकेसन्मुख युद्ध प्रारंभ करिकै पुनः रिपुबल देखि भगाय अर्थात् शत्रुको सबल देखि प्राण बचावने हेत पीठि देखाय भागिगये १ रिपुको सबल देखि भागि जातेहैं इतिकादर पुनः गाय द्विज जोब्राह्मण संत इत्यादिको बड़ा करि नहीं मानतेहैं ताते अधर्मी पुनः परस्त्री परधन हरि लेनेहेत शठहठ बशते प्राण देतेहैं अर्थात् कामबश ते परारी स्त्री प्राप्तीहेत तथा परारधन

हरिबे हेत ऐसे लोभीहैं कि अनेक उपाय बांधि प्राणहूं त्यागि देतेहैं ऐसा हठ पकरतेहैं २ अधरमपर प्राणहिं समर्पि देते हैं इत्यादि ममता बशते पातक बये देहाभिमानते लोकसुख चाहते तनरूप क्षेत्रमें महापापनको बीज बोइराखे ताते सर्वांगमें पाप वन ह्वैगया है ये आचरणवाले राजा शिवधनुष करसों नछुवें काहेते मुखनमें कारिखलागि है भावधनुष तौ उठी न वृथाही उपहास होई ताते धनुष न छुवें ३ । ७३ ॥

मू० । ऐसेनृपधनुकाधरैंसुनहुसकलमहिपाल । प्रजादंडपरचंड अघदाननकवनेहुंकाल १ दाननकवनेहुंकालदेवगुरुपितृ नमानाहिं । श्रीमदतेमदअंधवेदकोपंथनजानाहिं २ जानहिं मातुनपितुधरमकर्मवचनपातककरैं । कारिखकुलहिलगाव हींऐसेनृपधनुकाधरैं ३ । ७४ ॥

टी० । पुनः बंदीबोले हे सकल महिपालहु राजालोगहु हमारे बचन सुनहु ऐसे नृपधनुकाधरैं ऐसे आचरणवाले राजाक्या धनुषको उठावहिंगे नहीं उठायसक्ते हैं कैसे आचरणवाले जे विनापराध बधबंधन ताडन धन हरणादि प्रजाको दंडदेते हैं पुनः प्रचंड अघपाप यथा साधु ब्राह्मण कोधन हरणबध ब्राह्मणी कुलस्त्री गमन इत्यादि करतेहैं तथादान कौनेहु काल नहीं अर्थात् साधु ब्राह्मणको भोजन धनादि न पूर्वदीन्हे न अब देते हैं १ भूतवर्त्तमान कौनेहुं काल न दानकीन्हे अरु देवतागुरु पितृ इत्यादि को नहीं मानते हैं अर्थात् गुरुसेवा आज्ञा संध्या तर्पणादि कुछ नहींकरते हैं काहेते राज श्रीमदमें मत्तऐश्वर्य में मदांधताते वेदको पंथधर्म आचारादिनहीं जानतेहैं २ माता पिता मानिबे को धर्म नहीं जानते हैं अरु कर्म वचन पातक पापही करतेहैं अर्थात् परधनहरण हिंसापरस्त्री गमनादि कर्म ते पाप कठोर बचन झूठ बोलन निंदा वृथाबोलन वचनपापहै ऐसेनृपधनुषको न धरैं हाथ न लगावहिं काहेतेकुलहि कारिख लगावहिंगे भावधनुषतौउठीनइसउपहासते कुलमेंस्याहीलागिपूर्वयशजाई ३।७४ ॥

मू० । ऐसेनृपधनुनागहोमानहुवचनप्रतीति । पुरघेरहिलावहिं अनलराखहिंनहींसभीति १ राखहिंनहींसभीतमीतमंत्री हिततोरैं । पातकबांधैंसेतुपुण्यसरिसरस्वतिफोरैं २ मानम

दिद्विजधनहरैंतियबालकबधकुलदहौ । कहौंपुकारिपसारि
करऐसेनृपधनुनागहौ ३ । ७५ ॥

टी० । पुनःबंदीकहत कि हमारे बचनकी प्रतीतमानहुऐसे नृप ऐसेआचरणवाले राजाधनुषकोनगहौ हाथनलगावहु कैसेनृपजे शत्रुकोपुरअथवा किसीको ग्रामजेआपनी सेनातेघेरतेहैं अरुअनल लावहिंग्राममें अग्निलगायदेतेहैं तामेंसभीति नहिंराखतेहैं अर्थात् अनेक जीवजरिजाहिंगे ताकी भयनहींराखतेहैं कि यामें महादोषहोयगो १ सभीतिनहीं राखतेहैं बरबश ग्रामफूंकिदेतेहैं पुनःमीतमंत्रीको हिततोरि देतेहैं आपनेस्वारथ हेतु सबके शत्रुह्वैजातेहैं ऐसेकृतघ्न पुनःपातकबांधहि सेतु पापको पुलबाँधते हैं अर्थात् हिंसा परधन हरण परस्त्री गमन इत्यादिपाप आपु करते हैं तिनके करनेवालेन को आदरकरतेहैं इतिसुलभ मार्गकरि देतेहैं ताते अभय ह्वै प्रजामहापापं करने लागतेहैं पुनः पुण्यकी सरिसर नदीताल ताकीवृत्ति जो रीतिहै ताको फोरै पुण्यकर्म में बाधाकरतेहैं २ कैसी बाधाकरतेहैंमानमर्दिद्विज धनहरैं ब्राह्मणनको अनादर करि उनको धनहरि लेतेहैं तहां विप्रमाननापुण्यको तड़ागहै भोजनदान देनापुण्य की नदीहैसो धर्मसेतु जबआपही नाशकिये तबसबै अधर्म करनेलगे पुनःतियबालक बध अर्थात् जबशत्रुकी पराजय करिपाये तबउनकी स्त्री बालकनको मारिडारतेहैंऐसे पापनते कुल दहौ परिवारसहित नाशहोतेहैं ऐसे नृपराजा अधर्मीते यहि धनुषको नागहौ हाथनालगावौ यहबात हमपुकारिकै कहतेहैं भावधनु उठावने ते पीछे उपहास होई ३ । ७५ ॥

मू० । समुझिभूपधनुषहिधरौनिजकुलबलदलदेखि । मातु और
पितुऔरहेधर्महितजेविशेखि १ धर्महितजेविशेषिशूरकी
लीकनजाकी । शत्रुसमरबलवंततेगतीक्षणनहिंबांकी २
बांकीकीरतिचंद्रसीजगतउजेरोनहिंकरौ । भाटकहतप्रण
खौंचिकैसमुझिभूपधनुषहिधरौ ३ । ७६ ॥

टी० । हे भूपहू समुझिकै धनुषहि धरौ क्यासमुझिकै निजकुल बल दलदेखि भावजब आपनाकुल उत्तमदेखौ पुनः तुम्हारे धनुषउठावने योग्यबल होय पुनः धनुष उठावनहारके बहुतेरे राजाशत्रु ह्वै जायँगे तिनसों युद्धकरिबे योग्यतुम्हारे दलहोय इत्यादि आपनादेखि पारजाबे योग्यसब

बात समुझि तब धनुषउठावो अरु जिनकी माता औरजाति तथा पिता और जातिहैं इत्यादि कमअसिल ताहूपर जे बिशेषिसत्य शौच तपदाना- दि धर्मको तजेहैं १ विशेषि धर्महितजेहैं अरु शूरकी लीकनजाकी अर्थात् एकतो धर्मवंतनहीं पुनः शूरबीरनमें जिनकी गनती नहींहै पुनः बलवंत शत्रुते समरमें जिनकी बाँकी तीक्षणपैनी तेगनहीं है भाव सबलतेयुद्धक- रिबेमें कादरहैं २ बांकी कीरतिचंद्रमासरीखे जगतमें उजेरो नाहिंकरो भा- वजाके धर्म आचरणकी प्रशंसा लोकमेंनहीं होतीहै ते कैसेधनुष उठाय सक्त हैं इत्यादि प्रणरेखा खैंचिकै भाटकहते हैं हे भूपहु समुझि धनुषहि धरौ ३ । ७६ ॥

मू० । धनुषआँगुरीजनिछुयोबलकुलआपुनिहारि । सत्यसुकृत त्यागेहृदयकहतअसत्यविचारि १ कहतअसत्यविचारिना रिबधब्राह्मणकीन्हौ । आगतकोसंकल्पिएँचिद्विजमुखते लीन्हौ २ द्विजमुखछरसनकरिभर्योदानिशिरोमणियशलि यो।बदनरदनमसिलागिहैधनुषआँगुरीजनिछुयो ३ । ७६ ॥

टी० । हे भूपहु आपुबल कुलनिहारि आपनाउत्तम कुल धनुषतोरिबे योग्य बलदेखिकै तबअँगुरी ते धनुषछुयो नातरुजे सत्य आचरण तथा सुकृत पुण्याय हृदयते त्यागे असत्यबिचारिकै कहत अर्थात् आपनीबड़ाई स्वारथ बिचारि झूंठही कहतेहैं १ यथास्वारथ हेतझूंठ बोलतेहैं तथानारि अरुब्राह्मणको बधकीन्हे प्राणहरे पुनःजोआगतको संकल्पिसो द्विजमुखते ऐंचिलियो अर्थात् पूर्वकाल जोभूमिसंकल्पिद्यियो पुनःकिसीबातसोंनाराज भये तब खातहुये ब्राह्मणों के मुखते छीनिलियो २ पितृनकी संकल्पी भूमि तौ ब्राह्मणनते लैलीन्ह्यो अरु द्विजमुख छरसकरि न भर्यो अर्थात् मधुर चरपरादि षटरस भोजन बनाय ब्राह्मणको भोजन कबहूं नकरायो जाते दानि शिरोमणि यशलियो उत्तमदानी यशपावते सो नहीं कीन्ह्यो अधर्मके भरे भूप अँगुरीते धनुष न छुयो नातरु बदन मुखै मसि स्याही लागी ३ । ७७ ॥

मू० । शेषसमाननरेशसोधरेभूमिकोभार । जाकोभानुसमानकोते जप्रतापअपार १ तेजप्रतापअपारचंदसमकीरतिभारी । पावकसमद्युतिवंतपवनतेबलअधिकारी २ बलअधिकारी

पवनसोबुद्धिप्रकाशगणेशसो । सोधनुछुवैमहेशकोशेषस
माननरेशसो ३ । ७८ ॥

टी० । कैसा राजा धनुषउठाय सकाहै जो शेषजीकी समान भूमिको भारधरे भाव परिश्रम सहिकै भूमिकी रक्षाकरतेहैं ऐसे जे भूपहैं सो पुनः भानुसमान जामें तेज प्रताप अपारहै अर्थात् जो बिनासहाय अकेले सब को जीतिसकै जाके सन्मुख कोऊ न ह्वैसकै ताको तेजकही पुनः दो० ॥ होतजु अस्तुतिदानते कीरतिकहिये सोइ । होत बाँहुबलते सुयशधर्म नीति सोहोइ ॥ जाकी कीरति सुयशसुनि होत शत्रुउरताप । जगडरात सबआपही कहिये ताहि प्रताप ॥ इत्यादि तेज प्रताप सूर्यनकी समानजामें बडाभारी हो १ यथा सूर्यनसम तेज प्रताप अपारहोइ तथा चंद्रसम भारी कीरति होइ चंद्रसमशीतल तापहारक आनंददायक पोषक पुनः शील सुभाव दानकी बडीभारी प्रशंसाहोइ पुनः पावक अग्नि समद्युति प्रकाशहोइ पुनः पवनते अधिकारी बलकरिकै होय २ पवनसो अधिक बलीहोय पुनः गणेश जीकी समान जाके बुद्धिकी प्रकाशहोय सो महेशको धनुष पिनाक छुवै जो शेषसम भूमिकोभार धरनेवाला भूपहोइ सो धनुषउठावै ३ । ७८ ॥

मू० । यहिप्रकारकेनृपधरैंशिवपिनाकपरचंड । जाकेसत्यप्रताप
कोध्वजादीपनवखंड १ ध्वजादीपनवखंडभूपहरिचंदसो
होई । पृथुरघुबानदिलीपसगरअंशुमानसोकोई २ कइय
यातिसुगाधिसेंशिविदधीचनृपउच्चरै । बारबारप्रणउच्चरौं
यहिप्रकारकेधनुधरै ३ । ७९ ॥

टी० । शिवजीको पिनाक धनुष प्रचंड अर्थात् महाकठोर गरूहै ताको यहिप्रकारके नृपराजाधरै धनुष उठावै क्यहिप्रकारके राजा जाकेसत्यधर्म तथा प्रतापको ध्वजा सातौद्वीप तथा नव खंडमें प्रकाशमानहै १ कैसे राजनके सत्य प्रतापको ध्वजा सातद्वीप नव खंडमें प्रकाशितहै यथा अयोध्याके भूप हरिचंद जे सत्य धर्मपर सर्वस धन राज्य स्त्री पुत्र आपनी देहतक दैदीन्हे सत्य न त्यागे ऐसा जो होय अथवा पृथुकी समान होय जे प्रजाकी रक्षाहेत बरबस गहि धेनुरूप पृथ्वीको दुहे अथवा रघुकी समान होय जे यह प्रतिज्ञाकीन्हे कि याचकको नाहीं ना करब जो माँगी सोई देब तथा कैसहू सबलबीर युद्धमें सन्मुखहोई ताको पीठि न देब

सन्मुखैजूझब तथा परस्त्री पर दृष्टि न करब येप्रतिज्ञा अमल निबाहे पुनः बान जो अयोध्याके राजाभये जिन परिपूर्ण धर्मपाले तथादिलीप जिनकी राजमें गाय बाघ एकघाट पानी पीतारहै अथवा सगर जिनके पुत्र समुद्र खोदे जिनकी अश्वमेधको घोडा कोऊ न बाँधिसका अथवा अंशुमान समहोय २ अथवा कोई ययाति समहोय जे एकसैएक अश्वमेध यज्ञकरि इसीदेह इंद्रपदपर चलेगये वा गाधि सम प्रतापवंतहोय अथवा शिविकी समान दया वीर दानीरहे जे कबूतरीके प्राण बचायबेहेत आपनी देह दै दीन्हे वा दधीच समहोय जे देवतनके हेत प्राणत्यागि हाड़दीन्हे ऐसा जो नृप उच्चरै जाकोयश जगत कहिरहाहोइ यहिप्रकारके जे नृपहोइ ते धनुष को धरै शिव धनुषको उठावै इसहेत बारबार प्रणउच्चरै कहतेहैं ३ । ७९ ॥

मू० । कीनारायणधनुधरैंजाकोप्रबलप्रताप । धस्योमेरुमंदरमहीमथेउसिंधुकरिदाप १ मथेसिंधुकरिदापप्रबलहिरण्याक्षहिमारयो । मुरमधुकैटभबधनसुयशजगमेंबिस्तास्यो २ बिविधभांतिबसुधासकलतुलसीप्रतिपालनकरैं । दुस्यो होयनृपरूपधरिसोनारायणधनुधरैं ३ । ८० ॥

टी० । पुनः बंदीबोले कितौ नारायण धनुधरैं उठाय तोरिसक्तेहैं काहेते जाको प्रताप प्रबल है भाव जाके प्रतापके आगे सुरासुरादि सबके प्रताप मंदपरिजाते हैं कैसेहैं नारायण जे मेरु मंदर महीधरयो सुमेरुआदि पर्वतनसहित सब मही पृथ्वीको धारणकिहे हैं अथवा बाराहरूपते पृथ्वी धरे पुनः कच्छपरूपते मंदर मेरुधस्यो मंदराचल पर्वत पीठिपर धस्यो पुनः चतुर्भुजरूपते दापकरि मानसहित समुद्रमथे सबरत्नैनिकारे १ दाप करि सिंधुमथे पुनः बाराहरूपते प्रबल प्रकर्षकरिकै बली जो हिरण्याक्ष ताकोमारे तथा मधुकैटभ मुरादि बड़े बली दैत्यभये हैं तिनको बधन अर्थात् मारिकै जगमें सुयश बिस्तारयो सुंदरयश फैलाये २ इसीभांति गोसांईजी कहत कि बिविधभांतिके रूपधरि सकल बसुधा सबपृथ्वी प्रति पालनकरै भाव जबजब धर्मकी हानिभई तबतब अनेक रूपधरि भूभार उतारि धर्मस्थापनकीन्हे सोई नारायण बर्त्तमानमें जो नृपरूपधरि दुरयो होइ अर्थात् राजकुमाररूप धारणकिहे राजसमाजमें छिपा बैठाहोइ सो नारायण धनुषधरै उठावै तूरै ३ । ८० ॥

मू० ।बिधिसमानपरचंडसोआयोहोयसमाज।ज्यहिजगकीरचना करीसरिसरगिरिगिजराज १ सरिसरगिरिगिजराजसमुद्रसा तहुजिनबांधे। ऊंचनीचजगसृष्टिप्रबलबलतेज्यहिसाधे२ साधिवेदचारौमुखनिरचोसकलब्रह्मांडसो । यहकोदंडसो ईधरैबिधिसमानपरचंडसो ३ । ८१ ॥

टी०।बिधि ब्रह्माकी समान प्रचंड बड़ातेज प्रतापवंत सोजो यहिराज-समाजमें आयोहोय ज्यहि सब जगकी रचनाकरी सबभूतको उत्पन्नकियो कौनरचना सरि नदी सर तड़ाग गिरि पर्बत गजराज जे दिग्गज पृथ्वी को थांभे हैं १ नदी तड़ाग दिग्गज पुनः जिन सातहु समुद्रबांधे तिनके बीचिमें सातद्वीपबनायेतथा ऊँचे स्वर्गदेवादि नीचे भूतल पातालनरनागादि वा ऊँचे मुक्त मुमुक्षू नीचे बद्धजीव वा ऊँच ब्राह्मणादि नीच शूद्रादि वा ऊँचे सुर नरादि नीचे पशु पक्षी कीट पतंगादि यावत् जगकी सृष्टि है ताको ज्यहि प्रबल बलतेसाधे प्रकर्षकरिकै बलहै जिनमें त्यहिबलते जाकी जैसी मर्यादाबांधे ताको तैसेही निबाहत यथा घिरुहरीआदि जलबर्षे भूमि में आपही पैदाहोत गूलर फलमें भुनगा आपहीहोत कुशवारीमें कीट बिना खाये पिये वृद्धहोत इत्यादि निबाहत २ चारिमुखनि चारिहुवेद साधे शुद्ध उपजाये इसीभांति सब ब्रह्मांडको रचे सोई यह कोदंड धनुषधरै उठावै जो बिधिसमान प्रचंडहोय ३। ८१ ॥

मू० । कीपुनिशंकरधनुधरैज्यहिबिषकीनोपान । त्रिपुरदनुजदाह नजगतहतोएकहीबान १ हतोएकहीबानमदनतनरिसमें जारयो। चंदगगनशिरधरैशूलसूरजज्यहिमारयो २ मारयो दुखसबजगतकोजगतसबैपलमेंहरैं। आयोजोनृपरूपधरि कीपुनिशंकरधनुधरैं ३ । ८२ ॥

टी० । नारायण ब्रह्मा की पुनि शंकरहोइ तौ धनुधरै उठावै काहेते ज्यहि शिवजीने हलाहल बिषको पानकरि पचैडारे पुनः जगत्दाहन भस्म करता अर्थात् संसारको नाशकिहे देतारहै ऐसा त्रिपुर दनुज दैत्य त्रिपुरा-सुर ताको जिन एकही बाणतेहत्यो नाशकरिदीन्हेउ १ यथा त्रिपुरासुरको एकही बाणतेमारे तथा महाबली बीर काम ताको रिसमें अग्नितेजारयो क्रोधकरि भस्मकरिदीन्हे पुनः सिंधुते जो निसरा त्यहि चंद्रमाको शीशमें

धरेहैं पुनः दूसर जो अत्रि मुनिकोपुत्र चंद्रमा गगन आकाशमेंहै तथा सूर्य तिनको ज्यहि शंकरने त्रिशूलसों मारयो भाव महा प्रलयकालमें सबको नाशकरतेहैं २ पुनः कृपाकरि सब जगतको दुःखमारयो भाव सदा सबै जीवनकी रक्षाकरतेहैं पुनः प्रलयकाल आयेपर एकपलकभरेमें सबैजगत कोहरैं नाशकरते हैं सोई जो नृप राजाको रूपधरि आयोहोइ तौ शंकर धनुधरैं ३ । ८२ ॥

मू० । गणनायकसोहोयजोसोधनुधरैप्रमान । जाकोपूजैप्रथमसुर विघ्नहरणकीबान १ विघ्नहरणकीबानध्यानहरिहरबिधि साधैं । ज्यहिसुमिरणतेसिद्धसिद्धियोगहिअवराधैं २ अव राधैंगिरिजासुवनफलपावहिमुखजोहिजो । सोपिनाकयह करधरैगणनायकसोहोयजो ३ । ८३ ॥

टी० । जो गणनायक सो गणेश जाकी समानहोइ सो प्रमाण धनु- धरै सत्यकरि सोई उठावै कैसे गणेशहैं जाको पूजैं प्रथम सुर सबदेवता जिनको मंगल कार्यमें प्रथमहीं पूजते हैं काहेते बिघ्नहरणकी बान जिनको स्वभाव बिघ्नहरता है १ विघ्नहरणकी बान सुभावहै ताते हरि हर विधिसाधैं ब्रह्मा बिष्णु शिवादिकार्य सिद्धीहेत साधना पूजादि करते हैं काहेते जाकोनाम स्मरण ते सब विघ्न मिटि कार्य्य सिद्धहोत पुनः जिनकी सुमिरनकरि सिद्धजन योगहि अवराधैं प्राणायामादि योगक्रिया करतेहैं २ गिरिजा सुवन पार्वतीकेपुत्र गणेशजीको अवराधत पूजा जपा- दि करत संते जोमुख जोहिसो फल पावहिं जोई आश्रितहै गणेशजीको मुख निहारता है सोइ अर्थादिफल पावताहै ताते जो गणनायकसो होय सो यहिपिनाक धनुधरै भाव गणेशजीके तुल्यहोय सोयहि धनुषको उठाय सक्ताहै ३ । ८३ ॥

मू० । शशिसूरजदिगपालसबसुरसुरपतिमहिपाल । यक्षसर्पगं धर्वमनुमनुजदनुजयमकाल १ मनुजदनुजयमकालपितृ मुनिसिद्धसमाजै । गिरिसमुद्रवसुमरुतजहांलगिसकल बिराजै २ सकलबिराजैंसबसुनतज्यहिबलहोयसोउठहुअ ब । धरिधनुप्रणपूरोकरौशशिसूरजदिग्पालसब ३ । ८४ ॥

टी० । शशि चंद्रमा सूर्य्य दिग्पाल सब सुरभाव दिशनको पालने

बाले सब देवता तथा सुरपति देवराज इन्द्र महिपाल भूतलके यावत् राजा तथा यक्ष कुबेरादि सर्प बासुकी आदि गंधर्ब तुंबरादि मनु स्वायंभू आदि मनुज मनुष्य दनुज दैत्य यमकाल १ मनुज सुधन्वादि दनुज बाणासुरादि यमराज काल दिनदंड पक्ष मासादि पितृ कश्यपदक्षादि मुनि सिद्धादि सब सबै समाजमें हैं गिरि हिमांचलादि सातौसमुद्र आठौबसु मरुत पवन इत्यादि जहांलौ स्वरूपवंतहैं सबै इहां बिराजमान हैं २ सुर नरादि सकल बिराजमान हमारे वचन सबसुनतेहैं तिनमें धनुउठायबे योग्य ज्यहि के बल होय सो अब उठौ शशि सूर्य्यादि सब दिग्पालादि धनुष धरौ तूरौ प्रणपूरौ पूरकरौ ३ । ८४ ॥

मू० । बैठकतेउठिउठिसजेसुनतभाटकेबैन । अभिमानीमानीमहिपकियोहियेअतिचैन १ कियोहियेअतिचैनदेवबलइष्टसँभार्‌यो । कटिपटदृढ़करिदंडभुजनिकोजोरप्रचार्‌यो २ जोरप्रचारिनिहारिभटअरुणनयनआसनतजे । कहांधनुषतृणप्रणकहांबैठकतेउठिउठिसजे ३ । ८५ ॥

टी० । भाटकेबैन जनकजीकी प्रतिज्ञा जो बंदीजन सुनाये तिनको सुनि जेमहीप अभिमानी मानीरहे अर्थात् बलादिकोगर्व ताको अभिमान कही तथा ऐश्वर्यादि परचित उन्नत राखना सोमान है यथा गर्वः अभिमानः अहंकारः त्रयंगर्वस्यचित्तस्यसमुन्नतिः परस्मादुत्कर्षचिंतनेनौन्नत्यं मानउच्यते इत्यमरविवेके इति अभिमानीमानी राजाहिये अतिचैनकिय उरमें आनन्दहै बैठकते उठि उठि सजे भूषण बसन सँभारे १ हियेमें अत्यंतचैन आनंदमानि पुनः इष्टदेवनको बल सँभारे सुमिरणकीन्हे पुनः कटिमें पट दृढ़करि कमरबंद कटिमें पुष्टकरिबाँधे पुनः भुज दंडनको जोर प्रचारे तालदैचले २ जोर प्रचारि जोरकरि तालठोंकि धनुषको निहारि भट अरुण नयन क्रोधते नेत्र लालकरि योधन आसनतजे आसनतेचले इसभांति बैठकते उठि उठि राजासजे पुनः मानकरि बोले कहा धनुष तृण तिनुकासम धनुष क्याहै भाव अबहीं तोरेडारते हैं पुनः प्रण कहा भाव जोन धनुष टूटीतौ बरबस बिवाह करेंगे ३ । ८५ ॥

मू० । धनुननयोकरकटिनयोतमकिछुयोधनुआनि । पांवनवैशीशहुनवैभईप्रबलबलहानि १ भईप्रबलबलहानिमानमुख

कोसवसूख्यो।तनमेंचल्योप्रस्वेदअधरदलविद्रुमरूख्यो २ रूख्योविद्रुमबदनभोदेहदशाबिह्वलभयो । लोचनमन दूनौंनयेधनुननयोकरकटिनयो ३ । ८६ ॥

टी० । अत्यंत बलकरि उठावनेलगे तहां धनुषतौ नहींनयो परन्तु श्रमितभयेते करकटि नयो हार्थं करिहाउं टेढ़ेह्वैगये काहेते आनि तमकि धनुछुयो अत्यंत बलकरि धनुष उठाये ताते पाँवनये तथा शिशहुनवे पुनः प्रबल प्रकर्ष करिकै जोबलरहा ताकी हानिभई १ काहेते जानिये प्रबल बलकी हानिभई कि मुखको जो मानरहो सोसब सूखो मानते जो प्रसन्नतारहै सो श्रमते नाशभई मुख सूखिगया पुनः तनमें प्रस्वेद पसीनाचल्यो विद्रुमदल अधर रूख्यो मूंगासम अरुण ओष्ठ रूखेपरिगये सूखिगये २ विद्रुमसम अरुण अधर तथा वदनरूख्यो परिगये तथा देहकीदशा विह्वलभई सर्बांग ढीलेपरिगये पुनः लोचननेत्र अरु मनदोनौं ढीलेपरिगये ताते नयेभाव अतिश्रमते नेत्रनपर पलकैं झांपिगईं मन हारिमानि लियो काहेते धनुतौ नयोनहीं भावउठि न सक्यो अरु अत्यंत बलकरनेते हाथकरिहाउं नयगयो सीधे नहींहोतेहैं ३ । ८६ ॥

मू० । एकतजैंएकैधरैंकरैंअनेकउपाय । बैठेठाढ़ेमध्यधरिधनुक हुँचाउनखाय १ धनुकहुँचाउनखायबिरदबंदीगणबोलैं । बैठहिंशीशनवायनयनपलकैंनहिंखोलैं २ नयनकरेरेभाट कहिमातुजनेकहुंतरुतरे।कोदोकणे अहारके एकतजै एकैधरे ३ । ८७ ॥

टी० । एकराजा उठायकै हारिगये तातेतजैधनु उठावन त्यागि अलग खड़े भये तब एक राजाधरै धनुष पकरि उठावने लगे ते अनेक उपाय करैं कैसे उपाय करते हैं बैठे ठाढ़े धनुमध्य धरि बीचमें पकरि अनेक भांति बलकरि उठावते हैं परन्तु कहूँचाउ न खाय भाव किसी भाँति मनुचैन नहीं पावत १ जब धनुष उठावतमें मनुचाउ नहीं खात किसी भाँति तिलभरि भूमि नहीं छांड़त तब हारिमानि आय शीशनवाय नेत्र मूँदि आसनपर बैठे लज्जाबश नयननकी पलकैं नहीं खोलते हैं यह दशादेखि जे बंदीगण पूर्ब राजनकी बिरदावली बोलैं पूर्वकोयश करिरहे रहैंते प्रतिकूल बोले २ क्या प्रतिकूल बोले नयन करेरे भाटकहि सक्रोध

नेत्रगुरेरि भाटकरेरे कुबचन कहेकि कहुँ तरुतरे मातुजने अर्थात् किसी विपत्ति कालमें घरछोड़ि बनको भागिगये तहां कहूंकिसी वृक्षतरे माताने जन्मा तहां उत्तम भोजन तौमिला नहीं कोदौके कण अहारकरिकै दूध पिआये ताते जन्मही ते कमजोर हैं तेई राजा एकतजें एकैधरें अनेक भांति बलकरि हारिबैठे धनुष किसीने नहीं उठावा ३ । ८७ ॥

मू० । धनुधनसबकोहरिलयोमतिगतिनामसदाप । यशकी रतिबलबीरताधीरजतेजप्रताप १ धीरजतेजप्रतापनियम व्रतधर्मसुकर्मनि । अस्त्रशस्त्रकीहारिरूपद्युतिलाजकाज गनि २ लाजकाजपरगाजधरिराजनिधनुकरसोछियो । रीतेबीतेसबभयेधनुधनसबकोहरिलियो ३ । ८८ ॥

टी० । शिवको धनुष सब राजनको उत्तमतादि सबधन हरि लियो कौन उत्तमधन यथा मतिकीगति अर्थात् सुबुद्धिको विचार नाम उत्तम प्रशंसा सदाप सहित अहंकार पुनः यश अर्थात् नीति धर्म सहित बाहुबलकी प्रशंसा तथा कीरति अर्थात् दानशीलादि की प्रशंसा बल बीरता धीरज तेज प्रताप तहां कैसहूंदुर्घट कार्यपरै ताकोकरि डारबेमें श्रमनआवै ताको बलकही सबलशत्रु ते युद्धकरत में मनहर्ष मुख प्रसन्न बनारहै ताको बीरता कही तथा काम क्रोध हानि लाभ आपत्कालादिमें मनथिर रहना धीर्यहै जाकी सन्मुख कोऊ न ह्वैसकै सो तेजहै जाको सबडरै सो प्रतापहै १ नियमव्रत अर्थात् सदाचार एकरस निबाहना पुनः सत्य शौच तप दानादि जोधर्म तामेंहोम पूजापाठ संध्या तर्पन तीर्थादि जो सुकर्म इत्यादि सबनाश भये तथा अस्त्र बाण चक्रादिशस्त्र खड्गगदादि तिनकी हारि भई तथारूपकी द्युति जो प्रकाशपुनः लाजके जे काजहैं यथाबडेनको दबाव अनुचित त्यागादि २ लाजकाजादि पर गाजधरि नाशकरितव राजनकर हाथसों धनु छुयो तबधनुष ने सबकोउत्तम धनहरि लियोताते सबराजा बलबीरतादिते रीते खालीभये तथासुकृतआदि जो पूर्वकीपूंजी रही सो बीत्यो चुकि गयो ताते मंदभये ३ । ८८ ॥

मू० । गाजिगाजिधनुकरधर्योलाजिलाजिगेभाजि । साजिसाजिबलदलसबैराजाराजसमाजि १ राजाराजसमाजभये मुखगोवनलायक । संपतिसबैगँवायकर्योशंकरधनुधा

यक २ धायकआसनपरगयेजनुतनबलधनुछलिहर्यो। लाजिलाजिबैठेसकलगाजिगाजिकरधनुधर्यो ३।८६ ॥

टी० । गाजिगाजि करधनुधरयोराजालोग गर्जिगर्जि हाथनसों धनुष उठावनेगे जबधनुष न उठा तबलजाय लजाय भागिगये कैसे आये रहैं आपनाबल सँभारि तथादल साजि साजिसबै राजाआय यहांराज समाज में बिराजमान भये १ ताही समाज में राजा शिवधनुषन उठनेपर मुख गोमुखकी प्रसन्नता तेज उतरि गयो बनलायक उदासीन भये काहेतेसबै संपति गँवायतब शंकर धनुधायककर्यो भाव पूर्वहीआपनी सबै ऐश्वर्य नाशकरि दीन्हे जब किशोरीजीके बिवाह हेत शिवजीको धनुष तोरिबेकी इच्छाकीन्हे धनुषकेपास धायकै गये२जब धनुषनहीं उठोतब कैसेधायकै आसन परगये जनुतनकीप्रभा तथा बलतांको धनुषने छलकरि हरिलियो ताते पूर्वतौ गर्जि गर्जिकरसों धनुधर्यो जबउठिनसक्यो तब सकलराजा लजाय लजाय आय आसननपर बैठे सबशोभा उतरिगई ३। ८९ ॥

मू० । धनुसुमेरतेगरुभयोउठैनकोटिउपाय । तिलनटरै भूपति लरैंधरैंअरैं लपटाँय १ धरैंअरैंलपटाँयजायँगड़िअधिक धरामें । जम्योशेषकेशीशईशजनुचढ़्योकलामें २ कला- रूपकैलासको धरणिरूपधनुकोलयो । उदय अस्तगिरि भारधरधनुसुमेरतेगरुभयो ३ । ९० ॥

टी० । शिवको धनुष सुमेरुते अधिक गरूभयो काहेते कोटि करोरिन उपायकीन्हे तबहूं नहींउठताहै कैसीउपाय भूपति राजालोग करतेहैं कि धरैं अरैं धनुषकोपकरि अडेरहते हैं तामें लपटायकै लरतेहैं अनेकभांति बलकरि उठावतेहैं परंतु तिलनटरै तिलभरि भूमि नहींछांड़ताहै १ जब राजालोग धनुषको पकरि अडे लपटाय ज्यों ज्यों बलकरि उठावाचाहत त्योंत्यों धरा जो भूमि तामें अधिक गडतचलाजात कैसा अचल देखात यथा शेषके शीशपर गडोहै अथवा कला कहे इसकालमें याधनुषपर जनु ईश शिवजी चढ़े बैठेहैं जो इहां उत्प्रेक्षाकरतेहैं सो सत्योपाख्यानमें यथा- र्थहीलिखाहै अर्थात् किसी राजाको शेषरूप किसीको शिवरूप धनुष देखि परा २ अथवा कैलासकोकलारूप है अर्थात् अत्यंतगरू जो कैलास पर्वत ताने आपने अंश कलाकरि धनुषरूप धारणकियो अथवा धरणि धनुको रूपलयो अर्थात् पृथ्वी धनुषकोरूप धारणकियो अथवा उदयगिरि अस्त

गिरिआदि यावत् पर्वतहैं तिनसबको भार धारणकिहेहैं ताते धनुष सुमेरुते अधिक गरूभयो ३ । ९० ॥

मू० । क्रोधवचनबोलेजनकनृपबलपौरुषदेखि । प्रणप्रमाणदेखन सबैआयेभूपविशेखि १ आयेभूपविशेषिमनुजसुरअसुर सभामें । तिलभरिसकैंनटारिशंभुधनुधरयोधरामें २ धरा नछूटीधनुषतेबलनकरयोभूपतितनक । बीरधीरधरणीनहीं क्रोधबचनबोलेजनक ३ । ९१ ॥

टी० । नृप राजनको बल तथा पौरुष बलकी कर्तव्यता देखि अर्थात् जब किसीको उठावा धनुष नउठा तब जनकजी क्रोधसहित बचनबोले कि हमारे प्रणको प्रमाण सत्यता देखनेहेत बिशेषि भूपश्रेष्ठ राजा सबै आये भाव.सबलोकन में यावत् बली बीररहे ते कोऊ बाकी नहींरहे १ कैसे विशेषि भूपआये मनुज जे मनुष्य राजाहैं सुरदेवता असुरदैत्य राक्षसादि सबै सभामें बैठेहैं तेसबलागे परंतु कोऊ तिलभरि भूमिते टारि न सक्यो जिसधरा पृथ्वीमें रहै तहैं शंभुधनुष धराहै २ कैसाधरा है धनुष किधराजो पृथ्वीसोधनुषते तिलभरि न छूटी तातेयहसूचितहोत किभूपति राजा लोग धनुष उठावबेमें तनकौ बलनहीं किये काहेते जो बलकरि उठावते तौ कौनिउदिशि तिलभारितौ खसकतताते अब निश्चयभई कि धीरवीर धरणी नहीं पृथ्वीपर कोऊ धीर्यवंतबीर नहीं रहा इति क्रोधवचन जनक बोले ३ । ९१ ॥

मू० । प्रणहमारमिथ्याभयोजाहुसकलनृपधाम । बिधिनरच्योवैदेहिवरुपुरुषनकोऊबाम १ पुरुषनकोऊजानतोतौप्रणय हधरतोकहा । कन्यारहीकुमारियहभईहास्यजगमेंमहा २ हास्यभईवसुधासकलशूरहीनसबजगठयो । जनकसभामें कहवचनप्रणहमारमिथ्याभयो ३ । ९२ ॥

टी० । जनकजी कहे किहमाराप्रण मिथ्याभयो पूरानपरा ताते सकल नृपधाम जाहुअर्थात् विवाहकी आशात्यागि आपने घरनको सबराजाजातजाहुकाहेते आशात्यागहु किवैदेहिवरु बिधिनरच्यो अर्थात्तुमतौ सब राजा बिधिके रचेहौ अरुजानकी के बिवाहयोग्य जोवरुहै ताको ब्रह्मा ने नहींरचाहै यहव्यंग होत किवहस्वइच्छित प्रकटभया पुनः वाच्यार्थते वै-

देहीको बरु ब्रह्माने लोकमें रचिबैनहींकियो काहेते पुरुषतौ कोऊ देखिन नहींपरते हैं सब बामस्त्री देखिपरते हैं भाव समाजमें पुरुषार्थ काहूमें नठहरा १ पुरुष नकोऊ जानतो भाव पूर्बते जोमैं जानतो कि भूपनमें पुरुषार्थ नहीं है तौ यहप्रण कहाधरतो अर्थात् जो धनुषतोरै ताको कन्या ब्याहौं यहप्रण काहेको धारणकरतो काहेते इसी प्रणके पाछे मेरी यह कन्या तौ कुमारिरही पुनः जगमें महाहास्य भई भाव विदेहको प्रण जड़वत् है यह अगमप्रण क्यों किया कन्या कुमारी राखना मंजूर रहै २ तहाँ मेरी तौ हास्य भइबै भई परंतु सब जगमें यावत् बसुधा पृथ्वी है सो सकल शूरहीनठयो ठहरयो इत्यादि सभामें जनकजी वचन कहे कि हमारा प्रण मिथ्याभयो कोऊ बली बीर न ठहरा ३ । ९२ ॥

मू० । लषणलालकोलालमुखसुनेजनकके बैन । फरकेअधरप्रला
पकोअरुणभयेद्वउनैन १ अरुणभयेद्वउनयनजोरिकरभेउ
ठिठाढ़े । करुणानिधिकीओरबचनबोलेरिसबाढ़े २ बाढ़े
रिसकहसुनुजनकबचनकहौरघुबंशरुख । रामकृपालुसमा
जमहँलषणलालकहलालमुख ३ । ९३ ॥

टी० । जनकके कठोर बचन सुनेतेही क्रोधबशते लषणलालको मुख लाल भयो पुनः प्रलापको अधर फरके यथा ॥ प्रलापोऽनर्थकंवचःइत्यमरः ॥ अर्थात् अनर्थक बचन कहनेहेतु दोऊओठ फरकनेलगे तथा दोऊ नयन अरुण लालभये १ दोऊनयन अरुणभये पुनः करदोऊ हाथजोरि उठि ठाढ़ेभये कैसे ठाढ़ेभये करुणानिधिकी ओर अर्थात् सेवकके दुःखमें आपहू दुःखितह्वै तुरतही दुखहरना यह करुणागुणहै ताके निधि परिपूर्ण भरे श्रीरघुनाथजी तिनकीओर हाथजोरि माथनाय पुनः रिसबाढ़े बचन बोले २ रिस बाढ़ेते उचित अनुचितको विचार नहींराखे ताते कठोर बचन कहे कि हे जनक सुनु रघुबंशको रुखराखे बचन कहौ भाव रघुबंश को अनादर बचन न कहौ काहेते राम कृपालु समाजमें रघुबंशनाथकृपा मंदिर श्रीरामचन्द्र समाजमें बैठेहैं अरुअबहीं धनुषको हाथसों छुये नहीं तौ तुमकैसे अनुचित बचनकहिडारे कि पृथ्वी में कोऊ पुरुषशूरबीर नहीं है तुमको कैसे सूचितभया किरघुनाथजी धनुष नहीं तोरिसकेहैं इत्यादि लालमुखक्रोध भरे लषणलाल कठोर बचनकहे ३ । ९३ ॥

मू० । कहाधनुषजीरणधरौंयहपुरुषारथकौन । प्रभुआयसुपावों
तनकधरौंचौदहौभौन १ धरौंचौदहौभौनमहीघटचटपट
फोरौं । मंदरमेरुउपारिसमुद्रबसुधासबबोरौं २ बसुधाबोरौं
समुद्रमेंसमुद्रसातलमेंभरौं । शेशकेशधरिमहिकरषिक
हाधनुषजीरणधरौं ३ । ६४ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी सों लक्ष्मणजी कहत हे महाराज जीर्णधनुषकहा धरौं बहुत दिनोंको बनापुरानसरा खुहा शिवधनुषताको क्याउठावों यह कौनपुरुषार्थ क्या मेरेबलकी प्रशंसाहोइगी हेप्रभुजो आपुको तनुकआय-सुपावों तौ चौदहौ भुवनधरौंसहजही उठायलेउं १ गेंदकीनाईं चौदहौ भुवन उठायलेउं पुनः महीघटपृथ्वी को कच्चेघडाके समान चटपट शीघ्र-हीफेरिडारौं कौनभांति मेरुमंदरउपारि भावपृथ्वी को आधार जो सुमेरु पर्वतहै ताको उखारिडारौं अरुवसुधा जो पृथ्वी सबताको लैसमुद्रमेंबोरि देउँ २ यथा बसुधा समुद्रमें बोरौं तथासमुद्रको जललै रसातलमें भरौं यामें संदेहहै किपृथ्वीको शेषथाँभेहैं ते कैसेछाँडैंगे तहां शेशकेशधरि महि करषि अर्थात् एकहाथ ते शेषके शिशके बारगहि एकहाथसों पृथ्वीको खैं-चिलेहौं इत्यादि पुरुषार्थ आज्ञाहोयतौ करौं अरु इसपुराने धनुष को क्या उठावों ३ । ९४ ॥

मू० । महिसउठाऊँधनुषयहजोप्रभुआयसुहोय । दिग्गजचारिय
कत्रकरिमहीधरनपुनिसोय १ महीधरनपुनिखैंचिलोकचौ
दहधरिआनौं । हिमिगिरिअरुकैलासधनुषऊपरधरिता
नौं २ तानौंसकलसमाजनृपचढिचढिडारहुँभारकह । धाय
सहसयोजनमहीसहितउठावौंधनुषयह ३ । ६५ ॥

टी० । पुनः लषणलालकहत हे प्रभु जो आपुको आयसु आज्ञाहोयतौ महिजो पृथ्वी त्यहि सहितयहि शिवधनुषको उठावों भाव केवल धनुष उठावने को फलपापमयी है तातेधनुषनहीं छुइसकाहौं पृथ्वी सहित उ-ठाइ हौं पुनः दिग्गजचारि यकत्रकरि दिशागज जो भूमिको थांभे हैं तिन चारिहु को बटोरि एकठेकाने करिदेउं पुनः महीधर जो पर्वत तिनसब-नको सोई भाँति एकत्रकरौं १ मही धरनको खैंचि पुनः चौदहौलोक धरि आनौं अर्थात् अतलादि सातनीचे भूरादि सातऊंचे हैं तिनचौदहौ

लोक पकरि खैंचिकै एकत्र करिदेउँ पुनः हिमाचलगिरि अरु कैलासलै धनुषके ऊपरधरि तानौंभाव धनुषको हाथसों नछुवौं दोऊगोसनमें दोऊ पहार दबाय धनुषको नवावों २ या भांति जब धनुषको तानौं तापरनृप राजनकी समाज चढ़ि चढ़ि भारकहँडारौं अर्थात् भूमि सबलोक दिग्गज सबपहार दोऊपहारनयुत धनुष तापर राजनकी समाज ऐसा भारलिहे सहसहजार योजनलोंधाय दौरा चलाजाउँ इसभांति मही पृथ्वी सहित यहि शिवधनुषको उठावौं जो आज्ञाहोय ३ । ९५ ॥

मू० । जनकहियेसकुचेसहमिडरेसकलमहिपाल । दिग्गजधरथ
लछूटिगोभयतेदिशियमकाल १ भयतेदिशियमकालजान
कीहियहर्षानी । गुरुरघुपतिमनतोषकहीसुंदरमृदुबानी २
महिकंपतिप्रणलषणकेसूरजकेमनसुखभयो । सभासशंक
प्रमाणसुनिजनकशीशसकुच्योनयो ३ । ९६ ॥

टी० । लक्ष्मणजीके बचनसुनि तथा रघुबंशी प्रतापवंतजानि जनकजी सकुचे हियेमें लज्जाभई भाव हमते बचनकहते नहींबने पुनः सकल महिपाल सहमिडरे सब राजालोग अत्यंत भयमानि डराने शंकाभयो काहेते दिग्गज धर थलछूटिगो दिशागज जौनथल धरा पृथ्वीको पकरेरहे सो छूटिगयो भाव शंकामानि कांपिउठे तथा यम कालादि दिशाके पालनेवाले भयते डरिगये १ यम कालादि भयते सबदिग्पाल डरे पुनः जानकीजी हियेमें हर्षानी भाव प्रतापवंतहैं राजकुमार धनुष उठावहिंगे यह बिचारि आनंदभई पुनः गुरू बिश्वामित्र तथा रघुनाथजीके मनमें संतोषभयो भाव यासमयमें ऐसेही बचनकहना उचितरहै ऐसाबिचारि सुंदरि मृदु कोमल बाणीकही भाव आदरसहित बुलाय बैठायलीन्हे २ महि कंपत पृथ्वी कांपिउठी लक्ष्मणजीको प्रणसुनत कुलकी उन्नताई जानि सूर्य मनते परम सुखीभये लक्ष्मणजीके बचन प्रमाण सांचे सुनि सभा सशंक सबकेमनमें शंकाभई जनकजी सकुचे लाते शीशनयो लज्जाते शिरनवायलिये ३ । ९६ ॥

मू० । कौशिकमुनिआयसुदयोसुनहुरामरघुवीर । धनुषउठावहु
बामकरहरहुजनककीपीर १ हरहुजनककीपीरसभाकोशो
चनिवारो । सुरसज्जनसुखलहहिंदुष्टमुखकीजियकारो २

कारोमुखमहिपालसवज्यहिधनुनिजकरसोंछियो । सोधनु करौंमृणालइवकौशिकमुनिआयसुदियो ३ । ६७॥

टी० । कौशिक बिश्वामित्र मुनि धनुतोरनेहेत रघुनाथजीको आयसु आज्ञादीन्हे सुनहुराम रघुवीर रघुवंशशिरोमणि उत्तमबीर हेरामचंद्र हमारेबचन सुनहु बामकर बांयेहाथसों धनुषउठावो अरु प्रण न पूरहोनेकी जो जनककी पीरहै ताको हरहु १ धनुषउठाय जनककी पीरहरहु पुनः जनकके बिषादते सब समाजभरेको पश्चात्तापहै सो सब सभाको शोच निवारहु मिटावहु पुनः सुर सज्जन सुखलहहिं अर्थात् आपुको धनुषउठावतदेखि सुर देवता सज्जन हरिभक्त ते मनभावत सुखपावहिं पुनः धनुषउठाय दुष्टनको मुख कारोकीजिये उपहासरूप मुखमें स्याहीलागै मुखछिपाय भागैं २ तिनसब महिपाल राजनको मुख कारोकरौ ज्यहि निजकर धनुछियो जिन नरेशन अपने हाथनते धनुषउठाये नउठा सो धनु मृणालइवकरौ सोईशिवधनुषको कमलनालकी नाईकरि तोरिडारौ इत्यादि कौशिक बिश्वामित्र मुनि श्रीरघुनाथजीको आयसुदेतेभये ३।६७॥

मू० । करिप्रणामरघुबंशमणिउठेयथामृगराज । आयसुमांगेउ जोरिकरसुखमाछबिशिरताज १ सुखमाछबिशिरताजमंच तेचलेगोसाईं । पुरजनपुण्यसँभारिदेवदुंदुभीबजाईं २ दुंदुभिबाजींअतिघनीबंदीजनधन्यधन्यभनि । मध्यवेदिका परगयेकरिप्रणामरघुबंशमनि ३ । ६८ ॥

टी० । आज्ञापाय बिश्वामित्रजीको प्रणामकरि रघुबंशशिरोमणि यथा मृगराज सिंहसम आसनतेउठे पुनः कर हाथजोरि मुनिनसों आयसुमांगे कैसा रूपहै सुखमा छबि शिरताज अर्थात् स्वरूपता सुंदरता रमणीकता माधुरीआदि यावत् सुखमा शोभाके अंगहैं तिनमें शिरताज सबनसोंउत्तम छबि है जिनमें १ सुखमा छबि शिरताज गोसाईं लोकपालनहार स्वामी मंचतेउतरि धनुषके निकटकोचले तासमय पुरजन जनकपुरके नरनारी आपनी पुण्यसँभारे भाव हमारे जोकछु सुकृतहोय सो यहीसमय सहायहोय जामें सहजही रघुनाथजी धनुषको उठायलेवैं पुनःआकाशमें देवता दुंदुभी नगाराआदि बजाये २ अतिघनी बहुत एकसाथही दुंदुभीबाजीं तथा बंदीजन धन्य धन्यभनि भाव जनकजीको मनोरथसहित

प्रण पूरकरनेवाले आपही कृतार्थरूपहैं इत्यादि कहनेलगे इसभांति मुनि को प्रणामकरि रघुबंशमणि मध्य बीच बेदिकापर धनुषढिगगये ३ । ९८॥

मू० । पटकतधनुलक्ष्मणलख्योजान्योप्रभुमनबात । कह्योधर
णिधारीसबैसजगहूजियेगात १ सजगहूजियेगातधनुष
कोधकादरेरो । जोमहिचलीतौसृष्टिबिकलतासबकोहेरो २
हेरोमैंरघुवंशमणिलेतधनुषमनमंसख्यो । लटकतमहीसं
भारियोपटकतधनुलक्ष्मणलख्यो ३ ।९९ ॥

टी० । लक्ष्मणजी लख्यो देख्यो कि धनुपटकत अर्थात् धनुषकोतोरि डारनेचाहतेहैं यह प्रभुकेमनकी बातजान्यो भाव अबहीं हाथ नहींलगाये उठावनेको मनकीन्हे यहजानि धरणिधारी सबै कहेउ अर्थात् शेष बाराह कमठ दिग्गजादि यावत् पृथ्वीकी धारणकरनेवाले हैं तिनसबनसों लक्ष्मणजी कहे कि गातसों सजगहूजिये देहको सँभारेरहिये १ काहेते गात सजगहूजिये धनुषको धका ठोकर दरेरो दबाव अर्थात् धनुषचढ़ावत में भूमिमें ठोकरलागै वा दबावपरै ताकेबेगते जो महि पृथ्वीचली हाली डोली वा उलटिजाई तौ सृष्टिबिकलता सबकोहेरो सुरासुर नर नागादि यावत् देहधारी सृष्टिमेंहैं तेसब बिकलह्वैजायँगे ऐसा निश्चय जानिलेउ भाव जो आनंदकालमें प्रलयकालको दंड भूतनको भया तौ तुम्हारी बड़ी निंदाहोयगी इसहेत गातसँभारेरहो २ हेसख्यो शेष कच्छपादि सखा लोगो रघुबंशमणिको मैं हेरो मनमें धनुषलेत अर्थात् धनुषउठावनेको मन करिचुके ऐसारुख मैं रघुनाथजीको देख्यों ताते लटकतमही सँभारियो अर्थात् हालत डोलत गिरतसमय पृथ्वीको भलीभांति सँभारि गहे रहियो इत्यादि पटकत धनुषतोरतसमय लक्ष्मणलख्योदेख्यो ३ । ९९ ॥

मू० । बामअंगूठापांयदबिबामहाथगहिलीन। दमकदामिनीज्यों
करैसबकेनयनमलीन १ सबकेनयनमलीनखैंचिकीनोनभ
नाई। शब्दरह्योब्रह्मांडखंडद्वैधस्योगोसाई २ धस्योगोसा
ईंशंभुधनुशब्दसुनेयोगीजगे । खंडखंडधनुतनभयोबामअं
गूठाकेलगे ३ ।१०० ॥

टी० । यही धनुषचढ़ावनेकी रीति है कि बामपांयके अँगूठासों एक गोसा भूमिपरदाबि पुनः बामहाथसों धनुषकी मध्यमूठि गहे अरु दहिने

हाथसों ऊपरको गोसागहि खैंचि रोदाचढ़ाये पुनः उठाय दहिने हाथसों मध्यरोदागहि खैंचे तब ज्यों दामिनी दमकतीहै तैसेही दमक धनुषकरता है ताही बिजुलछटा प्रकाशते सब देखनहारके नयन मलीनभये दृष्टिमें चकचौंधी समायगई ताते कछु देखिनसके १ सबकेनयन मलीनभयेताते काहूको कछु देखितौ परानहीं खैंचिकै नभनाई कीन्हेउ अर्थात् बामहाथे मूठिगहे दहिनेहाथते जब रोदाखैंचे तब धनुष आकाशवत् गोलाकारह्वै-गया दोऊगोसा समीपह्वैगये पुनः जबटूटो तब वाको जो प्रचंड शब्दभया सो ब्रह्मांडभरेमें भरिरह्यो तब गोसाईं श्रीरघुनाथजी टूटे धनुषके दोऊ खंड भूमिपरधरिदीन्हे २ गोसाईं सबको पालनहार रघुनाथजी शंभुको धनुषतोरि भूमिमेंधरे ताको कठोर शब्दभया ताकोसुने जे समाधिलगाये योगीजनरहैं ते जागिपरे देखैंमें तो दोईखंडहैं परंतु चढ़ावतसमय प्रभुके बामअँगूठाको जोरलागेते धनुषको तन खंडखंड धूसिगया ३ । १०० ॥

मू० । शिवशिवबृषभपुकारई धनुषशब्दसुनिघोर । दिग्गजदि-
ग्पालनभयोहृदयकंपअतिजोर १ हृदयकंपअतिजोरकंप-
कैलासईशथल । शिवशिरसुरसरिधारउछलिआकाशगयो
जल २ गयोसुजलआकाशथलउमागणेशविचारई । कहा
भयोकैसोभयोशिवशिवबृषभपुकारई ३ । १०१ ॥

टी० । बृषभजो नंदीश्वर तेविकलह्वै शिवशिव पुकार करनेलगे काहेते धनुभंगको घोर महाभयंकर शब्द सुनिकै तथा दिग्गज जेदिशा गजभूमिके थांभनेवाले पुनः वरुण कुबेरादि दिग्पालनके हृदयमें अत्यंत जोरते कंप भयो भाव भयमानि सबको करेज कांपिउठा १ यथा अति जोरते दिग्-पालनको हृदय कांपा तथा ईशथल शिवको वासस्थान जोकैलास सोऊ कांपिउठा ताते शिवजीके शीश जटाबिषे जो सुरसरि गंगाजीकी धाररहै ताको जल उछलिकै आकाशको चलागया २ जब शिव शीशते उछलि सुजल शुद्ध सुन्दरजल आकाश थलकोगयो ऐसाशिव सहित कैलासहाला सोदेखि उमा पार्वती तथा गणेश मनमें विचार करनेलगे कि कहाभयो यहकौन अद्भुत कौतुकभयो पुनः कैसी भूचालभयो वा कौनवस्तुको घोर शब्दभयो जासों ब्रह्मांड हालिउठा तहां बृषभनंदीश्वरतो बिकलह्वै शिव शिव पुकार करनेलगे ३ । १०१ ॥

मू० । जयजयजयरघुबंशमणिसुरफूलनबर्षाय । वेदविप्रबंदीवि-
रदनारीमंगलगाय १ नारीमंगलगायसियाजयमालउठा
ई । शोभितप्रभुउरमध्यबिश्वकीरतिजनुछाई २ कीरतिगा
वहिंसिद्धमुनिबलप्रतापछबिरूपभनि । सतानंदआनंदकह
जयजयजयरघुबंशमनि ३ । १०२ ॥

टी० । सुरफूलन बर्षाय धनुभंगभयेपर आकाशते देवता फूलनकीबर्षा करतेहैं पुनः रघुबंशमणिकी जयहोय जयहोय जयहोय ऐसाशब्द उच्चारण करते हैं पुनः विप्रवेद पढ़िरहे हैं बंदीजन बिरदावली प्राचीन कुलकोयश बखान करते हैं नारी मंगलगति गाय रही हैं १ संगमें नारी मंगल गीत गायरहीं अरु श्रीजानकीजी दोऊ हाथनते उठाय श्रीरघुनाथजीके गरेमें पहिरायदिये प्रभु छातीपर कैसाजयमाल शोभितहोत जनु बिश्वकीरति छाई भाव इसीकेद्वारा प्रभुकी उत्तमकीरति संसारभरेमें छाई फैलिरही अर्थात् सबै प्रभुकी प्रशंसा करिरहे हैं २ सिद्ध याज्ञवल्क्यादि मुनि नार दादि ते कीरति गावते हैं पुनः बलप्रताप रूपछबि भनि बखान करतें हैं यथा दो०॥होतजु अस्तुतिदानते कीरतिकहियेसोय । होतबाहुबलतें सुयश धर्मनीति सहहोय ॥ जाकीकीरति सुयश सुनिहोतशत्रुउरताप।जगडरात सब आपही कहिये ताहिप्रताप॥पुनःछबियथा ॥ द्युतिलावण्यस्वरूप स्वइ सुन्दरता रमनीय । कांतिमधुर मृदुता बहुरिसुकुमारतागनीय॥शरदचंद्रकी झलक समद्युति तनमाहिं लखाय। मुक्तापानीसमगनौलावण्यतासुहाय॥ बिनभूषण भूषित जुतन रूपअनूपमगौर । सबअँगसुभग सुठौरसुठि सुंदर ता शिरमौर ॥ देखी अनदेखीमनौ तरुनी रमनीसोय । कांतिदेहकी ज्योतिजो भूमिस्वर्णसी होय ॥ देखेतृप्ति न पाइये सोईमृदुता जान । परसे परस न जानिये मृदुताताहि बखान ॥ इत्यादि कोउमुनि प्रभुकी कीरति गायरहाहै अर्थात् कैसा कोमल शीलस्वभाव उत्तम उदारहै कोऊ बलकी प्रशंसा करत अर्थात् ऐसे महाबल हैं कि अत्यंत गरू कठोर शिव धनुष ताको तृणसम तोरिडारे नेकहू श्रमन आया तथा कोऊप्रताप वर्णनकरत अर्थात् जिनकोबल देखि सबराजा डरायगये कोऊरूपकी छबि बखान करतेहैं यथा मुखकी द्युति शरदचंद्रसम मरकत मणिसी तनकी श्यामता चमकिरही भूषण विशेषि नहीं पहिरे स्वाभाविक भूषितवत् देखातेहैं कैसे सर्वांग सुठौरबने ऐसा अद्भुतरूप कि देखनहार देखि अघातेनहीं जेबहुत

दिनते देखिरहेहैं तेऊ कैसी चपकते देखतेहैं मानौ कबहूं देखेनहीं इत्या-दि सिद्धमुनि कहते हैं तथा सबकाम पूर्णभयाजानि आनन्दहै सतानंद कहत श्रीरघुवंशमणिकी जयहोय जयहोय ३ । १०२ ॥

मू० । नृपगणभयेमलीनसबसंतभयेआनन्द । जनकशोचसंक टगयोसियामातुसुखवृन्द १ सियामातुसुखवृन्दनिछावरि मणिगणदेहीं । रामसियाछबिदेखिप्रेमबशकीननकेहीं २ कीननकेहींदानसबसमयशंभुधनुटूटजब । तुलसिदाससं कटगयेनृपमनभयेमलीनसब ३ । १०३ ॥

टी० । धनुषभंग जयमाला परतही नृपगण जे बिवाहाश्रित राजा समूह बैठेरहेंते मलिनभये मनउदास मुखधूमिल परिगये यथा रविउदय भये तारागंण यथा सूर्य उदयभये कमल प्रफुल्लित होते हैं तथा धनुष टूटे सब संतआनंद भये तथा जनकशोच संकटगयो अर्थात् प्रण किहे को शोच कन्या कुमारी रहबेको संकट रहासो तमसमूह रात्री सम नाशह्वै गयो सीयमातु सुनयनाजीके मनमें वृन्दबहुत सुखभयो चकवाकी सम आनंद भई १ जानकीजीकी माताके मनमेंबड़ा सुखभया ताते मणिगण बहुत मणिमुक्तादि याचकन को निवछावरि देतीहैं इत्यादि तौ प्रधानहै तिनको भिन्न भिन्नकहे तथा रामसिया छबि देखि अर्थात् श्रीरघुनन्दन जनकनंदिनी की जो शोभाहै सो सबभांतिते उत्तमहै यथा कबित्त ॥ जैस मिथिलेशत्योंनरेशाकौशलेशबेश शाधवीसुनयनकासुकौशिल्लाहुखासीहैं । निमिकुलकमलप्रकाशरघुवंशभानुमिथिलानिवासीतैसधन्यऔधबासीहैं ॥ जैसीयेकुमारिकाकुमारगौरश्यामरूपरसप्रेमप्यासीयेवैसुखमाउपासीहैं।बै-जनाथचन्द्रलालचंद्रिकाकिशोरीसियविज्जुलछटासीद्युतिरावबघटासीहैं ॥ इत्यादि दोऊरूपकी शोभादेखिप्रेम बशक्यहिनहीं निवछावरि कीन २ जब शंभुधनुष टूट तासमय क्यहिदान नहीं कीन सबै कीन्हे काहेते सबै निवछावरि करतेहैं गोसाईंजी कहत कि जो पूर्बबिना धनुषटूटे संकटरहा सो धनुष टूटेते मिटिगयो त्यहि आनन्दते दानकरते हैं तथानृपजे बिवाह आशाते धनुष उठावनेहेत आयेते सबराजा मनते मलीनभये ऐसे उदा-सीन ह्वैगये यथाप्रातके नक्षत्र ३ । १०३ ॥

मू० । महामोदमिथिलापुरीरामकियोधनुभंग । खलमलीनस

ज्जनसुखदसुरसुसुमनशुभरंग १ सुरसुसुमनशुभरंगकपट भूपतिमनमाखे । लक्ष्मणउठेसक्रोधराममारतबचिराखे २ बचिराखेरघुबीरनृपतियप्रकटींजुहुतींदुरी । रामसियाजोरी निरखिमहामोदमिथिलापुरी ३ । १०४ ॥

टी० । रामकियोधनुभंग ताते मिथिलापुरीमें महामोदहै अर्थात् जानकीजीकी योग्यबर जानि सबको पूर्बाभिलाषरहै तामें भूपको प्रणबाधक रहा जब श्रीरघुनाथजी धनुषको तोरिडारेसो मनभावत भयाताते मिथिला पुरबासी लोगनके मनमें महा आनन्दभया पुनः धनुभंग देखि खल दुष्ट राजा मलीनभये भावखलनको दुखदायक हैं पुनः सज्जननकोसुख देनहारे श्रीरघुनाथजी हैं ऐसाजानि सुर देवता शुभमंगलीक पीतरंग के सुन्दर सुमन फूल बर्षिरहेहैं १ यथा आपने रक्षक जानि देवता आनन्द ह्वै मंगलीक फूलबर्षतेहैं तथा आपनेशत्रु जानि कपटभूप राक्षसादिजेकपट तें राजाबने बैठेहैं तेमाखे क्रोधबश ह्वै कुवचन कहनेलगे तिनको बिमुख देखि मारनेहेत धनुषबाण सुधारि लक्ष्मणजी उठे परन्तु मारतसमय रघुनाथजी बचायराखे भाव यह मंगलकाज समय बध करना भला नहीं यह बिचारिमना कीन्हेबाण प्रहार नकरने दीन्हे २ जब दुष्टनृपनको रघुनाथजी बचायराखे तब जोतिया दुरीहुतीं सो प्रकटीं अर्थात् सुन्दरता बलतौ पूर्बही जानतीरहीं अब क्षमावंत शीलस्वभाव जानि रघुनाथजी को देखनेहेत जे परदेवाली स्त्रीछिपीरहीं तेऊ प्रकट भईं खुलिकैप्रभुको देखने लगीं इत्यादि श्रीरघुनंदन जनकनंदिनीकी मनोहर जोरी देखि मिथिलापुर में महाआनन्द है ३ । १०४ ॥

मू० । करकुठारपरशुरामकेआयेसुनिधनुभंग । गौररूपअनुरूप शिवजटाभस्मसर्वंग १ जटाभस्मसर्वंगदेखिसकुचेसबराजा।लागेकरनप्रणामकालनिजसमुझिसमाजा २ समुझिस माजपिनाकलखिकहेवचनअरिकामकोक्यहिंतोर्योबोल्यो तुरतकरकुठारपरशुरामके ३ । १०५ ॥

टी०। परशुरामके हाथमें कुठार शोभित शिवधनुषको भंगसुनि जनकपुर को आये कैसा रूपहै गौर वर्ण शिव अनुरूप यथा शिवको दूसरा रूप है काहेते शिरमें जटा तथा सर्वांगमें भस्म बिभूति धारणकिहे १ शिरमें जटा

सर्वांगमें बिभूति अजिनवस्त्र कटिमें तरकस बामकाँधे धनु दहिनेहाथ कुठारलीन्हे इत्यादि परशुरामको देखत सब राजा भयमानि सकुचे भाव वीरता वेषते लज्जामाने अर्थात् क्रोधकरि बध न करें इत्यादि आपनाकाल समुझि सब समाजभरि उठिउठि सब राजा प्रणाम करनेलगे २ स्वयंबर हेत राजनकी समाज इहां बटुरीहै इत्यादि समुझि पुनः पिनाकलखि शिवजीको धनुष टूटपरा देखि परशुराम सक्रोध वचनकहे क्या कहे काम के अरि नाश कतर्त्ता जो शिव तिनको धनुष क्यहिं तोरयो इत्यादि कुठार हाथमें लिहे परशुराम तुरतही बोल्यो आवतही ३ । १०५ ॥

मू० । तोरयोधनुरघुबंशमणिजाकोप्रबलप्रताप । हानिकहाभय रावरीकहियप्रकटकरिआप १ कहियप्रकटकरिआपदेवद्विजवरकीनाई । पूजियमानियतुम्हैंआपनीबृद्धबड़ाई २ बृद्धबड़ाईतबहिंजगगायबिप्रपदपूजिभणि । देहुआशिषाप्रेमसोंधनुतोरयोरघुबंशमणि ३ । १०६ ॥

टी० । लक्ष्मणजी उत्तरदये हे परशुराम शिवधनुषको रघुबंशमणि श्री रामचंद्रजीने तोरयोहै जाको प्रताप प्रबलहै भाव जिनकी समताको दूसरा बीर नहींहै पुनः रावरी आपुकी कहाहानिभय धनुषटूटेते सो बात आपु प्रकटकरि कहिये १ कैसे प्रकटकरि आपु कहिये देव द्विजबरकी नाईं देवनसो शांत सतोगुणी स्वभाव श्रेष्ठ ब्राह्मणकीनाईं केवल तपोधन कोबलराखि बचनकहिये बीरताके बलतेनहीं शुद्धब्राह्मणहैतौ हम आज्ञा पालनकरैंगे काहेते आपनी बड़ाईवृद्धके हेत तुम्हें पूजिये मानिये अर्थात् आपुको बड़ामानि पूजनकरनेते हम क्षत्रिनके धर्मकी प्रशंसा सम्पतिकी वृद्धिहोतीहै २ हमारे सम्पतिकी वृद्धि तथा धर्मकी बड़ाई तबहीं है जगमें जब गाय तथा ब्राह्मणोंकेपद पूजिये ताते हम आपके दासहैं आपु भणि आपनी हानिको हालकहिये अरु प्रेमसहित आशीर्बाद दीजिये धनुष रघुनाथजी तोरेहैं ३ । १०६ ॥

मू० । कालवश्यबोलतकहागुरुकोधनुषविहंड । विप्रनऐसोबाल सुनुनृपकुलशिरकोखंड १ नृपकुलशिरकोखंडपरशुकरतीक्षणधारा । धनुग्याहिंतोरयोआजुतासुभुजकाटनवारा २

काटनवारापरशुयहज्यहिकाटेभूपतिमहा।त्वहिसमेतरामहिं हतौंकालबश्यबोलतकहा ३। १०७॥

टी० । लक्ष्मणजीसों सक्रोध परशुराम कहत हेविहंड बिशेषि नीच बालक तू कालबश कहा अनादरबचन बोलताहै यह धनुष हमारेगुरूको है नीचके संबोधनमेंहंडशब्द चेटीआदिमें हंजपदयथा ॥ हंडेहंजेहलाह्वाने नीचांचेटींसखींप्राति॥इत्यमरः हेबालक सुनु मैं ऐसोबिप्रनहींहौं जोतोको आशीर्वाददेउँ मैं नृपकुल शिरको खंड अर्थात् राजनके कुलभरे के शीश काटनेवाला बिप्रहौं १ राजनके कुलके शीशकाटनहार परशुकर ती-क्षणधारा मेरे हाथमें जो परशुहै ताकी तीक्षण पैनी धार है भाव इकइस बार पृथ्वीभरेके राजनके शीशकाटिडारेउँ कबहूं गोठिल नहींपरा तथा आजु ज्यहिं धनुषतोर्योहै तासुभुज काटनवारा अर्थात् हे बालक जोतूने कहा कि धनुषटूटेमें आपुकी क्या हानिभई सोभीसुनिले यहधनुष हमारे गुरू शिवजीको है ताको जानेतोराहै ताके भुजनको काटनवारा यह मेरे हाथमें कुठारहै काहेते जोकहौ कि कन्याबिवाहबे हेतु बिदेहने प्रणकिया रहै ताके पूर्णकरिबेहेतु तोरिडारे तहां केवल उठायकै चढ़ाय खैंचिलेतेही प्रतिज्ञा पूरीहोतीरहै तब शिवधनुष तोरेते क्या अधिक लाभरहै तातेमारे भुजबलअभिमानते तोरिडारे यहि अपराधते मैं वाकेभुजा काटिडारौंगो क्योंकि इनहीं भुजबल गर्बते बेप्रयोजनहीं मेरे गुरुको धनुषतोरा सबको अपनाबल देखावने हेततांको फलमैं देउंगो २ ज्यहि महाभूपति सहस-बाहुआदि महाबली राजनकोकाटे सोई अबधनु तोरनहारके भुजाकाटन-वारा यह परशु है त्यहि करिकै हे बालकत्वहिसहितरामहिं हतौंमारहुंगो ताते कालके बश तूकहाअनादर बचन बोलता है भावतू केवल कुबचना ते मृत्युबोलावता है ३ । १०७ ॥

मू० । भूपतिमिलेनखेतमेंतुम्हैंबिप्रकुलदेव । हतेतुम्हारेहतिगये तेद्विजपदबिनसेव १ तेद्विजपदबिनसेवक्षत्रधर्मनतेहीने । तेतुमकाटेपरशुकूरकपटीजड़दीने २ जड़दीनेनृपतुमहते पापराशिनहिंचेतमें । तातेबाढ़ेभवनमेंभूपतिमिलेनखेत में ३ । १०८ ॥

टी० । लक्ष्मणजी बोले हेदेव बिप्रकुल तुमको खेतमेंभूपतिन मिलेउ

भावब्राह्मणहै जबअस्त्र धारणकीन्हेउ तुमआपना धर्मआपही त्यागिदिया तबतुम्हारे परास्तकी कौनबड़ी बातरहै परंतुरणखेतमें बलीबीर धर्मवंत राजाकोऊ तुमको नहींमिला ताहीते आजुतक तुम्हारी जयहोतआईका- हेते जे द्विजपद बिनसेवरहेते तुम्हारे हतेहतिगये अर्थात् जेब्राह्मणोंकीसेवा पूजानहीं करतेरहे तेईअधर्मी राजातुम्हारे मारेते मरिगये भावजबसहस- बाहुक्षत्री राजाहै क्रोधवशवृथाही जमदग्निऋषिको बधकिया तौ ब्रह्मदोष ते वह आपहीमारा तथा औरहूजे राजावाकोसंगदिये तेभीब्रह्मद्रोही उसी पाप में मिलिनाशभये तामें आपुकी कौनबलबीरता है १ यावत्तुम्हारे हाथमरे ते राजाबिन द्विजपदसेव ब्राह्मणोंते बिमुख क्षत्रधर्मतेहीने अर्थात् क्षत्रीकेधर्म यथामनुस्मृतौ ॥ प्रजानांरक्षणंदान मिज्याध्ययनमेवच। बिष यष्वप्रशक्तिश्चक्षत्रियस्यसमासतः ॥ पुनः गीतायां॥ शौर्यतेजोधृतिर्दाक्ष्यं युद्धेचाप्यपलायनम् । दानमीश्वरभावश्चक्षत्रंकर्मस्वभावजम् ॥ इत्यादि धर्म त्यागि याकी प्रतिकूल अधर्म करतेहैं यथा प्रजापालचाहिये तहांवृ- थाही दंडदेना दानचाहिये तहां ब्राह्मणोंकी वृत्तिहरिलेते हैं इज्यानाम यज्ञ करना चाहिये तहां औरहूको नहीं करनेदेतेहैं विद्या वेदादि ध्ययन पढ़ना चाहिये तहां द्यूत पांसादिखेलतेहैं विषयत्यागचाहिये तहांमद्यमांस वेश्या- गमनमें आसक्त रहतेहैं पुनः शूरता चाहिये तहां कादरता पुनः सत्यशौच तपादिकरि ऐसातेज चाहिये जाकेडरते कोऊसन्मुखनहोवै तहांकुकर्मकरि ऐसेतेजहीन जिनको नीचहूनहींडरत धीर्यरहित मूर्खयुद्धमें भागनेवाले दानचाहिये तहांपरधन हरतईश्वर भावचाहिये पक्षपातरहितसबको एक दृष्टि देखना तहांस्वार्थमीत इति क्षत्रीधर्मते हीन पुनः क्रूरदुष्टकपटीछल करिकार्य साधनेवाले तथाजड़ महाअज्ञानऐसे जेमरणयोग राजारहे ते तुमपरशाते काटेहौ अथवाजेदीनरहैं पौरुषहीन तिनकोमारे २ जड़दीन नृपनको तुमहते मारेउअथवाजे पापकीराशिरहैं जोहिंसा परहानि परस्त्री गमन इत्यादिअसत्कर्म करिपापकी ढेरीलगायराखे अथवा जे चेतमें नहीं मोहतेमदांधरहे तिनमरेराजनको मारिबिजयपाये ताते भवनमेंबाढ़े घरही में बिजयीवीर बनेबैठेहौ धर्मवंतवीर भूपतिराजा तुमको रणखेतमें नहीं मिलेउ ताहीते तुम्हारी बीरता आजुतकरही ३ । १०८ ॥

मू० । क्षत्रविहीनीमहिकरीपरशुबारइकबीस । सोनविदितत्वहि बालजड़तुरतजाइहैखीस १ तुरतजाइहैखीसवचनमुखवो

लुसँभारे।गुरुगुनहीभोमौनताहितूपीछेडारे२ पाछेबचहुन कालकेबालकलखिकरिवरटरी।परशुधारज्यहिकाटिहौंक्षत्र बिहीनीमहिकरी ३ । १०६॥

टी० । लक्ष्मणजीसों परशुरामकहत इकबीसबार परशुते महिक्षत्र बिहीनीकरीअर्थात् इसीपरशातेसबराजनकोशिश काटिकाटि अकइसबार बिशेषिक्षत्रिनकरिकै हीनपृथ्वी करिदीन्हेउं क्षत्रीवीर भूमिपरनहींराखेउं सोत्वहि बिदितनहीं हेजड़बाल तुरतखीसजाइहै क्षत्रिनके नाशकरिबेको हालतोको नहींमालूमहै कबहूं किसीतेसुने नहींजो अनादर बचनबोलता है हेबालकजड़ महाअज्ञानी तुरतही नाशहैहै १ तुरत खीसजाइहै इसी साइति तेरे प्राण जाहिंगे ताते मुखते सँभारि बचनबोलुउचित अनुचित बिचारि बचन कहु काहेते तूतौकछु अपराध किहेनहीं जो गुरुको गुनही है भाव जिसने मेरे गुरुको धनुष तोरिडारा सो तौमौनभो कछुभी उत्तर नहीं देताहै अरुतू ताहिपीछे डारे ताकबिदि जवाबदही करता है तामें आपने प्राण क्यों गँवावता है २ पुनः जो तेरे वचनसुनि क्षमा किहेउँ सो बालक लखि करिवर टरी अर्थात् प्रथमहीं कुवचनके साथही तोको बध करता परन्तु बालकदेखि तेरी एक अल्पमृत्यु टरिगई अबबहुतबार्त्ता जनिकरु नातरु कालहू के पाछेलुके न बचिहौ काहेतेज्यहिते क्षत्रबिहीन महिकरी बिना राजनकी पृथ्वी किहेउँ जासों ताही परशुधारते तुम्हारा दोऊभाइनको शिर काटिहौं ३ । १०६ ॥

मू० । द्विजकुलकेनातेडरौं सुनहुबिप्रसतभाव । नतक्षत्रीकुलको सकललेहुँतुरतअबदाव १ लेहुँतुरतअबदावपरशुधनु भूमिगिराऊँ । धर्मबड़ोरखवारमारिद्विजपातकपाऊँ २ पा तकपाऊँशीशपरदूजेरघुपतिकरडरों । यमघरतुमहिंबसा वतोद्विजकुलकेनातेडरों ३ । ११० ॥

टी० । एकतौ द्विज ब्राह्मणहौ पुनः हमारेकुलके नातेदारभी हौ ताहीतें मैं डरताहौं हे बिप्र परशुराम सतभाव सांचीबात कहतहौं सो सुनहु नत जो ब्राह्मण बधके दोषको न डरतो तौ क्षत्रीकुलको दावँ अब तुरतही स-कललेहुँ अर्थात् जो अनेकन क्षत्रिनको कुल तुमने नाश करदिया सो सब को दावँ या समै तुरतही लेतूं भाव इसी क्षण बधकरतूं १ कैसे अब तुरत

दावं लेउं परशु धनु भूमिगिराऊं अर्थात् दहिने हाथमें कुठार बायें में धनुष लिहेहौ सो दोऊभुज काटि परशु धनुष सहित भूमिपै गिरायदेतो परंतु धर्म तुम्हारेहेत बडो रखवारहै सोई तुमको बचावताहै काहेते मारि द्विज पातक पाऊं अर्थात् ब्राह्मणकेमारे पाप लागैगो २ तुम्हैं ब्राह्मणको मारि एक तौ शीशपर पातक पाऊं सब ब्रह्मदोषी कहैंगे दूजे रघुपति करडरों भाव रघुनाथजी धर्मवंतहैं जो मैं ब्राह्मणकोमारौं तौ मोको तुरतही त्यागि देइँगे इसडरते कछु भी करतेनहीं बनताहै ताते द्विज कुलके नाते सों डरताहौं भाव एक तो ब्राह्मण दूसरे रघुकुलके भैने ताके बधमें बड़ापाप है नाहीं तौ तुमहिंमारि यमके घरमें बसावतो ३ । ११० ॥

मू० । लैकुठारसन्मुखधरयोरामलषणकीओर । कौशिकबरजो
बालकहिमोहिनहींअबखोर १ मोहिंनहींअबखोरिकरौंअ
बकालहवाले । परशुबन्योरवइहाथबिपुलभूपतिघरघाले २
घरघालेशिरमालिकाशंकरकोपूजनकरयो । अबचाहततव
शिरहरयोलैकुठारसन्मुखधरयो ३ । १११ ॥

टी० । दहिनेहाथ गहे कुठारको काँधेपर धरेरहे जब बहुत कठोरबार्ता लक्ष्मणजी कीन्हे तब कांधाते उठाय लय कुठारको राम लषणके सन्मुख धरयो परशाकी धार सन्मुखकरि हाथमें लीन्हे पुनः परशुराम बोले हे कौशिक विश्वामित्रजी बालकहि बरजौ अब मोहिं खोरि नहीं है अर्थात् बडीढिठाई करिचुका अब इसबालकको मनाकरौ नातरुमोको दोषनदिहेउ यह मरणहार ह्वैचुका १ यह मरणहारह्वैचुका ताते अब मोको खोरि नहींहै यहि कालहवालेकरौं इसबालकको मारताहौं काहेते जो बिपुल घरघाले भूपति जो राजा तिनके बहुतघर नाशकीन्हे सोई कराल परशा मेरेहाथमें बनोहै २ कैसे घरघाले राजनकोमारि तिनके शिरकी मालिका मालाबनाय त्यहिकरिकै शंकरको पूजनकरयों अर्थात् मुंडमाल शिवको प्रियहै अब चाहत तवशिरहरयो हेबालक अब तेराशिर काटाचाहतहौं इसभांति कुठारसुधारि धार दोऊभाइनकी सन्मुखधरयो ३ । १११ ॥

मू० । रामकहीकरजोरिकैभृगुकुलकमलदिनेश । बालकदीनबि
चारिउरक्रोधनकीजियलेश १ क्रोधनकीजियलेशबालअप
राधविहीनो । धनुकरममतेटूटचूकसोंमहींअधीनो २ महीं

अधीनोकर्मबशबांधियदीजियछोरिकै । दासबिचारिप्रभा
वमोहिंरामकहीकरजोरिकै ३।११२॥

टी०। भृगुकोकुल सोई कमलको बनहै तामें दिनेश सूर्यसम उत्पन्न है कुलको प्रकाशकरता इति हे भृगुकुल कमलदिनेश परशुराम बालक अज्ञ दीन पौरुषहीन बिचारि तापर लेश नेकहू क्रोध न कीजिये इत्यादि बचन कर हाथजोरिकै रघुनाथजीकहे १ काहेते यापर क्रोध लेश न कीजिये बाल अपराधविहीनो अर्थात् एकतौ बालकहै ताकेबचन बुद्धिमान् प्रमाणै नहींकरतेहैं दूसरे बालने आपको कछु अपराधभी नहींकिया इति बालक अपराधकरिकै बिशेषि हीनहै काहेते ममकरते धनुटूटसोचूकमहीं अधीनो अर्थात् मेरेहाथन शिवजीकोधनुष टूटाहैताते यहचूकमेरेहीआधीन महीं अपराधकिया तामें व्यंग्ययह कि यहिकर्म करनेको दूसराकोऊ समर्थ नहींरहै शिवधनुषको तूरनामेरेही आधीनहै भाव जोधनुष किसीबलीबीरको तिलभरि उठावा नहीं उठा ताको हम तृणसम तोरिडारे तबहूँ मेराप्रभाव आपुको नहीं सूझताहै ऐसे मदांधहौ २ पुनः वाच्यार्थ हेमुनि आपु को प्रभाव बिचारि कर्मबश अर्थात् आपुकी प्रतिकूल शिवधनु भंग इतिकर्म जो मैं कियाहै ताकीबश मैं आपुके आधीनहौं ताते मोहिं आपना दास बिचारि छोरिदीजिये अथवा बाँधिये अर्थात् आधीन सेवकको बधकरना तौ योग्य नहीं जो क्षमाकीजिये तौ छांड़िदीजिये न क्षमाकीजिये तौ बाँधि राखिये इति हाथजोरिकै रघुनाथजी कहे यामें व्यंग्य कि कर्मबश अर्थात् ऐश्वर्य त्यागि देहधारी कर्मकरि मैं आपुके आधीनहौं अब जो मेराप्रभाव ऐश्वर्यरूप बिचारिये तौ गर्बबश जो हठ पकरेहौ सो छांड़िदीजिये पुनः माधुर्य में आपु ब्राह्मण मैं क्षत्रीहौं तहाँ जो मोहिं दास बिचारिये तौ बाँधिये अर्थात् जो प्राकृतै दृष्टिहै तौ बल बीरताके गर्बते जो हठ पकरेहौ सो बाँधिये पोढ़िकै धारणकरिये भाव पाछेहथियार न डारिदेना ३।११२॥

मू०।शंभुदंडखंडितकरयोसोभुजखंडहुँआज । जोकरपरशुप्रचं
डलखिकटेअवनिकेराज १ कटेअवनिकेराजबचहुनाहिंदी
नउपायन । क्षत्रबंशतनपायबचनमुखमृदुलसुभायन २
मृदुलसुभायनक्योंवचौधनुतोरतनहिंतबडरयो । अनुज
सहितभुजकाटिहौंशंभुदंडखंडितकरयो ३।११३॥

टी० । परशुराम बोले हे राजपुत्र शंभुकोदंड शिवको धनुष खंडित करचो जिन भुजनसें तोरिडारेउ सोई भुजा तुम्हारे खंडहुँ आजुमें काटहुँ गो जो प्रचंड परशु मेरे कर हाथमें है सो लखि अर्थात् देखिले ज्याहि करिकै अवनि पृथ्वीके अनेक राजाकटे १ जैसे अवनिके अनेकराजा कटे हैं तैसेही तुमहूंकोकाटिहौं दीनउपायन अर्थात् बचिवेहेत दीनबनि कोमलवचन इत्यादि उपायकरतेहौ तिनउपायन करि नहीं बचहुगे पुनः क्षत्रबंश तन पाय क्षत्रियके कुलमें देहधरि मृदुल कोमल स्वभावते मुखते वचन बोलते हौ भाव दीनबनें न बचिहौ ताते यथा क्षत्रियहौ तथा बीरता पूर्वक ललकारि हमसों युद्धकरौ २ जो युद्धकरि हमको जीतौ तब बचिहौ अरु मृदुल स्वभायन दासबनिअधीनहै कोमल वचन कहि क्यों बचिसकिहौ काहेते जब धनुषतोरने लग्यो तब क्यों नहीं डरयो ताते यथा तुम बलके गर्वते शिवजीको धनुष तोरयो तथा अनुज छोटेभाईके सहित तुम्हारेभुजा हम काटि डारहिंगे ताते तुमको उचितहै कि युद्धकरौ ३ । ११३ ॥

मू० । क्षत्रबंशद्विजमानियेलषणकहीहँसिबात । हमपैपापनहोय द्विजजननीकीन्हीघात १ जननीकीन्हीघाततताहितेमनअतिबाढो । बड़बैरीरणहत्योविरदपायोशिरगाढो २गाढोपायो पापशिरतासोंरिसनहिंठानिये । तुम्हेंमारिकोअचलहैक्षत्र बंशद्विजमानिये ३ । ११४ ॥

टी० । जब परशुरामकहे कि दीन स्वभायन न बचिहौ युद्धकरौ तापर लषणलाल हँसिकै वचनको निरादरकरि बात कहत कि क्षत्रबंश द्विज मानिये क्षत्रियबंशभरि ब्राह्मणको बडाकरि मानतेहैं ताते हमपै पाप न होय द्विज हे विप्र तुमसों युद्धकरि तुमको मारिये यहपाप हमसों नहींहैसका है यह आपहीते हैसकाहै कि जननीको घातकीन्ही आपु आपनेही हाथ आपनी माताको शिरकाटे १ जब जननीको घातकीन्ही ताहीते मन अत्यंत वीरतामें बाढिगयो भाव दीन आधीनको मारते भल बनताहै पुनः बड बैरी रणहत्यो बडाबैरी सहसबाहु ताको रणमें जबमारयो तबगाढो बिरद पुष्टकरि बीरताको बाना शिरपरपायो भाव ब्राह्मणह्वै क्षत्रियको बाना मूड परा पोढकरि २ बाना नहीं पायी गाढो पाप शिरपायो अर्थात् ब्राह्मण ह्वै अस्त्र सों जीवघात करना यह पुष्टकरिकै पापको भार शिरपर लदा तासों रिस नहिं ठानिये अर्थात् आपु तौ पापको बोझै लादेहौ भाव पापैते मरे

हौ तुमको मारनाकौनबातहै ताते रिस न ठानिये रिस न बढ़ाइये अर्थात् न आपु रिस करौ न हमारे रिस बढ़ावो भाव रिसैते अनुचितभी हैजाता है कदाचित् रिसवश आपको घातकरैं सो हमको मंजूर नहीं है काहेते तुम्हें ब्राह्मणकोमारि अघकोलहै पापकोलेवै क्षत्रियब्राह्मणकोमानतेहैं ३।११४॥

मू०। रेकुठारकुंठितभयोगयोस्वभावसक्रोध। अरिप्रचंडदहिअ वनिनृपकीन्हीहृदयप्रबोध १ कीन्होहृदयप्रबोधअछतअरि देखतठाढ़े । उत्तरसुनतसरोषमोरहृदिज्वालनबाढ़े २ ज्वा लनबाढ़ेजरतउरघोरधारकोलैगयो ।काटिकाटिकंठनिकुत रुरेकुठारकुंठितभयो ३ । ११५ ॥

टी०। सक्रोध परशुराम कहत हेरेकुठार कुंठित अर्थात् गोठिल ह्वैगयो तथा सक्रोध स्वभावगयो सहजस्वभाव मेरा क्रोधमयीरहै सोभीजातरह्यो काहेते अवनिनृप प्रचंड अरिदहि भूतलके राजा जे प्रचंड बड़ेकराल बीर बली सहसबाहुआदि तिनको भस्मकरि मारि अब हृदय प्रबोधकीन्हेउ बिचारपूर्बक संतोषकरि शांतह्वैगयो १ काहेते जानिये कि हृदयमें प्रबोध कीन्हे कि तेरेअछत हेफरसा तू मेरेहाथमें बनाहै अरुमें अरि शत्रुकोठाढ़ देखतहौं कौनभांति सरोष उत्तर सुनत अर्थात् रिससहित कठोरबचनते जवाबदेरहा है तथा मोरहृदि ज्वालनबाढ़े मेरेभी हृदयमें क्रोधाग्निके- ज्वालाबाढ़तजात भाव ज्योंज्यों उत्तररूप साकल्यपावत त्योंत्यों क्रोधाग्नि प्रचंडहोत ताहूपर इसबालकको बध नहींकिया ताते जानताहौं कि मेरा पूर्बको स्वभाव मिटिगया २ क्रोधअग्निके ज्वालनके बाढ़ेते मेरा उर अं- तरतौ जराजाताहै अरु याबालकको शीश नहीं काटताहौं तौ फरसाकी घोर महाभयंकर धार ताको कौन हरिलैगया पुनः आपही समाधानकर तेहैं कि कुतरु बबुर बहेरासम कुवृक्षसरीखे खल राजनके शिरकाटिकाटि हेरेकुठारअब कुंठितभयोतेरीधारगोंठिलपरिगईतातेनहींचलताहै ३।११५

मू०। जोरघुपतिआयसुकरैंतौद्विजदेहुँदेखाय । रणमंडलकीक- ठिनतातुमकोदेउँबताय १ तुमकोदेउँबतायपरशुधनुलख्यो तुम्हारो।भूमिशेषमैंपारमारिबाणनउरफारो २ बाणनउरफा रोसमुझिबिप्रघातपातकपरैं । सभासमेतबिचारियेजोरघु- पतिआयसुकरैं ३ । ११६ ॥

टी० । लक्ष्मणजी कहत हैद्विज परशुराम जो रघुनाथजी आयसुकरैं तुमसों युद्धकरिबेकी आज्ञादेवैं तौमैं आपनी बीरता देखायदेउँ कौनभांति रणमंडलकी कठिनता अर्थात् जो पूर्वमें कहा कि रणखेतमें तुमको कठिन भूप परिपूर्ण शूरबीर बली नहींमिला सो परिपूर्ण बीरता जैसी होती है सो तुमको बतायदेउँ अर्थात् तुम ब्राह्मणहौ सो तुम्हारे सांचीतौ बीरता होतीनहीं यावत् भगवत्अंश व्यापक प्रतापरहा सोई बीरतारही सो तौ गया अब तुम्हारे बीरता नहींरही तब कठिन बीरके सन्मुखभये जीवबचायबेहेतु हथियारडारि बिप्रबनिजाउगे अरु क्षत्रिनमें परिपूर्ण बीरता होतीहै काहेते जो अंग अंग कटिजायँ तबहूं जीवतरहेसंते सन्मुखै जूझैं इत्यादि तुमको बतावों १ कैसे बीरता तुमको बतावों कि तुम्हारो परशु तथा धनुषलख्यों सब देखिचुक्यों शक्ति रघुनाथैजीकी दीन्हीहै सोतौ रही नहीं तब ऐसीबीरता तुममेंकहांहै जो सन्मुख युद्धकरौ किसी खाईभीति आदिकीओट चहौ ठाढ़होउ सो क्या बचायसकीहै जो शेषमय भूमिके पारजाउ अर्थात् भूमिके अंत जहां शेषहैं तहां जो पातालमें खड़ेहोउ तहौं मारिकै बाणते तुम्हाराउर छातीफारों २ यद्यपि बाणनते तुम्हाराउर फारि सक्काहौं परंतु बिप्रघात पातकपरै ब्राह्मणको मारेते पापको फल भोगना परै यहसमुझि डरमानताहौं भाव स्वइच्छित युद्ध नहीं करिसक्काहौं जो रघुपति आयसुकरैं अर्थात् वै महाराज मैं उनको सेवक जो रघुनाथजी आज्ञाकरैं तब मैं युद्धकरौं तबै जो पापहोई सो उनहींको है मोको नहोई इत्यादि बात सभासमेत आपहू बिचारिये सच्चीहै वा नहीं ३ । ११६ ॥

मू० । लषणवचनकहिधनुलियोनयनसयनकरिराम । बरजेतुम बालकनिपटभृगुपतिसबगुणधाम १ भृगुपतिसबगुणधामताहिसोंसमसरिकीजे । जाकीपदरजसेव्यआपनेशिरधरिलीजे २ शिरधरिलीजेरसिकपाअनुजसिखावनप्रभुदयो । मुखरुखरामनिहारिनतलषणवचनकहिधनुलियो ३ । ११७ ॥

टी० । पूर्ववत् बचनकहि लक्ष्मणजी हाथमें धनुषलिये बाणचढ़ावने की इच्छाकिये तैसेही नेत्रनकी सयनकरि रघुनाथजीबरजे मनाकीन्हेक्या बचनकहि बरजे हेलषण तुमनिपट बालकबनाय लरिकाहौ भावऊँचनीच तुमकोनहीं समुझिपरताहै भृगुपति सबगुणधाम अर्थात् शम दम तप शौच शांति आर्जव ज्ञान बिज्ञान इत्यादि जो ब्राह्मणनमें गुणचाहिये तिनकेभरे

मंदिर हैं परशुराम १ सबगुणनके मंदिर बिप्र पुनः भृगुकुलमें उत्पमता-हिसों समसरि कीजे तिन परशुरामसों क्षत्रियहै समता ते बराबरी कीन चाहते हो यहतुम्हारे धर्मते प्रतिकूलहै काहेते जाकी पदरजसेव्य जिनके पायँन की धूरि तुम्हारे पूजाकरिबे योग्यहै सोई पदरजलै आपनी शिरपर धरिलीजै भावस्वामी सेवकभावते वार्ताकीजै २ कैसा सेवकभाव रिस कृपा शिरधरि लीजे अर्थात् यथाकृपाकरि कछु कहैं सो शिरपर धरिये तथाजो रिसकरिकहैं सोऊ शिरधरि मानिलीजे भावबडेको अनादरकबहूं नकरी इत्यादि अनुज छोटेभाईको प्रभुसिखावन दिये तबजो हाथमेंधनुष लिये लक्ष्मणजी कठोर बचन कहते रहैं ते राममुख रुख रघुनाथजी के मुखकी ओरनिहारि लषणनत लक्ष्मणजी शीशनवाय लिये प्रौढ़ता को सकोचकिये ३ । ११७॥

मू० । असससमर्थभृगुबंशमणिसुररक्षकद्विजपाल । महिमंडल इकइसगनिकरीनिक्षत्रबिशाल १ करीनिक्षत्रमहीसकल दईबिप्रकेहाथ । रुधिरकुंडतर्पणकियोतेईभृगुकुलनाथ २ तेईभृगुकुलनाथकेचरणशरणसेवहुसुमति । अभयहोय तिहुँलोकमहँअससमर्थभृगुबंशपति ३ । ११८ ॥

टी० । भृगुवंशमें शिरोमणि परशुरामअस समर्थहैं कि सुर देवतन के रक्षाकरनहारे तथा द्विजपाल ब्राह्मणन को पालनेवाले हैं अर्थात् धर्मके स्थापनकरनेवाले हैं कैसेधर्मके स्थापनकरनेवाले हैं कि महिमंडलबिशाल ताको इकइस बारगनिकै निक्षत्रकरी अर्थात् समुद्र पर्य्यंत जो बिशाल बड़ाभारी भूमिको मंडल तामें यावत्राजा अधर्मी होतेगये तिनको एक साथही सबको नाश करदियाकीन्हे इसीभांति पृथ्वीमें इकइसबार किसी दुष्ट राजाको नहींराखे क्षत्रहीन पृथ्वीकरि दीन्हे १ महीसकल पृथ्वीसब जब निक्षत्रकरि दीन्ही कोऊराजा न रहिगया तब बिप्रनके हाथसंकल्पि दई अरु रुधिरकेकुंडमें अर्थात् परशुरामके पिताको सहस्रबाहुने बधकिया रहै ताको दाउँलेने हेतवाके सहायक राजनसहित सहसबाहुको मारिताके रक्तको कुंड भरितामें पिताको तर्पण कीन्हे तेई भृगुकुलनाथहैं २ तेई भृगुकुलनाथ हैं तिनके चरणारविंदनके शरण ह्वैकै सुमति सुंदरी बुद्धिते सेवाकरहु तौ तिहुँलोकमहँ अभयहोय तुमको किसी लोकमें कछुभी डर न रहिजाय ऐसे समर्थ भृगुपति हैं ३ । ११८॥

मू० । जाकेपदरजकेधरेमुदमंगलकल्याण । अभयकरनसंकटद
रनगावतवेदपुराण १ गावतवेदपुराणकल्पतरुसमसुख
दाता । हरिहरपूजतजाहिपरमसुखदानिबिधाता २ दानिबि
धाताजानिकैनिशिदिनसेवनजेकरैं । अर्थधर्मकामादिकी
पदरजसुखजाकेधरैं ३ । ११९ ॥

टी०।जाके पदरज जिन ब्राह्मणनके पायँनकी धूरिमाथेपर धरेते मुदमन मेंआनंदहोत तथामंगल प्रसिद्ध उत्सव बनेरहत पुनः सदाकल्याण कुशल रहतपुनः अभय करन किसीभांति को डर नहींरहत संकटदरन राजदंड शत्रुघेरनादि संकटको दलनहारी विप्रपद धूरिहै ऐसा वेद पुराण माहात्म्य गावत १ क्या वेदपुराण गावते हैं सुखकोदाता कल्पवृक्ष की समान नि-कटहोतहीं अर्थ धर्म कामदेत तातै परमसुख दाता जानि जाहि हरि हर विधाता पूजते हैं २ सबफलकी दानि जानिजे बिधाता सृष्टिकर्त्ता पाल-न संहार कर्त्ता तेऊ निशिदिन रातिउ दिवस सेवनकरते हैं अथवा दानि बिधाता जानिजे ब्राह्मणों को दिनराति सेवनकरते हैं पुनः जाके पद की रजशीशपर धरतेहैं तेअर्थ धर्म काम मोक्षादिसब सुखपावते हैं ३।११९॥

मू० । कालव्यालतासोंडरतजाकेइनपदप्रेम । यहैक्रियायहयोग
हैयहैयोगजपनेम १ यहैयोगजपनेमकपटतजिमनवचकाय
क । स्वइसुकृतीस्वइशूरजाहिद्विजभक्तिअमायक २ माय
कछलतजिपूजिपदतनमनधनसेवाकरत । जीवजालदुख
मालसबकालव्यालतासोंडरत ३ । १२० ॥

टी० । जाके इनपद प्रेम तासों कालव्यालडरत अर्थात् जा जनकेउरमें इन ब्राह्मणों के पद कमलनमें प्रेमहै प्रेमसहित सेवन करतेहैं ताकोका-लरूप सर्प डरतभावजो सबको खाय जाताहै सो ब्रह्मण्यके सन्मुखनहीं आवताहै पुनः ब्राह्मणनके पदको जो प्रेमहै यहैक्रिया शुभकर्महै तथायही अष्टांगयोग सिद्धदायकहै यहै याग अश्वमेधादि यज्ञहै यही मंत्रजपहै यही शौचादि नियमहै १ कैसे याग जप नेमहैं जो कपटतजि सांचे भावते मन लगाय बचन ते स्तुति आदिकरि काय देहके अंगनकरिकै सेवनइत्यादि जाहि द्विजभक्ति अमायक माया छलरहित जे ब्राह्मणकी भक्तिकरते हैं सोई सुकृती धर्मवंत सोई शूरबीरहैं २ माया झूठाजाल छल चातुरीतजि

त्यागकरि पूजत अर्घ पाद्याचमन स्नान गंध पुष्प धूप दीपादि जे ब्राह्मण को पूजनकरि भोजनकरावत बसन धन दानदेत अथवा दासह्वै तन मन धनते सेवाकरत कैंकर्यता यथा धनते भोजन बसनदेत करसों पगधोवन बसनप्रच्छालन पगदाबन पवनकरनादि जेकरतेहैं ताको कैसा तेजप्रताप उदितरहत कि वाके जीवको जाल जो मोहादि माया तथा रुज बियोग हानिआदि दुःखनको माला सब तथा कालसर्प तासों डरताहै ३।१२०॥

मू०। सोत्रिलोकपावनपरमजिनकेद्विजपदप्रीति ।विभ्रमश्रमता कोनहींदिशाविदिशिसबजीति १ दिशाविदिशिसबजीति मोहरिपुकटकभगावै । यशदायकगुणग्रामरामअनुजहिस मुझावै २ रामबुझावैअनुजकोक्षत्रबंशयाहीधरम । पद रजनितहितशिरधरैंसोत्रिलोकपावनपरम ३ । १२१ ॥

टी० । जिनके द्विजपद प्रीति जिन जननके हियमें ब्राह्मणोंके पदार-बिंदोंमें प्रीतिहै भाव श्रद्धासमेत नितही सेवनकरिरहेहैं सो तीनिहूं लोक-नमें परमपावन उत्तम पवित्रहै पुनः बिभ्रम बिशेषिभ्रम पुनः श्रम ताको नहीं होतीहै अर्थात् हर्ष अथवा शोक अथवा भयते बुद्धि भ्रमितह्वै यथार्थ ज्ञाननरहै यथा कवित्त ॥ आजुकी बातसुनोसजनीमडयेप्रकटोछबिकौतुक भारी । जेवनबैठिबरातसबैरघुनाथचढीसबनारिअटारी ॥ देखतश्रीरघुबीर कोरूपभईमतिबिभ्रमगावनहारी । भूलिगईदशरत्थकोनामवैदेनलगींमि थिलेशहिगारी ॥ इत्यादि हर्ष शोक भयमें ताको बिशेषि भ्रम नहींहोतीहै सबसमय बुद्धि बिचारते ज्ञान एकैरस रहताहै तथा कैसहू दुर्घट कार्यकरै तबहूं श्रम अर्थात् थकते नहींहैं भाव दृढ़बल बनारहता है पुनःदिशा पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर बिदिशा ईशानादि कोण इति आठौदिशनमें ताही की जीतिहोत भाव वासों जीतनेवाला कोऊ कहों नहीं ठहरत ऐसा दि-ग्विजयीहोत १ लोकमें सब दिशा बिदिशि वाकीजीतहोत तथा परलोक मार्गमें मोहरिपु ताकी कटक कामादि ताहू शत्रुसेनाको बिवेकते जीति वाको भगायदेवै पुनः यशदायक गुणग्राम अर्थात् धैर्य्य थिरता धर्मनीति शील उदारतादि समूहगुण आवतेहैं तिनकरिकै लोकमें सुंदरयश होता है इत्यादि बचनकहि रघुनाथजी अनुजहि छोटेभाईको समुझावते हैं २ यथा रघुनाथजी लक्ष्मणजीको समुझावते बुझावतेहैं कि हमाराक्षत्रियबंश

को यही धर्महै कि जो ब्राह्मणोंके पदकी रज शीशपर धरता है सोई त्रि-लोकमें परम पावनहै ३ । १२१ ॥

मू० । रामसिखावनदुहुँसुन्योलषणऔरभृगुबंश । मतिगतिसुरतिसँभारिउरब्रह्मसच्चिदानंद १ ब्रह्मसच्चिदानंदभयोनृपसुतअवतारी । शारँगकरमेंदियोविविधविनतीअनुसारी २ विविधभांतिपातकलगैकटुकवचनमनमेंगुन्यो । परशुधरनपुनिलषणहूरामसिखावनदुहुँसुन्यो ३ । १२२ ॥

टी० । लषण और भृगुबंश दुहूं रामसिखावन सुन्यो अर्थात् जो दूसरे किसीमें नहींहै केवल रघुनाथैजीमेंहै सोई आपना उत्तमधर्म जो रघुनाथ जी लक्ष्मणजीप्रति उपदेशकीन्हे ताको लक्ष्मण अरु परशुराम दोउसुने तहां परशुरामकी जो मतिकीगति बुद्धि बिचारकी प्रबीणता सो मानमद ते भ्रमितरहै ताकी सुरति सँभारि बुद्धि बिचारको थिरकरि उर अंतरते जानिलिये कि येतौ परब्रह्म सत्चित् आनंदरूप हैं काहेते जो ऋषिकी यज्ञरक्षामें सबल निशाचरनकोमारे पदरजते अहल्यातारे महाकठोरशिव धनुषतोरे मेरेसन्मुख अभयबने वार्त्ताकरते हैं ऐसी शक्ति राजकुमारनमें नहीं हैसक्तीहै पुनः ऐसा शुद्ध धर्मभी मनुष्यमें नहींहै ताते सत् त्रिकाल में एकरस शुद्धचित्त सदा चैतन्य एकरस ज्ञान अखंड आनंद परब्रह्म हैं १ सोई ब्रह्म सच्चिदानंद नृपसुत अवतारीभयो धर्मस्थापनहेत राजकुमार रूपते अवतीर्णभये यही सत्यताहेत शार्ङ्ग करमें दिये बिष्णुको दियाहुआ वाशार्ङ्गधनुषताको रघुनाथजी के हाथमें दिये जबवह चढ़ायखैंचि लिये तबसंदेह मिटिगई बिबिध बिनती अनुसारी अनेक भांतिबिनती करने लगे २ काहेते बिनती करनेलगे कि बिबिध भांतिके कटुबचनकहे ता-कोपातकलगे अर्थात्स्वामीको मैं अनेकभांति अनादर बचनकहे सोमोको बड़ाभारी पापलगैगो इत्यादि मनमें गुन्यो बिचारकीन्हे सोई क्षमाकराव-नेहेत बिनतीकीन्हे इत्यादि परशुराम पुनः लषणदोऊ श्रीरघुनाथजी को सिखावन सुन्योभाव लक्ष्मणजी तौ प्रभुको धर्मउपदेश सुनि चुपरहे पर-शुराम बिनय कीन्हे ३ । १२२ ॥

मू० । नृपसभीतउठिउठिचलेपरशुरामगतिदेखि । आशिषभृगुपतिदेयकरिआनँदलह्योविशेखि १ आनँदलह्योविशेषि

जनकपुरजनसबरानी । बंदीमागधसूतउच्चरहिंमंगलबानी २ मंगलबानीपुरभईबाजिउठेदुंदुभिभले । संतसुधासुरगणमुदितनृपसभीतउठिउठिचले ३ । १२३ ॥

टी० । धनुबाण परशा सौंपिहाथजोरि प्रभुकी विनतीकीन्हे इत्यादि परशुरामकी गतिदेखि नृपसभीत सहितडर अर्थात् प्रथम कुबचनकहे रहैं जबप्रभुको प्रभाव देखे ताते डरमानि उठि सबराजा चले तथाभृगुपति आशिषदेय करि परशुराम आशीर्वाद देकै प्रभुको प्रसन्न देखि बिशेषिआनंदलहे पाये पुनः जय जयकार करिचलेगये १ परशुरामके गयेपरसुनयनाआदि सबरानी तथा जनकपुरके जन स्त्री पुरुष सब बिशेषि आनंदलहेउ तथाबंदीजन मागधवंशप्रशंसक सूत यशगावनवाले ते मंगलबानीउच्चरहिं गानकरि रहे २ तिनके गानादिमंगलवाणी पुरमें भई तथा भले भाँति उत्सवभरे दुंदुभी नगारादि बाजिउठे संतनसहित देवता आनंदभये राजा डरि उठि चलेगये ३ । १२३ ॥

मू० । समयपायकौशिककहेउजनकमहीपबुलाय । सजहुसकलमंगलसुभगदशरथनृपतिबुलाय १ दशरथनृपतिबुलायब्याहकुलरीतिसँभारो । माड़हुरचहुविचित्रनगरगृहगलीसँवारो २ गलीसँवारहुअगरमयसबकुतर्कसंशयदहेउ । चारपठाइयअवधपुरसमयपायकौशिककहेउ ३ । १२४ ॥

टी० । समयपाय अर्थात् जबसब भाँति स्वस्ति भयो इत्यादि सुन्दर समयजानि महीप राजाजनकको बुलाय कौशिक विश्वामित्रजी कहे कि प्रथम दशरथ नृपति बुलाय पुनः सकल मंगल सुभग सजहु अर्थात् बिवाहसमयके यावत् मंगलअंगहैं तिनको सुभग सुन्दर ऐश्वर्यसहित सजहु १ दशरथ महाराजको बुलावहु ते अपर पुत्रनसहित बरातसाजिकै आवहिं अरु तुम ब्याहमें जो कुलकीरीति है ताको सँभारहु सुधिकरि अथवा कुलगुरु वृद्धनसों पूंछि सब उद्यम समयअनुकूल प्रारम्भकरहु यथा चित्र विचित्र माड़हु रचहु तथा नगरविषे यथा आपना गृह तथा सब मन्दिर अरु गली सबसँवारहु २ यथा मन्दिर लीपि पोति धोय अस्तरकारीकरि तामें चित्रसारी रचि ध्वजा पताका कलश दीप बन्दनवार बितान विचित्र माड़वआदि सँवारहु तथा पुरकी गली अगरमय सँवारहु अर्थात् बहारि

साफकरि तामें अगरादि सुगंधित वस्तु यथा केवड़ा गुलाबादि जल अगर तगर कपूर केसरि कुमकुम चन्दन इत्यादिको अरगजा छिरकावहु काहेते सब कुतर्क संशय दहेउ अर्थात् धनुषनटूटनेकी प्रणछूटनेकी कन्या कुमारी रहने की जो कुत्सित दुखदतर्कणा दुखसहित शोच विचार तथा दुष्ट राजा वा परशुराम इत्यादिके विघ्न करिबेकी जो संशयरहै सो भी दह्यो राम प्रतापाग्निमें भस्मभयो ताते निश्चिंतह्वैकै अब सब आचारकीजिये अरु अवधपुरको चारदूत पठाइये महाराजको बुलावनेहेत इत्यादि विश्वामित्र जनकजीसोंकहे ३ । १२४ ॥

मू० । सतानंदअवधहिचलेलग्नपत्रिकाहाथ । हीरनीरयुतमणिपदिकसकलसुमंगलसाथ १ सकलसुमंगलसाथदेखिरघुपतिपुरपावन । भूपतिलियोहँकारिदीन्हपत्रिकासुहावन २ दीन्हपत्रिकानृपलखीरामब्याहमंगलभले । गृहगृहबजेबधावपुरसतानंदअवधहिचले ३ । १२५ ॥

टी०।श्रीरघुनाथजीके ब्याहकी लग्नपत्रिका हाथमेंलै जनकजीकी आज्ञा पाय सतानंद अवधहि अयोध्याजीकोचले कौनी सामाते हीरपदिक नीर मणियुत सकल सुमंगल साथ अर्थात् हीरापदिक तथानीरमेंजे उत्पन्नहोत मुक्तादि इत्यादि अनेकमणिन सहिततथा सोनेकेपात्र भूषणवसन हरदी अक्षत नारियर पूगीफलादि सबभाँतिकी मंगलीकपदार्थैसाथमेंलीन्हे १ सकल मंगलपदार्थैं साथलिहे आयपहुंचे रघुपति पुरपावन परम पवित्रश्रीअयोध्यापुरी की शोभादेखि परम आनंद ह्वै राजद्वारपर खबर जनाये हालसुनिभूपति हँकारिलिये अर्थात् जनकपुरते मिथिलेशजीके प्रोहित आये हैं ऐसाहाल सुनिदशरथ महाराज आपने पासको बुलायलीन्हे ते सुहावन परमसुंदर सुखदेनहारी पत्रिकादीन्हे सो हाथमेंलै खोलि महाराजबांचने लगे प्रथम ऊपर को शिरनामायथा स्वस्तिश्री १०८ मदखण्ड बिक्रमसुदोर्भूमण्डलाखण्डलोयोऽयोध्यापुरि वर्तते दशरथो नित्यं प्रतापान्वितः पत्रन्तस्यसमीपमेतुमिथिलायामंगलोदंत्यदो॥ यस्सीरध्वजसञ्ज्ञको निमिकुलज्येष्ठेन तेनेरितम् १ तथा पत्रिकांतरसमाचार यथा स्वस्तिश्री १०८ स्तात् १ श्रीमत्पंक्तिरथेवयंतुनतयः सीरध्वजाख्यस्यमे । तस्मिन्निन्द्रइवापरापरमहीभृत्यक्षभेदीयतः ॥ योजानातिगुरोर्मतेनसकलंकाव्यस्यसारं मतं । सिद्धायस्यसदस्सदस्सविबुधास्सन्मन्त्रविद्याधरा २ श्रीमन्नृपेन्द्र

भवतः कृपयेहशंसस्ताद्दोजयायसजयस्सजयायदीये ॥ श्रीवत्सलक्ष्मसुख मांकितबक्षसिश्रीस्सानन्दथुस्सकमलाकमलामलश्रीः ३ सीतायाहलकृष्ट भूतलभवःपाणिग्रहायोद्यतान् प्रत्युक्तिर्मिमनावृणोतुसइमांकन्यांसमा स्फालनम् ॥ कुर्य्याद्योऽजगवस्ययत्तुबलिभिर्न्नोत्थापितंस्थानतस्तद्र वनम्भवतस्सुतेनसदसिद्वेधाकृतन्दृश्यते ४ त्रातुंयेनजगत्सुकेतुतनयांहत्त्वा सुबाहुर्हतो मारीचिश्शतयोजनोपरिजलेक्षिप्तःक्रतूरक्षितः ॥ दृष्टस्सोऽय मितीडितोजनतयाहल्याकृतात्थोकृ तारामोऽत्रास्त्यृषिणानुजेनचसमम्भङ् त्वाधनुश्शूलिनः ५ सीतारामवृतातयासचवृतोयाचोर्मिलामेसुता त त्पाणिग्रहणायलक्ष्मणइतोऽन्यौयौभवद्देहजौ ॥ तौधर्म्मध्वजकन्ययोस्स मुचितौपाणिग्रहार्थम्भवा नागच्छत्विहसेनयासहकृपांकृत्वाततोनश्शुभ म् ॥ इत्यादि नृपलखिदशरथ महाराजदेखिकै प्रतिअक्षर भलीभांतिबांचे सो रामब्याह मंगलभले रघुनंदनके बिवाहकोहाल भलो मंगलमयजामें सबहाल लिखाहै सो प्रसिद्ध सबको सुनाये सबसभामें प्रसिद्ध है यह मंगल समाचार अयोध्या भरेमें फैलगया तातेपुरमें घरघर बधावनबाजने लगे इत्यादि सतानंद अयोध्याको चलेआय मंगल समाचार सुनाय सब- को आनन्द दिये ३ । १२५ ॥

मू० । रामजानकीव्याहसुनिसाजभूपबरात । रथतुरंगमातंग
घनगजघंटाघहरात १ गजघंटाघहरातदुंदुभीधुनिचहुंओ
रन । मंगलभरिभरिथारभामिनीगानभकोरन २ गान
भकोरप्रमोदपुरसुरतियजयजयसुमनधुनि । दशरथधौंसुर
पतिसज्योरामजानकीव्याहसुनि ३ । १२६ ॥

टी० । सतानंदके हाथ पत्रीद्वारा श्रीरघुनंदन जनकनंदनी को बिवाह सुनि भूपदशरथ महाराजबरात सजे तामें रथपुनः तुरंग घोड़े मातंगमद स्रवतसबल ऊंचे हाथीतहां रथ बिचित्र सजे अर्थात् सोना मणिजटित बना किंकिणि शब्दकरिरही जरतारी ध्वजा पताकालगे चमरलगे कोमल ऊंचा बिछौना बिछा सर्वांग भूषित श्यामकर्ण घोड़ेनहे तथा पुष्टांगभारी दँतारे श्रेष्ठ हाथिनपर जड़ाऊझूल मणिजटित सोनेकी अंबारी धरीमाथ बिचित्र रँगे समूहघन सरीखेदेखातेहैं तिन गजनके घंटा ऊंचेशब्दते घह- रातेहैं तथा सवारीके घोड़े बहुरंगके पुष्टांग चंचल तिनपर मखमली जर- तारी मणिजटित जीनेंलगाम पूजी दुमची तंग जेरबंद रकाबहै कल हवेल

कलँगी इत्यादि बिचित्र सजी तिनपर नवीन अवस्थाके छैलसवार भये रथनपर महाराज सहित श्रेष्ठ रघुबंशी बशिष्ठादि मुनि सवार हाथिनपर सचिव मंत्रीसेनप सवार १ गजहाथिनके घंटाघहरात तथा दुंदुभी नगारादिकी धुनि चारिहूं ओर ह्वैरही पुनः दधिदूर्वाक्षत रोरी हरदी फूलफल दलमुक्तादि मंगलीक पदार्थै कांचन थारनमें भरे भामिनी सौभागिनी युवती शृंगार किहे हाथनमें थारलिहे गानझकोरन ठौर ठौर मंगलगान करि रहीं तिनके समूह शब्द उत्तम पौनकेसे झकोरा श्रवणनमें लागत संते थिरमनमुनिनको चंचलहोत शांतरसत्यागि शृंगारको उद्दीपनकरत २ युवतिनके मंगलगानके झकोरनते पुर प्रमोद अयोध्याजी में सबके मन में प्रकर्षकरिकै आनन्द है पुनः सुरतिय देवांगना सुमन फूल बर्षि जयजय धुनि करिरहीं ता समयमें कैसा बिभवदेखातकि दशरथ महाराजहैं किधौं श्रीरामजानकीकोबिवाहसुनिसुरपतिइंद्रआपनीऐश्वर्यसज्यो ३।१२६॥

मू०। कुलविचारव्यवहारकरिगुरुआयसुनृपपाय । मिथिलापुर कोमगलियोभूपनिशानबजाय १ भूपनिशानबजायसगुण सुन्दरशुभपाये । बीचबासकरिबिबिधजनकपुरभूपतिआये २ भूपतिआयेजनकपुरअतिउछाहआनन्दभरि। दुहुँसमाजसंगमसुभगकुलविचारव्योहारकरि ३। १२७॥

टी०। विचारपूर्बक कुलको व्यवहारकरि दलन कांडन क्षेत्र क्षेत्रपाल ग्राम देवपूजन पितृनिमंत्रण इत्यादि कुलकी जो रीतिरहैं ताको बिचारि कै भाव जो बिना दुलहाहोनेवालीरहैं तेतौ कीन्हे अरु जो दुलहाके संग होतीहैं सो इहां नहींकीन्हे पुनः शुभ मुहूर्त्तजानि पयानकरिबेकी मुनिबशिष्ठ आज्ञादीन्हे इति गुरुको आयसुपाय नृप दशरथ महाराज मिथिला पुरको मगलियो चले निशान दुंदुभी ढोलझांझ तासादि अनेक भांतिके बाजाबजाय १ भूपदशरथ महाराज निशान बजायचले सघटयुवती दधि विद्यारथी लोवा नकुल मृगझुंडादि सुंदर शुभ कल्याणकर्त्ता सगुन पाये मार्गमें जातसंते बीच बीच बिविध अनेक भांतिसुखपूर्वक बास करि पुनः चलतसंते भूपति दशरथ महाराज जनकपुरको आये २ अत्यंत उछाहपुत्रनको बिवाह ताते आनंद उरमें भरि दशरथ महाराज जनकपुरको आये अरुइहां भी मिथिलेश जी बिचार पूर्वककुलको व्योहार करिकै अगवानी पठाये तेभी भूषण बसन सजे गजरथ बाजिनपर सवार संगमें बाजाबा-

जत इत्यादि दुहूं समाज सुभग सुंदरी ऐश्वर्य सहित हैं तेसंगम अर्थात् परस्पर मिलि प्रणामादि कीन्हे ३ । १२७ ॥

मू० । उमारमाब्रह्मायणीपतिनसहितपुरआय । रामजानकीरूप छबिदेखनकोललचाय १ देखनकोललचायनिरखिदशरथ केबारे । मनवचक्रमवशप्रेमभयेसबदेखनहारे २ देखनहा रेभेमगनऋधिसिधिमंगलदायनी । सियबिवाहकृतकर्मस ब्बउमारमाब्रह्मायनी ३ । १२८ ॥

टी० । उमापार्वती रमालक्ष्मी ब्रह्मायणी सरस्वतीइत्यादि पतिनसहित अर्थात् शिवसहित उमा बिष्णुसहित रमा ब्रह्मासहितब्रह्माणी जनकपुरमें आये कौनहेत रामजानकी रूपछबि अर्थात् यथाचुम्बक लोहाकोखैंचततैसे ही जो नेत्रनको खेंचै ताको रूपकही यथा भगवद्गुणदर्पणे॥चुंबकायःकरण न्यायैर्दूरादाकर्षकोबलात् ॥चक्षुषांसगुणोरूपंशाणःस्मरशरावले॥तथाछबि॥ दो० ॥ द्युतिलावण्यस्वरूपस्वइसुन्दरतारमणीय ॥ कांतिमधुरमृदुताबहुरि सुकुमारतागनीय ॥ अर्थात् शरदचंद्रसम मुखकी द्युति मोती कैसोपानी तनमें लावण्यता बिना भूषणै जो भूषितवत् स्वरूपता सर्वांग सुठौर बने सुन्दरता देखी अनदेखीसी रमनीकता सोनेसों अंगकांति देखि तृप्त नहीं सो माधुरी मृदुता कोमल अंगसुकुमारता जो फूलौंचोट न सहिसकै इत्यादि रघुनाथजीको रूपअरु जानकीजीकीछबि देखनेहेत लालचकरिकै आये १ दशरथकेबारे निरखि देखनको ललचाय अर्थात् दशरथ नंदनके श्यामसुन्दर स्वरूपकी माधुरी प्रत्यंग निरखत संते अघाते नहीं ताते बारंबार देखनको लालचबनाहै ताते देखनहारे सब मनबच क्रम करिकै प्रेमके बशभयो अर्थात् ऐसो प्रेम उमंग्यो जाते तनमें रोमांच कंठारोधन ते बचन नहीं कढ़त अरु नेत्रनद्वारा मनललकिकै रूपमें लगे देहकी सुधि किसीको नहींहै २ देखनहारे ब्रह्माबिष्णु शिवादि जे बाहेर बरातमें रघुन-न्दनको देखिरहेहैं तेतौप्रेममें मगनभे बूड़िगये तथा ऋद्धि सिद्धिमंगलकी दायनी जो उमारमा ब्रह्मायनीते मिथिलेशके घरमें मड़येमें सिय बिवाह क्रमसबकृत अर्थात् उमादि प्रधान आवन कहे पतिन समेत कहने को भाव कि ब्रह्मादिजे आये तेतौ गुप्तरूपते सबचरित्र देखामात्रकीन्हे कुछ कार्य नहीं कीन्हे अरु उमा रमा शारदा प्रसिद्ध रूपते रानिनके साथ बर

परछन सिंदूर चढ़ावन लहकवरि सिखावन इत्यादि सब क्रिया जानकी जीके बिवाहकी करतीरहीं ताते इनको आवन प्रधान है ३ । ११८ ॥

मू० । सुथलभूपडेरादियोकौशिकलक्ष्मणराम । पायखबरिपितु आगमनचलेहर्षिगुणधाम १ चलेहर्षिगुणधाममुदितभेटे रघुराई । मुनिपदरजधरिभूपभरतभेटेद्वउभाई २ भेटेपुर जनगुरुद्विजनरामदेखिपूरणहियो । ऋधिसिधिसबमंगल लियेसुथलभूपडेरादियो ३ । १२९ ॥

टी० । सुथल सुंदरस्थान में अर्थात् जहां सबभांति को सुपास है तहां भूपजनक महाराज बरातको डेरादिये तब कौशिक जो बिश्वामित्र तिन सहितलक्ष्मण अरुरघुनाथ जी पितुके आगमन की खबरि पाय गुणधाम हर्षिचले अर्थात् कृपा दया शील सुलभ उदारतादि अनेकगुणन के भरे मंदिर श्रीरघुनाथजी आनंद सहित पिताके मिलनहेत चले १ गुण धाम हर्षिचले जाय रघुनाथ जी प्रणाम पूर्वक पिताको भेंटे भाव प्रणाम करते देखिदशरथ महाराज उठाय हृदयमें लगाय लीन्हे पुनः भूपदशरथ महाराज मुनि पदरज धरि प्रणाम करि बिश्वामित्र के पायँनकी धूरि आपने शीशपर धरे तथा शत्रुहन भरत दोऊभाई प्रभु को प्रणाम करि मिले तथा तीनिउभाय यथायोग्य मिले २ पुनः लषण सहित रघुनाथ जी गुरु वशिष्ठको प्रणाम करि मिले तथा अपर ब्राह्मणन को प्रणाम करि पुनःअवधपुरके यावत् जन रहैं तिनको यथायोग्य प्रभुमिले तबराम देखि पूरण हियो रघुनाथजी को देखिसबके हृदय आनंदते भरिगये इसभांति सबथिर भये अरु सुथलमें जहां भूपजनक जी बरातको डेरादिये तहां ऋद्धि सिद्धि सबमंगल पदार्थ लिहे खड़ी हैं ३ । १२९ ॥

मू० । सखिनृपसंगद्वैऔरसुतगौरसुभगसुठिश्याम । लषणअनु हरतएककहँएकसत्यजनुराम १ एकसत्यजनुरामकहैंजेनय ननिहारे । वैसहिबदनमयंकनयनवैसहिरतनारे २ वैसहि लक्ष्मणरामछबितैसेबलछबिदेहदुत । नामभरतरिपुहनक हतसखिनृपसँगद्वैऔरसुत ३ । १३० ॥

टी० । जनकपुर की युवती परस्पर वार्ता करतीहैं हे सखी नृप दशरथ महाराजकेसंगद्वै सुतपुत्र औरहैं ते एकतौ लषण अनुहरत लक्ष्मणै

जी की समान गौर बरण सुभग सुंदर तथा एकसुठि सुभग अत्यंतसुंदर श्यामवरन ते सत्य जनु रामसत्यसत्य यथा रघुनंदनै आईं १ काहेते जानिये जिन नयन निहारे जे आपनी आंखिन निहारे भली भाँति देखि लीन्हे ते कहते हैं कि एक राजकुमार सत्य करिकै जनु रघुनाथै जीहैं काहे ते वैसहि बदन मयंक वैसहि रतनारे नयन अर्थात् यथारघुनंदन को वैसही मुखचंद वैसही अरुणारे नेत्र वैसही सर्वांग श्याम एकतुल्य हैं २ रूप सुंदरता माधुरी आदि जैसे लक्ष्मण अरु रघुनाथजी की छबि है तैसेही उनहूँ राजकुमारनके बल छबि सोभा देह द्युति देहकी प्रकाशहै जैसेइन को रामलक्ष्मणकहत तैसे उनको नामभरत अरु रिपुहन अर्थात् शत्रुहन कहत हे सखी ऐसे दुइपुत्र नृपसंग औरहैं ३ । १३० ॥

मू० । सखिविदेहसमुझैंहियेतौंनिरूपमैंकीन । चारहुकुवँरबिवाहियेयहिपुरनृपपरवीन १ यहिपुरनृपपरवीनदीनविधिचारिसगाई । जसकन्यातसकुवँरयोगशिवदीनमिलाई २ दीनमिलायमहेशविधिबड़ोयोगजपतपकिये । तौसबपुरसुकृतीसमुझिसखिविदेहसमुझैंहिये ३ । १३१ ॥

टी० । हे सखी जो विदेह महाराज हियेमें समुझैं तौ निरूपकीनयथा योग्य अनुरूपि राखेउहै कि जो नृपप्रवीन होयतौ चारिहु कुवँर यहि पुर बिवाहिये अर्थात् जो जनकमहाराज चतुरहोइँ तौ इनचारिहु राजकुमारन को आपनेही इहां बिवाहकरैं १ काहेते नृप प्रबीण इसीपुरमें इनको बिवाहकरैं कि बिधि चारिसगाईदीन अर्थात् ब्रह्माने चारिहु संयोग रचिकै चारिहु कुमारनको इहां पठैदीन काहेते जैसे विदेहके घरमें चारि कन्या हैं तैसेही दशरथ महाराजके चारि कुमारहैं यह संयोग धनुषव्याज शिव जी मिलायदीन २ काहेते यह संयोग महेश बिधाता मिलायदीन बड़ो योग जप तपकिये जनकमहाराज बड़ोभारी अष्टांगयोग तथा मंत्र जप तपस्यादिकिये ताही सुकृतको यहफल उदयभयो ताते जो विदेह महाराज आपने हृदयमें यहीबात समुझैं तौ यह समुझी कि जनकपुरवासी सबै सुकृतीहैं अर्थात् जो चारिउ कन्यनको इनहीं चारिहु राजकुमारनके साथ बिवाहकरिदेवैं तौ पुरबासी कृतार्थहोवैं ३ । १३१ ॥

मू० । चारिकुवँरतिरहुतिचलैंपायसुभगससुरारि । कहुँदिनदश कहुँमासभरिदेखितृप्तनरनारि १ देखितृप्तनरनारिजाहि

पुनिदुलहिनिचारी । कछुदिनवेउतरहैंजनकबोलिहैंकुमा
री २ जनककुमारीआयहैंअवधछांड़िअपनेथलै।बनिबनि
दिनदशबीसमेंचारिकुवँरतिरहुतिचलैं ३ । १३२ ॥

टी० । अबपूर्वाभिलाष करतीहैं अर्थात् जब चारिहु भाइनको बिवाह होई तब इस प्रकारको सुख सब को होइगो कैसा सुख यथा सुभग सब भाँति ऐश्वर्य्य सहित सुंदरि सुखद ऐसी सुभग ससुरारिपाय चारिकुवँर तिरहुतिदेश जनकपुर को चलैं अर्थात् रघुनंदन भरत लक्ष्मण शत्रुहन इति चारिहु राजकुमार सुखद ससुरारि जानि अवश्य इहां को आवहिंगे तब कहूँ दशदिन रहैंगे कबहूं एक मासभरि रहैंगे तब राजकुमारन को देखि जनकपुर के नरनारि तृप्तहोइँगे नेत्रनभरि अघायकै देखहिंगे अर्थात् अबहीं नाते को नेह नहीं रहै पुनः रघुवंशी स्त्रियन की दिशा दृष्टि नहीं उठावते पुनः ऋषिनके साथ ताहूपर स्वयम्बरते राजनकीभीर इसविघ्ननते युवतिनको देखने में संकोचरहा अरु जब बिवाहभये पर साधारण आवहिंगे तबनातानेह बलते मारगजातसमय दाउनगहि वरन को पकरि लावहिंगी तहां एकांत थलमें लैकै मनभावत आनन्द लूटैंगी आपनी इच्छा पूर्णकरि तब छाँड़ैंगी १ जब निरभय सुचित्तएकांतमेंदेखैंगी तब नरनारि तृप्तहोइँगी अर्थात् नरतौ चहै अबै तृप्तभये होयँ नारी अबहीं प्यासीहैं ते तबै तृप्त होइँगी जब ससुरारिकेनाते इहांआय मास भरिरहैंगे पुनः चारि दुलहिनि जानकी आदि इहांते जाहिंगी वै कछु दिन उत अयोध्याजीमें रहैंगी पुनः जनक बोलिहैंकुमारी अर्थात् जानकी आदि कुमारी जनकजीको प्राणनते अधिक प्रियहैं ताते देखनहेत महाराज शीघ्रही बुलावहिंगे २ महाराजके बुलावनेपर जबअवधछांड़ि जनक कुमारी जानकी आदि आपने थलै जनकपुर को आयहैं तबपछिदशबीस दिनमें रघुनंदनादि चारिहु कुवँर बनिबनि भूषण वसन वाहनादि सजि साजि तिरहुति देश जनकपुरको चलैंगे इसभाँति इहां आयरहैंगे तब युवती अघायकै देखैंगी ३ । १३२ ॥

मू० । येबातैंबड़िपुण्यतेसखिपुरवैंत्रिपुरारि । तौबिरंचिहमहीं
रच्योसुकृतटूटदिनचारि १ सुकृतटूटदिनचारिचारिनृपकु
वँरबिवाहौ । माड़वतरेनिहारिलेहुजगजीवनलाहौ २ जी

वनलाहौकीअवधियह सुखदेखहिंधन्यते । विधिरुखनृप उरजोबसैंयेबातैंबड़िपुण्यते ३ । १३३ ॥

टी० । हे सखी येबातैंजोपूर्व मैंकहिगईते बड़ी पुण्यते त्रिपुरारि पुरवैं अर्थात्जो हमारी बडी सुकृति उदय होय तौ ये सबबातैं महादेवजी पूर्ण करहिंगे जो हमारा मनोर्थ पूर्णहोवै तब जानैं कि विरंचि हमहिंरच्यो अर्थात् हमको परिपूर्ण सुकृती ब्रह्माने बनायोरहै परंतु चारिदिन हमारी सुकृति टूटिगयो अर्थात् कुँवार शुक्ल द्वादशी को राजकुमार इहाँमध्याह्नमें पहुंचे पुनः पूर्णिमातक चारिदिन शोचरहा कार्तिककृष्ण प्रतिपदा को रघुनंदन धनुष तोरे शोच मिटिगया इत्यादि यावत् शोचरहा तावत् चारिदिन हमारी सुकृत खंडितरही १ चारिदिन सुकृत टूटीरही तावत् दुखरहा अब चारि नृप कुँवर बिवाहौ जानकी आदि चारिहु कुमारिनके साथरघुनन्दन आदि चारिहु राजकुमारनको बिवाहकरौ पुनः व्याह समय माडवतरे निहारि नेत्रनभरि देखि जगत्में जीवनको लाभआनन्दलेहु २ जीवनलाहौकी अवधिजगमें जीवनकी जोलाभहैताकी मर्यादहइहै यहजो रघुनंदनादि चारिउ कुमारनके बिवाहको सुख जे जन नेत्रनभरि देखहिं ते धन्य कृतार्थ रूपहैं परन्तु जो विधि रुखनृप उरबसै ब्रह्माकी अनुकूल तातें जो चारिहू कुमारन को बिवाह जनक महाराजाके मनमें बैठैतौ ये बातैं बडी पुण्यते जब पुरवासिन की बडी सुकृत उदयहोवै ३ । १३३ ॥

मू० । सखिसुकृतीताहीगनै रामलषणछविदेखि । तातेपुरसुकृती बड़ोआयेकुवँरविशेखि १ आयेकुवँरविशेषिनारिनरभेसुख भारे । दर्शनफलतत्कालभूपदशरथहि निहारे २ दशरथ रावनिहारिकै दूलहदुलहिनिपुनिबनै । यहबिवाहदेखहिसु नहिसखिसुकृतीताहीगनै ३ । १३४ ॥

टी० । पूर्ववचन कहनेवाली को दूसरी उत्तरदेती है हे सखीजे नेत्रन भरि रामलषणकी छवि देखिलीन्ही ताही जननको हमसुकृती गनै हैं तौ जो राजकुवँर विशेषकरि दैवयोग जनकपुरको आपहीआयेताते जनकपुर बडो सुकृती है भावपुरके स्त्री पुरुष बडे भाग्यवाले हैं १ काहेते पुरजन बड़े भाग्यवाले हैं कि इहांको विशेष करिकै राजकुवँर आये तिनको देखि नारिनर भेसुखभारे राजकुमारन के अनूप रूपकी माधुरी अवलोकतसंते स्त्री पुरुषनको बड़ाभारी सुखभया पुनः तत्काल शीघ्रही कुवँरनके दर्शन

को फलभया कि भूप दशरथहि निहारे भाव जिनके ऐसे अपूर्व चारिपुत्र तिन बड़े भाग्यवाले दशरथमहाराज के दर्शनपावा २ अब दशरथमहाराज को निहारिकै इनके दर्शनको फल पुनः रामादि दूलह अरु जानकी आदि दुलहिनी इनके बिवाहको देखन पुनः बनैगो ताते यह बिवाह जे आपनी आँखिनते देखहिं अथवा देखनहारन के मुखते सुनहिं हे सखी ताहीको हम सुकृती गनैं ३।१३४॥

मू० । ब्याहघरीबिधिलिखिदई बर्षिसुमनसुरगाय। रामविवाह उछाहबड़ देखनचलेबजाय १ देखनचलेबजाय सता नँदजनकबुलाये। दशरथसहितबरात जनकमंदिरचलि आये २ मंदिरचलिआयेसबै पाँउड़परिजयजयभई। करिउत्साहसमाजशुभ ब्याहघरीबिधिलिखिदई३।१३५

टी० । ब्याहघरी शुद्धलग्नलिखि विधि ब्रह्माने नारद के हाथ जनकजी के पासको पठई अर्थात् हेमन्तऋतु तामें उत्तम अगहनमास शुक्लपक्ष पंचमीतिथि उत्तराषाढ़नक्षत्र वृद्धियोग भृगुबार सूर्य अस्ताचल पहुंचे पर गोधूली वेलामें शुभलग्न विचारि लिखिकै ब्रह्मा नारदके हाथ पठाये सोई समयजानि रघुनाथजी के बिवाहको जो बडाभारी उत्साह है ताको देखनेहेतु सुर ब्रह्मा शिव इन्द्रादि सब देवता सुमन फूलबर्षि सुन्दर प्रभुको यशगाय दुन्दुभीबजाय जनकपुरको चले १ देवता दुन्दुभीबजाय ब्याह देखनहेतु चले ताहीसमय ब्याहकरावनेहेतु सतानन्दको जनवासे को पठाय बरातसहित चक्रबर्तीजी को जनकबुलाये अर्थात् सतानन्द जायकहे कि विवाहहेतु चलिये सो सुनि बरातसहित दशरथमहाराज जनकजी के मन्दिरको चलिआये २ कैसे चलिआये पाँउडपरि अर्थात् सुन्दर बसन आगे बिछावतजात तापर चलेआय जब सब समाजसहित महाराज मन्दिर में पहुँचे तब पुर व्योमादि सर्वत्र जयजयकार धुनिभई पुनः जो ब्याहकीघरी बिधाताने लिखिदईरहै ताहीसमय में शुभमंगलमय जो समाज है सो सब उत्साह मंगलाचारकी क्रिया करनेलगे ३।१३५॥

मू० । कोबितानसुखमाकहै जिहिथलसुखमाआहि। नटतकिंक रीलक्ष्मीरुखजुगवतपलजाहि १ रुखजुगवतपलजाहि जहांदुलहिनिबैदेही । बिधिहरिहरयमइन्द्र होतचितवैं

हिततेहीरुचितवैंहिततेहीकृपादूलहश्रीरघुपतिरहैं।सम-
धीदशरथजनकसम कोबितानसुखमाकहैं ३।१३६॥

टी० । बितान सुखमा कोकहै जनकजी के माड़व में जैसी शोभा है ताको कौन ऐसो कवि है जो यथार्थकहि पारपावै काहेते ज्यहि थल सुखमाकाआहि अर्थात् सुखमा जो शोभा सोतौ इसस्थानमें कोईचीज नहीं भाव जो दासिनकी दासीहैं तिनहुनमें गनतीनहीं काहेते जहाँ नटत किंकरी लक्ष्मी अर्थात् लक्ष्मीजी नाच गानकरि जानकी जी को रिझावती हैं तथा किंकरी टहलुई है नित्य सेवा शुश्रूषा करती हैं ताहूपर रुख जुगवत पलजाहि अर्थात् कैंकर्यता करत में पल पल प्रति जानकीजी की मुखकीओर निहारत रहती हैं अर्थात् प्रसन्न हैं वा नहीं ऐसेहीबात काशी में उद्भटसंन्यासी काष्टजिह्वास्वामी कहेहैं यथा ॥ सियाजीरानिनमेंमहरानी औरसबैरौतानी १ गौरापानलगावतरचिरचिरमाखवावतआनी । चितवतभौंहखड़ींकरजोरेइन्द्रानिब्रह्मानी २ आठौंसिद्धिखड़ींकरजोरेनवनिधिमनहुँबिकानी । कोटिनब्रह्माण्डनकीप्रभुतारोमरोमअरुझानी ३ जो मायाएकैघाटेपरसबहिपियावतपानी । स्वउचाहतजाकीकरुणाकोबारबार सन्मानी ४ जाबिनपातौहिलिनसकतजोसबघटमाहँसमानी । सन्तजननकीइष्टदेवतारामप्रियाजगजानी ५ अर्थात् सब शक्तिनकी ईश्वरी है यथा महेश्वरतन्त्रे ॥ ब्रह्मोवाच ॥ तप्तकांचनगौरांगीशक्तीनांशक्तिदायिनी १ काहेते लक्ष्मीजी को रुख जुगवत पलजाहि जहाँ जिस माड़वबिषे वैदेही दुलहिनि हैं कैसी ऐश्वर्यवन्त श्रीजानकीजी हैं जेहीहित चितवैं सो विधि हरिहर यम इन्द्रहोत अर्थात् हितपूर्वक जाहीपर कृपादृष्टि हेरत सो विधि सृष्टिकर्त्ता हरिलोक पालनकर्त्ता हर संहारकर्त्ता यम न्यायपूर्वक जीवनको रक्षा दण्डदायक इन्द्र देवनको राजा इत्यादि ऐश्वर्यवाले होत अर्थात् आपनी ऐश्वर्यहेतुब्रह्मादि सदा बन्दनाकरतेहैं॥ यथा मार्कण्डेयसंहितायां॥ शिवउवाच ॥ कारुण्यामृतवर्षिणींहरिहरब्रह्मादिभिर्वन्दितां । ध्यायेभक्तजनेप्सितार्थफलदांरामप्रियांजानकीं २ पुनः दूलहरूप जहां श्रीरघुपतिरहैं आसीन हैं तेही कृपाहित सबचितवैं तिनहीं श्रीरघुनाथजी की कृपाते आपनाहित ब्रह्मादि सबै देखते हैं पुनः दशरथ जनकसम अर्थात् जे ऐसे सुकृती जे परब्रह्म आदिशक्तिको पुत्र पुत्री बनाये ऐसे जहाँ समधी तहां बितानकी सुखमा माड़वकी शोभाको ऐसाकवि है जो कहिसकै ३।१३६ ॥

मू० । इन्द्रब्रह्मदूनोंमिलेबन्दीवर्णतभाय । सबसमाजसबसाज
सोहमैंप्रत्यक्षदिखाय १ हमैंप्रत्यक्षदेखाययहैउपमाजिय
आवै । नारिसहितसुकुमारिरामव्याहनसुखगावै २ राम
व्याहसुखदेखहीअमरावतिसंयुतचले । निजनिजपुरसुर
गणसहितइन्द्रब्रह्मदूनोंमिले ३ । १३७ ॥

टी० । यासमयको भाव उपमा बन्दीजन वर्णनकरत कि समधी दोऊ मिलत में कैसे शोभितहोते हैं यथा इन्द्र ब्रह्मा दूनोंमिले अर्थात् दशरथ महाराज एकतौ सब राजनके राज चक्रवर्ती हैं पुनः पुत्रन के बिवाहते परिपूर्ण ऐश्वर्य सजेहैं ताते ऐश्वर्यवन्त देवराज इन्द्रकी उपमादिये अरु वैवस्वतैको बंश दोऊहैं तौ बंश एकही है तहां अयोध्या मुख्य राजधानी है मिथिला इनते छोटा है परन्तु दशरथजीते कईपुस्ति ऊँचे जनकजी पुरिखाकी जगापररहे हैं पुनः कन्याके बिवाहते विभवरहित साधारण हैं ताते इनकीपितामह ब्रह्माकीउपमादिये सोईबन्दीजन कहतयथाइन्द्रब्रह्मा दोउनकी सबसाज ऐश्वर्य तथा दोउनको सबसमाज सो हमको तौ प्रत्यक्षही देखातो है भाव अनुमान उपमानको कछु प्रयोजनै नहीं भाव इन्द्र आपनी ऐश्वर्यसहित दशरथमहाराज के समीप बैठेहैं तथा दशरथ महाराज इन्द्रकी ऐसी ऐश्वर्य राजसाज तथा देवनकी ऐसीसमाज अनेक राजा संगलिहे बैठे हैं दोउनमें नेकहू भेदनहीं पुनः वेदतत्त्व धर्मकर्म के परिपूर्णज्ञाता बिवाहविधि बतावनेहेतु ब्रह्मा बैठेहैं तिनहीं के समीप वेदतत्त्व धर्मकर्म के ज्ञाता जनकमहाराज बैठे हैं तिनहू में भेदनहीं १ सोई ब्रह्मा इन्द्र हमैं प्रत्यक्ष देखाते हैं ताते दोऊ महाराजनकी यही इन्द्र ब्रह्मा की उपमा हमारेजीमें आवतीहै काहेते सुकुमारि नारिसहित रामव्याहन सुखगावै अर्थात् यथा जनकजी रानी सहित सबकार्य करतेहैं तथा सुकुमारि नारि सरस्वती सहित ब्रह्मा रघुनाथजी के बिवाहको मंगलानन्द गानकरते हैं भाव सरस्वतीरानिनके संग मंगलगावत तथा ब्रह्माजी गड़येतर वेदगान करते हैं यथा कौशल्या तथा इन्द्राणी उहाँ गानकरत २ रामव्याह सुखदेखही श्रीरघुनाथजी के बिवाहको आनन्द देखनहित अमरावति संयुत इन्द्रपुरी सहितचले यथा इन्द्र तथा निज आपन आपन पुरसहित सुरगण देवता समूह आपनीपुरिनकी समग्र शोभा ऐश्वर्य बटोरि सबै देवताआये ते सब बर्त्तमान तथा सब विभवसहित दोऊ महाराज

वर्त्तमान मिले ताते यथा इन्द्र ब्रह्मा दोऊमिले यह कहते हैं ३।१३७॥

मू०। रामसुभूषितजगमगेमाड़वमध्यसमाज । माथेमुक्तामौर छबिनखतसहितनिशिराज १ नखतसहितनिशिराजनारि नरदेखतशोभा । रघुपतिमुखशशिशरदनिरखिछबितृप्तन कोभा २ रघुपतिमुखछबिशरदशशिनयनचकोरनिलखिल गे। मदनकोटिशतवारियेरामसुभूषितजगमगे ३।१३८॥

टी०। रामसुभूषित अर्थात् पगमें जावक पीतधोती क्षुद्रघंटिका करां-गुली मुद्रिका पहुँची कंकण कड़ा केयूर कंठा मणिमाल पदिक कुण्डल जरकसी जामा पेटुका उपन्ना पाग इत्यादि भूषण वसनसहित रघुनाथ जी माडव मध्य समाजमें बैठे जगमगे भूषणमें मणी चमकिरही हैं कंचन मुक्तनजटित माथेपर मौर कैसाशोभितहोत यथा नखतसहित निशिराज चन्द्रमा है अर्थात् मुख चन्द्रकेसमीप मुक्ता नक्षत्रसे छबि देखावते हैं १ मौरसहित मुख यथा नखतन सहित निशिराज चन्द्रमा है सोई शोभा नारि नर स्त्री पुरुष सबै देखते हैं कौन भाँति यथा रघुपतिमुख शरदशशि छबि निरखत को तृप्तनभा अर्थात् शरदऋतुके पूर्ण चंद्रवत् रघुनाथजी को मुख ताकी छबि माधुरी किरणैं तिनको चकोरवत् नेत्र-नद्वारा पानकरतसंते को नहीं तृप्तभया भाव कोनहीं नेत्रनभरिदेखा २ काहेते सबै तृप्तभये कि शरदशशिसम रघुनाथजीके मुखकी छबि लखि देखिकै नयन चकोरनद्वारा सबै अवलोकनमेंलगेरहैं यकटकसब देखैंकीन्हे ऐसे श्रीरघुनाथजी बसन भूषण सहित मडयेतर समाजमें बैठे जगमगाय रहेहैं जिनपर कोटिशत मदनवारिये जिनकी अलौकिक शोभापर सौकरो-रि कामदेव निवछावरि करिदीजिये भाव समतायोग्य नहीं है ३।१३८

मू०। मुनिबशिष्ठअरुसतानँद भरद्वाजजाबालि। अत्रिअग स्तिसुगर्गऋषि कश्यपमुनितपशालि १ कश्यपमुनितप शालि देवऋषिसनकसमेते। लोमशअरुचिरजीव व्या सपाराशरजेते २ पाराशरकौशिकसहित गौतमशुकउ च्चरतपद । वेदमंत्रकरणीकरैं मुनिवशिष्ठऋषिसता नँद ३।१३९॥

टी० । बशिष्ठमुनि रघुबंश पुरोहित तथा सतानंद निमिबंश पुरोहित ये दोऊतौ मुख्य सबकार्यके करनेवालेहैं पुनः रामजानकीको बिब्रहजानि औरहू मुनिआये यथा भरद्वाज अरु जाबालि येऊ रघुबंशके आचार्य हैं पुनः अत्रि अरु अगस्ति सुंदरऋषि गर्गाचार्य तथा तपशालि तपोधनी कश्यपमुनि १ यथा कश्यप तथा देवऋषि नारद अरु सनकादि समेत पुनः लोमश तथा चिरजीव मार्कंडेय पुनः व्यास अरु पाराशरादि यावत् ऋषिहैं २ पाराशर अरु कौशिक जो बिश्वामित्र तथा गौतम अरु शुकदेव इत्यादि श्रुतिनके पदउच्चरत पढ़िरहेहैं पुनः बशिष्ठमुनि अरु सतानंद ऋषि ये दोऊदिशि आगेबैठे वेदनके मंत्रनते करणीकरैं मंत्रपढ़ि पढ़ि बिवाहके सब कर्मंट क्रिया करावतेहैं ३॥१३९॥

मू० । सूरजकुलगतिसबकहैं पावकआहुतिलेय । गणपतिकर पूजाकरैं विधिबिबाहकहिदेय १ विधिबिबाहकहिदेय पव नपुनिशेषमहेशा । सुरपतिसुरगणसहित मगनढिगल खतरमेशा २ लखतरमेशसुदेशछबि रामसबहिजानत रहैं। विप्रवेषबेदनपढ़ैंसूरजकुलगतिसबकहैं ३ । १४० ॥

टी० । सूर्यतौ कुलगति जो सबरीतिहै सो कहैंसमयपर आपने कुल कीरीति बताइदेतेहैं तथा पावक अग्नि मूर्त्तिमान् होमकी आहुतिलेते हैं तथा बिधि ब्रह्मा सो बिवाहकी जो वेदमें बिधिहै ताको बतायदेते हैं इसी भांति गणपतिकर अर्थात् श्रीरघुनंदन जनकनंदिनी पूर्ब गणेशजीको पूजनकरतेहैं १ बिवाहकी बिधि ब्रह्मा कहिदेत पुनः पवन अरु शेष तथा महेश शिवजी तथा सुरगण सहित सुरपति जो इंद्रइत्यादि ब्याहसमय रघुनंदनको देखतसंते प्रेममें मगनहैं तथा ढिगलखत रमेशा रमाके ईश बिष्णुते रघुनाथजीके ढिग नगीचही बैठे लखत रघुनाथजीको देखतेहैं २ कैसे रमेश लखतेहैं सुदेशछबि अर्थात् जौने अंगमें जैसीशोभाचही तैसेही सर्वांग सुठौरबनेहैं तिनको देखते हैं अरु श्रीरघुनाथजी सबको जानतेहैं अरु ब्रह्मादिसब बिप्रवेषधरे वेदनको पढ़िरहे हैं अरु सूर्य कुलकीगति रीति सब कहतेहैं ३।१४० ॥

मू० । जनकमगनरानीसबै मुनिबशिष्ठकहिदीन । सतानंदआनीसिया भूषणसजतनवीन १ भूषणसजतनवीन राम

ढिगअस्थितकीन्ही । मुनिवरअवसरसमुझि शांतिश्रुति मगकहिदीन्ही २ दीन्हीदुन्दुभिअतिघनी सियमंडप आईजबै । दशरथसभासमेतसुख जनकमगनरानी सबै ३ । १४१ ॥

टी० । सुनयनादि सबैरानी अरु जनकजी तेतौ प्रेममें मगन देहकी सुधि नहींहै कि अब क्याकरनाचाहिये यहजानि बशिष्ठजी कहिदीन कि कन्याको माडवतरे लैआवौ सोसुनि सतानंदजीआनी सिय श्रीजानकी जीको मडयेतरको लवायलाये तिनके अंगनमें नवीनभूषण सजत भाव नबीन भूषण बसन भूषितकरिलाये १ बसन भूषण नवीन सर्वांगमें शोभादैरहे हैं रामढिग स्थितकीन्ही रघुनाथजीके नगीचही सन्मुख बैठारिदीन्हे तब जोबात करनाचाही सो अवसर समुझि मुनिवर श्रुतिमग शांतिकहिदीन्ही अर्थात् बशिष्ठादि श्रेष्ठमुनिन वेदआज्ञा अनुकूल शांति पढ़नेलगे २ जबै जासमयमें जानकीजी मंडप मडयेतरकोआई तब अति घनी दुंदुभीदीन बहुतबाजा बाजनेलगे जानकीजीको देखि दशरथ महाराजतौ समाज सहित सुखीभये तथा सब रानिन सहित जनकजी प्रेम में मगन हैं ३ । १४१ ॥

मू० । जनकपायँपूजनलगेशाखोच्चारउचारि । रानीनृपमनमोद भरिलैकोपरशुचिवारि १ लैकोपरशुचिवारिनारिवरमंगल गाई । कन्यादानबिचारिदेवफूलनझरिलाई २ फूलेतरु नृपसुकृतकेचरणप्रक्षालतसुखजगे । निरखिबदनदम्पति मगनजनकपायँपूजनलगे ३ । १४२ ॥

टी० । शाखोच्चार यथा बरपक्षे ॐ योवैश्रीरामचन्द्रस्सभगवान् अद्वैतपरमानंदात्मा यत्परं ब्रह्मभूर्भुवस्स्वस्तस्मैवै नमोनमः स्वस्तिश्रीमत्प्रबलतर हयगज रथ पदातिबल प्रतापनिर्ज्जित प्रचंडप्रोद्दण्डारातिचय चमू जयलब्धयशः पूरमयामृतोदधि प्रकामोद्यच्छरद्राकेशकर प्रकाशप्रकाशीकृताखण्डब्रह्माण्डमण्डलस्य परमसद्बुद्धि विस्तार विस्तारितालौकिक पराक्रमितानेकबलवद्विपक्षेलाधीश गुरुमौलिलसन्मुकुटमणि विस्फुरित कांति परिचुंबितचरणकमल विमलधर्म्मार्ज्जितधनाधिप विशालतमकमनीय कोशदानातिशयस्योत्तमर्षि श्रीमत्कश्यपगोत्रस्यकश्यप मरीचिभर-

द्वाजत्रिप्रवरस्यसुरसज्जन गोब्राह्मणास्तेषामुपरिदयादृष्टिःश्रीमन्महाराज जगज्जनकः श्रीविष्णोर्नाभिकमलोद्भव ब्रह्मा तस्यपुत्रः मरीचिः कश्यपः विवस्वान्मनुः इक्ष्वाकुः कुक्षिः विकुक्षिः बाणः अनरण्यः पृथुः त्रिशंकुः धुंधुमारः युवनाश्वः मान्धाता सुसंधिःध्रुवसंधिः भरतः असितःसगरः असमंजसः अंशुमान् दिलीपः भगीरथः ककुत्स्थः रघुः कल्माषपादः शंखणः सुदर्शनः अग्निवर्णः शीघ्रगः मरुः प्रसुस्नुकः अंबरीषः नहुषःययातिः अस्यां रात्रौसत्कुलसच्चरित प्रतिष्ठागरिष्ठस्य नाभगस्यप्रपौत्रः १ पुनः अजवर्मणस्तस्यपौत्रः २ पुनः दशरथस्यपुत्रः इत्यादि त्रयबार यथा कश्यपगोत्रस्य कश्यप मरीचि भरद्वाजत्रिप्रवरस्य श्रीमद्दशरथवर्मणस्तस्यपुत्रःप्रयतपाणिश्शरणंप्रपद्ये स्वस्तिसंवादेष्वभयंवो वृद्धिर्वरकन्ययोर्मंगलमास्तामिति प्रथमः द्वितीयः तृतयिश्शाखोच्चारः तथा कन्यापक्षेयथाॐ अवाची सुभगेभवसीते वंदामहेत्वां यथा नस्सुभगात्वमसि यथा नःसुफलात्वमसि स्वस्तिश्रीमन्निजकुलकमलप्रकाशनैकमार्तण्डबन्धुजनकुमुदप्रकाशैक चंद्र वादीन्द्रपरिपन्थिनीरगहन विदारणैकपंचास्यसेवित रमानाथपादारविंद मकरन्दानन्द चित्त जनपुञ्ज शौर्य्यधैर्य्यैकारणसमर्थस्य स्वस्तिश्रीव्याघ्रायणगोत्रस्य व्याघ्रायण गौतमकश्यपत्रिप्रवरस्य सदाचारसत्कुलसच्चरित प्रतिष्टागरिष्ठस्य श्रीमद्द्विज सुर सज्जन भूमिप्रतिपालने तत्परो धर्मधूर्धारणसमर्थोदीनार्तिहर दुष्टदमनेपराक्रमोत्साहयुक्तः श्रीमन्नारायणस्य नाभिकमलोद्भव ब्रह्मा तस्यपुत्रो मरीचिः कश्यपः वैवस्वतः इक्ष्वाकुः निमिः मिथिलः जनकः उदावसुः नंदिवर्द्धनः सुकेतुः देवरातः बृहद्रथः महावीरः सुधृतिः धृष्टकेतुः हर्य्यश्वः मरुःप्रत्यंधकः कीर्त्तिरथः महधृक् कीर्त्तिरातः महारोमा स्वर्णरोमा तेषांप्रपौत्रीयं पुनः ह्रस्वरोम्नः तस्य पौत्रीयं पुनः सीरध्वजस्यपुत्रीयं इतित्रयबार यथा व्याघ्रायणगोत्रस्यव्याघ्रोच्चारणैक ध्रुवत्रिप्रवरस्य ऋग्वेदारण्यकशाखाध्यायिनो धर्ममूर्त्तिवर्मणः सीरध्वजस्यपुत्रीयं प्रयतपाणिश्शरणंप्रपद्ये स्वस्तिसंवादेष्वभयंवोवृद्धिर्वर कन्ययोर्मंगलमास्तामिति प्रथमःद्वितीयः तृतीयश्शाखोच्चारः इत्यादिशाखोच्चार दोऊकुल गुरुउच्चारणकीन्हे अरु जनकजी पायँपूजनलगे कौनभांति कि रानी सुनयना तथा नृप जनक दोऊ मोद आनंद मनमें भरे पुनः कोपर शुचि वारिभरि अर्थात् भारीपात्रमें पवित्रजलभरि १ शुचि वारि कोपरमेंलिये पायँधोवतेहैं तालमय वरनारि उत्तमयुवतीमंगलगावतीहैं तथा कन्यादानको समयबिचारि देवता फूलनकी झरिलगायेअत्यं-

त बर्षिरहें अरु सब प्रशंताकरते हैं कि नृप जनकजीके सुकृतरूप वृक्षफूले ऐसा पदप्रक्षालत श्रीराम जानकीके पद धोवतसमय सुखजगे उरमेंआ-नंदउत्पन्नभया काहेकरिकै श्रीरघुनाथजीको बदननिरखि नेत्रनभरि देखि इसभांति कन्यादानसमय जनकजी पायँपूजनेलगे ३।१४२॥

मू०। जेपदपंकजनृपधरेजेशिवमानसहंस । जेपदपंकजमृदुल
रसमुनिसंकुलअलिबंश १ मुनिसंकुलअलिबंशप्रकटकी
न्हीजिनगंगा। बरणतवेदपुराणप्रणतहितविरदअभंगा २
विरदअभंगप्रसंगश्रुतिमुनितियकेपातकहरे। अजसनका
दिकतेभजैंजेपदपङ्कजनृपधरे ३।१४३॥

टी०। जेपद पंकज नृपधरे श्रीरघुनाथजीके जोपदकमल जनक महाराज हाथेमेंधरे धोयरहेहैं ते कैसेहैंजे शिवजीके मनरूपमानसरमें हंससरीखे बासकिहेहैं पुनः जेपदपंकज मृदुलरस जिन पदकमलनको प्रेमरस मकरंद ताके लोभहेतु मुनिसंकुलअलिबंश संकुलसमूहमननशील मुनिते अलिभ्रमरकेबंशसरीखे सदाबसेरहतेहैं १ जिनपदकमलनमें समूह मुनि भ्रमरबंशसरीखे अनुरागरस पानकरतेहैं तथा जिन पायँन गंगाप्रकटकीनि जे लोकपावनकर्ता हैं पुनः जिन पायँनको विरद अभंग प्रणतपाल ताको बाना जो कबहूं मिटता नहीं है ऐसा जाको वेदपुराण बर्णनकरत २ अभंग जो कबहूं भंग नहींहोत सदा एकैरस चलाआवत ऐसाविरद प्रणतपाल ताकोबाना ताकोप्रसंग कथाबिस्तार श्रुति वेदनमें बर्णनहै तथा लोकौमें प्रसिद्धहै कि मुनितियके पातकहरे अर्थात् जिनपायँन अहल्याके पापहरि पावनकरिदिये पुनः अज ब्रह्मादिक देवता तथा सनकादिक मुनि तेऊ जिनकोभजतेहैं जेपदपंकज जनकमहाराज हाथमेंधरे धोयरहेहैं ३।१४३

मू०। जनकरावसमको सुकृतकहतदेवमनमाहिं । निरखिमगन
कौतुकपरमजयजयकहहिंसिहाहिं १ जयजयकहहिंसिहाहिं
वचनकहि चारसँवारे। नरनारिनलखिरूपनेहवश देहवि
सारे २ देहविसारेरूपकोव्याहलाहलोयनरुकत। कोशलेश
मिथिलानगरजनकरायसमकोसुकृत ३।१४४॥

टी०। देवता मनमेंकहत कि जनकरावसम को सुकृत अर्थात् ब्रह्मा शिवादि मनमें सराहनाकरतेहैं कि राजा जनककी समान दूसरा सुकृती

कोऊ नहीं है पुनः परमकौतुक निरखि अत्यन्त अद्भुत बिवाहलीला नेत्रन भरि देखिसिहाहिं इसी सुखप्राप्तीको ललचाते हैं पुनः जयजयकार करते हैं १ श्रीजनकनंदिनी रघुनन्दनकी जयहोय जयहोय ऐसा कहते हैं अरु सिहाते हैं पुनः वचनकहि चार सँवारे कोमल वचनकहि बिवाहके जो चार यथार्थ रीतिते सब क्रिया कर्तव्यता तिनको सँवारे उत्तम विधिते सब यथार्थ करवाये तथा नरनारिन रूपलखि बिवाह समय श्रीजनकनंदिनी रघुनन्दनको सुन्दर स्वरूप नेत्रनभरि देखि पुरके नरनारिन नेहकेबश अत्यंत प्रेमते बिह्वल देहकी सुधि बिसारे हैं भाव यह सुधिनहीं कि हम कौन हैं कहां बैठे हैं २ काहेते देहकी सुधि बिसारे हैं कि दूलहरूप को देखतसंते व्याह समयको लाभ भलीभांति देखिलेना ताहीहेतु लोयन जो नेत्र ते रुकत रूप अवलोकनते बिलग नहींहोत सोई परमानंद जिनको सुलभ प्राप्तहै तौ कोशलेश जो दशरथ महाराज तथा मिथिला नगरमें जनकमहाराज की समान को सुकृती दूसराहै भाव इनसम येई हैं ३ । १४४ ॥

मू० । होनलगींवरभाँवरीदुलहिनिललितललाम । दूलहसुन्दर साँवरोशशिमुखपंकजराम १ शशिमुखपंकजरामबामलखि मंगलगावहिं । मुनिगणभाँवरिकृत्तकरहिंगनितियनिबतावहिं २ मगनमोदभाँवरिपरैंरानीतनमनबावरी । सबकुलचारविचारकरिहोनलगींवरभाँवरी ३ । १४५ ॥

टी० । बर श्रेष्ठ भाँवरी होनलगीं कौन श्रेष्ठताहै ललित ललाम दुलहिनि तथा पंकजसम साँवरो शशिमुख ऐसे सुन्दर राम दूलह अर्थात् ललितनाम सुन्दर गौर वर्ण सर्वांग सुठौरबने पुनः ललामनाम भूषण सर्वांगमें शोभा दैरहे अथवा घरको भूषण कुलको भूषण सब लोकको भूषण ऐसी ललितललाम श्रीजानकी ऐसी दुलहिनि तथा पंकजनाम कमल सोई नीलकमल सम साँवरो वर्ण तथा शशि चन्द्रपूर्ण सम मुख सर्वांग सुठौर बने ऐसे सुन्दर रघुनाथजी दूलह इत्यादि उत्तम दूलह दुलहिनि ताते उत्तम भाँवरी होनेलगीं १ कमलसम सुन्दरश्याम चन्द्रसममुख ऐसे श्रीरघुनाथजीको लखि देखिकै बाम जो युवतीगणते मंगल गावती हैं पुनः मुनिगण भाँवरिकृत करहिं बशिष्ठ शतानंदादि समूह मुनि ते सब भाँवरी की कर्तव्यता करते हैं पुनः गनितियनि बतावहिं एक दो तीनि इति भाँवरीगनि छिन सों बतावते हैं अथवा ब्राह्मणी गावनेवाली जेतनी रहीं

तिनको गनिकै भोजन भूषण बसन दशरथजी ते देवावते हैं २ जा समय भाँवरी परती हैं तब रानी सब मोदमगन आनन्दमेंबूडीं तनमनते बावरी भई अर्थात् मन प्रेमानंद में बूडा ताते देहकी सुधि नहीं है विचार पूर्बक कुलके आचार सब रीतिकरि बर श्रेष्ठ भाँवरी होनलगीं ३ । १४५ ॥

मू० । रामनिछावरिकोगनैमुक्तामणिगणखान । मण्डपधनपूरोभ योजनुजुवारियवधान १ जनुजुवारियवधानजनकमन्दिरते आवैं । मुनिवशिष्ठकेवचननेगगहिताहिदिवावैं २ नेगसा धिआहुतिदईव्याहभयोसबकोउभनैं । देवभूपरानीजनक रामनिछावरिकोगनैं ३ । १४६ ॥

टी० । मुक्तादि मणिगणनकी खानि जहां हैं तहां जैसी रघुनाथजी की निवछावरिहोतीहै ताहिकौन गनिसक्ताहै भावअसंख्य होती हैं काहेते धन पूरोमंडपभयो जनु जुवारि जब धानमुक्तामणी सोनाआदि धनकरिकैमा- डवकी भूमि परिपूर्ण है भाव सर्वत्र बिथरे परे हैं यथा जुवारि यव धान अर्थात् और अन्न छीमी बालीके भीतर रहत ते ऐसेखेतमें नहीं बिथरिसक्ते हैं अरु जुवारि यव धान बालीमें बाहेरैरहतेहैं ताते खेत कटेपर बिथरेपरे रहते हैं १ काहेते मणि मुक्तादि जुवारि यव धानकी नाईं परेहैं सोकहत कि जनक मंदिरते आवैं अर्थात् दायज हेतु जनकजीके भंडार मंदिरते ढोयढोय मडयेतरको आवत दशरथजीके आगे धरत पुनः बशिष्ठ मुनिके इनहीं वचनहैं कि जासमय जो आपना जेतोनेग बतावत ताहि तेतरोही दिवावते हैं तहां देत लेतमें जोगिरे तेभूमिमें परेहैं २ नेगसाधि सब नेगि- नको परिपूर्ण नेगदैकै आहुतिदई देवनको संतुष्टहोने हेतु सब देवनके मंत्र पढ़िपढ़ि घृतादिकी आहुती अग्निमेंकीन्हे भाँवरीकीन्हे तब सबकोऊ भनैकहिरहे हैं कि श्रीराम जानकीको बिवाहभयो तासमय ब्रह्मादिक देवता पुनः भूपदशरथ सुनयनादिरानी जनकजी इत्यादि सबै निवछा- वरि करतहैं ताते राम निवछावरि कोगनै ३ । १४६ ॥

मू० । ज्यहिबिधिरामबिवाहभोसोकहिसकहिंनशेष । संपतिशोभा सुखसुभगमंगलमोदसुवेष १ मंगलमोदसुवेषसाजुशुभस कलसमाजैं । कहिकहिथकेगणेशव्यासजिनश्रुतिपथसाजैं २

श्रुतिपथसाजैंतेचकृतमोदविनोदउछाहभो। तुलसिदाससो
किमिकहैज्यहिबिधिरामबिवाहभो ३ । १४७ ॥

टी० । ज्यहिविधिते श्रीरघुनाथजीको बिवाह भयोहै सोसमग्र वृत्तांत यथार्थ शेषौजी नहीं कहिसक्ते हैं काहेते दोऊ महाराजनकी जैसी संपति ऐश्वर्यरही तथा वर कन्या समधी समधिनी बरात ज्यउनासीपुर मंदिर माडव इत्यादि दोऊ दिशिमें जैसशोभारही तथा धनुभंग भयेपर समाज सहित जनकजीको सुखपत्रिका पाय समाज सहित दशरथजीको सुख बरातआये बिवाह समय सबहीको सुख इत्यादि जैसासुखभया तथा सुभग सुन्दर ऐश्वर्य सहित जोमंगल उत्सवभया तथा मोदमानसी आनंद तथा वर कन्यादि सबको जो सुंदरवेष अर्थात् स्वरूप वसन भूषणादि १ मंगलमोद तथा सुवेषादि जो सकल समाजको साजहै सो शुभ कल्याण कर्ता अर्थात् जाको श्रवण कीर्तनकरि औरहू जीवनको कल्याणहोत ताको कहतसंते गणेश तथा व्यासादिमुनि पुनः जिन श्रुतिपथसाजे वेद मार्गचलाये ब्रह्मादि तेऊ कहिकहि थके पारनपाये २ जे श्रुतिपथसाजे ब्रह्मा तेऊ व्याहदेखि चकृतभये कछु बुद्धि न कामकिया ऐसामोद विनोद अंतर बाहेर आनंद उत्साहभयो ताको तुलसीदास कैसेकहै जाविधि श्री राम बिवाहभयो ३ । १४७ ॥

मू० । जनककीनजोमुनिकहेउसबकन्यकाबिवाह । भरतशत्रुसूद
नलषणदूलहकरेउछाह १ दूलहकरेउछाहनृपतिदशरथ
सुखपायो। रामब्याहविधिशोधिमुनिनदेवनिकरवायो २ दे
वनिकरवायोसुकृतिदूलहदुलहीसुखलह्यो । जोरीचारिनि
हारिसुखजनककीनजोमुनिकह्यो ३ । १४८ ॥

टी० । जोबात जासमयमें वशिष्ठमुनि कहे सोईबात जनकमहाराज कीन्हे इसीभांति सबकन्यका चारिहूको बिवाहभयो यथा कुशध्वजकी जो कन्याबडी ताकेसंग भरतजीको विवाह तिनकोनाम मांडवी तिनते छोटी श्रुतिकीर्ति ताकेसंग शत्रुघ्नजीको बिवाहभया तथा जनकजीकी छोटी कन्या उर्मिला ताकेसंग लक्ष्मणजीको बिवाहभया इत्यादि तीनिहू जनेन को महाउर जामा कंकण मौरादि भूषितकरि दूलहबनाय उछाहकरे भाव बिवाहको सब उत्सवकीन्हे १ दूलहबनाय व्याह उत्सवकीन्हे सो देखि देखि महाराज दशरथ अधिक ते अधिक सुख पावते हैं यथा रघुनाथजीके

बिवाहमें यावत् विधिकीन्हीरहैं सोई विधिशोधि वशिष्ठादि मुनिन ब्रह्मादि देवतन उसी विधिते तीनिहू भाइनके बिवाह करवाये २ देवनि सुकृति अर्थात् उत्तम विधिते सबक्रिया करवाये ताते श्रीरामादि दूलह जानकी आदि दुलही ते यथायोग्य मनभावतपाय परम सुखपाये इसभांति चा-रिहुजोरी निहारि देखनहार सबके मनमें सुखभयो इत्यादि जोबात मुनि कह्यो सोई जनकजी कीन्हे ३ । १४८ ॥

मू० । मघामेघदशरथभयेयाचकदादुरमोर । सरसरिताद्विजगण भयेबाढ़िचलेचहुँओर १ बाढ़िचलेचहुँओरशालिजनकादि करानी । पुरपरिजनभेकृषीसुखीसुखसुंदरपानी २ सुंदरपा नीबुंदमणिभूषणपटवर्षतनये । रामसियापावससुखदमघा मेघदशरथभये ३ । १४९ ॥

टी० । देखतसन्ते नेत्रनकोआनंद अन्तमेंजीवको कल्याणकर्ता ऐसा जो ऐश्वर्य गुप्तमाधुर्य भूषित श्रीजनकनन्दिनी रघुनन्दन को सुन्दर स्वरूप ताको बर्षाऋतुकरि वर्णन करत तहां बर्षा में भादवँ अधिक ताहूमें मघा नक्षत्र अधिकहोत तथा इहां मघाके मेघ महाराज दशरथ भये भाव अत्यंत दान बर्षिरहे हैं बर्षा में दादुर मेढक तथा मोर आनंदह्वै बोलत तथा इहां परिपूर्ण दानपाय याचक प्रशंसा करिरहे हैं तेई दादुर मोरहैं अत्यंत जल बर्षे नदीउमडि चलती हैं तालबहिचलत तथा इहां द्विजगण ब्राह्मणसमूह तेई सर सरिता तालनदी नद सरीखे बाढ़िचहुँओर चले समूह दानपाय चारिहू दिशिको आनंदितचले जातेहैं १ ब्राह्मणबाढ़ि चारिहूओर चले तथा शालि जनकादिक रानी अत्यन्त बर्षाभये पर शालिधान हरित ह्वै अत्यन्त बाढ़त तथा जनकआदि पुरके नररानी सुनयनाआदि पुरकीनारी इत्यादि सबके मनमें आनंदबढ़त तथापुरजन परिवारके जन ते सबकृषीहैं अर्थात् जनक अरुरानी धानसरीखे अरु पुर वा परिवार जन ते और अन्न सरीखे उत्सव सुंदर पानीपाय सबैसुखीभये २ जो मणीदान करतेहैं सोई सुंदरपानी के बुंदहैं तथाभूषण पट दुशालादि सोई सघन धारनये नवीन बर्षिरहेहैं इसभाँति श्रीराम जानकी पावस बर्षाऋतु सुखदायकभये तथा दशरथ मघाके मेघभये ३ । १४९ ॥

मू० । वरकन्याराउलचलेमुनिआयसुअसदीन । भूपसमाजसमे तसबजनवासेपगदीन १ जनवासेपगदीनबजेदुंदुभिअति

भारी । दुलहिनदूलहल्यायभवनआसनदैनारी २ दूलहदुलहिनिसमनिरखिरानीसुखसानीभले । रहसविवशलहकौरकृतबरकन्याराउलचले ३ । १५० ॥

टी० । मुनिवशिष्ठ वा शतानंद अस आयसु आज्ञादीन जातेवरकन्या राउलमंदिरके भीतरको चले तथा सबसमाज सहित भूपदशरथजी जनवासे को पगदीन चले १ जब दशरथ जी जनवासे को चले तबअत्यंत भारी दुंदुभी नगारा बजे अरुदुलहिनी दुलहनको मंदिरके भीतरलायनारिन आसनदीन बैठारे २ यथादूलह तथा दुलहिनी समनिरखि अर्थात् स्वरूपता बरण अवस्था स्वभाव सब यथायोग्य बराबरिदेखि सुनयनादि रानी सुखसानी मनतनमें आनंद भरिपूरि रहा है पुनः रहसएकांतिक आनंद के विशेष्य वश लहकौरिको व्यापार करावती हैं इसहेतु वरकन्या मंदिर के भीतरको चले रहैं ३ । १५० ॥

मू० । रमाउमागावनलगींलैमातृनकोनाम । धरिकपोललहकौरकृतकरनिखवावतराम १ करनिखवावतरामकुलाहलमंगलहोईनेकअनेकप्रकारसकुचकहँप्रकटतदोई २ प्रकटततियवचननिकहैंरामसीयप्रेमनिपगीं। कहतकैकयीकौशिलारमाउमागावनलगीं ३ । १५१ ॥

टी० । रमालक्ष्मी उमापार्वती इत्यादि मातृकौशल्यादि को नामलैलै गारीगावन लगीं अरु लहकौरकृत दोउनसों लहकौर लीलाकरावती हैं कौनभाँति कपोल धरिकरनिराम खवावत अर्थात् किशोरीजी को कपोल मुखके पँजरेको भागसो आपने बामहाथपर धरि अरुदहिने हाथेते दधि मिश्री आदि रघुनाथजी खवावते हैं १ रघुनाथजी आपने हाथनजानकी जीको खवावते हैं तासमय मंगलमय कोलाहल अर्थात् बहुती युवतिनको पृथउच्चारित शब्दएकमें मिलागंभीर ह्वै रहाहै पुनः दोऊवरकन्या नेकनामथोरा पुनः अनेकप्रकारते सकुचकहँ प्रकटत अर्थात् सबव्यापारमें थोरा संकोच करते हैं २ तिययुवती जन प्रकटैं अनेकभाँतिके व्यापार करावने हेतु बचन कहती हैं अरु श्रीराम जानकी के प्रेममें पगीं सर्वांग प्रेमतेपरिपूर्ण अरु कौशल्या सुमित्रा कैकेयी आदि मातनको नामलैलै रमाउमा गावती हैं ३ । १५१ ॥

मू० । सियसूधीतुमचतुरहौरमाकह्योमुसुकाय । मुनितियकीनाईं
कहूँकीजियनाहिंरघुराय १ कीजियनाहिंरघुरायसीयसिखसुन
हुहमारी । पदकबहूंजनिछुयोपगनिकीसुगतिनिनारी २ ना
रीचारिबिवाहियोएकधनुषदलिगथलहौ । रमाकहतरघुना
थसोंसियसूधीतुमचतुरहौ ३ । १५२ ॥

टी० । हास्यबर्द्धक वचन रमालक्ष्मी जी मुसकायकै कह्यो हेराजकुमार जानकीजी सूधीसहज स्वभावहैं अरुतुम चतुरहौ भावये विदेहपरमहंसकी कन्यातातेइनकोसीधा स्वभावहै कछु छलवार्तानहीं जानतीहैं आपुके पिता कैसेहैं कि कैकेयीजीकी सुंदरता नारदते सुनि तिनको आपना बिवाह करिबे हेतु जादूगीरिनि देवकालीको पठाय कैकेयीको मोहिलिये सोहाल मातापिता जाना आपनी मर्याद राखिबे हेतु राजाकेकय गर्गाचार्य पठाय करारनाम्मा लिखाये भाव आपनी कन्याको बिवाह तब करैंगे जब दशरथ महाराज लिखिदेवैं कि तुम्हारिही कन्याके पुत्रको राजगद्दी देयँगेसो छल राखि लिखिदिये भावबिवाहमात्र पत्ररहा जब कैकेयी घरमेंआईं तबअनेक छलवचन कहि कैकेयीते वहपत्र माँगिलिये पुनः जब पायस देनेलगे तब बड़ाभाग कौशल्याकोदिन्हे इसीते सूचित होताहै कि छलराखि पत्रलिखे पुनः आगेदेखैं कौनकौन चातुरीकरैं ऐसे चतुरके आपु पुत्रहौसो आपहूकी चातुर्यता प्रसिद्धै देखिपरती है काहेते किशोरीजीकी सुंदरता सुनि ऋषि यज्ञरक्षाके बहाने अकेलही बाहन रहित पैदर इहांको दौरेआयो अरु आपु में चेटक नाटकविद्या बहुती देखिपरती हैं काहेते किसी चेटकबलते मारीचको उड़ाय समुद्रपार पठायो सोतौभला बाणको बहानाहै अरु पायँन की धूरिमेंतौ न मालूम कैसाचेटक सिद्धकिहेहौ कि जाकोलगाय पाषाण रूपते अहल्याको दिव्यस्त्री बनाय वाको न मालूम कहांको उड़ाय दिहेउ पुनः इहां आय ऐसाचेटक लगाय दिहेउ जामें किशोरीजी तौ प्रधानै हैं औरौ सब युवती तुमहींपर प्राण वारनकिहे हैं पुनः परशुराम ऐसे सबल क्रोधी तिनपर चेटकडारि सैंतिही हथियार धरायलीन्हेउ ऐसे चतुर आपु हौ अरु किशोरीजी सूधीहैं छलवार्ता कछुनहीं जानतीहैं ताते हे रघुराय कहूँ मुनितियकी नाईं नहिं कीजिये अर्थात् पदरज लगाय इनको न कहूँ उड़ाय दिहेउ १ हे रघुराय आपुतेतौ कहती हैं कि मुनितियाकीनाईं कीजिये नहीं परंतु छली पुरुषनको ठेकाना नहीं है ताते हे जानकीजी तुम

हमारा सिखावन सुनेहु पुष्टमनमा धरेरहेहु क्यासिख देती हैं कि रघुनंदनके पायँ कबहूँ जनिछुयो अर्थात् भूलिहूकै न छुयो काहेते पगनिकी सुगति निनारी रघुनंदनके पायँनकी सुगति लोकरीतिते न्यारी है भाव जब पत्थरते स्त्री बनाय उड़ाय देते हैं तौ कोमल स्त्रीको उड़ावना कौन बड़ीबातहै इत्यादि २ पुनः एक और आपुकी बड़ीभारी चातुर्यताहै कि एक धनुष दलिचारिनारी बिवाहियो अरु गथलहौ धन पावतेहौ अर्थात् विदेह की प्रतिज्ञा एक जानकीजीके हेतुरहै कि जोधनुषतोरै ताको सीता बिवाहैं सो एकतौ शिव धनुष तोरयो अरु समाज सहित जनकजीपर ऐसा कछु मोहन मंत्र डारिदिहेउ जाते चारिउ कन्यनको चारिउ भाइमिलि बिवाह करि उत्तम सुन्दरी स्त्रीलिहेउ पुनः जोकछु घरमें मणि मुक्ता सोनादि धन है सोऊ लिहेलेतेहौ इत्यादि रघुनाथजीसों रमा कहतीहैं कि तुम चतुरहौ अरु जानकीजी सूधी हैं ३ । १५२ ॥

मू० । हासविलासविनोदमयनेगयोगकरवाय । रामउठायेभवनते
शिविकारुचिरचढ़ाय १ शिविकारुचिरचढ़ायदुलहिनिन
सहितसुहाये । दुंदुभिदेवनपुहुपरामजनवासेआये २ जनवा
सेदेखतमगनभूपदीनलखिद्विरदहय । पोषेयाचकविविधसु-
खहासबिलासविनोदमय ३ । १५३ ॥

टी० । बिनोद आनंदमय हास बिलास हास सहित सुखद लीलाकरि पुनः नेग जो दानदेना उचित रीतिसे होताहै यथा मैहरद्वार बाती मिलावनादि तथा योग परस्पर लहकौर खवावना जुवाँ खेलावना इत्यादि सब करवाय पुनः भवनते राम उठाये कोहवर मंदिरते रघुनाथजी आदि चारिहू दुलहनको उठाये पुनः शिविका रुचिर पालकी सुंदरिनपर चढ़ाये १ सुहाये सुन्दर चारिहु दूलह दुलहिनिन सहित सुन्दरी पालकिन पर चढ़ाय दासी दास साथ चारिहू पालकी उठाय कहारचले तासमयमें देवतन दुंदुभी बजाय पुहुप फूलबर्षे इसभांति दुलहिन सहित चारिहुभाइ रघुनाथ जी जनवासेको आये २ जनवासे देखत मगन दुलहिनिन सहित राजकुमारन को देखि जनवासे के जन सब बराती प्रेम में बूड़िगये पुनः भूप लखि दशरथ महाराज पुत्र पतोहन को देखि आनंदह्वै द्विरद हाथी हय घोड़े इत्यादि अनेकदान याचकनको दीन्हे सो पाय याचकपोषे संतोषित

भये इत्यादि हास बिलास बिनोदमय विविध अनेकभांति सुख सबको भया ३ । १५३ ॥

मू० । षटरसचारिप्रकारकेभोजनविविधबनाय । शतानंदआपु हिजनकदशरथचलेलिवाय १ दशरथचलेलिवायपाँवड़ेअर्घसुहाये । मणिसिंहासनरुचिरछरसभोजनपरुसाये २ भोजनपरुसायेमुदिततियगणगानविहारके।मुनिदशरथभोजनकियोषटरसचारिप्रकारके ३ । १५४ ॥

टी० । षट्रस यथा मीठाखट्टा तिक्तलवण अम्लकटुइत्यादि छःप्रकारका जिनमें स्वाद पुनः भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य तिनमें विविध अनेकभांति के भोजन बनाये यथा भक्ष्य में भेद बोंदी लड्डू खुरमाँ पपरी पेराक समोसा मठरी गुलाबजामुनि गुलगुला खाभा बतासफेनी शंकरपालादि जो चर्बणवत् रूखे होते हैं पुनः भोज्यमें भेद यथा दालि भात खिचरी तस्मईरोटी पूरी मालपुवा अमिरती जलेबी आदि जे रससहित रुखाई लिहेहोते हैं पुनः लेह्यमें भेद यथा दूध दही राबड़ी मलाई हलुवादि जे अधिक रसीले पुनः चोष्यमें भेद यथा सब सालन तरकारी चटनी अचारादि इत्यादि अनेकभांतिके भोजन बनायकै तैयारकीन्हे तब शतानंद सहित आपही जनकजी बरातको जाय भोजन करावने हेतु समाज सहित दशरथ महाराजको लवाय लैचले १ कौनभांति दशरथ महाराज को लवाय लैचले अर्घ अर्थात् आगे सुन्दर सुगंधित जल छिरकत पुनः सुहाये पाँवड़े अर्थात् सुंदरी बिचित्र चांदनी बिछावत जात तापर चलेजात मंदिर पहुँचे पर पाँयधोय मणि जटित सिंहासनन पर यथायोग्य सबको बैठाय पुनः पनवारदै छैयोरसके भोजन परसनलगे २ मुदित आनंद मन ते भोजन परसाये जब जेंवनलगे तब तियगन बिहार के गीतगारी आदि गान करनेलगीं इसभांति षट्रस चारिप्रकारके यावत् व्यंजन हैं तिनको मुनिन सहित दशरथ महाराज भोजन किये ३ । १५४ ॥

मू० । पानमानप्रमुदितदयेभयेविदाजनवास । गहगहबाजीदुंदुभीमंगलमोदविलास १ मंगलमोदविलासबरातिनमंदिर भूले । जनकप्रीतिरजसुदृढ़रामछविपावसभूले २भूलेगज

याचकन गृहपहिरिपायमंदिरगये। जानरायरघुपतिसबाह पानमानप्रमुदितदये ३। १५५॥

टी०। प्रमुदित आनंद पूर्वक सन्मान आदर सहित सबको पानबीरा दीन्हे तब बिदाह्वै जनवासको दशरथ महाराज चले तासमय गहगह दुंदुभी उत्सवभरे गंभीर शब्दते नगारादि बाजाबाजनेलगे तथा मंगल प्रसिद्ध उत्सव मोद मानसी आनन्द इत्यादि बिलास सुख सबमें परिपूर्ण है १ ऐसा मंगल मोदको बिलास है जामें बरातिन मंदिर भूले अर्थात् रघुनंदनके बिवाह को उत्सव देखत संते अंतर बाहेर ऐसाआनन्द परिपूर्ण रहा जाते बरातिनको घरनको सुख तथा घरकोकार्य सबभूलिगया काहेते रघुनाथजीकी छबिसोई पावस बर्षाऋतु है तामें अनेक उत्सव सोई हिंडोलाहै तापर सबके मनआरूढ अरु जनकजीकी जो प्रीति सोई सुदृढ रजु सुन्दर पुष्ट रसरीहै ताके बलते सबबराती भूलते हैं अर्थात् ब्याहउत्सव में तौ सबमगनै हैं परन्तु जब आपने घरकोजानेकी इच्छाकरतेहैं तबप्रीतिते जनकजी राखि छाँड़तेहैं इतिहिंडोरा कैसीपैंग सबके मनझूलि रहेहैं २ पुनः यावत् यांचकरहे तिनके गृह गजभूलत अर्थात् दानमें जो हाथीपाये ते घरमें बांधे भूमि रहे हैं पुनः जरीजामा पाग दुशालादि जो बसन पाये तिनको पहिरि आपने मंदिरन को गये पुनःरघुपति जानराय रघुनाथजी चतुरनमें शिरोमणि हैं ताते प्रमुदित परमआनन्द पूर्वक सन्मान सहित खानपानादि सबहिन को यथोचित दीन्हे ३। १५५॥

मू०। तीनिमासदशरथरहे नितनवआदरहोय। बिदासाजसाजी जनक सबकोमुखरुखजोय १ सबकोमुखरुखजोय सहस दशस्यंदनसाजे। मुक्तामणिगणसुपट भाँडकंचनकेराजे २ मणिगणलागेअत्रजेते तेरथपूरेलहे। जनकराजदायजस जे तीनिमासदशरथरहे ३। १५६॥

टी०। दशरथ तीनिमास रहे अर्थात् कार्तिक कृष्णत्रयोदशीको बरात जनकपुरमें पहुंची अरु पौषशुक्ल दशमीको बिदाभई इसहिसाबते दोमास बारह दिनरही अरु कार्तिक अगहन पौष गने ते तीनि भये ताते कहत बरात सहित दशरथमहाराज तीनि महीना जनकपुरमें रहे तहांदिनप्रति नितनवा आदर होतारहा पुनः सबको मुखरुख जोइ भाव निश्चय बिदा होनेको मुखकी चेष्टा देखि जनकजी बिदाकी साजसजी १ दशरथ बशिष्ठ

बिश्वामित्र इत्यादि सबके मुखकोरुख देखि दशसहस स्यंदन दशहजार रथसाज पुनः मुक्तादि मणिन के गणसमूह पुनः सुपट सुंदर बस्त्र तथा कंचनके भांड सोनेके सबबरतन बिराजमान २ पुनः माणिनके गणजामें समूह लगे ऐसे अत्र सबभांतिके हथियार इत्यादि ते रथपूरे लदे अर्थात् सबबस्तु भरे रथपाये इसभांति राजाजनक दायजसजे तीनिमासदशरथ महाराज रहे पुनः चले ३।१५६॥

मू० । दिग्गजसहसपचासलौंसजेजरकसीसाज । मणिमुक्ताकी
झालरीझपेसोहगजराज १ झपेसोहगजराजजरीजरकसी
अमारी । तिमिरअरुणइकठौरमनौपावसअँधियारी २
पावसअँधियारीसघनघंटशब्दसुरबासलौं । जनकरायदा
यजसज्योदिग्गजसहसपचासलौ ३ । १५७॥

टी० । दिग्गज पचास सहस बड़े ऊंचे पुष्टांग हाथी पचासहजार तक जरकसीसाजते सजेकैसी जरकसीसाज जामें मणिमुक्तनकी झालरीलगी है ऐसी जरकसी झूलनते गजराजझपे सोहत हाथिनपर दिव्यचमकदार झूलें शोभा देरहीहैं १ जरतारी झूलनतेझपे गजराजसोहत तथापीठिन परजरकसी अमारी कसीहैं ते कैसीसोहत मानौपावस अँधियारी में तिमिर अरुण इकठौर अर्थात् श्यामश्याम समूहहाथी तिनपर मणिमुक्तन युक्तजरकसी झूलें तथाअमारी कैसी शोभा दै रही हैं मानौ पावस बर्षाऋतुकी अँधियारी में तिमिर जो अंधकार तथा अरुण जो सूर्य ते दोऊ एकही ठौरहैं इहांहाथी अंधकार अरु जरतारी सूर्य हैं ये दोऊ एकत्रकबहूं नहीं होतेहैं ताते असिद्ध बिषयाबस्तु उत्प्रेक्षा लंकारहै २ समूहहाथीसोई सघन मेघनकी तुल्यहैं तिनकी गर्जनसरिखे जो हाथिन के घंटनको जो गंभीर शब्द है सो सुरबास लौ देवनकोबास जो स्वर्गलोक तहांलौ शब्द सुनाता है ऐसे पचास हजार लौ दिग्गज दायज के हेत जनकजी साजते भये ३।१५७॥

मू० । तुरीलाखदशबरसजेबरनबरनकेजीन । रथतुरंगतेअतिभ
लेचंचलसुभगनवीन १ चंचलसुभगनवीन अलंकृतभूष
णराजे । बरननिदरिमनबेगरंगरंगनिबनिसाजे २ बनिबनि

साजेबाजिबर जिनहिंदेखिसुरहयलजे । जनकरायदायज सज्यो तुरीलाखदशबरसजे ३ । १५८ ॥

टी० । बरतुरी श्रेष्ठघोड़े दशलाखसजे जिनपर बरनबरनयथा अरुणपीत सेतनील हरित गुलाबीआबीऊदीलाखी मखमलजरी युत रंगरंगकी जीनैं कसीहैं ते कैसे घोड़ेहैं रथतुरंगते अतिभले तुरंगघोड़े जे रथनमेंनहे हैं तिनते अत्यंत भले कौन भलाईहै एकतौ चंचल दूसरे सुभग अत्यंत सुन्दर तीजे नवीन थोरीउमिरिके १ चंचल सुभग नवीन पुनःभूषणअलंकृत राजे अर्थात् लगाम पूंजी कलँगी जेरबंद हैकल हँबेल सढाकै गजगाह दुमची जीनपोस इत्यादि भूषण तिनकरिकै अलंकृत भूषितहैं पुनः बरन अनेक रंगके यथासबुजाइयामकर्ण कुम्मैत सुरंग अबलख समुद संदली संजाव सुरखाब समुद सिरगाचौधरा पचकल्याण नीलाचीना नकुल फुलवारीमुश्कीगर्रा इत्यादि अनेक बरनके पुनः आपनीवेगके आगे मनकीवेगको निंदा करतेहैं ऐसेरंग रंगके साजेते बनिबनि तयारकीन्हे २ बरबाजि उत्तमघोड़े जे साजे बनिबनि तयार भयेते कैसेहैं जिन्हेंदेखिसुरहय देवनकेघोड़े उच्चैःश्रवादिलजाते हैं इत्यादि राजाजनक जो दायजसज्यो तामें दशलाखबर तुरी उत्तम घोड़े सज्यो ३ । १५८ ॥

मू० । वृषभवृंददशलाखलौ सुंदरसबगुणधाम । शृंगअंगमंडित पुरट सोहतललितललाम १ सोहतललितललाम भरेभौ जनपकवानै । सौरभमृगमदमलय अगरकुम्कुमकेथानै २ अगरकुम्कुमारसभरे झपेजरकसीआँखलौ । जनकराय दायजसज्यो वृषभवृंददशलाखलौ ३ । १५९ ॥

टी० । वृषभवृंदबर धनके झुंड दशलाखलौ सजेते सुंदरसबगुणधाम अर्थात् सर्वांग सुठौर बने यथाचौ० ॥ कारिकछौटीसैरेकानु । मोरमुख ग्रीवालघुजानु ॥ बक्षनितंबायतगोलोदर । पोंगीपूंछस्वल्परोमोपर ॥ श्वेतबरनतनऊंचेकन्धर । सबपुष्टांगवृषभयेसुन्दर ॥ तथा उत्तम गुणनके भरे मंदिर यथा चौ० ॥ शुद्धसभीतनीतिखंभुवार । बलीभारबहतेजसभार ॥ समयस्वामिरुखआज्ञाकार । येगुणधामवृषभानिर्द्धार ॥ पुनःशृंग अंगपुरट मंडित पुरटसोना मंडित भूषित शृंग अंग अर्थात् सींगें सोनेते मढ़ी शोभित हैं तथाललित सुन्दर ललाम भूषण सर्वांगमें भूषितसोहत१ललित ललाम सोहत पुनः खाझा लड्डू पेराक बोंदी खरमादि पकवान भोजन

हेतभरे जिनपर लदेहैं तथा सौरभ जो सुगंधितवस्तु यथामृगमद कस्तूरा मलय चंदन अगरकुमकुम इत्यादिके थानै पात्रभरे २ अगर कुमकुमादि के रससुगंधित जिनमें भरे ऐसे पात्रलदे पुनः आंखलौ आँखिनतक जरकसी भूलनते सर्वांग भूपेहैं ऐसेदशलाखलौ वृषभदायजमेंसजे ३।१५९॥

मू०। महिषीलाखसतानवै देशदेशकीखानि । मनौश्यामघनके सुवनमहीचरैंसबआनि १ महीचरैंसबआनिदूधधरनीधसिधारै । शृंगकंठमणिहार शिशुनप्यावतसुकुमारै २ प्यावतसुकुमारैथननिदूधसुधारविधानवै । जनकरायदायज सज्यो महिषीलाखसतानवै ३ । १६० ॥

टी०। सत्तानबेलाख महिषी भैंसी सो मन्दराजी गुजराती भूडभदावरि आदिदेश देशनकी खानि और और भांति बनावटकी न्यारी न्यारीते श्यामपुष्टांग ऊंची कैसी शोभित होती हैं मनौ श्यामघनके सुवन करिया बादरनके बच्चा समूह आकाशते उतरि आय सबमही पृथ्वीपर चरतेहैं १ यथामेघनकी जलधार भूमिपर गिरततथा ये जो महीपर आनि सबचरत तिनके दूधकीधार जो वेगते छूटतसो धरणी पृथ्वीमें धसिजात शृंगैंसोनेते मढ़ीकंठमें मणिनकेहार पहिरे सुकुमारे शिशुथोरी उमिरिके बच्चनको दूध प्यावतीहैं २ सुकुमारे बच्चनको प्यावती हैं ताते वैनाम निश्चय करिकै थननते सुंदरे दूधके धारनके विधान होतेहैं अर्थात् दूधतौ अधिक अरु शिशु सुकुमार बहुत पीनहीं सक्ते हैं अरु भैंसी पन्हानी तौ एक में बच्चा पीवत तवतीनि छातिनते दूधधार जो छूटतसो भूमिपै गिरतऐसी महिषी सत्तानबेलाख दायजहेत जनकराय सज्यो ३ । १६० ॥

मू०। धेनुलाखयुगबानबे कामधेनुसीरूप । अलंकारमणिगणवसन सोहतपरमअनूप १ सोहतपरमअनूप दूधसूधीसुठिरूरी । संगशिशुनकेबृंद सकलशुभलक्षणपूरी २ पूरीछविकोकोकहै ज्यहिदेख्योस्वइजानबै । जनकरायदायजसज्यो धेनुलाखयुगबानबै ३ । १६१ ॥

टी० । बान्नबेलाख पुनः बान्नबेलाख इत्यादि युगनामदो बान्नबेलाख अर्थात् एक करारि चौरासीलाख धेनु गावैंते कैसीहैं कामधेनुसी रूप मन

बाँछित फलदायक पुनः मणिगण अलंकार समूह मणिनके भूषणनकरिकै भूषित अरु सुन्दरे बसनकीझूलैंपरीं ताते परमअनूप उपमारहितसोहत १ काहेते उपमारहित सोहत दूधतौ मनबाँछितदेत अरु सूधी पुनः सुठिरूरी अत्यंत सुन्दरी तथा शिशुनके वृन्दथोरी उमिरिके बछिया बछवनकेझुण्ड संगमें इत्यादि शुभलक्षणनतेपूरीभरीहैं २ जिनमें भरीपूरीछबिहै ताकोऐसो को कबिहै जो कहिसकै कोऊ नहीं कहिसक्ता है काहेते वैनाम निश्चय करिकै सोई जानै जो ज्यहिने आपनी आँखिते देख्योहोइ सोई कहिसक्ता है इत्यादि युगबान्नबे लाख धेनु दायजहेत सज्यो ३ । १६१ ॥

मू० । शिविकाल्लाखबहत्तरी सियदासीअसवार । मनहुँकामतिय रतिचढ़ीं करिषोड़शशृंगार १ करिषोड़शशृंगारजानकी पियअधिकारी। मनगतिरतिपरवीनचतुरविद्याछबिभारी२ बिद्याछबिसतभावउरसियसेवाउनमत्तरी । दासीदायजनृपसज्यो शिविकाल्लाखबहत्तरी ३ । १६२ ॥

टी० । बहत्तरिलाख शिविकापालकी सजाये तिनपर जानकीजीकीदासी असवारभईते कैसी शोभा देरहीहैं यथाषोडश सोरहौशृंगार यथाउबटन१ मंजन २ बसन ३ जावक ४ केशसँवारन ५ सिंदूर ६ चन्दनलेप ७हाथमें मेहँदी ८ अरगजा ९ बेसरिआदि बारहौ भूषण १० फूलहार ११ सुगंध १२ मीसी १३ तांबूल १४ अंजन १५ चातुरी १६ इति सोरहौ शृंगार करिमानौ कामकी तियारति पालकिन पर चढ़ीं १ षोड़शशृंगारकिहे अत्यन्त स्वरूपवंत पुनः गुणवंत उत्तमकैसी हैं जानकी पिय अधिकारी श्री जानकीनाथ के सेवाकी अधिकारी हैं कौनभांति जिनमें भारी छबि पुनः सब बिद्यामें चतुर अरु रति जो प्रीति तामें ऐसी परवीनहैं यथा मनकी गति यथा देहइन्द्रियके सुखहेत मन अनेक उपाय बाँधाकरत अर्थात् श्री रघुनंदन जनक नंदिनीके परस्पर सुख पूर्वक प्रीति बढ़ावने हेत अनेक उपाय करनहारी हैं २ छबिविद्या सतभावउर सिय सेवा उनमत्त अर्थात् तनमें छबि यथा मुग्धावस्था गौरवर्ण सर्वांग सुठौरबने भूषण बसन सजे पुनः बचन कर्ममें विद्या यथा गान वाद्य कोक कला हावभाव नृत्य कौतुक कैंकर्यतासाज इत्यादिमें परमचतुर पुनः उरमेंसतभाव मनमें साँचीप्रीति ताते जानकीजी की सेवामें उनमत्त भाव सेवा आठौयाम करती हैं दूसरी बात जिनको नहीं सुहाती है बियोग एक पलक को नहीं सहिसक्ती हैं

ऐसी दासी दायजमें दिये तिनके असवार होनेहेत बहुतरिलाख शिविका पालकी महाराज सज्यो ३ । १६२ ॥

मू० । सवालाखपिंजरसज्यो कंचनखँचितबिचित्र । शुकशारिका मरालबहु कुहीबाजशुचिमित्र १ कुहीबाजशुचिमित्र सिया रुचिकैप्रतिपाले । तेसेवकसबलिये जानकीसेवनवाले २ सेवनवालेभागबड़ जगतजननिज्यहिजगसृज्यो । तासु संगयहकौनबड़ सवालाखपिंजरसज्यो ३ । १६३ ॥

टी० । कंचन खचित बिचित्र सवालाख पिंजर सज्यो सोनेके सलाकन करिकैरचित चित्रबिचित्र पिंजरा एकलाख पचीसहजारसज्योजिनमें शुक सुवा शारिका मैना मराल हंसइत्यादि बहुत पक्षी पालेहैं तथा कुही बाज इत्यादि शुचिपवित्र मित्रहैं भाव इच्छापूर्वक कामकरते हैं १ शुचि मित्र कुही बाजादि जिनको आपनी रुचिते जानकीजी प्रतिपालेप्रतिदिन खान पानादि दिवावती रहींते पक्षिन को ते सेवक हाथनमेंलिये जे सब जानकीजीकी सेवा करनेवाले हैं २ कविकी उक्ति जे जानकीजीकी सेवा करने वाले हैं तिनकी बड़ीभारी भाग्य है काहेते ज्यहि जगसृज्यो संसार को उत्पन्नकियो ऐसी जगत जननीकी सेवाको प्राप्तभये ताते बड़ीभाग्य वालेहैं तिन जानकीजीके संग यह कौन बड़ा बिभव है जो सवालाख पक्षिनके पिंजरा साजे ३ । १६३ ॥

मू० । ऊंटअजाअरुश्वानको लेखागनोसिराय । जेप्रियसियके नृपलख्यो नगरबाहरेजाय १ नगरबाहरेजाय मनहुँअम रावतिघेरी । दुंदुभिदयेसहस्र छत्रअरुचमरघनेरी २ चम रघनेरीभवनपट आसनविविधविधानको । दायजदियोन येगने ऊंटअजाअरुश्वानको ३ । १६४ ॥

टी० । ऊंट अजाछेरी श्वानकुत्ता इत्यादिको लेखा कौन चहौ तौ गने नहीं सिरातजेते दीन्हे काहेते जे जीव सियके प्रियनृप लख्यो जिनको जनकजी जानेकी जानकीजीको प्यारे हैं तिनसबको दैदीन्हेतेई हाथीघोड़ा रथ गाई भैंसी ऊँट कुत्तादि जाय नगरके बाहेर ठढ़िआयेगये १ जाय नगरके बाहेर कैसे शोभितहोते हैं यथा अमरावति इंद्रपुरी ऐश्वर्य करिकै घेरीहै सहस्र कहे हजारन दुंदुभी नगारादिदये तथा घनेरी बहुत छत्रचमर

दीन्हे २ यथा बहुत चमर छत्रादि तथा पटभवन तंबू कनात सांमियाना आदि तथा बिबिध अनेक बिधानके आसन जाजिम कालीन तोसक मसनदादि तथा ऊँट छेरी कुत्तादि यावत् दायजदिये सो सब ये नहींगने इनकी संख्या प्रसिद्ध नहींकहे असंख्यहैं ३ । १६४ ॥

मू० । रानिनसुतासँवारिकै करुणासीखसुनाय । पतिव्रतधर्महि
दृढ़धरयहु सेयहुसहजसुभाय १ सेयहुसहजसुभाय होहु
नितस्वामिहिप्यारी । सदासुहागिनिहोहु यहैआशिषाहमा
री २ यहैआशिषादेहिंहम सुताअंकउरधारिकै । भेंटिभेंटि
पांयनपरैं रानीसुतासँवारिकै ३ । १६५ ॥

टी० । सुता पुत्री जानकीआदि तिनकोसँवारि शृंगारकरि भूषणपहिराय पुनः सुनंयनाआदि रानिन करुणा वियोग दुःखवश सीखसुनाय क्या सिखावन सुनावती हैं हेपुत्री पतिव्रत धर्महि दृढधरयो पुष्टधारणकिहेउ पुनः सहजस्वभावते पतिको सेयहु अर्थात् केवल पतिनको ईश्वरमानि सहजस्वभावते मन बच क्रमते सदा सेवामें तत्पररहेउ १ सहजस्वभाय ते पतिको सेयहु इति सिखावनदीन्हे पुनः आशीर्बाद देत यथा आपने स्वामिनको नित्यही प्यारीहोहु तथा सदा सुहागिनीहोहु अर्थात् अनुकूल पति सहित तुम्हारा सुहाग अचलरहै यह हमारी आशिषा आशीर्बादहै २ सुता अंक उरधारि पुत्रिनको अँकोरामेंबैठारि माताकहती हैं हेपुत्री यही आशीर्बाद हमदेतीहैं सदासुखी सौभागिनीरहौ इत्यादिसुता सँवारिकै पुनः रानी भेंटिभेंटि पायनपरैं भाव माधुर्यमें बात्सल्यरसते बारंबार भेंटती हैं तथा जबऐश्वर्य बिचारतीहैं तबपांयनपरतीहैं यहशांतरसतेहोत ३।१६५ ॥

मू० । जनकनयनधाराबहैं सुतालियेउरलाय । सियकंठाछोड़त
नहीं जनकनत्यागीजाय १ जनकनत्यागीजाय सचिवस
मुझावतराजै । धीरजधर्मपरान ज्ञानगुणध्यानसमाजै २
ध्यानसमाजनलाजरह छुटतलगतरोवतगहैं । मातुगरेपु
निपितुगरे जनकनयनधाराबहैं ३ । १६६ ॥

टी० । प्रेम करुणावशते जनकजीके नयननमें आंसुनके धाराबहै सुता लिये उरलाय सनेहबशते पुत्रीको उरमें लगायलिये तथा सीय जानकी जी मिलतसमय पिताकेकटिते आपनाकंठ नहींछोडती हैं तैसे जनकजीते

भी पुत्री त्यागीनहींजात नहीं छोडिजात१ जनकजीते तौ पुत्री त्यागिनहीं जात अरुसचिवमंत्रीलोग सबमहाराजकोसमुझावतेहैं ताहूपरनहींछाँडत काहेतेज्ञानके यावत् गुणअरु ध्यानकीसमाज पुनः धर्यिधर्म इत्यादिपरान भावसिय रघुबर सनेहकी प्रबलताते डराय सबभागिगये यथा सबल विरोधी शत्रुकोदेखिकोऊभागै तैसा इहां न समुझना इहां ऐसासमुझनाचाहिये यथा सबलशत्रुकीभयते कोऊअबलआपनीसहायहेतुछोटेनकोटिकायेहोइताहीके सहायहेतकोऊ महासबल आयगया ताकी बड़ी ऐश्वर्यदेखि आपनी लघु ऐश्वर्य को संकोचमानि आपनी अबलताते बिनाभयकी भयमानि सजातीभी भागि जातेहैं वाकी बास सावकाश देनेहेत तथा इहां मोह शत्रुकी भयते अबलजीव आपनी सहायताहेत धीर्य धर्म ज्ञान ध्यानादि टिकायेरहा जब सियराम सनेह महा सबलजीवको सहायक आया तब याको बास सावकाश देबेहेत अबल धीर्यादि भागिगये तहां काम क्रोधादिके बेगमें मनुनपरै ताको धीर्यकही तथा सत्यशौच तप दानादि जहां पूरेहोयँ ताको धर्मकही पुनःलोक सुखको तुच्छ जानना सो विरागहै तथा देह व्यवहार असार आत्मरूप सार जानना ताको विवेक कही तथा मेरी मुक्ति निश्चय होवै यह मुमुक्षुताहै वासना त्याग शम कही इंद्रियविषयते रोकना ताकोदमकही विषयतेपीठिदेना उपरामकही दुःख सुख समजानना तितिक्षाकही शास्त्र वचनमें विश्वास श्रद्धामनादि थिररखना समाधान है इत्यादि सबज्ञानके गुणहैं पुनःध्यानकी समाज यम नियमादि अष्टांग योगहै इत्यादि सब विदेहजी में परिपूर्णरहैं जब सियराम सनेह उरमें परिपूर्ण भया तब धीर्यादि निसरिगये अरु मोह दल इसीकोताबेदारभया अर्थात् पुत्रादिकन पर अत्यंतसनेह होना सोई मोहहै अरु ईश्वरपर अत्यंत सनेहहोना अनुराग है तहां जो पुत्री यामातृ भावते अत्यंत सनेहरहा ताही में जब ईश्वर मिला तबवही मोह अमल अनुराग ह्वैगया तबज्ञान ध्यानादिको अंतरमें रहने को ठौरहीनहीं रहा ताते निसरिगये २ ध्यानादितौ निसरीगये पुनःपावन प्रेमते लोक लाजभी नहींरही ताते छूटतौहैंतौ पुनः अंगमें लागत काहेते जानकीजी छूटिकै पुनः रोवतगहै कौन भांति माताकेगरे पुनः पिताकेगरे ताहीते जनकजीके नयननते आंसुनकी धाराबहत ३ । १६६ ॥

मू० । बिदाहेतरघुबरगयेजनकरायकेधाम । रानिनलखिआसन

दियोकीन्हेरामप्रणाम १ कीन्हेरामप्रणामकहतमृदुवचन
सुहाये। बिदादीजियेमातुनृपतिचहअवधसिधाये२ अवध
सिधायेसुनतनृपरानीमुखसूखतभये । बचननमुखपंकजक
ढ्योबिदाहेतुरघुबरगये ३ । १६७॥

टी०। रघुबर बिदाहेतु रायजनकके धामगये सासुनते बिदामांगनेहेतु सब भाइन सहित श्रीरघुनाथजी राजाजनकके रनिवास मंदिरकोगये तिनको लखि देखिकै सुनयना आदि रानिन आसनदियो सिंहासनपर बैठने कहे अरु राम प्रणामकीन्हे रानिनको भाइन सहित रघुनाथ जी हाथजोरि प्रणामकीन्हे १ रघुनाथजी प्रणामकरि बैठे पुनःसुहाये मृदुवचन कहत श्रवण रोचक कोमल वचनते कहत हे मातु नृपति अवध सिधाये चाहत तातेबिदादीजिये भावहमनहीं बिदामांगनेकी इच्छाकिहेरहैं परंतु पिताके आधीनहैं ते महाराज अबअयोध्याजीको चलाचाहतेहैं तो हमकोभीजाना अवश्यहै ताते हमकोभी बिदादीजिये२ नृपतिअवधसिधाये ऐसासुनतही रानीमुख सूखतभयो अर्थात् कोशलेश महाराज अयोध्याजीको सिधावा चाहते हैं हमकोभी बिदादीजिये इत्यादि विभाववचन रघुनाथजीके मुख ते सुनतही करुणारस आयगया शोक स्थायीते सुनयनादि सब रानिन को मुख सूखिगया मुखपंकजते बचन न कढ्यो अर्थात् यथा निशाकाल कमल बंदह्वैजात तामेंपरि भ्रमर नहीं कढ़िसकत तथा जब बिदाहेतु रघु-नाथजीगये तब बियोग निशापाय रानिनको मुख कमल बंदह्वैगया बचन भ्रमर न कढ़े ३ । १६७ ॥

मू०। रानीरघुबरपाँयधरि कहतवचनभरिनयन । तुम्हैंकहतमु
नियोगिजन घटघटतुम्हरोअयन १ घटघटतुम्हरोअयन
सकलगतिजाननवारे। दीजियप्रभुवरयुगल प्यासयहहद
यहमारे २ हृदयहमारेतुमबसौकहौंदूसरोविनयकरि। सुता
किंकरीराखिये रानीरघुबरपायँधरि ३ । १६८ ॥

टी०। रानी रघुबर पांयधरि नयनभरि बचनकहत श्रीरघुनाथजीके पायँपकरि भाव ईश्वरजानिपायँगहे पुनः वात्सल्यरसतें शिशुमानिवियो-गतेकरुणाभईताते नेत्रनमेंआंसूभरे गद्गदबचनकहतहेरघुनंदन तुम्हैंमुनि योगीजनलोमशयाज्ञवल्क्यादि परब्रह्मकरिकहतेहैं तातेघटघटतुम्हरोअयन

घरहै भावसब घटव्यापकहौ १ जो घटघटमें तुम्हारोबास है तौसकलगति जाननवारेहौ सबके बाहर भीतर की गति जानतेहौ हे प्रभु हमारे भी हृदयमें कछु प्यासहै ताते बरयुगल दोबरदानदीजिये २ क्याबरदानदीजि-येएकतौ हमारे हृदयमें तुमसदाबसहु पुनः बिनय करि दूसरो भी कहती हौं सुता किंकरी राखिये हमारी पुत्रिनको दासीकरि राखिये भाव कृपा दृष्टि पालन कीजिये ऐसाकहि रानी रघुनाथजी के पांयनपरी ३।१६८॥

मू०। करिप्रणामरघुपतिचले रामसहितसबभाय । सुताचढ़ाईं पालकी सुंदरसीखसिखाय १ सुंदरसीखसिखाय भूपपहुँ चावनआये । दुंदुभिदीनबजाय मुनिनदेवनगुणगाये २ गुणगायेपायेसबनि सगुनसुहावनअतिभले । समधीभेंटि प्रणामकरि करिप्रणामरघुपतिचले ३ । १६९॥

टी०। सबभाय सहित रामरघुपति भरतलषण शत्रुहनसहित रघुबंश शिरोमणि श्रीरामचन्द्र भावउत्तमकुल में भी परमोत्तम धर्मनीतिमय अमलयश प्रकाश करनहारे श्रीरघुनन्दन सासुनको प्रणामकरि बिदा है बरातकोचले ताही समय सुनयनादि रानिन सुन्दर सीखसिखाय सुता पालकी चढ़ाईं अर्थात् उत्तम कुलकी रीति पातिव्रत धर्म इत्यादि उत्तम सिखावनदै पुत्री जानकी आदिकन को पालकीनपर चढ़ाय बिदा कीन्हे १ तैसेही सुन्दर सिखावन देतसंते भूपजनकजी पहुंचावनहेतु पालकिन के साथही चले आये जासमयबरातचली तबदुंदुभी नगारादिबाजाबजाय दीन पुनः कश्यपादि मुनिन ब्रह्मादि देवतन प्रभुके गुणगावनेलगे २ देवादि गुणगाये सोई परममंगलकारीहै पुनः पयानसमय अतिभले सुहा-वन सगुनसबनिपाये अर्थात् लोवा नकुल चाख मृग भुंडादि अत्यंत भले हैं तथा पुस्तक सहित विप्रवेदाभ्यासी सघट सबाल सौभागिनी भूषित स्त्री इत्यादि सुहावन सगुन भये समधी दशरथजी को प्रणाम करि उरमें लगाय भेंटि बिदाकरि जनकजी खड़ेभये तब भाइन सहित जनक जी को प्रणाम करि भेंटि आशिष आयसुपाय रघुनाथजी बिदा है चले ३ । १६९॥

मू०। अवधपांचयेंदिनगये बसिबसिसकलसुवास । पुरप्रमोद आवतसुने रहसविवशरनिवास १ रहसविवशरनिवास प

हिरिश्रृंगारनरानी । आरतिमंगलसाजि गीतगावहिंमृदु बानी २ बानीमंगलसजिसबैकलशचौकचामरनये । अवध नाथसुखकीअवधि अवधपांचयेंदिनगये ३ । १७० ॥

टी० । सकल सुबास बसि बसि पँचयेंदिन अवधको गये मार्ग में सुन्दरसुपास ठौरनमें सुखपूर्वक बासकरत संते चले ते पँचयेंदिन दशरथ जी अयोध्याजीकोगये निकट पहुंचे पुरजन सुने कि चारिहु पुत्रनसहित पतोहन आनन्द पूर्वक महाराजआवते हैं इति आवतसुने ताते पुरप्रमोद अवधपुरमें परमआनन्दभयो अरु रनिवास कौशल्यादि रहसबिबश रहस एकांतिक परमगुप्तआनंद ताकेविशेष्यबशहैं १ रहसबिवश अर्थात् पुत्रपतो हनके विलास आचरण देखनेकी जो अभिलाष है ताको आनन्द परि-पूर्णहै पुनः दिव्य बसन भूषणादि श्रृंगारनको पहिरि पुनः कौशल्यासुमि-त्रा कैकेयी आदि सबरानी कंचन थारनमें माणिकदीप दधि दूर्वा हरदी फूलफल तुलसीदल अक्षत सिंदूर रोरी सोनामणि मुक्तादि मंगलपदार्थ युतआरती साजि मृदुबाणीते मंगलगीत गावती हैं २ मृदुबाणी ते मंगल गान करतीहैं पुनः नवीन चमरमोतिनकी चौकै कंचन कलश दीपपल्लव बंदनवार ध्वजा पताकादि सबै मंगलसाजसाजे तासमय सुखकी अवधि मर्यादाभाव जिनमें परिपूर्ण सुखकी हदहै ऐसे अवधनाथदशरथ महाराज अवधपुरके पास पँचयेंदिनगये पहुंचे ३ । १७० ॥

मू० । परिछनकरिभीतरगईं पुत्रबधूसुतसाथ । मंगलमोदसमाज युत आयेकोशलनाथ १ आयेकोशलनाथ पुरीहर्षितनर नारी । पुत्रबधूसुतदेखि मगनतनमनमहतारी २ महतारी वारहिंसुभग भूषणपटमाणिगणमईं । सुभगासिंहासनचारि धरि परिछनकरिभीतरगईं ३ । १७१ ॥

टी० । सुत पुत्रनकेसाथ पुत्रबधुनको परिछनकरि कौशल्यादि माता मंदिरके भीतरगईं इसभांति मंगलप्रसिद्ध उत्सवसहित तथा मोदमान-सी आनंदसहित समाजयुत अर्थात् सब समाजसहित मंगल मोदपूर्बक कोशलनाथ दशरथजी आये १ कोशलनाथ आनंदपूर्बकआये ताते पुरीके नर नारी हर्षित परम आनंदभये अरु पुत्रबधू सुतदेखि महतारी तनमन मगन अर्थात् यथा उत्तम गुणनयुत सुंदर पुत्र तिनकी यथायोग्य परमो-

त्नमं अत्यंत सुंदरी पतोहैंदेखि कौशल्यादि माता तन मनते प्रेमानंद में बूड़ीहैं २ महतारी प्रेमानंदवश मणिमय सुभग भूषण तथा पट जरबफ्तादि वारहिं निबछावरि करतीहैं इसीभांति परिछनकरि भीतरकोलवायलैगईं तहां सुभग मंगलीक चारि सिंहासनधरि तापर पतोहन सहित पुत्रनको बैठाये ३ । १७१ ॥

मू० । मुनिनायकजोजोकहेउ सोसोकरिव्यवहार । दानदीनविप्र नमुदित भरिभरिकंचनथार १ भरिभरिकंचनथारभामिनी मंगलगावैं । रानीभूषणदेहिंसकलआशिषासुनावैं २ आशिषदेहिंसनेहभरिशंभुउमापरसनरहेउ । रामभायदशरथ सुखद रहैंसदामुनिजोकहेउ ३ । १७२ ॥

टी० । गठिबँधन कुलदेवादि पूजन जुवांखेलावनादि जो जो उपाय मुनिनायक बशिष्ठजीकहे सो सब व्यवहार कुलरीति लोकरीतिसबकार्य करि पुनः कंचन सोनेके थारनमें मणि मुक्तादि भरि भरि मुदित आनंद सहित विप्रनको दानदीन्हे १ कंचनथार मणि मुक्ताभरि ब्राह्मणनको दीन्हे तथा जे भामिनी स्त्रीगण मंगलगावैं तिनको रानी सोनेके मणिजटित भूषण देतीहैं तेस्त्री विप्रादि सकल आशिषा आशीर्बाद सुनावतेहैं २ सनेह भरि रामसनेह उरमें परिपूर्णभरे आशीर्वाद देतेहैं कि शम्भु उमा परसन रहेउ हे शिव पार्वती दशरथ महाराजके परिवार पर प्रसन्न रहेउ सदाकल्याण किहेउकौनभांति यथापूर्व बशिष्ठादिमुनि कहेउहै तथाभाइन सहित रघुनंदन रानी पतोहन सहित दशरथ महाराज सदासुखद औरहू को सुखदेनहारे बनेरहैं ३ । १७२ ॥

मू० । रामबिवाहबखानईमोदसमुद्रउछाह । नारदशारदशेषशुक गणपतिकोअवगाह १ गणपतिकोअवगाहव्यासविधिक हिकहिहारे । मतिअनुरूपबखानिभजनकोभावविचारे २ मतिअनुरूपबखानिकैंगिरासफलनिजुमानई । तुलसिदास केकौनमति रामबिवाहबखानई ३ । १७३ ॥

इति बालकाण्डः समाप्तः ॥

टी० । मोद मानसी आनन्द तथा प्रसिद्ध उत्साह इत्यादि समुद्रसम अपार है सो रघुनाथजी के बिवाह को मोद उत्सवको बखान करि सक्ता है काहेते नारदादि मुनि शारदादि विद्वान् शेषादि कवि शुकदेवादि परम हंसगणपतिआदि बुद्धिवंत समर्थ देव इत्यादिकन को कहिबे में अवगाह है थाह नहीं पायसक्तेहैं १ यथा गणपति आदिको अवगाहहै तथा व्यासादिक बिबिध ब्रह्मादि आचार्य सृष्टिकर्त्ता तेऊ रामचरित कहिकहि हारि गये परन्तु भजनको भाव बिचारे अर्थात् श्रवण कीर्त्तनादि भक्तिके अंगहैं ऐसा बिचारि मति अनुरूप बखानि जो कछु बुद्धिमें आया सो बखान कीन्हे २ आपनी मतिकीअनुरूप चरित बखानकरिकै निज गिरा आपनी बाणीको सफल करि मानते हैं कछु अंत पावनेहेतु नहीं तौ जो ब्रह्मादिकनको गति नहींहै तौ तुलसीदासके कौन मति कहा उत्तम बुद्धिहै जो रघुनाथजी को बिवाह बखानकरै ताते आपनी बाणीसफल होनेहेत मति अनुरूप महूंकह्यो ३ । १७३ ॥ कुं० ॥ ताकेकीन्हेकार्यवाबारनिाउकहार । हारसुगुहिपहिरावतीकीन्हेसकलसिंगार ॥ कीन्हेसकलसिंगारकीनयुवती जेपरिछन । क्षणप्रतिसुनेजुबैनधन्यतेधन्यसब्रेजन ॥ बैजनाथतेधन्य प्रेम भरिगायकताके । केनधन्यसुनिचरितक्याहरावसीताके ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागत बैजनाथ विरचितेकुण्डलिकाप्रदीपिकायांबालकाण्डःसमाप्तः ॥

अथ अयोध्याकाण्ड प्रारंभः ॥

कुंडलिया ॥

मू० । अवधअनंदप्रबंधसुख दिनदिनअतिअधिकाय । जबते रामबिवाहकरि आयेकोशलराय १ आयेकोशलरायभुवन सबआनँदभूरे । ऋधिसिधिसंपतिनदी अवधसागरभरि पूरे २ सागरसप्तसमानलौ गयोशोकअरुदोषदुख । अम रपुरीअहिपुरधरणि अवधिअनंदप्रबंधसुख ३ । १ ॥

टी० । दो० गुरुपदपद्मप्रणामकरि सियरघुबरउरधारि । तिलकअयोध्याकांडकृत निजमतिकी अनुहारि ॥ आनन्दको प्रबंध आदि कारणअयोध्याजी में उत्पन्नहोतरहत ताते दिनदिनप्रति अत्यंतसुख अधिकातजात भावसदा उत्सव बनारहत कबते जबते भाइन सहित रघुनाथ जी को बिवाहकरि कोशलराय दशरथ महाराज अयोध्याजीको आये १ जबते कोशलराय पुत्रनको बिवाहि पतोहन को लैकै आये तबते सब भुवन आनन्दरूप जल करिकै भूरे ह्वैगये भाव सर्वत्रकी आनन्द बटुरिइहैं को चलीआई कौनभाँति ऋद्धि जो घृत दुग्ध शर्करान्नादि समूह तथा सिद्धि अणिमादिक तथा संपति यथाचांदी सोना मणि मुक्तादिसमूह धनइत्यादि ऋद्धि सिद्धि संपतिआदि नदीसमसर्वत्रतेचलीआवतीहैं तिनकरिकै अवध सागरभरिपूरे अयोध्यारूप समुद्र ऋद्धि सिद्धि संपति आदिकनते भरिकै परिपूर्ण ह्वैगया तहां समुद्र अधिक बढ़त तब बहुतदूरितक प्रवाहबोरि डारत २ इहां भूतलमें अयोध्यारूप समुद्र उमगो तब आनन्दरूप जल भूतल भरेमें फैलिगयो ताते सप्तसागर प्रमाणलौ शोक अरुदोष दुखगये अर्थात् सातौसमुद्र यथा लवण सिंधुते क्षीरसागर पर्यंत यावत् सातोद्वीप की भूमिहै तहांतक यावत् बासीजन हैं तिनकेशोक यथाहानि वियोग भयादि तथादोष पापकर्मनकी जो संचयरही तथा दुखयथारुज दरिद्रता वृथा दंड इत्यादि नाश ह्वैगये सब आनन्द शुद्ध राम सनेही परमपदके अधि-

कारीभये तथा अमरपुरी देवनकीपुरी अहिनागनके पुरपातालादि तथा धरणि भूतल सब इत्यादि अयोध्याके आनंद प्रबंधते सबैलोकनमें सबको सुखहै ३ । १ ॥

मू० । दशरथभागसराहईसुरमुनिवरनरनारि । धर्मधुरीणप्रताप
निधि जिनपायेसुतचारि १ जिनपायेसुतचारिजासु यश
वरणिनजाई । श्रीरघुपतिमुखदेखिहर्षअतिलोगलुगाई २
लोगलुगाईगुणगनत शारदसोसुखचाहई । पुरीभागअनु
रागसुर दशरथभागसराहई ३ । २ ॥

टी०।सुरदेवता ब्रह्मादि मुनि नारदादि नरनारी लोकजन इत्यादि सब दशरथ महाराजकीभाग्यको सराहई सबप्रशंसाकरते हैं क्याप्रशंसाकरते हैं किजिनचारिसुतपाये तेकैसे हैं धर्मधुरीण तथा प्रतापनिधि अर्थात् चारिहुपुत्र एकतेएक अधिक धर्मकीधुरी धारणकरबे में सबल श्रद्धावंतभाव सत्य शौच तप दानादि धर्मधुरीण रघुनंदनस्वामि विभवरक्षामें धर्मधुरीण भरतस्वामिसेवकाई धर्मधुरीण लक्ष्मण रामभक्तनकीसेवकाई धर्मधुरीण शत्रुहन तथा जिनको सबै डरत ऐसेप्रतापभरेस्थान १ ऐसेचारिपुत्रपाये जिनको ऐसा बड़ायश जो वरणिनजाई कोऊकहि पार नहीं पावत पुनः माधुर्यरूपमें शोभाऐसीहै कि रघुपतिको मुखदेखिलोग लुगाई सबकेमन में अत्यन्त हर्ष होत देखे तृप्तनहीं २ प्रभुकी माधुरी देखि तृप्तनहींहोत पुनःशील सुलभ उदारतादि गुणनको गनत सदा सराहना करतेहैं जो माधुरी अवलोकन सुख पुरजनकोहै सोई सुखकीचाह शारदा करती हैं भाव प्रभुके दर्शनहेतु आवती हैं तथा सुर ब्रह्मादिक अनुरागसहित अवधपुरीकी भाग्य तथा दशरथजी की भाग्यकी सराहना प्रशंसा करतेहैं कि महाराजधन्य हैं ३ । २ ॥

मू० । नृपसोंविनयसुनायकैकेकयसुवनसप्रीति । भरतहेतुविन
तीकरी कहिमृदुवचनविनीत १ कहिमृदुवचनविनीतदि
वसदशरहैंगुसांई । मुनिहुकहेनृपपाहिभूपपठयेद्दउभाई २
मुनिरुखतेआयसुदियोभरतउठेशिरनायकै । केकयसुतलै
भरतसँगनृपसोंविनयसुनायकै ३ । ३ ॥

टी० । कैकेयीके पिता राजाकेकय तिनके सुवनपुत्र युधाजित्नामेते

सप्रीति नृपसों विनय सुनाय अर्थात् दशरथ महाराजते युधाजित् हाथ जोरि बोले कि हे राजन् हमारे समीप सबलदुष्टबसते हैंते बडादुःखदिहे हैं इसहेतु आपुसों कछु अर्ज करेंगे इत्यादि पूर्व नृपको विनय सुनाय कै प्रसन्न मनसन्मुखकरि तब मृदुबचन बिनीत कोमल बचन नम्रतासहित कहि भरतको लैजानेहेतु बिनतीकरी भाव जो भरत शत्रुहनको हमारेसाथ पठावोते येदुष्टनको मारैं तब हम स्वतंत्रहोवैं १ कैसे नम्रतापूर्बक कोमल बचनकहे कि हेगोसाईं भाव आपु चक्रवर्ती लोकभरेके रक्षाकरनहारेहौ ताते हमारीभी रक्षाकरौ इसहेतु भरतको पठावो दशदिवस उहां रहैं तासमय मुनिहुकहेउ नृपपाहि बशिष्ठ वा जे देशांतरी मुनिजन आये रहैं तिनहूंकहे कि हेनृप दशरथजी यहभये हमलोगनकीभी यामें रक्षा है ताते यहकार्य अवश्य कीजिये अर्थात् वेदुष्ट मुनिनके शत्रु हैं तिनकोमारि हमारीभी रक्षाकीजिये २ मुनिरुखते अर्थात् मुनिनकी इच्छाहै कि भरत उहांजायँ इत्यादि बिचारि महाराज आयसुदियो भरतको आज्ञादिये कि जाउ सोसुनि भरतजी शिरनाय प्रणामकरि उठे चलैकी साजसाजे इत्यादि नृपसों बिनयसुनायकै भरतकोसंगलै केकयपुत्रयुधाजित्चले ३।३॥

मू०। बिदारामकेचरणधरिभरतशत्रुहनभाय।मातुगुरुभ्रातानृप
हिचलेसबहिशिरनाय १ चलेसबहिशिरनायसुभटसेनासँ
गलीन्हे। श्रीरघुपतिपदकमलहृदयमनमधुकरकीन्हे २ म
नमधुकरपदकमलरतिसुमिरतनामसनेहभरि। धन्यभरत
भूतलभयेबिदारामकेचरणधरि ३।४॥

टी०। भूपकी आज्ञापायकै भरत शत्रुहन दोऊभाय रघुनाथजीके चरण हृदयमें धरि बिदाभये कौनभांति मातु गुरु भ्राता नृपहि इत्यादि सबहि शिरनाय अर्थात् प्रथम कौशल्यादि मातनको प्रणामकरि पुनः गुरु बशिष्ठकोभ्राता श्रीरघुनाथजीको नृपदशरथजीको इत्यादि सबकोप्रणाम करि चले १ सबहि शिरनायचले अरु सुभट सुंदर बीरबली योधा चतुरंगिनी सेना संगमेंलीन्हे पुनः श्रीरघुनाथजी के पद कमल हृदयमें धरे तिनकेबिषे आपनामन मधुकर भ्रमरकीन्हे अनुरागरस पान करते हैं २ श्रीरघुनाथजीके पदकमलनकी रति प्रीतिरस में आपनामन भ्रमरकीन्हे पुनः सनेहभरि परिपूर्ण सनेह सहित रामनामको सुमिरणकरत जातेहैं

ताते भूतलबिषे भरतजी धन्यहैं जोरघुनाथजीके चरण हृदयमेंधरि बिदा भये ननेउरेको चले २ । ४ ॥

मू० । नारदआयेअवधपुररामचरितहितजाहि । प्रेमनेमजाके अवधिरामरूपउरमाहि १ रामरूपउरमाहिंरामदेखतउठि धाये । पूजतबिबिधप्रकारजोरिकरप्रभुशिरनाये २ प्रभुशिरनायेबूझियोमुनिप्रकटीविधिहृदयजुर । कहनबिरंचिसंदेशसबनारदआयेअवधपुर ३ । ५ ॥

टी० । जाहि रामचरित हितते नारद अवधपुरआये अर्थात् आपनेजीव को कल्याणमाने सदा रामचरित्रै गानिकरते हैं ऐसे नारदमुनि अयोध्या जीकोआये ते अंतरवृत्तिते कैसेहैं जाके प्रेम नेमकी अवधि मर्यादाहै प्रेमाभक्तिको अखंडनेम लिहेहैं अर्थात् आपनेकृत सूत्रनमें आपना यहीसिद्धांतलिखे यथा ॥ अथातोभक्तिंव्याख्यास्यामः ॥ साकस्मैपरमप्रेमरूपाअमृतस्वरूपाच तल्लक्षणानिवाच्यनोनानामतभेदात् पूजादिष्वनुरागइति पाराशर्य्यः कथादिष्वितिगर्गः आत्मरत्यविरोधेनेतिशारिडल्यः नारदस्तु तदर्पिताखिलाचारतातद्विस्मरणे परमव्याकुलतेति ॥ अर्थात् सबआचार अर्पणकरि सदा ईश्वरके प्रेममें बूड़ेरहना अरु पूर्व संयोगते वियोग अथवा लीलादिको क्षणमात्र बिसरिजानेमें व्याकुलहोनेको हम भक्ति कहते हैं इत्यादि जा नारदके प्रेम नेमकी अवधिहै ताते उर अंतरमें सदा राम रूप धारणकिहेहैं १ प्रेमावेशते श्रीरामरूप उरमेंधरे ऐसे परमभक्त नारद को देखतही श्रीरघुनाथजी उठे करजोरि शिरनाये बिबिध प्रकार पूजत अर्थात् हाथजोरि प्रणामकीन्हे पुनः अर्घ पाद्यादि अनेकभांति ते पूजन कीन्हे २ प्रभुशिरनाये बूझियो श्रीरघुनाथजी शिशनवाय कुशल तथा आगमनको हेतु पूछे भाव किसहेतु आपु इहांको आयेहौ सो हाल कहिये इति प्रभुके बचनसुनि नारद बिधिहृदय जुरप्रकटी अर्थात् ब्रह्माजीकेहृदय में जो तापहै सो प्रसिद्ध कहिसुनाये भाव रावणकी अनीतिभयते त्रयलोकवासी दुःखितहैं ताते खलको मारि शीघ्रही सबको दुःखहरौ इत्यादि विधि ब्रह्माको संदेश कहनेहित नारदमुनि अयोध्याजीको श्रीरघुनाथजी के समीपआये ३ । ५ ॥

मू० । रामबचनसुनिमुनिगयेपायबचनबिश्वाश । रामप्रकटमा

याकरीसबकेहृदयप्रकाश १ सबकेहृदयप्रकाशगुरुहिन्र
पजायसुनायो । रामतिलककरिदेहुनाथसबकेमनभायो २
सबकेमनभायोसुखदसुनिवशिष्ठआनँदभये । तिलकसाज
साजीमुदितरामभवनसुनिमुनिगये ३ । ६ ॥

टी० । श्री रघुनाथजी नारदते कहे कि जो बात तुमकहतेहौ सो हम शीघ्रहीकरैंगे इत्यादि रघुनाथजी के वचन सुनि विचारे कि सत्यसंध जो कहते सोईकरते हैं ताते यह कार्य शीघ्रही करैंगे इत्यादि वचन बिश्वास पाय बिश्वास करिबेयोग्य प्रभुकेवचन सुनि मुनि नारदगये ताही समय रघुनाथजी आपनीमाया प्रकट करी ताको प्रकाश सब समाज भरेके हृदय में भया भाव जो कुछ कीनचाहते हैं सोई सबके मनमें बैठिगया १ रामरजाय सबके हृदय में प्रकाशभई ताते नृप दशरथ महाराज जाय आपनामनोरथ गुरुहिवशिष्ठजीको सुनाये हेनाथ सबकेमनभायो रामतिलक करिदेहु अर्थात् पुरजन परिवार प्रजा सचिवादि सबके यही अभिलाषहै कि दशरथ आपने जीवतहीं युवराजपद रघुनंदनको देदेवैं तो जो सबके मनभाई यहीबात है तौ रघुनंदन को राजतिलक करिदीजिये २ सबके मनको भायो पुनः सुखद भाव इसीकारणते लोकभरि सुखापवैगो ऐसे वचन सुनि वशिष्ठ जी आनंदभये दोऊ मिलि कामकाजिनको आज्ञादिये ते सुमंतादि तेऊ मुदित आनंद मनते तिलकहेतु सबसाज साजनेलगे अरु मुनि रामभवनगये महाराजकी आज्ञापाय संयम क्रिया बतावनेहेतु मुनिवशिष्ठजी रघुनाथजीके मंदिरकोगये ३ । ६ ॥

मू० । नृपबातैंप्रकटींसबैमुनिरघुबरसमुझाय । नेमक्रियाव्रतधर्म
नृपतिलकभेदविधिगाय १ तिलकभेदविधिगायकहेउभूप
तिहिबुलाई । मंगलवस्तुमँगायतिलककीघरीसुहाई २घरी
सुहाईकालिहैरामराज्यबैठहिंजबै । बाजैंविपुलबधावपुरनृप
बातैंप्रकटींसबै ३ । ७ ॥

टी० । मंदिर में जाय मुनिवशिष्ठजी नृप दशरथ जीकी बातैं जो जो कहे सो सबै प्रकटीं प्रसिद्धकरिकहे भाव महाराजकाह्लि तुमको राज्याभिषेक देइँगे इतिकहिपुनः नृपतिलकके विधिविधान के जो भेद हैं यथा

नेमक्रिया नेमसहितकर्म तथा धर्मव्रत इत्यादि गाय विधिवत्कहि रघुनाथ जीको समुझाये अर्थात् स्नान करि जानकीसहित कौशेयवस्त्र धारण करि भूमिमें कुशासने पर रहौ काहूको स्पर्श संभाषणनकरौ आठयाम शौचसहितरहौ इतिनेम सहितक्रिया पुनः धर्मसहित व्रत यथा सत्यआचार ब्रह्मचर्य सहित निरंबु व्रत करहु इत्यादि जो राज्याभिषेक विधानके भेद सब समुझायकै चलेआये १ पुनः भूपतिहिबुलाय तिलक विधिके भेदगाय दशरथ महाराज को बुलाय राज्याभिषेक विधान में यावत्भेद रहै सोसबकार्य वशिष्ठजी बतायदिये पुनः जल फल मूल मणि औषधादि यावत् मंगलकी वस्तुहैं तिनकोमँगाय पुनः तिलकहोनेकी घरीशोधे सुहाई सबके कल्याण करबेयोग्य २ पुनः महाराजते कहे वशिष्ठजी सुहाई घरी शुभ मुहूर्त्त तौ काल्हिहै परंतु रघुनाथजी राजपर जब बैठें तबै शुभजानौ यह व्यंग्य है कि शुभघरी तौहै परंतु रघुनाथजी बैठैंगेनहीं पुनः नृपबातें सबैप्रकटीं सबैजनसुने ताते अवधपुरमें विपुल बहुत घरघर बधावा बाजे लगे ३ । ७ ॥

मू० । रामहेतुमंगलरचौआनौतीरथनीर । पानफूलफलमूलतृण
हयगयमणिधनचीर १ हयगयमणिधनचीरपुरीसुन्दररिचि
राखौ । बन्दनवारपताककलशचौकेंअभिलाखौ २ अभिला
षौकुमकुमअगरबीथीकेरनिसोंसचौ । मणिमयदीपप्रकाशि
ये रामहेतुमंगलरचौ ३ । ८ ॥

टी० । रामहेतु मंगल रचौ रघुनाथजीके राज्याभिषेक उत्सवहेतु मंगलके सबअंगरचौ शोभामय साजिकै बनावो पुनःपुष्कर नैमिष कुरुक्षेत्र गंगासागर प्रयागादि सब तीर्थनकोनीरआनहु पुनः पानादि दल कमलादि फूल नारियरादिफल कुशादि तृण इत्यादि सब औषधी लावो पुनः हयगय घोड़े हाथी सजौ पुनः मुक्ता विद्रुम पन्नापुखराज हीरा नीलक फिरोजा माणिक मर्कतइत्यादि मणी सोना चाँदी आदिकधन दुशाला बनात जरबफ्त कमखाप अतलसादि चीर १ यथा घोड़े हाथी मणी धन वसन सब सजि एकत्र करौ तथा पुरी सुंदरि रचिराखौ अयोध्या पुरी अत्यंत सुंदरि बनिजाने की अभिलाषा मनमेंराखे सबसाज साजो क्या साजौ मंदिर द्वार आँगन में बंदनवार मंदिरनपर ध्वजापताका आँगनमें धान्य दीब पल्लवसहित कनक कलश मणिमोतिनकी चौकें इत्यादि विचित्र बनिवे

की अभिलाषराखे रचनाकरौ १ पुनः बीथी जो पुरकीगली तिनको बहा-
रि तहां कुमकुम अगर कपूर चंदनादि सुगंधित जलते सींचि पुनः केर-
निसोंसचौ कदलीके वृक्ष सर्वत्र लगावो इत्यादिकी अभिलाष राखेरचौ
पुनः मणिनमय दीपसर्बत्र प्रकाशियेस्थापितकीजिये इत्यादि रामराज्या-
भिषेकहित मंगल रचनाकरौ ३ । ८ ॥

मू० । देखिदेवशोचतभयेअवधरामकीराज । दुष्टकष्टकोनाशिहै
निश्चयभयोअकाज १ निश्चयभयोअकाजसुमिरिशारदा
बुलाई । रामविपिनकहँजायँमातुसोकरहुउपाई २ रामविपि
नकहँजायँजबकरउपायबुधिबलभये ।चरणगहैंपालनकरौ
देखिदेवशोचतभये ३ । ९ ॥

टी० । अवधरामकरिराजदेखि देवशोचतभये अयोध्याजीमेंश्रीरघुनाथजी
को राज्याभिषेक होतेदेखि इंद्रादिदेवता शोचत दुःख पूर्बक विचारकरते
भये क्याशोचतेभये कि जो रघुनाथजी राजकाज में परेतौ को दुष्ट कष्ट-
नाशिहै दुष्ट जो रावण तथा हमलोगनको जो कष्ट है ताहिकौन नाशकरै
गो भाव जो रघुनाथ जी बनको जायँगे तबतौ रावणको मारि हमाराकष्ट
हरैंगे अरु जो राज्याभिषेकह्वैगया तौ निश्चयकरिकै हमाराअकाजभया १
निश्चय अकाज भयो जानि देवनसुमिरनकरि शारदाको बुलाई तासों
प्रार्थनाकरतेहैं हेमातु सोउपाय करहु जामें रामबिपिन रघुनाथजी बनको
जाहिं २ बुधि बलयेबुद्धिकरिबल कारिकैमायाकरिकै ऐसाप्रभावप्रकाशकरौ
जामेंराज्यरसभंगहोय जबराज्यत्यागि श्रीरघुनाथजीबनकोजाहिं तबहमा-
राकार्य सिद्धिहोय इत्यादि प्रार्थना करि चरणगहैं शारदा के पाँयपकरत
पुनः कहत हे मातु पालनकरौ हमारे दुःखमिटनेकी अवश्य उपाय करहु
इत्यादि रामराज्याभिषेक होतेदेखि देवता शोचकरतेभये ३ । ९ ॥

मू० । धिक्धिक्देवनकहिचलीआगेहेतुविचारि । अवधगईरानी
जहाँदेखीसुमतिसँभारि १ देखीसुमतिसँभारितिहांपरवेशन
पायो । कंठमंथराबैठितासुचितहितभरमायो २ हितभरमा
योतिहिसबैप्रियाकेकयीकीअली।पुरदुखदायिनिसीभईधि
क्धिक्देवनकहिचली ३ । १० ॥

टी० । देवनधिक्धिक्कहि पुनःआगेकोहेतुविचारिचली अर्थात् रघुनंदन के राज्याभिषेक देखनेकीअभिलाषमें अवधनरनारि आनंदमेंमगनहैं ताको भंगकरि आपना स्वार्थ साधाचाहते हैं ऐसेस्वार्थी निर्दयीहैं ताते देवनको धिक्कार है ऐसा कहि पुनः विचार कीन्ही कि अबजो मेरीप्रेरणाते किसी की मति फिरिजायगी त्यहिहेतुते रघुनाथजी बनको जायँगे तामें सबसंसारकोहित है पुनः रामयश में मेरानामरहैगो त्यहि यशगान में उत्तम कविजन सुमति वृद्धि सिद्धि के अर्थ मेरी चाहकरहिंगे इत्यादि आगेको हेतु विचारि अयोध्याजीको चली अवधमें जहांसबरानीरहैं तहांसरस्वती गई तहां सुमतिसँभारि बुधिबल माया को प्रभाव फैलाय देखी अर्थात् रानिनकी बुद्धि भ्रमितकरिबेहेतु बहुतकुछमायाको प्रभाव फैलाये परन्तु रानिन के उरमें श्रीरामरूप बसा तहां देवमाया तुच्छ कैसे प्रवेशकरिसकै कुछभीबल नचला १ जबसुमति सँभारिदेखी तहांरानिन में मायाप्रवेश नहींकरिपायो तब मंथराके कंठमेंबैठि तासुचित हित भरमायो ताकेचित्त में जोराजकाज को हितरहा ताको भरमायदिया उलटा चिंतवनकरिदिया ताते अनहितकी उपाय बांधनेलगी २ यद्यपि मंथरा कैकेयीकी प्रिय अली प्यारीदासी है सबभांतिहितै करतरही तिहिसबै हितको भरमाय अनहित कर्त्ता बनायदियो ताते पुरदुखदायिनिसीभई अयोध्यापुरीभरेको महादुःखदायक भई इत्यादि कारणकरि देवनको धिक्कारदैचली ३ । १० ॥

मू० । नगरदेखिबातैंकही हिततोरनकीघात । मोहिंशोचइकउर भयो जोफुरमानहुबात १ जोफुरमानहुबात हितूहेतीदुख जानै । काजनशातविचारि विनापूछेहुबखानै २ बिनपूछे प्रभुकेवचन इनबातैंपातकनही । उतरदेतनहिंदोषहैनगर देखिबातैंकही ३ । ११ ॥

टी० । नगरदेखि हित तोरनघातकीबातैंकहीमंथराने देखाकिअयोध्याजीमें परम उत्सवयोग्य मंगल रचना ह्वैरही है ताकोहेतु पूछिसि तब लोगन बतावा कि प्रभात रघुनन्दनको राज्याभिषेकहै सो सुनि हृदयमें दाह भया अर्थात् कौनभाँति विघ्नहोवै इति विचारि कैकेयीकेपास जाय बोली क्याकही अर्थात् रानिनमें जो परस्पर हितकारता है ताके तोरिबेकी भाव विरोध कराय देनेकीघात विचारि बातैं कही क्याकही जोबात फुरमानहू

तौ मोहिं उरमें इकशोचभयो अर्थात् हेमहारानीजी जोमेरीबातको साँची मानौतौ कहौं मेरे उरअंतरमें एकबात सुनि बड़ा शोचभया १ जो मेरी बातको फुरमानौ तौ कहौं काहेते जोहितू हेतीको दुखजानै काज नशात विचारि अर्थात् हितकरनेवाला जो आपने हेती जाको हितकीन चाहत ताकोदुख होनेको कारण जानिपावै कि मेरे हेतीकोकार्य नाशहैजाने चाहताहै ऐसाबिचारि बिनापूछेहू बखानै अर्थात् जो हेती पूछबौ न करै तबहूं हितूको उचितहै कि वासों सबहाल कहिदेवै २ प्रभुके बिनपूछे वचन इन बातें पातकनहीं अर्थात् बिना स्वामीके पूछे जो सेवक कोईबात कहैतौ पातक होता है परन्तु जो बातमें स्वामीको दुख होनहारहै सो बात जो स्वामी पूछबौ न करै तबहूं सेवकको कहिदेनेमें पाप नहींहै तथा उत्तरदेत दोषनहीं है अर्थात् स्वामी जोकहै सोई मानिलेना चाहिये अरु जो सेवक प्रौढ़ताकरि जवाबदेता सो दोषहै परंतु स्वामीको कार्य बिगरतदेखै ताके बनाइबे हेतु जो उत्तरदेवैतौ दोषनहीं होताहै ताते मैं कहौंगी अरु उत्तरभी देउँगी इत्यादि नगर रचनादेखि बातें कही ३ । ११ ॥

मू० । इनठौरनिपूछेबिना कहैस्वामिसोंदास । सर्पअत्रअरिबिष
अनल अनिलकंटदुर्वास १ अनिलकंटदुर्वास अशनपथ
अपथजनावै । लाभहानिदुखदानिकहतपातकनहिंआवै २
लाभहानिनहिंबोलई प्रभुआयसुरुखनिशिदिना । स्वामि
सुहागिलिदेहिसिख इनठौरनपूछेबिना ३ । १२ ॥

टी० । मंथराबोली हे महारानी जी बिना आपुके पूँछेभी मैं कहौंगी काहेते इनठौरन बिना पूछे दासको उचित है स्वामीसों बातकहै कौन ठौरन सर्प अत्र अरि बिष अनल अर्थात् स्वामी देखता नहीं सर्प निकट आयगया ताको सेवक कहिदेवै तथा अस्त्रबाणादि किसीने मारा स्वामी नहीं देखताहै ताको दास कहिदेवै तथा स्वामी नहीं जानता है अरु अरि शत्रु निकट पहुँचिगया तथा भोजन जलादिमें किसीने बिष मिलायादिया तथा अनल अग्नि निकटलखी इत्यादि जो जानिपावै तौ सेवक कहिदेवै तथा अनिल पवन कंट काँटा अर्थात् मार्गजातमें घोरआँधी उठी अथवा विषम काँटाहै जो स्वामी नहीं देखातौ सेवक कहिदेवै तथा दुर्वास दुखदठौर वासकरताहोइ तहाँ सेवक बताइदेवै १ यथा अनिलकंट दुर्वासादि

बतायदेवै तथा अशनजो भोजन सोऊ पथ्य सुखदायक अपथ्य दुखदायक सोऊ जनायदेवै भाव यह भोजन करिबे योग्यहै यह भोजन करिबेयोग्य नहीं है यामें रोगवृद्धहोताहै २ तथा लाभ हानि दुख दानि अर्थात् जिसबात में लाभहै अरु स्वामी नहीं करताहै ताको कहै अथवा जामें हानिहोइगी अरु स्वामी करता है ताकोभी कहिदेवै तथा कोईबात करनेते पीछे दुख होइगो ताहूको बतायदेवै इनठौरन जो स्वामी पूछबौ न करै तबहूं सेवक को उचितहै कि अभयह्वैकै स्वामीको सिखावनदेवै पुनः हेसुहागिल स्वामिनी जिसबातमें लाभ अरु हानि कुछभी नहीं है तहाँ सेवकको उचित है कि निशिदिना प्रभुआयसु रुखबोलै रातिउ दिनमें जबस्वामीकी आज्ञा होइ वा रुखदेखै तबै बोलै नातरु स्वामीके सन्मुख कछुभी न बोलै ये वचन सरस्वतीके प्रेरणातेहैं ३ । १२ ॥

मू० । मोहिंभामिनीदुखभयोसमुझिएकउत्पात । सबपुरकोनीको
लगै तुम्हैंभरतकोघात १ तुम्हैंभरतकोघात बातनृपरानि
विचारी । काल्हिरामनृपहोहिं भईशोभापुरभारी २ भारी
विपतिविचारिकैहृदयमोरदुखयुततयो । भरतबिदेशनरेश
परमोहिंभामिनीदुखभयो ३ । १३ ॥

टी० । हे भामिनी एक उत्पात समुझि मोहिं दुखभयो अर्थात् कैकेयी प्रतिमंथरा कहत हेमहारानीजी तुम्हारे हेतु एकउत्पात अलाकारणहोताहै सो भयेपर पीछे तुमको महाबिपत्ति होनहारहै सोई आगम समुझि मोको भी दुखभयो काहेते तुम्हैं अरु तुम्हारे पुत्र भरतको घात सबपुरको नीको लगैहै अर्थात् जामें तुम्हारा सुख सुहाग अरु भरतको सुख स्वतंत्रता जिस बातते नाशह्वैजायगी सोई बातहोना सबै अयोध्यावासिन को नीकलागताहै १ क्या सबको नीकलागताहै कि तुम्हैं भरतको घातकरिबेयोग्य बात नृपदशरथ तथा कौशल्यादि रानिन विचारकीन्हे क्याविचारकीन्हे किकाल्हि रामनृपहोयँ अर्थात् तुमतेतौ नहींबताये अरु न भरतको बुलाये तुम सों छलराखि प्रातकाल्हि रघुनंदनको राज्याभिषेककरिदेवैंगे तिसहेतु पुरमें भारीशोभाभई ध्वज पताक कलशदीप कदली मणिचौकादि ऐसी मंगलरचना रचीगई जातेपुरमें बडीभारी शोभा देखाती है २ इतिभारी बिपत्ति विचारिकै मोरहृदय दुख ज्वरतयो अर्थात् जो काल्हि रघुनंदनको

राजतिलक ह्वैगया तौतुमको बड़ीभारी विपत्तिहोइगी सोई विचारि मेरा उर अंतरशोच दुखरूप ज्वरते तपिरह्योहै काहेते हे भामिनी भाव यासमय कोपकरिबे योग्य हौ इस सम्बोधनते यहीअर्थ प्रकटहोताहै यथाकोपनासैव भामिनी इत्यमरः इति हे कोपशीला बिचारकरि देखिये तुम्हारे विवाहके पूर्व तौ दशरथजी समय पत्र अर्थात् करारनामा लिखिदिये कि कैकेयी के पुत्रको राजपद देईंगे सोतौ बीचही रहा अबतुमते तौ बताये नहीं अरु भरतविदेशमें परे हैं इहां रामको राज्यपद दिहेदेते हैं इसबातते नरेश दशरथ पर क्रोधभया ताते मोहिं दुखभयो भावतुमसों छल क्यों करतेहैं ३ । १३ ॥

मू० । बिपतिबीजअंकुरभयो बयोकौशलारानि । पावसनृपउरदेखिशुभ आयसुसुंदरपानि १ आयसुसुंदरपानि अवधथल सुतबलपाई । गुरुपुरजनभेवारि तुम्हैंनितकीन्हउपाई २ कीन्हउपायसहायसब भरततेजतपसोगयो । चारिदिवस गतदेखियो बिपतिबीजअंकुरभयो ३ । १४ ॥

टी० । बिपत्ति बीज जो कौशल्या रानी बोयो तामें अंकुरभयो कैकेयी प्रति मंथरा कहत हे भामिनि तुम्हारी बिपत्तिरूप बेलि बढ़ावेहेतु कौशल्यारानीने जो बीजबोया तामें अंकुर तौ निकरिआया सोई निर्मूल कियाजाय तौ तौ सुखीरहौगी नातरु सब उपचार उत्तम हैं थोरेहीकाल में बिपत्तिबेलि पल्लवित ह्वैजाइगी फिरि पीछे कुछ न बनिपरैगो तहां सुन्दर वर्षा देखि सबल खेतमें बीजबोवाजात इहां क्या है जामें आयसु पानी सुन्दर ऐसा नृप उर शुभ पावस वर्षादेखि अर्थात् दशरथ महाराजको उर सोई पावसवर्षाऋतु शुभ मंगलकारीहै तहां राम राज्यको जो मनोरथ है सोई सघन मेघहैं त्यहि अनुकूल जोआयसु अर्थात् सुमंतादि कामकाजिन को जो सबकार्य्य साजिबेकी आज्ञादिये सोई सुंदर पानीको वर्षण है १ महाराजकी आज्ञारूप पानी पाय अवध थल सुतबलपाय पास्यादिपरे जोतेखेत बलीहोताहै इहां अयोध्यापुर सुन्दर थल सुखेतहै तामें पुत्रकी राज्यहोना सोई खेतमें बलपाय पुनः गुरुवशिष्ठ तथा पुरकेजन जो सब कार्य करनेवाले हैं तेई बारिजलभये अर्थात् भूप उर पावसमेंते आज्ञा वृष्टिते साधकजन पानी इत्यादि अनुकूल पाय तुम्हैं नितकीन उपाई

हे कैकेयी जो तुम्हारि ही बिपत्ति के हेतु यहसब उपायकीन्हे २ कौशल्या ऐसी उपायकीन जामें सबै सहायक ह्वैगये तातेभरत तेजतप गयो अर्थात् जबतक सूर्य्य के तेज तपनिते भूमितप्त रहत तबतक बीजनहीं जामत तथा जबतक भरत इहांरहे तबतक उनके तेज प्रतापते पुररूप भूमि तप्त रही अब परदेश जानेते भरतको तेजतप सब गयो सोई मनभावत समय पाय तुम्हारी बिपति को बीज कौशल्या बोयो सो अब अंकुरभया चारि-दिवस गत बीतेपर देखियो कैसी बिपति होती है ३ । १४ ॥

मू० । सत्यमानिरानीकहै कहुसखिमोहिंउपाव । भरतगयेअसगु
नभये सोसबयहैप्रभाव १ सोसबयहैप्रभाव सुहृदसममैंस
बजानौं । सवतिईरषाछाँड़िपुत्रपतिआपनमानौं २ आपन
मानिनकछुकहिय नृपमलीनउघरनचहै । हितूजगतमेरी
तुही सत्यमानिरानीकहै ३ । १५ ॥

टी० । मंथरा के बचन सत्यमानि रानीकैकेयी कहती हैं हे सखीमोहिं बचने की उपाय कहु बिपतिहोना तौ मैं जानिचुकी काहेते भरत सहायक ते तौ ननेउरे को चले गये पुनः मेरी दाहिनि आंखि भुजफरकनादि बहुत असगुन भये सो सब यही को प्रभाव है जो होनहार है १ सब उत्पात होनहार के प्रभावते होते हैं नातरु मैं किसी को कछु बिगारा नहीं काहेते सब सुहृद सम सब रानिन को मैं मित्र की समान जानती रहौं कौनभांति सवतिभाव को ईर्षा सहज बैर छांडि मित्रता पूर्वक पुत्र पति आपन मानौं आपने ऐसे सब पुत्रनको मानती रही पुनः महाराज यथा हमारे पतिहैं तथा सबरानिनके हैं इत्यादि मैं भेद ईर्षा नहीं करती रही २ सब छँडाय केवल आपनै पति मानि कबहूं न कहिये अर्थात् अपना परारी फोरतोरकी बात कबहूं नहींकहा भाव जो महाराज हमारे पुत्रको राजदेना लिखिदिये रहैं त्यहि बलते हमारा पद सब रानिनते ऊँचाभयारहै तेहिबलते केवल आपना पतिमानि हमको सबश्रेष्ठता मांगना योग्यरहै ताकोहम कबहूं नाम नहीं लिया छलछांडि सहज स्वभाव महाराज की आज्ञामें रही अरु नृप उरमलीन अर्थात् हमारी दिशिते जो महाराज उरमें छल राखेरहे सो तौ उघरैचहै सो अब प्रसिद्ध भया अब मोकोसब शत्रुइ देखाता है काहेते अबतक यहहाल किसी ने

नहीं मोसों कहा अरु सब रचना ह्वै चुकी अब तेरे मुखते सुनेउँ ताते जगमें मेरीहितू एकतुहीहै तबतोकहे इत्यादि सत्यमानिरानीकहै३।१५॥

मू०। कहिसुखायरानीबदन जनिमनकरसिमलीन। द्वैवरतेरेनृप चहैं लेहिमांगिपरवीन १ लेहिमांगिपरवीनदेखिदृढ़वचन नडोलै। रामविपिनसुतराज्यसत्यकरिनृपसनबोलै २ राम विपिनजबजायहैं भरतभूपहोईसदन । सवतिहृदययहि भाँतिदहि कहिसुखायरानीबदन ३ । १६ ॥

टी०। रानिबदन सुखायकहि शोकते मुख रूखाकरि जबरानीकैकेयीने अधीरवचनकहे तब मंथराबोली मन मलीन जनिकरसि हे महारानीजी मनमें उदासीनतानलावौ तुम्हारीविपति मिटनेकीसहजही उपायहै काहेते तेरे द्वै वर नृपचहैं अर्थात् देवासुर संग्राममें देवनकी सहायताहेत संबरनामे दैत्य ते युद्धकरि दशरथजी घायल ह्वै मूर्च्छितभये तहां तुम साहस करि महाराजको रथभगाय बचाइ लिया जब सावधानभये तब तुमको द्वैवरदान देनेको कहे सो थातीहै हेपरबीन परमचतुर सोई वरदान अब मांगिलेहि १ कैसी प्रबनिता चातुरीके साथ मांगिलेहि देखिदृढ़ वचन न डोलैं अर्थात् जबरामसपथ सहित त्रिवाचकबोलैं इत्यादि सत्यव्रतदृढ़पुष्ट देखि तब माँगना जामें पूर्वकहे वचननको बदलि न सकैं तबक्या मांगना राम बिपिन बनबास करैं तथा सुत आपने पुत्र भरत को राज्य इत्यादि सत्यकरि नृपसन बोलै अर्थात् महाराजको सत्यव्रत दृढ़कराय तबतुम भी सत्यहीवचन बोलना भावकैसहू समुझावैं परन्तु आपने बचनकीहठ न छोड़ना नातरु प्रयोजनकछु भी न होयगो अरुअपयशी ह्वै जाउगी२ भरत कोराज्य तथा चौदह बर्ष रामको बनबास मांगना काहेते बारह बर्ष तक राज्यको दावा रहता है चौदहबर्षमें सोभी न रहैगो अरु इहां मंत्री सेनप प्रजा इत्यादिभी भरतकेसम्मतमें ह्वैजायँगे इसहेतु जबरामबिपिन बनको जाय हैं अरु भरत भूपराजा ह्वै सदनघरमें रहैं तब अकंटक पुत्रकी राज्य बलते जाको जैसा चहौ तैसाही दुखसुखदेउ इसभांति सवतिको हृदय दहि मनभावत दुखदेउ इत्यादि जब रानीसुखाय मुख अधीर बचन कही तब मंथरा समुझाय धीर्य करायो ३ । १६ ॥

मू०। मनप्रतीतिरानीभईलईसीखउरमानि। जोकछुमनरघुपति

चहैं सोईसत्यउरआनि १ सोईसत्यउरआनि कोपकेभवन सिधाई । दुर्गतिकरितनदशा मनहुंयमपुरतेआई २ दशा मनहुंनृपमरणकी धरणिकुलक्षणकीमई । देविकुरीतिसुप्री तिसिखमनप्रतीतिरानीभई ३ । १७ ॥

टी० । मंथराके बचन सुनि रानी कैकेयी के मनमें प्रतीति भई ताते वाको सिखावन उरअन्तरते पुष्ट करि मानिलई यद्यपि कैकेयी कुलवंती सुशीला उत्तम पतिव्रतारही ते बिनाबिचार किहे दासीके बचन कैसेसत्य मानि लिये तापर कहत जो कछु रघुनाथजी मनते चाहतेहैं सोई सत्यउर आनि सोईबात सत्यकरि उर अन्तर में दृढआय जातीहै भाव और कौन ऐसा समर्थ है जो झूंठ करिसकै १ रामइच्छा ते सोई बात सत्य उर में आनि कोपके भवन सिधाई कैकेयी कोपभवन को चली तहांजाइ तनकी दशा दुर्गतिकरि भाव बसन भूषण उतारि बारछोरि सर्बांगमें धूरि लगाय महामैले फटेबसन पहिरि कैसी कुरूपता दर्शितभई मानहुं यमपुरते आई अर्थात् भयंकर क्रोधितरूपते मानो मृत्युआई २ किसकी मृत्युहोइगी मानहुँनृप दशरथके मरण की दशा बनाई इसदिशा ते निश्चय प्राणहरि लेइगी कैसी दशाहै कुलक्षणकी मयी धरणि भूमिका बनी है अर्थात् जो सौभागिनी सहजही सिंदूर बेसरि चूरी कर्णफूलादि श्रृंगार नहीं धारण किहेरहततौ पतिकी आयू क्षिणपरती है अरु कैकेयीतौ कुलक्षण जो विधवाके लक्षण हैं तिनमयी भूमिका बनिबैठी काहेते देविकुरीति सुप्रीति सिख अर्थात् मंथरा दासीहै स्वामी कैसा सिखावनदिया यह लोकवेदरीतिते बाहिर ताते कुरीतिके वचनहैं ताते वाके वचनकीप्रतीति न करनारहै पुनः पतिते विरोध करावती है ताते अनहित मानि वापर क्रोधकरना उचितरहै परंतु देवीशारदाकी प्रेरणाते कुरीति करनेवाली मंथरामें सुंदर प्रीति मानि वाके सिखावनकी प्रतीति रानीके मनमेंभई ३ । १७ ॥

मू० । कानकरहियहकर्मत्रलक्यहिजगयमनहिंलीन । पवनडगा योकाहिनहिंकोदुखदुखीनदीन १ कोदुखदुखीनदीनमोह मदक्यहिनहिंबाध्यो । तृष्णाज्वरनहिंजख्योकामशरकाहिन साध्यो २ काहिनसाध्योक्रोधदलक्यहिनछल्योतरुणीतर

ल। चितचिन्ताव्यालिनियथाकानकरहियहकर्मबल३।१८॥

टी०। शुभाशुभ कर्मनको जो बलहै यह कानहीं करहि भाव कर्मनको फल जब उदयहोताहै तब उचित अनुचित सबकार्य जीव करिडारता है यथा पतिको संगत्यागि सती जानकीरूपधरि वनमें अकेले राजकुमारके पासगई पुनः जगमें क्यहिको यमनहींलीन भावलोकमें देहधारी है कौन मृत्युसे बचिरहा तथा पवन काहिनाहिं डगायो अर्थात् प्रचंडवायुकी ठोकर लागेते नर पशु पक्षी तृण वृक्षादि सब डोलिजाते हैं तथा दुखरुज वियोग हानि दरिद्रतादि दुखपरे पर को दुखीदीन पौरुषहीन नहीं हैजाताहै १ यथा दुखपरेपर कोनहीं दुखीदीन होताहै तथा मोह जीवकी अज्ञानता पुनः मदजाति विद्या महत्त्व धनादि पाय चितउन्नतकरना इति मोहमद क्यहिनहिं बाध्यो कोनहीं मायाफंदमें फँस्यो पुनः इंद्रीद्वारा विषयनकी अत्यंत प्यास इति तृष्णारूप ज्वर क्यहिनहिं जास्यो भाव विषय आशामें कौनजीव नहीं तप्तरहताहै २ पुनः कामदेवने क्यहिकोशर बाण नहींसाध्यो भाव सुंदर युवतीदेखि कोनहीं कामवश हैजाताहै तथा क्रोधको दलसेना यथा मनुस्मृतौ॥ पैशून्यंसाहसंद्रोहईर्ष्यासूयार्थदूषणम्। वाग्दण्डभंचपारुष्यंक्रोधजोपिगणोष्टकः॥ इत्यादि काहिनसाध्यो किसकोनहीं स्वाधीनक रिलियो तथा तरुणी तरल युवावस्थाकी स्त्री चंचल क्यहिनहीं छल्यो किस को ज्ञान नहीं नष्ट करिदियो तथा चिंता व्यालिनि अर्थात् राजाको कोप शत्रुकीभय कार्यादि किसी वस्तुकीहानि प्रिय वियोग दरिद्रता इत्यादिमें भय सहित सुधि बनीरहना चित चिंतारूप सर्पिनि किसको नहीं खाया इत्यादि यथासब निश्चय होतेहैं तथा यह कर्म सबलहै ताके बशते जीव क्यानहीं करिडारता है ३। १८॥

मू०। अवधपुरीअमरावतीबाजैंबिपुलबधाव। सबकेउरआनंद अतिरामतिलकसतिभाव १ रामतिलकसतिभावसांभ्क समयानृपपायो। सरलसुहृदनृपहृदयकैकयीगृहचलिआयो २ आयोसुनिरिसिकेसदनबदनपीतभयछावती। अवधनाथसुरपतिसरिसअवधपुरीअमरावती ३। १९॥

टी०। अमरावती जो इन्द्रपुरी ताहीतुल्य शोभाखानि अयोध्या तामें विपुल बधावा घरघरमें बहुती बधाई बाजिरही हैं काहेते राम तिलक

सतिभाव अर्थात् प्रातःकाल निश्चय रघुनन्दनको राज्याभिषेक होयगो यह विचारि सबके उरमें आनंद परिपूर्ण है १ सत्यभावते रामतिलककी सब सामग्री साजि नृपदशरथ महाराज जब साँझसमय पायो तब सरल सुहृद नृप हृदय अर्थात् सहजसुभावै तेसबते मित्रता राखतेहैं ऐसा कोमल दशरथ महाराजको हृदय है ताते निश्शंक कैकेयीके गृह मंदिर को चलिआयो २ जबमहाराज कैकेयीके मंदिरको आये तहां दासिनते रिसके सदनसुने भाव कैकेयी कोपभवनमें गई यह सुनतही बदन पीतभयछावती भय जो डर सो सर्वांगमें छायगया तातेमुख पेरप रि गया भावकामकी वेगते स्त्रीकी रिस न सहिसके अरु महाराज कैसे हैं अवधनाथ सुरपति सरिसभाव इन्द्रकी तुल्य बल तेज प्रतापवंत हैं तथा सब शोभा ऐश्वर्य युत अयोध्या अमरावतीके तुल्य है ३ । १९ ॥

मू० । सोदशरथकम्पहिहियेकामप्रतापबलीन । जाकीबशत्रय
लोकमहँक्यहिअनर्थनहिंकीन १ क्यहिअनर्थनहिंकीनच
न्द्रसुरपतिगतिदेखौ। नृप दिलीपमुनिशम्भुययातिहिचित
अवरेखौ २ चितअवरेखहुकामबलतीनिलोकभेदितकिये ।
ताकोशरनृपउरगड़्योसोदशरथकम्पतहिये ३ । २० ॥

टी० । जे ऐश्वर्यते बल प्रताप बीरताकरिकै इंद्रकी तुल्यरहे सो दशरथ स्त्रीकी रिससुनि हियेते कम्पहि हृदयमें अत्यंत डरमानि सर्वांग कांपि उठा ऐसा कामदेवको प्रताप बलीन बलवान्है काहेते कामको प्रतापबलीन जानिये कि त्रयलोकमहँ जाकेबशहै क्यहि नहीं अनर्थकीन अर्थात् तीनिहूं लोकनमें सुर मुनि नर नागादि को ऐसा धीर्यवंत समर्थ है जो कामके बशहै अनुचितबात नहीं करि डारा १ क्यहि नहीं अनर्थकीन अर्थात् कामबशते अनुचितबात सब समर्थन करिडारेहैं ताकीप्रमाण चंद्रसुरपति गतिदेखौ दोऊको अनर्थकरना प्रसिद्धहै अर्थात् देवनकेगुरू बृहस्पति तिनकी स्त्रीको चंद्रमा आपनीस्त्री बनायालिया इसीते कलंकीभया तथा सुरपति इंद्रने गौतमकी स्त्री अहल्यासों छलसों रतिकीन्हे तिनको ऋषि शापते सहस्रभग धारनापरा इति दोऊकी दशा प्रसिद्ध देखिये पुनः नृप दिलीप मुनि विश्वामित्र तथा शंभु शिवजी ययातिहि चितअवरेखौ इत्यादि कामबशते जो अनर्थ कीन्हे सो चितते बिचारि देखौ अर्थात् राजा

दिलीपकी स्त्री ऋतुस्नान कियारहै ताको रतिदान देनेहेतु कामवश जाते रहैं राहमें कामधेनु मिली ताको प्रदक्षिणा प्रणाम नहींकीन्हे जब चले गयेतब कामधेनु शापदिया ताते पुत्रनभया सोकारणजाने तब बहुतकाल कामधेनुकी सेवाकीन्हे तब पुत्रभया तथा मुनि विश्वामित्र व्रतधारण किहे तपस्याकरतेरहैं तेअप्सराकोदेखि कामवश वाकेसाथ भोगकरि तपोव्रत भंगकरिदिये तथा शंभु भगवान्को मोहनीरूप देखि कामवशह्वै पकरनेको धाये बीजपतितह्वैगया पुनः राजा ययाति कामवशते पुत्रसों युवावस्थामांगे इत्यादिको बिचारकरौ २ इत्यादि चितअवरेखौ भाव चितरूप भीतिपर इन चरित्रनको लिखिराखौ काहेते कामदल कामदेवकी सेना यावत् विषयव्यापारहै सो तीनिहूंलोक बासिनको भेदितकियो कामबाण सबके उरमें घावकीन्हें है ताको शर नृपउर गड्यो ताही कामदेव को बाण महाराजौंके उरमेंगड़ा सोईकारणते दशरथ कांपतेहैं ३।२०॥

मू०। देखिजायरानीबिकलभूमिशयनतनदीन । पटपुरानसूखे अधरनयनअरुणरँगपीन १ नयनअरुणरँगपीनमनहुँदुर्दशाअनैसी।बिपतिनारिकेरूपकुमतिजसिप्रकटतितैसी २ प्रकटतिवचनबदनमहँकुमतिसाजधरिछलकुथल।भूपसभयपैंठेभवन देखिजायरानीविकल ३ । २१ ॥

टी०। दशरथ महाराज मंदिरमेंजाय देखा रानी कैकेयी बिकल भूमिमेंशयन भूमिमेंपरी दीन दुखितकी ऐसीदशा तनमेंकिहे कौनभांति पटपुराने पहिरे अधर ओठ सूखिगये हैं पीनरंग अरुणनयन अर्थात् क्रोधते पुष्ट ललामी नेत्रनमें है १ कैसे अत्यंत नेत्र लालि हैं मानहुं अनैसीन कारी दुर्दशा अर्थात् बिधवापनकी दुखददशा बनायेहै कौनभांति बिपति नारिकेरूप भावजब युवाअवस्थामें पतिमरिजानेकी बिपति परती है तासमय जो नारिके रूपमें जैसी दुर्दशाहोतीहै तैसीदुर्दशा कुमतिते कैकेयी प्रकट कीन्हेहै अर्थात् पतिके जीवतही तनमें बिधवाकी दशा प्रकटकरिलिया २ पुनः कुथल छलधरि कुमतिसाज बदनमहँ बचन प्रकटति अर्थात् कुथल कुत्सितस्थान जो हृदय तामें छलधरे पुनः कुमतिसाज कुबुद्धिते प्रबंधबांधे हुये अर्थात् मंथराके सिखानेते जो रामराज भंगकीनचाहत इति कुमति साजके वचन छलसहित मुखते भाषत है इत्यादि जब भूप दशरथ सभ-

य डरसहित भवनकेभीतर पैठे जायके देखाबिकल भूमिमेंपरीहै ३ । २१

मू० । क्रोधकौनकारणकियो गजगामिनिवरनारि । ज्वइमांगसि
सोइदेउँतोहिं कामादिकफलचारि १ कामादिकफलचारि
तोहिंपरतीतिसदाई ।तेरेसुखकेहेतुतिलककोघरीशोधाई२
घरीशोधाईतिलककी अवधलोगसुनिसुनिजियो । करिप्र
बोधनृपपाणि गहि क्रोधकौनकारणकियो ३ । २२ ॥

टी० । महाराज बोले हेगजगामिनि बरनारि श्रेष्ठपतिव्रता कौनकारण क्रोधकियो भावहमतौ तुम्हारी अनुकूलहैं तौ मानकरनेते क्याप्रयोजनहै काहेते अर्थ धर्म कामादि चारिहूफलमें जोईमांगु सोईवस्तुतोकोदेउँ ताते प्रसन्नतापूर्वक वार्त्ता करु स्वाधीन पतिकाको रिसानेते क्या अधिकलाभ है १ पुनःजिस सनेहते मैं तोको कामादि चारिहु फल देसक्ताहौं ताकी तोकोप्रतीति भी सदाईहै भावमेरी अनुकूलता सदाएकरस तोपरहै सो तू भली भांतिते जानतीहै पुनः तेरेही सुखकेहेतु रघुनन्दनके राजतिलक हेतु घरी शुभ मुहूर्त्त शोधाई सोकाल्हि बनीहै भावजो तू जानतीहोइ मोसों न कहे न पूछे छलते राज्य देतेहैं सो नहीं तेरेही सुखके हेतहै अर्थात् पूर्व अनेकबार तू कहिचुकी है कि रघुनंदनको राज्याभिषेक करि देउ ताही अनुकूलमें अबहींघरी शोधाई है अब तोसों कहतो सोतू पूर्वही रिसानीहै सो या समय रिसानो तेरेयोग्य नहींहै २ काहेते या समयतोको रिसानो उचित नहींहै कि जब रघुनंदनके तिलकहेतु मैं शुभघरी शोधाई ताको सुनि सुनि अवधलोगजियो अयोध्यावासी सब आनंदभये अर्थात् सबकी इच्छा यहीहै इत्यादि समुझाय प्रबोधकरि नृपपाणि गहि दशरथ महाराज हाथ पकरि कैकेयी सों कहतेहैं हेप्रिये तुम कौनकारण क्रोध कियो ३ । २२ ॥

मू० ।उठिबैठीबोलतभई करिकटाक्षमुसुकाय । भूपनजानैंसुहृद
हृदि नारिचरितकेभाय १ नारिचरितकेभाय विधिहुनाहिं
जाननहारे । द्वैवरथातीदेहुओरहमतजेतुम्हारे २तजेतुम्हा
रेदानिता कहौंशपथखाँचोनई । फिरिनटरैकहिउच्चरौं उठि
बैठीबोलतभई ३ । २३ ॥

टी० । उठि बैठी कटाक्षकरि मुसुकाय बोलतभई महाराजके बचनसुनि कैकेयी भू शयनते उठी भूषण बसन साजि सुंदरी शय्या पर सन्मुख बैठी नेत्रनकी कटाक्ष पैनीचलाय पुनः मुसुकाय कामोद्दीपन कराय तब बोलतभई अरु भूप सुहृद हृदि दशरथ महाराजको हृदय मित्रता भरा कोमल ताते नारि चरितके भाव न जानै अर्थात् तीय चरितको भावार्थ जो छल चातुरी मीठे बचन कहि स्वाधीन राखि प्राणघात दंडदेना सो महाराजनहीं जानतेहैं १ महाराजतौ शुद्ध कोमल हृदय सबको मित्र जानतेहैं तिनकी कौन गनतीहै नारिचरितके भावनको जाननहारे बिधि हू नहींहैं भाव स्त्रिनकी छल चातुरी ब्रह्मौ नहीं जानि सकेहैं सोई छल चातुरीकरि कैकेयी बोली कि हमारी थाती द्वैबरदेहु और तुम्हारे सब हमतजे अर्थात् देवासुर संग्राममें जो द्वै बरदान देतेरहौ सो हमथाती राखा सोतौ आजु हमकोदेहु और जन्मभरेके दिये यावत् तुम्हारे बचनहैं तिनसबको हम छोड़िदिया इन बचननमें जो छल चातुरीहै सोतौमहाराज समुझे नहीं अरु जो सहज भावार्थहै सोईसमुझि प्रसन्नह्वैगये क्या समुझे कि औरतौ सब बचन सामान्य हैं परंतु ब्याहके पूर्वजो लिखि दियारहै कि कैकेयीके पुत्रको राज्य देयँगे ताके साक्षी बशिष्ठ अरु गर्गाचार्य ताते वह बचन बड़ा सबलरहा सो तौ छांड़ेन देतीहैं तौ रामराज्य की बाधक नहींहै तौ और दोबरदानचहै सो मांगिलेइगी तौ कछु हानि नहीं है इति समुझि महाराज प्रसन्नरहे अरु यामें कैकेयीने क्या छल चातुरीकिया कि जो पूर्बकरारपत्रको बचन मैं छांड़ि न देउँगी तौ मेरी दिशिते महाराज अशंक न होइँगे तौ या समय बरदान देनेसाफ न होइँगे अरु जो मैं करारपत्रको दावाभी करौंतौ भरतको राज्यभी देवैंतौ रघुनंदनबनको तौ न जाइँगे इस चातुरीते पूर्ब सब दावात्यागि बरदान मांगना पुष्टराखे १ सोई कहत तजे तुम्हारे दान्यता अर्थात् पूर्बजो तुममें दातव्यता रही तामें यावत् बचनदान दैराखा सो और तुम्हारेबचन सब तजे छांड़ाजो द्वैबरदान देनेको कहिराख्यो सो जो अब देनेको कहौतौ नई शपथ खाँचो भावकहौकि राम शपथ है हम देइँगे इत्यादिकहौ तब मैं मांगोंगी काहे कहिकै बचन फिरि नटरै बदलि न जाउ तबमैं उच्चरौंवर मांगनेके बचन कहौं इत्यादि उठिबैठी तब कैकेयी बोलतभई २ । २३ ॥

मू० । शपथसत्यलखिकाहचलि वचनअमंगलमूल । देहुएकवर

प्रथमयहभरतराज्यअनुकूल १ भरतराज्यअनुकूल दूसरो माँगहुँसाईं । चौदहवर्षविशेषि रामबनमुनिकीनाईं २ मुनि कीनाईंजाहिंबन काल्हिरामतौअतिभली। मोरमरणअपनो अयश शपथसत्यलखिकहिचली ३ । २४ ॥

टी० । सत्य शपथ लखि अमंगलमूल बचन कहिचली अर्थात् जब महाराज कहे कि राम शपथ मोकोहै जो मांगि है सोई देउँगो इत्यादि शपथ सत्य देखि भाव न बचन टरैंगे ऐसा बिचारि अमंगलमूल अनर्थ उत्पात होनेकी जर ऐसे भयंकर बचनकहिचली क्या कही प्रथम एकबर यहदेहु कि अनुकूल प्रसन्नतापूर्बक भरतको राज्यदेहु १ अनुकूलहै भरतको राज्यदेहु पुनः हेसाईं दूसरौबरमांगतहौं बिशेषि मुनिकीनाईं अत्यंतउदासी-न बेषते चौदहवर्ष राम बनबासमेंरहैं २ पुनः दृढ़ता यापर ऐसीहै कि मुनिकी नाईंकाल्हिही रामबनकोजाहिं तबतौ सबैबात अत्यंतभलीहै अरुजो ऐसा नकरौगे तौ मोरमरण अर्थात् जो मैंमांगिचुकी सोनभया तौ केवल बेस्वार्थ वृथा अपयशीहै कौनमुख लोकको देखावौंगी ताते आपनेहीहाथ आ-पनेप्राण घातकरौंगी तामें आपनोभी अयश बिचारिये अर्थात् बचनदैकै पुनः न देना यह असत्य पुनः मेरीहत्या इत्यादि आपहूको अयश होइगो इत्यादि कुवचन सत्यशपथ लखि कहि चली ३ । २४ ॥

मू०। सुनिभूपतिउरअतिदल्यो बज्रहृदयजनुलाग । मुखसुखान लोचनसजल प्राणबिकलभयभाग १ प्राणविकलभयभा ग मूंदिराखेद्वउलोचन । शोकदाहउरदहत कहतकछुबनत नशोचन२ बनतनशोचनमुखवचनमनहुप्रेतकर्मनिछल्यो। धुनतशीशव्याकुलशिथिलसुनिभूपतिउरअतिदल्यो३।२५

टी० । सुनि भूपति उर अतिदल्यो कैकेयीके कराल बचन सुनतही महाराज दशरथको उर अत्यंत करिकै घायलभयो कौनभांति जनु हृदयमें बज्रलाग ऐसी व्यथा छातीपरभई ताते मुख सुखायगया लोचन सजल नेत्रनमें आंसु जल भरिगयो प्राण बिकल भयभाग अर्थात् धर्म सनेह दोऊ जातदेखि ताहूपर अयशकीभय डरमानि प्राण तनमें बिकलह्वैभागा चाहत १ भयते बिकल प्राण तनछोडि भागाचाहत ताते दोऊ लोचन

नेत्र मूंदिराखे काहेते शोक दाह उरदहत दुखरूप अग्नि के तापते हृदय जराजात पुनः शोचन दुखपूर्वक उरमें तर्कना करत मुख ते कछु कहत नहीं बनत २ अंतरैमें पश्चात्ताप करत ताते मुखते बचन कहत नहीं बनत काहेते मनहु प्रेत कर्मनिछल्यो अर्थात् यथा कोऊ प्रीतिपूर्वक प्रेतको बशकरिबेको कछु पूजादि करतेमें कछु क्रिया बार्त्तादि चूकातौ वही प्रेत प्राणघातक दंडदेनेलगा तथा कैकेयी में प्रीतिकरि महाराज पश्चात्ताप करते हैं ताते शिथिल सर्वांग ढीले परिगये व्याकुल शिरधुनत मूड़पीटतेहैं काहेते कैकेयीके बचनसुनि भूपउर अतिदल्यो ३ । २५ ॥

मू० । भयेबिकलसुनिनृपकहा बचनलगेजिमिबान । सत्यसंधता मनकिये कह्योदेनबरदान १ कह्योदेनबरदान बचनकि नकह्योसँभारे । कौशल्यासुतसुवन भरतनहिंसुवनतुम्हा रे २ भरतसुवनपठयेकुथलरामतिलकआनँदमहा । साधेउ छलतसफललहौ भयेबिकलसुनिनृपकहा ३ । २६ ॥

टी० । बचन जिमि बाणलगे सुनि नृप कहा बिकलभये अर्थात् कैकेयी कहत हे महाराज मेरे बचन यथा बाण आपुकेलगेतौ मेरे बचन सुनि काहेते बिकल भये याको कारण कहौ पूर्व मनमें सत्यसंधता किये बरदान देने कह्यो अर्थात् हम सत्यसंधहैं जो कहो सोईकरी ऐसे सत्यबादी मनतेबने मोको बरदान देनेको कह्यो १ जो पीछे दुख होनारहैतौ जब मोको बरदान देने को कह्यो तब किनकाहे नहीं संभारे बचनकह्यो भाव बचनमात्र उदारबने रह्यो देनेके समय सूम होतेहौ तौ पूर्वक्योंनहीं बिचारि लिह्यो काहेते कौशल्यासुत सुवन कौशल्याके पुत्रतेतौ तुम्हारे पुत्रहैं तथा मेरे उत्पन्नभयेते भरत तुम्हारे पुत्र नहींहैं भाव क्या कौशल्या तुम्हारी ब्याहीहैं मैं दासीहौं वा कौशल्यामें पुत्र तुमसों भया मैं किसी यारते पैदा करिलिया जो मेरेपुत्रको अनादर करतेहौ २ काहेते अनादर जाना भरत सुवन पठये कुथल अर्थात् मेरे पुत्र भरतको कुठौर पठाये अर्थात् बली दुष्टनसों युद्धकरिबे हेतु रणभूमिको पठायो जामेंउहैं मारिडारेजायँ अरु इहां महा आनंद सहित रामको राजतिलक देतेहौ इति छलसाध्यो तसफललहौ।खेउ भावमेरे पुत्रको कुठौर पठायो अरु मोसे

छल राखि जैसाकाम किहेउ सोई फल अघायकै लेउ हे नृप मेरे बचन सुनि क्यों बिकलभये ३ । २६ ॥

मू० । नयनउघारेनृपकहत समुझिप्रियाबरमाँगु । भरतभूपको तिलकपुरतामेंलगैनदागु १ तामेंलगैनदागु रामबनपठवतिकाहे । कौनलागअपराध रामसबसाधुसराहे २ साधुसराहेनारिनर अबअचर्यछातीदहत । तातेसमुझिबिचारिकरु नयनउघारेनृपकहत ३ । २७ ॥

टी० । नयन उघारे नृप कहत पूर्व शोकते मूंदेरहे सोधीर्यकरि बामांगी जानि नेत्रखोलि महाराज कहत हे प्रिया जो तुम्हारी योग्यहोई सोसमुझिबिचारिकै बरमाँगुतौ पुरमें भरतभूपको तिलक तामें दागु न लगै अर्थात् दूसरा बर जो और कछुमांगु तौ अवधपुरमें भरतैको राज्याभिषेक करिदेउँ सो कबहूं किसीभांति खण्डित न ह्वैसकै अकंटक राज्यकरैं १ भरतको जो मैं राज्यको तिलक करिदेउँ तौ तामेंदागु नहींलागैगो भावदूसरा कोऊ दावा नहीं करिसक्ताहै तौ रामको काहेते बनको पठावती है काहेते सबसरा है राम साधुहैं ताहिकौन अपराधलाग अर्थात् प्रजा पुरजन मंत्री मित्रादिसबै प्रशंसा करतहैं कि रघुनन्दन परमसाधुहैं तिनतेरो क्या अपराधकियो जो बनको पठावती है अरु बिनअपराध साधुको दण्डदेना उचितनहीं २ अयोध्याकी नारी तथा नरसबै सराहतरहे कि राम परमसाधु हैं तथा अब तक तोहूंसराहतरही अबअचर्य छातीदहत भाव अब बनको पठवततामें मेरीछाती जरीजात तोको ऐसे बचन कहना बड़ाआश्चर्य है भाव तू इस लायककी नहींहै ताते आपनीयोग्य समुझि बिचारि कार्यकरु जामेंतोको अयश न होइ इत्यादि नेत्रउघारे महाराज कहते हैं ३ । २७ ॥

मू० । येनबचनटरिहैंनृपतिमरहुउजरिपुरजाय । अयशअवधिबिधनाकरहिअघरबिबंशनशाय १ अघरबिबंशनशायहोयपुरकालहवाले । कलहकपटकीआगिअवनिभगिजायपताले २ भगिपतालअवनीघटैरबिशशिरिंगहिंउलटिगति । बिधिहरिहरआपुहिकहैंयेनबचनटरिहैंनृपति ३ । २८ ॥

टी० । कैकेयी कहत हे नृपति महाराज ये मेरेकहे बचन हैं ते न टरिहैं

चहै तुम मरिजाहु चहै अवधपुर उजरिजाय पुनः अयश अवधि बिधना करहि बिधाताचहै मोको अपयश की मर्यादाहद बनाय देवै तथा अघ रबिबंशनशाय मेरेपापते चहे सूर्य्यबंशभरि नाशह्वैजाय १ रबिबंशनशाय चहै पुरकाल हवालेहोय अर्थात् मेरे महापापते सूर्य्यबंश भरि नाशहोय अथवा अत्यन्त महाभारी पापलागै जाके प्रभावते अवधपुरभरि काल के बशहोय सबै पुरजन मरिजायँ पुनः कलह जो परस्पर अत्यन्त बिरोध के व्यापार पुनः छल चातुरी ते कार्य साधन जो कपट इत्यादि अधर्म्म अनीतिरूप आगि लागेते अवनि पृथ्वीचहै पतालै भागिजाय २ अवनि इहाघटै खण्डित परै अथवा इहांते भागि पृथ्वी पातालमें घटैजाय स्थित होवै पुनः रबि शशि उलटीगति रेंगहिं अर्थात् चहैं सूर्य्य अरु चन्द्रमालौटि पीछेकोचलें पुनः बिधि हरि हर आपुहिकहैं अर्थात् मेरेहीबचनद्वारा लोकमें उत्पत्ति प्रलयहोते देखि लोकसाधक ब्रह्मा बिष्णु महेश तीनिहुं आपुइ मोसोंकहैं कि रघुनन्दन को बनका न पठौ तबहूं मेरेबचन न टरैंगे यामें सरस्वती उक्तिहैयथा॥ चौ०॥ रामकीनचाहैं सोहोई। करै अन्यथा असनहिं कोई॥ भावयह सबकार्य रामइच्छाते होता है ताको मेटनेवाला कौन है पुनः कैकेयीके बचन में धुनियह है कि केवल आपुके दुखहोनेते त्रैलोक्य को महादुख छूटता है सोऊबात धर्मवन्तन करनाउचित है ताके बचन न टरैंगे ३।२८॥

मू०। अनलचंदबरषैकबहुँ शीतलसूरजहोय। शेषतजैधरनीधरन समुद्रबिनाजलजोय १ समुदबिनाजलजोय शंभुशिर चंद्रप्रजारै। तिमिरदहैरविरूप बृद्धकरदंडहिडारै २ दंडहिविधिजगसृष्टिसब नारायणमिटिजाहिंकहुं। येनवचन नरपतिटरैं अनलचंदबर्षैकबहुँ ३।२९॥

टी०। पुनः कबतक मेरे बचन न टरहिंगे सो सुनिये चन्दकबहुंअनल बर्षै अर्थात जो सदाशीतल अमृत बर्षताहै सोऊचंद्रमा चहै कबहूं उष्णह्वै अग्निबर्षै तथा जो सदाउष्णहै सोऊसूर्यचहै कबहूंशीतलहोय पुनः धरनी जो पृथ्वी ताको जेसदा शीशपरधारणकिहेहैं तेऊशेष चहैं कबहूं धरनीधरन तजै भूमि शीशते डारिदेवैं पुनः जो सदा जलते परिपूर्ण रहता है सोऊ समुद्र चहै कबहूं बिनजल जोय देखिपरै १ यथा समुद्र सूखा देखिपरै

तथा चन्द्र शम्भु शिरप्रजारै अर्थात् माथमेंबसा सदा शीतल किहेरहत सोऊ चंद्रमा अग्निरूप ह्वै चहै कबहूं शिवके शीशको प्रकर्षकरि जरायदेवै पुनः रबिसूर्य ते सदा तिमिर अन्धकार को नाशकरते हैं सो तिमिर चहै कबहूं रविरूप को दहै भस्मकरिदेवै तथा वृद्धकर संसार को बढ़ावनेवाले ते चहैं दण्डहि डारै संसारपर दण्ड करनेलागैं २ सबसृष्टि को जगमें वृद्ध कर्त्ता बिधि जोब्रह्मा ते चहैं संसारपर दण्ड करहिं पुनः जे सदा अखण्डहैं सोऊ नारायण चहैं कबहुं मिटिजायँ इत्यादिक कबहूं चन्द्र अनल बर्षै परन्तु हे नृपति ये मेरे बचन न टरिहैं इति कैकेयी दृढ़कहा ३। २९॥

मू०। राज्यनचाहैंभरतपुरलागोतोहिंपिशाच। मोरिमृत्युबोलत बचनतवमुखचढ़िशिरसाँच १ तवशिरचढ़िकरिसाँचराम नृपहोवहिंभारी। तुहिकलंकदुखमोरमिटहिकबहुँकनहिंना री २ नारीकरिचितचाहिकैबचनमोरजियजानिफुर। राम भूपसेवकअनुजराज्यनचाहैंभरतपुर ३। ३०॥

टी०। भरतपुरकी राज्य न चाहैं महाराज कैकेयी प्रतिकहत किकछु भरत तौ अवधपुर की राज्य होना चाहते नहीं यह तोहि पिशाचलगो है भाव तेराभी ऐसा कुटिल हठी स्वभाव नहींरहै सो जो कुटिल हठधरे है सोतेरे कोई भूतलगा है ताकी बशहै काहेते मोरिमृत्युसाँच शिरचढ़ि तव मुख बचन बोलत मेरी मृत्यु सत्यही तेरे शीशपर चढ़ी बैठी है सोई तेरे मुखद्वारा येबचन बोलत है भाव मेरा काल तोसों सब कहाय रहा है १ मेराकाल तेरे शिरपर चढ़िसत्यही मेरेप्राण लेइगो पुनः राम भारी नृप होवहिं मेरे मरेपीछे रघुनंदन महामंडलेश्वर राजा ह्वै हैं परंतु हेरीनारी तोहिकलंक अरुमोरदुख येदोऊ कबहूंनहीं मिटिहैं २ हेनारी मोर बचन जियफुरजानि पुनःचितचाहिकै करि अर्थात् जोमैं कहतहौं सोई निश्चय करिकै होइगो इति मेरे बचन जीवते साँचेजानिले पीछे आपने चितसों बिचारिकै जोभावै सो यश अयश करिले पुनः रामभूप अनुज सेवक मेरे मरेपीछे रघुनंदन राजाह्वैहैं भरतादि तीनिहुंभाई उनके सेवकबने रहि हैं काहेते भरततौ पुरकी राज्यचाहते नहींतौ कैसे और ह्वैसक्ताहै ३। ३०॥

मू०। बसीअवधनृपरामहैंयहजानतसबकोय। मोरमरणभोभा

मिनीयहसुखलख्योंनसोय १ यहसुखलख्योंनसोयसत्य जियजान्यसुभामिनि । मीनजियैंबिनुबारिरामबिनजियोंन यामिनि २ जियोंनयामिनिदिनवृथाजानिमरणपरिणामहै। तूअभागिनीतनुलियोबसीअवधनृपरामहै ३ । ३१ ॥

टी० । नृपरामहैं अवधबसी यहसबकोय जानत कैकेयीप्रति महाराज कहत कि अबतौ तू उजारे देती है परंतु अयोध्यापुर पुनः बसी पुरजन प्रजादि सबैकोऊ यहबात जानतेहैं कि पुरके राजाभी रघुनंदनै हैं अर्थात् जो तेरेबचन अनुकूलबनौको जायँगे तौ राज्याभिषेक तौ भरत अंगीकारै नकरैंगे तौ रघुनंदनकी आज्ञातेचहै सो भाय राजकाजकरै परंतु राजाकरि रामैको मानैंगे परंतु हेभामिनि कोपवंती मोर मरणभो ताते न यहसुख लख्यों नसोय नकार दीप देहरी न्याय है अर्थात् रघुनंदन बनगये तौ मेरा मरण निश्चयभया ताते यथा यह सुख न देखने पायो तथाबनते लौटि आये पर जब रघुनंदनको राज्याभिषेक होइगो सोऊन देखउँगो १ यथा तेरी कुमतिते यहराम राज्याभिषेक सुख न देखनपायों तथा जब राज्य तिलकहोइगो सोऊ न देखौंगो परंतु हे भामिनि यह मेराबचन सत्यकरि जीवते जान्यसु क्या सत्य जान्यसु मीनबिनु बारिजियै अर्थात् बिनाजल मछरी चहै जियै परंतु रामबिनु मैं यामिनि रातिभरि न जीवत रहिहौं २ जियों न यामिनि रातिभरि न जीवत रहिहौं कदाचित् रातिभरि रहि जाउँ तौ दिनभये पर जीवन वृथाहै ताते परिणाम अंतमें निश्चय मरण जानिले ताते तू अभागिनी तनलियो अर्थात् रघुनंदनको बनपठै कलंकी भई राम विरोधी जानि भरतौ तेरामुख न देखैंगे अरु मोको मारिवि-धवापन लेइगी इत्यादि इसकुलमें तू अभागी तनुलियो अरु अयोध्या पुनः बसी राम तौ राजा हैं नैहैं ३ । ३१ ॥

मू० । रामरामकहिनृपगिरयोकुमतिनमानीबात। अवधबधावअनन्दबड़नींदनलागीरात १ नींदनलागीरातकाल्हिशुभघरी सुहाई । देख्योजायसुमन्तभूपगतिमतिबिकलाई २ मति बिकलाईदेखिकैलखिकुचालआतुरफिरयो । आयोरामलिवायकैरामरामकहिनृपगिरयो ३ । ३२ ॥

टी० । जबकुमति कैकेयी बात न मानी हठ धरेरही तब निश्चय अनर्थ जानि नृप दशरथ महाराज राम राम कहि भूमिपर गिरयो मूर्च्छित ह्वैगये अरु अवधपुरमें बड़ाआनंद है ताते घरघर बधावन बाजाकीन्हे उत्सव देखन अभिलाषते रातिभरि किसीके नींदनहीं लागी जागतै बीति गई १ काहेते रातिभरि किसीके नींदनहीं लागी कि काल्हिसुहाई सुंदरि मनभाई राम राज्याभिषेक की शुभघरी है इस अभिलाषते कोऊ नहीं सोया प्रभात भया वशिष्ठादि सबकाम काजी द्वारआये तबौ महाराज न उठे तबमुनि विस्मयसहित सुमंतको भीतर पठाये मंदिरमें जाय सुमंत भूप की गति मति विकलाई देख्यो अर्थात् दुखते बुद्धि विकल मूर्च्छित भूमिमें परे २ मतिकी विकलाई महाराजकी दुर्गति देखिकै कुचाललखि आतुर फिरयो अर्थात् मनसों विचारि लिये कि रामराज्य होनेमें कैकेयी कछु बाधाकिया अबकछु पूछनेको समय नहीं है अबरघुनाथजीको बुलाय लावौं तिनकी आज्ञाते कामकरि सकेहैं इस विचारते शीघ्रही लौटे भाव रानीके प्रेरणाते महाराज कछु अमंगल आज्ञा न देदेवैं अरुजो रघुनंदन को मनोरथ देखैंगे तौराज्याभिषेक करिलेवैंगे रानी कया करिसकी है इस विचारते लौटे जाय रघुनंदन को लवाय लैकै पुनः मंदिर को आये तबौ देखे नृपदशरथ जी भूमिपै गिरेपरे हैं राम राम कहि रहेहैं देह की सुधि नहीं है ३ । ३२ ॥

मू० । पितुउठायबोलेवचन नृपतिलीनउरलाय । नयननीरधारा धसै वचनबोलिनहिंजाय १ वचनबोलिनहिंजाय रामपूछी महतारी । कहतिकठोरकुबैन कथाकरणीकटुभारी २ कटुभारीसोहेतुसुनि तनप्रसन्नकहमृदुरचन । लघुउपदेशात दुखमहा पितुउठायबोलेवचन ३ । ३३ ॥

टी० । पिताको उठाय रघुनंदन वचन बोले भावकौन कारण आपु को महादुख है सो कहिये ताकीउपायकरौं तबनृपति दशरथजी रघुनंदन को उरमें लगायलीन करुणा सनेहते तनविह्वल कंठारोधते वचन नहीं बोलिजात अरु नयननीरधारा धसै नेत्रनसों आंसु जलकीधारा बहत १ जबदेखे कि पिताते नहीं वचन बोलेजाते हैं तबरघुनाथजी महतारी कैकेयीते पूछे अर्थात् हेमाता कौन कारण पिताको दुख है सोकहु तब भारी

कटुकरणी की कथाहै सोकठोर कुबैन कहतिं आपनी अत्यंत कुटिलकर्त्त-व्यता को जो चरित्र है सो कठोर उरकैकेयी कुवचन कहिसुनाई अर्थात् मेरे पुत्रको बिदेशपठै मोसों छलराखि तुमको तिलकदेते रहैं अरुपूर्व मोको द्वोवरदान देनेको कहेरहैं सो अबमैंनेमांगा भरतको राज्य अरु चौदह बर्षतुमको बनबास इसीते महाराजको दुखहै काहेते उधर धर्मजात इधर तुम्हारा सनेह नहीं छोडिसक्ते हैं जोतुम खुशीते बनको चलेजाउ तौसब दुख मिटिजाय २ जो भारी कुटिलकरणी को हेतुहै सो सुनिकै पुनः तन प्रसन्न मृदुरचनाके वचनकहे अर्थात् महाराज को दुखित देखि ताको तौ दुख मनमें है परंतु आपने बनजाबे में हर्ष ताते तनप्रसन्न है पुनः कोमल रचनाते वचन कहत कि लघुछोटा उपदेश तामें इतनाबडा महादुख म-हाराज क्यों करतेहौ इसभाँति पिताको उठाय रघुनंदन वचन बोलतभये अर्थात् पिताको उचित है कि पुत्र को उपदेशदै सत्य शौच तप दानादिमें जो बडेभारी श्रद्धा श्रम संकटके व्यापार हैं तिनपर आरूढ़करै अरु जो चौदहै वर्षको बनबास इसथोरे धर्मोपदेशमें ऐसा दुखकरना धर्मवंतनको उचितनहीं काहेते देखिये आपहीके वंशार्य हरिश्चंद्र सर्बसराज कोशदै डारे स्त्री पुत्र आपनी देहतक बेचिडारे अरु प्रसन्नै बनेरहे यह धर्मवंतन की रीति है ताते हर्ष सहित बनजानेकी आज्ञादीजिये इति कोमल रचना बचन है ३ । ३३ ॥

मू० । राउरचरणप्रतापते बनमुदमंगलमोहि । मुनितीरथदेवन
दरश मोरपर्महितहोहि १ मोरपर्महितहोहि जातदिनबिल
मनलागै । आतुरऐहौंअवधिधरन पुनिचरनसभागै २ ध
रनचरनपुनिआयहौं आयसुदेइयआपते । कुशलक्षेमघर
आयहौं राउरचरणप्रतापते ३ । ३४ ॥

टी० । रघुनाथजी कहत हेमहाराज हर्ष सहित बनजानेको मोकोआ-यसुदीजिये काहेते यामें श्रमथोरी अरुआनंद सहित लाभबड़ी है अर्थात् आपुको धर्म मेराभी धर्म पुनः राउर आपुके चरण प्रतापते मोहिं बनमें मुद मानसीआनंद तथा मंगल प्रसिद्ध उत्सव बनारहैगो काहेते मुनिनको समागम तीर्थस्नान बास देवनके दर्शन इत्यादि मेरे हित हैं परमोत्तम १ मेरापरमहित होइगो पुनः आपहू को बड़ा दुखनहीं काहेते राजकाज तौ

भरत करबै करैंगे अरु जो चौदह वर्षको मेरावियोगहै सो दिनबीति जात बिलम नहींलागते हैं भावकछु जानि न परैगा अरु चौदह वर्षबीति जायँ गे तब अवधिअंत आतुर शीघ्रही आयहौं कौनहेत सभागै पुनःचरण धरण हेतआपनी सहित भाग्य पुनः आपुके पदकमलनको प्रणाम करिबेहेत २ आपुके पदकमलको प्रणामकरिबे हेतपुनः इहां आयहौं ताते आपुते आनंद सहित आयसुदेइ ये शोक न कीजिये आपुके चरण प्रताप ते कुशल क्षेम सहित बनते घरको पुनः आयहौं ३ । ३४ ॥

मू० । उत्तरकढ़ेउनभूपमुख रामधरेनृपपाँय । कुमतिकठोरकुवच नकटु मातुकहतमुसक्याय १ मातुकहतमुसक्याय हृदय छोड़तनहिंराजा । करिप्रबोधशिरनाय बिपिनकीसाजिस माजा २ साजिसमाजप्रसन्नमुख गहेमातुपदप्रेमसुख । राम चलतव्याकुलगिरचो उत्तरकढ़चोनभूपमुख ३ । ३५ ॥

टी० । रामनृपपाँयधरे भूपमुख उत्तर न कढ़ेउनृपदशरथ महाराजके पाँय पकरि रघुनाथ आज्ञामांगे परन्तु महाराजके मुखते उत्तरु कछु न निसरि सकेउ तबमातु कैकेयी कुमतिवाली कठोर हृदयहै जाको ताने कटु कुवचन मुसक्यायकैकहत भाव तुमधर्म्म राखाचहौतौ बनकोजाउ राजा धर्म्म त्यागेहैं ताते खिनके ऐसेबिलाप करतेहैं तौ ये तुमको बनजानेको न कहैंगे कुमति यातेकहे जो प्रीतिमें बिरोधमाने तथा रघुनन्दन ऐसेसुपुत्रकोबनको पठवत अरु महाराजके प्राणजाते हैं ताहूपर मुसक्यात ताते कठोरहृदय है पुनः पतिको अनादर ताते कुबचनहै अरु रघुनन्दनको बनगवन किसी को नहींसुहात सोई कहत ताते कटुबचनहै १ कुमतिकठोर मातुतौ कटुक वचन मुसक्यायकै कहत अरु राजादशरथ रघुनन्दन को हृदय में लगाये हैं ते छोड़तनहीं तब रघुनाथजी प्रबोधकरि आपु धर्म्मवन्तहै मेरे धर्म्म में क्योंबाधक होतेहौ भाव मैं काहूभांति नहींरुकिसक्तहौं इत्यादि समुझाय पुनः शिरनाय प्रणामकरि बिपिन समाज बन जाबेकी साजसजे २ बन समाजवल्कलादि बसनसाजि प्रसन्नमुख सुखप्रेमसहित जाय मातुकौशल्याके पदगहे प्रणामकीन्हे अरु इहां रघुनाथजी के चलतसमय महाराज के मुखते उत्तर कछु न कढ़्यो जवाबतौ कछु न देसके परन्तु बियोग दुखते बिकल है भूमिपै गिरे ३ । ३५ ॥

मू० । मातुगोदमोदतिभरे कहतिवचनआनंद । काल्हितिलक नृपसुखसज्यो कितिकबारसुखबृंद १ कितिकबारसुखबृंद लाभलोचनसबलूटी । सिंहासनसियसहित निरखिरविशतद्युतिछूटी २ रविशतद्युतिछूटीअवधि मधुरलालभोजन धरे । न्हायखाउबड़बारभो मातुगोदमोदतिभरे ३ । ३६ ॥

टी० । मातुकौशल्या रघुनन्दनको गोदभरे मोदति मनमें आनन्दित हैं पुनः आनन्दमय बचनकहत हेपुत्र काल्हिनृप अवधेश महाराज तुम्हारे तिलकहेतु सुखसाज सज्यो सो सुखवृन्द कितिकबार अर्थात् जाको देखि सबके समूह सुखहोई सो लग्न कौनसमय में है भाव आजु कौन समय तुम्हारा राज्याभिषेक होइगो १ सुखको वृन्दसमूह लाभसो लोचन नेत्रन द्वारा सब पुरबासी लूटी सो घरी केतनीवार है अर्थात् कौनवार राज्याभिषेक को आनन्दको उत्सव सब नेत्रन भरिदेखैंगे जासमय जानकीसहित भूषण बसन सजि तुम सिंहासनपर आसीनह्वैहौ तबरविशत द्युतिछूटी अर्थात् सौसूर्य्यकैसी प्रकाश तनतेप्रकटह्वै सर्वत्र फैलिजाई तासमय निरखि सबशोभा लूटैंगे २ शतरविद्युति वा समयमें छूटी सो अयोध्याभरे में प्रकाशित रही पुनः हेलालमधुर भोजनधरे हैं सो न्हायखाउ बड़बारभै बड़ी देर ह्वैचुकी अबशीघ्र स्नानकरि भोजनकरौ इत्यादि मोदसहित गोदमें भरे माता कौशल्याजी कहती हैं ३। ३६ ॥

मू० । राजविपिनकोम्वहिंदयो जहांमोरबड़काज । राउरचरणप्रतापते कुशलआइहौंसाज १ कुशलआइहौंसाज मातुआशिषम्वहिंदीजै। जातदिवसनांहिंबार हर्षिमनआयसुकीजै २ आयसुकीजैहर्षिकै मातुचरणप्रभुशिरनयो । कहमृदुदुहुकरजोरिकै राजविपिनकोम्वहिंदयो ३ । ३७ ॥

टी० । जबकौशल्याजी राजतिलक की घरीपूछे तापर रघुनाथजीकहत हे मातु अबतो पितामोहिं बिपिनबन को राजदियो है जहां मुनि मिलन तीर्थबास देव दर्शनादि मेरा भी बड़ाकाज है भाव बनबास में मोको कछु दुख न बिचारिये पुनः राउरचरण आपु के पदकमल प्रतापते सब उत्तम साज समाज सहित कुशल सहित वरको लौटिआयहौं १ साजसहित

कुशल पूर्ब्बक आयहौं ताते हे मातु अबमोहिं आशीर्बाददीजै अरु दिवस जात बारनहीं लागत अर्थात् चौदहैबर्षकी अवधिहैसो बीतिजात जानिन परैगो ऐसा बिचारि हर्षि प्रसन्नतासहित आयसुकीजै बनजाने की आज्ञा करिये २ हर्षि आयसुकीजै ऐसा कहि मातु चरण प्रभु शिरनयो माताके पाँयनको प्रणामकरि पुनः रघुनाथ जी दुहुकरजोरि मृदुकह दोऊ हाथ जोरि कोमल बचनतेकहे कि मोकोतौ अबपिता बनकी राज्यदिये ताते आपहू आज्ञादीजै ३ । ३७ ॥

मू० । सहमिसुखानीसुनिवचन सियाधरेपगआय । रामबुझाई जानकी विपिनविपतिसबगाय १ विपिनविपतिसबगाय सुनतलक्ष्मणउठिधाये । कहिकहिविविधप्रकार लषणसि यप्रभुसमुझाये २ समुझायेप्रथमहिसिया करिविवेकबन प्रियसदन । उत्तरकछुकनसियदयो सहमिसुखानीसुनि वचन ३ । ३८ ॥

टी० । रघुनन्दनके बचन सुनि कौशल्याजी सहमि सुखानी अर्थात् प्राणघात सरीखे दुखते देह चेष्टारूखी परिगई धर्म में बाधाजानि कछु कहिनसकीं ताहीसमय आय सीयपगधरी जानकीजी सासुके पांयगहे भाव प्राणनाथके साथ जानेहेतु मोको भी आज्ञादीजै सो देखि बिपिन बिपति सबगाय रामजानकी को बुझाई अर्थात् वर्षा हिमि आतप सहन नाँगेपाँये संकट कंकर भूमि चलन फल भोजन भूमि शयन व्याघ्र राक्षसादिकी भय इत्यादि बनकी सब बिपति बखानकरि रघुनन्दन जानकी जीको समुझाये भाव तुम बनको नचलौ १ जानकीजी प्रति बनकी सब विपति गावतैरहैं ताही समय बनगवनको हाल सुनतही लक्ष्मणजीउठि धायेआय हाथजोरि खड़े भये तब बिबिध अनेक प्रकारके बचन यथा लौकिक धर्म सहित घरकोसुख तथा बनकोदुख इत्यादिकहि लषणसीय दोउनको प्रभु समुझाये २ प्रथमै श्रीजानकी जी को समुझाये भावबन में महाबिपत्ति तहां न जाउ मेरे कहेते सुख पूर्बक घरमेंरहौ सासु श्वशुर की सेवाकरौ इत्यादि सुनि किशोरीजी बिबेककरि देखे तब सदन जो घर ताते बनप्रिय लाग अर्थात् बिचार कीन्हेते बिनापति को घर दुखदायक

परन्तु बिबेककरि मोहिं त्यागिये भाव प्राणरहते देखिये तौ त्यागिजाइये वा प्राण राखनो न चाहिये इति बिचारकरि त्यागिये ३ । ४० ॥

मू० । प्रभुमुखपरनहिंप्रण करौंउत्तरदीन्हेपाप । तजौतौकहाबसा
यपियसमुझिबिचारियआप १ समुझिबिचारियआपप्राण
तनत्यागिनिवारौं । प्रभुसंगजाइहधायदेहघरराखियडारौं २
राखियडारौंदेहघरबहुतकहतपातकडरौं । सत्यमंत्रमनदृ
ढ़धरयोंप्रभुमुखपरनहिंप्रणकरौं ३ ॥ ४१

टी० । आपक बचनको उत्तरदीन्हे मोकोपाप है ताते हे प्रभु आपुके मुखपर मैं प्रणनहीं करौंगी अर्थात् घरमें रहने को सुख सासु श्वशुर की सेवा इत्यादि सामान्यधर्म्म यावत् बचन आपुने कहे तिनको जोमैं पति-व्रत धर्म्म वेदशास्त्र प्रमाणते उत्तरदै आपुके बचन खण्डन करिदेउँ तौ मोको बड़ापापलागै काहेते जिसधर्म्मके बलते मैं प्रत्युत्तरकरौं तौ आपुको उत्तर देनेमात्रही ते पतिव्रत धर्म्मैं निर्मूलनाश होता है काहेते जो स्त्री क्रोधबश प्रौढ़ताकरि पति सों प्रत्युत्तर करती है ताही पापते निषिद्ध पशु योनिमें जन्मपावती है यथा ॥ शिवपुराणे ॥ उक्काप्रत्युत्तरंदद्यात् यानारी क्रोधतत्परा । शरभाजायतेग्रामे शृगालीनिर्ज्जनेवने ॥ इत्यादि बिचारि हे प्रभु आपुके मुखपर सन्मुख मैं अपना प्रण नहीं प्रकट कहिसक्ती हौं काहेते जो कुछुबात पूंछौ ताको मीठे बचनते उत्तरदेना उचितहै अरु जो आज्ञादेउ ताको मानिलेना उचित है ताते जो कहौ सोई करौं परन्तु हे पिय आपु समुझि बिचारिये अर्थात् जो कुछु करिबेयोग्य होय सो बिचार करि समुझिकैकार्य कीजिये अरु जो तजौ तौ कहाबसाय अर्थात् जो बिचार कुछु न करौ केवल मोको त्यागिकै चलेजाउ तौ मेराक्या अख्त्यार है १ तातेआपु समुझिबिचारि कार्यकीजिये केवल त्यागिकै न चलेजाइये नातरु तनत्यागि प्राणनिवारौं अर्थात् पयानके साथही आपनी देहत्यागि प्राण दूरिकरिदेउँ तेतौ प्रभुसंग धायजायहैं अरु देहघरराखियडारौं अर्थात् बियोग दुखके आगे देहको सुख यथा निरुज सुखपूर्बक जीवन तथा घरको सुख परिवारको सन्मान भोजन बसन इत्यादि पर धूरिडारि प्राण आपुके संग-ही चलेजायँगे २ जो आप सुखबतावते हौ त्याहिदेह घरपर तौ मैं राख डारिहौं अरु बहुतकहत पातकडरौं आपुसों बहुतीबातैं करतमें पापहोनेको

डराती हौं ताते सत्यमंत्र दृढउरधस्यो अर्थात् वियोगहोतही प्राणत्यागि देना इति सत्यमंत्र सोतो पुष्टकरि मनमें धारणकिहेहौं परंतु प्रभुके मुख पर नहीं प्रणकरतिहौं ३ । ४१ ॥

मू० । तुमलक्ष्मणमानौकही रामसिखावनदेत । मातपितापुरशोचसब नाशहुबसौनिकेत १ नाशहुविघ्नअनेक अवधपुर भरतहुनाहीं । भूपवृद्धनरनारि दुखितममदुखमनमाहीं २ दुखमनकोदूषणतजौ मानिमंत्रराखौसही । दूषणदेइहिमोहिंनर तुमलक्ष्मणमानौकही ३ । ४२ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी सिखावनदेते हैं कि हेलक्ष्मण तुमतौ मेरीकही बातमानौ भाव जो जानकी नहीं मानतीहैं तौ पतिकोसंयोग सेवनै स्त्रिनको मुख्यधर्महै पुनः इनते पुरको तथा राजकाजभी कछु नहींह्वैसकाहै अरु तुम सबकार्य करिसक्ते हौ पुनः मेरे आज्ञापाल बंधुहौ ताते जो मैं कहौं सोमानौ क्यामानौ निकेत जो घर तामेंबसौ अरु माता कौशल्यादि पिता दशरथ महाराज तथा पुरबासी जन इत्यादिको जो शोच मेरे वियोगको पश्चात्ताप सो सबनाशहु सबको समुझाय धीर्यदीन्हेउ १ पुनः चौर ठग अन्यायकर्ता शत्रुघात इत्यादि अनेकविघ्न राज्यमेंहोते हैं तिनको नाशहु संभारसहित राजकाज देखहु काहेते अवधपुरमें भरतौ नहीं हैं अरु भूप दशरथ महाराज ते वृद्ध अरु मेरे वियोगते विकल तथा पुरके नरनारीभी सबै दुखितहैं काहेते ममदुख मेरे बियोगकोदुख सबकेमनमेंहै तिनाकिसीको कुछ कियानहोइगो ताते राजधानी सूनी न करनाचाहिये इसहेतु अवश्यरहौ २ पुनः दुखमनको दूषणतजौ अर्थात् मेरे वियोगको जो दुख तुम्हारे मनमेंहै सो नीति धर्मते दूषण है अर्थात् शून्यराज्य छोड़ि जो मेरे संग चलेजाउगे इहां प्रजनको दंडादि जोकछु राजकाज बिगरिजायगो ताकोपाप तुमकोहोइगो इसहेतु वियोग दुख मनमें न राखौ मेराकहा मंत्रसही सांचामानि जो कहौं सोइकरौ काहेते मोहिं नर दूषण देइहि अर्थात् जो मैं तुमको साथलैजाउँ तौ लोग मोको दोषलगावहिंगे ताते हेलक्ष्मण तुम मेरी कहीबातमानहु घरमें रहौ ३ । ४२ ॥

मू० । प्रभुवनमेंहौंघररहौं आयसुतज्योनजाय । प्राणबायुममबशनहीं देहकहौतहँजाय १ देहकहौतहँजाय भारयहकापर

डारौ। मैंसेवकशिशुकुमति चरणरजसेवनवारौ २ सेवन वारौरजचरण धर्मनीतिमगकिमिलहौं। अवधकाजमेरोक हा प्रभुवनमेंहौंघररहौं ३। ४३॥

टी०। आयसु तज्यो नहींजात परंतु प्रभुतौबन में अरु हौं घरमेंरहौं लक्ष्मणजी कहत हेप्रभु आपुकी आज्ञातौ त्यागि नहींजात जो कहौ सोई करौं परंतु यहौतौ अनुचितहै कि स्वामीहैकै आपुतौ बनमें बासकरौ अरु सेवकह्वै मैं घरमेंरहौं सुखभोगकरौं यहयद्यापि शोभानहीं परंतु आज्ञा अवश्यकीनचाहौं सो देहको जहांकहौ तहांजाय परंतु प्राणबायु ममबशनहीं अर्थात् देहतौ आज्ञानुकूल घरमेंरही परंतु प्राणपवन मेरे बशमें नहीं जो राखिसकौं भाव प्राण आपहीके साथ चलेजायँगे १ प्राणतौ आपुकेसाथही जैहैं देहको जहांकहौ तहांजाय परंतु यह राजकाजको भार कापरडार तेहौ भाव यहभार उठावबेयोग्य मैं नहीं हौं काहेते राजकाजको भारतौ राजा नीति धर्मवंत सुबुद्धी उठाइसकै हैं अरु मैं आपुके चरणरजको सेवनवारौ शिशु कुमति सेवकहौं अर्थात् बाल निर्बुद्धी आपुको सेवकहौं २ एकतौ निर्बुद्धी दूसरे बालक तीसरे आपुके चरणरजको सेवनवारो सेवक तौ धर्म नीतिमग किमिलहौं नीतिपूर्वक धर्मको मार्ग मैं कहांपैहौं जापर आरूढ़ है ताहीराह औरेन को चलाइहौं ताते यहकाज मेरेयोग्य नहीं है तौ अवधकाज मेरोकहा अयोध्याजीमें मेरा रहनेको क्याकाम है कछु भी नहींतो आपु स्वामी बनकोजाउ मैं सेवक घरमें कैसेरहौं ३। ४३॥

मू०। मातुचरणरघुवरनयेबिदामाँगिकरजोरि। अश्रुधारधाईधरणिमाताकहतिबहोरि १ माताकहतिबहोरिकिठिनउरफाटत नाहीं। ठाढ़ीदेखतनयन रामसुतकाननजाहीं २ काननजाहुबिशेषिकैसबकेसुखसुकृतिगये। भेटिलायउरयहकह्यो मातुचरणरघुबरनये ३। ४४॥

टी०। करजोरि बिदामांगि मातुचरण रघुवरनये श्री रघुनाथजी मातु कौशल्याके पाँयनको शीशनवाय प्रणामकरि पुनः हाथजोरि बनजानेहेतुबिदामांगे तबमाता बहोरिकहत अश्रुधारा धरणिभूमिकोधाई अर्थात् कौशल्या

जी पुनः कछुबचन कहनेलगी ता समय ऐसाकरुण प्रेमउमगा कि नेत्रन ते अश्रु जलकी ऐसी धाराबही जो तनपर बसन फोरिआइ भूमि पर गिरी १ माता क्या बहोरि कहती हैं कि कठिनउर मेरी छातीऐसी कठोरहै कि ऐसेहू समयपाय फाटि नहींजाती है काहेते रामसुत काननजाहीं सो ठाढ़ीनयनन देखत रघुनन्दन ऐसे उत्तम पुत्र बनबास को जातेहैं तिनकी मातामें ऐसीनिठुरहौं कि ठाढ़ि नेत्रनते देखतीहौं इसीसमय छातीफाटि जानाचाहियत रहै २ काननजाहु बिशेषिकै अर्थात् हे पुत्र जो माता पिता की आज्ञापालन उत्तम धर्म्म ब्रत धारणकिहेउ तामेंबाधा करना अधर्मिन को कामहै अरु धर्म्मवन्त सहायकरतेहैं इसहेतु मैंकहतीहौं कि जो घरीभरे में जानाहोइ तौ इसीक्षणजाउ परन्तु सबके सुकृत गये अर्थात् महाराज अरुमैं तथा परिवार पुरजन इत्यादि पूर्व बड़ी पुण्यकीन्हे ताते आपु की प्राप्तिभई अब सब की पुण्याय चुकिगई ताते तुम्हारा बियोगभया इत्यादि जब रघुनाथजी माता के पाँयन को प्रणामकीन्हे तब कौशल्याजी उर में छाती में लगाय भेंटि यह पूर्ववत् बचनकहे ३ । ४४ ॥

मू० । गुरुपाँयनपुरसौंपिकै लीनलषणसियसाथ । चलेभूपमंदिरजहां बिदाहेतुरघुनाथ १ बिदाहेतुरघुनाथ रायउठिहृदय लगाये । नयनधारअन्हवाय रामबहुबिधिसमुझाये २ समुझायेनृपरामबहु सियाप्रेमउरतोपिकै । लषणभेंटिभूपति गिरयो रामचलेगुरुसौंपिकै ३ । ४५ ॥

टी० । पुरसौंपिकै गुरु पाँयनपरि इतिशेषः अर्थात् अवधपुर को सब कार्यको संभारसौंपि भाव यावत् भरत न आवैं तावत् सबबात के रक्षक आपही हौ इत्यादिकहि पुनः गुरुबशिष्ठजी के पाँयनपरि प्रणाम करिकै लषण सिय साथलीन पुनः जहां मन्दिरमें भूपदशरथ महाराज हैं तहां को बिदाहोनेहेतु रघुनाथजीचले १ जब बिदाहेतु रघुनाथजी आये तब राय दशरथ उठिकै रघुनन्दन को हृदय में लगायलीन्हे नयनधार अन्हवाय करुणाबशते नेत्रनते आँशुन की धारबही स्यहिकरिकै रघुनाथजी भीजिगये पुनः घरमें रहने हेतु रघुनन्दन को बहुत बिधिते समुझाये अर्थात् सबसभा के बीचमें मैंतुमको राज्यदेने को कहिचुका सोतौ राज्यतुम्हारी हैचुकी अबमेरे राज्यकहां है जो कैकेयी के बचनपूरेकरौं इसहेतु यहबचन त्यागि पूर्वको मेराबचन प्रमाणकरि आपन राज्याभिषेक करायलेउ इत्यादि २ इसी

भाँति नृपदशरथ महाराज रघुनन्दनको बहुत समुझाये तथा उरप्रेमतोपि सियाको समुझाये उरते समूह प्रेमप्रकट दर्शाय घरमें रहिजाने हेतु जानकीजी को बहुत समुझाये जब न रघुनाथैजीमाने न जानकीजीमाने तिन दोऊको भेंटि पुनः लक्ष्मणको भेंटि मूर्च्छितह्वै भूपदशरथजी भूमिपै गिरयो तबमहाराजौ को गुरुबशिष्ठको सौंपि भावपिताकी खबरिराख्यो ऐसाकहि रघुनाथजी बनकोचले ३। ४५॥

मू०। करिप्रणामरघुपतिचले त्यागिअवधसुखमूल। सबकोसार सँभारकरिमेटिमोहमयशूल १ मेटिमोहमयशूल लोगसब व्याकुलभागे। रामबिरहकीआगि नारिनरउठिसँगलागे२ सँगउठिलागेनारिनर कालकर्मगुणदलदले। शिरधरिरानि बखानिकटु करिप्रणामरघुपतिचले ३। ४६॥

टी०। सुखमूल लौकिक पारलौकिक सबसुखन की जर अयोध्याजी ताकोत्यागि पिताको प्रणामकरि रघुनाथजीचले कौनभाँति मोहमय शूल मेटि सबको सारसँभारकरि अर्थात् मोहममता करि जो सबको बियोगते दुखरहा ताहेतु बिबेकमय वचनकहि सबको धीरजदिये पुनः भोजन बसनादि सबकी जीविका की सुधिराखना इत्यादि सबको सारको सँभार करि कामदारनको सौंपि १ मेटिमोहमय शूल अर्थात् रघुनाथजीतौ अपने बियोग दुखको मोहमय शूल बिचारि ताके मिटावने हेतु बिबेकमय बचन कहि धीरजदीन्हे भाव देह सम्बन्धको सनेह सोईमोह दुखदायक है याको त्यागि सत्यसारगहौ इसीउपदेशते लोगन धनधाम स्त्री पुत्रादिमें जो सनेह रहा सोई मोहमय शूलजानि ताहीकोमेटि भाव देह सम्बन्धिन को सनेह त्यागि पुनः सत्यसार रामरूपकी प्राप्ती तामें बियोगहोत सो न सहिसके तौ व्याकुल ह्वै घरबार छोड़ि सबभागे काहेते रामवियोग जनित बिरहरूप अग्नि सहिनसके ताते पुरकेनरनारि सबउठि संगलागे रघुनंदनके साथही चले २ काहेते नारिनर प्रभुकेसंग लागे काल कर्म गुणदल दले अर्थात् अयोध्याजी में आपत्काल आया ताहसिमय सबके कुत्सितकर्म उदय भये तिनकी संधिपाय तीनिहूं गुण प्रबलपरे यथा रामराज्यसुनि पुरजन सतोगुणी रजोगुणबश महाआनंद रहे जब कैकेयीमें रजोगुणचाहते तमोगुण उदयभया ताहीते सबउपद्रव है जब हितकी हानिदेखे तब कैकेयीपर सबै तमोगुणकरे इत्यादि काल कर्म गुणनके दल अनेकभांति के अनर्थ

तिनकारिकै दले सब मर्दितभये ताको दूषण भार रानी कैकेयीके शिरधरि ताहीकोकटुबखानि बहुभांति कुवचनकहिभाव कुटिल कुमतिवंशकी कुठारी जो सबकोदुखदै आपु सुखीरहाचाहत तौ हमलोग इसपुरैमें नरहैंगे इत्यादि कहि जासमय प्रणामकरि रघुनाथजी चले तबै पुरबासी संगलागे ३।४६ ॥

मू० । भूपबुलायसुमंतको सिखदैदयोपठाय । सुनतसचिवआतुर
चल्यो स्यंदनतुरतबनाय १ स्यंदनतुरतबनाय बिनयकरि
रामचढ़ाये । तमसातीरनिवास प्रथमदिनरघुपतिआये २
प्रथमलोगतजिप्रभुउठे सचिवसाधिरथतंतको । गयेराम
जियजानिसब संगबुलायसुमंतको ३ । ४७ ॥

टी० । जब रघुनाथजी चले तब भूप दशरथ महाराज सुमंतको बुलाय सिखावनदै रघुनंदनके पासको पठैदये अर्थात् रथचढ़ाय लैजाउ बन देखाय गंगास्नानकराय चारिदिनमें लौटारिलायो इत्यादि सिखायपठाये सुनत सचिव आतुरचल्यो महाराजकी आज्ञा सुनतही सुमंत शीघ्रही चले तुरतही स्यंदनबनाये घोड़ानाहि रथसाजे १ तुरतही स्यंदनबनाय निकटलैजाय बिनतीकरि रामचढ़ाये लषण जानकीसहित रघुनाथजीको सवारकराये चले प्रथमदिनआय रघुनाथजी पुरते षट्कोशपर तमसानदीके तीर निवासकिये रातिबासकीन्हे २ प्रथम लोगतजि प्रभुउठे अर्थात् दिनभरेके भूखे श्रमित सब जब सोयगये तब अर्द्धरातिको सबलोगनको त्यागि लषण जानकीसहित रघुनाथजीउठे रथपर सवारह्वै सुमंतसों कहे कि ऐसी युक्तिसों हांकौ जामें पुरजन न जानिपावैं सोसुनि सचिव रथतंतको साधि अर्थात् घोड़ेनकीबागै थांभि धीरातेचलाय जब दूरिगये तब बेगते हांकिदिये जब सबलोगजागे शून्यदेखे तब जीवते जानिलिये कि सुमंत को बुलाय संगलै रघुनाथजी बनको चलेगये इति निराश ह्वै लौटिआये ३ । ४७ ॥

मू० । रामबिरहदावाअनल भयोअवधबनघोर । पुरबासीखगमृ
गभयेरहैंसुखीसबठौर १ रहैंसुखीसबठौरकैकयीभईकिराती।
ज्वालबईचहुँओर जरतिनिशिदिनतनछाती २ अवधिमे
घकीआशउर रहिनसकततपकठिनथल । सोउपायव्रतज
पसुहृद रामबिरहदावाअनल ३ । ४८ ॥

टी० । अवध बनमें रामविरह दावाअनल घोरभयो अवधपुररूप बन में रघुनाथजी के वियोगते जनित विरहरूप दावाअग्नि भयंकर उत्पन्न भयो काहेते पुरबासीजन सबठौर आपनेघरनमें सुखीरहैं तेई खग पक्षी तथा मृगादिभये १ तेई पुरजन खग मृगवत् सबठौर सुखीरहैं तहां कैकेयी किरातिनिभई काहेते ज्वालबई चहुंओर अर्थात् रघुनंदनको बनबास नहींदिया मानौ अयोध्याजीमें चारिहूओरते कराल अग्निके ज्वाला अंकुरितकरिदिया ताहीकी आंचमें निशिदिन तन छाती जरत रातिउदिन सबकेतन जरत ताहूमें छाती अधिकजरत २ तहां अवधि मेघकी आशते उर नहीं रहिसकत अर्थात् चौदहबर्षबादि पुनः रघुनाथजी मिलिहैं इत्यादि वादेकी बिश्वास सोई मेघहै ताप्रभु मिलनकीआशा सोजलवृष्टि होनहार यद्यपि है परंतु थलमें तपकठिनहै ताते उर रहिनहीं सकत अर्थात् अयोध्याथलमें विरहकी ऐसीप्रचंड तपनिहै तासों हृदय जरिजानेते बचि नहींसकत सोई तन बचिबेको उपाय चांद्रायणादि व्रत मंत्र जपादि करते हैं काहेते सुहृद मित्र रघुनंदनको विरह दावानल है ३ । ४८ ॥

मू० । रामगयेसुरसरिनिकट केवटपरमहुलास । वचनसुमंतबुलायकै बोलेरामप्रकास १ बोलेरामप्रकाश तातअबअवध सिधावै । पितुपदगहिममओर कुशलसबबिधिसमुझावै २ समुझायेकहिकोटिबिधि तदपिपरयोसंकटबिकट । चलेक मैंबशसचिवपुर रामगयेसुरसरिनिकट ३ । ४९ ॥

टी० । सुरसरि निकट रामगये केवट परम हुलास सुरसरि जो गंगाजी ताके निकट जब रघुनाथजीगये प्रभुकोदेखि केवटके उरमें परमआनंद उमगो भाव अब मैं कृतार्थ होउँगो तबरघुनाथजी सुमन्तको आपने निकट बुलाय प्रकाशबचनबोले अर्थात् जो वचनमें अभिप्राय छिपीहोइ सो परछिन्न बचनहै अरु जहां अभिप्राय प्रसिद्धहोइ ताकोप्रकाश बचनकही सो साफखुले बचनकहे १ क्या प्रकाशबचन रघुनाथजीबोले हे तात सुमन्त अबअवध सिधावौ अर्थात् बिनचौदहबर्ष पूरेभये हमतौ घरको जायँगेनहीं अरु भरत घरमें नहीं महाराज दुखित राजकाज कौन सँभारैगो ताते रथ लैकै आपुशीघ्रही अयोध्याजीको जाउ अरु ममभेरी ओरते पिताकेपदगहि पाँयपकरि बहुबिधि कुशल समुझायो भाव मैं बनमें खुसीहौं किसीबातकी चिंता न करिहैं इत्यादि मेरी ओरतेकहि तुमअनेक भाँति समुझाय धीरज

करायउ २ यद्यपि कोटिन बिधि समुझाये तदपि बिकट संकट परयो श्री रघुनाथजी धर्म्म नीतिमय करोरिन भांतिके उपदेश बचनकहि बहुतसमुझायेतदपि रघुनन्दनको छांडिअकेले अयोध्याजीकोलौटतमेंसुमन्तकोमहा कठिन संकटपरयो न चलिसके आज्ञामानिथँभे कर्म्मबश महादुखितसचिव सुमन्त अवधपुरको चले अरु रामगये सुरसरि निकट पारउतरिबे हेतु रघुनन्दन गंगातटगये ३ । ४९ ॥

मू० । माँगीनाउनिहारिकैरामकहेमृदुबैन । सुनतबातकेवटकहै
सुनियेराजिवनैन १ सुनियेराजिवनैनरावरीपदरजखोंटी ।
मानुषउड़िउड़िजातकाठकीगतिहैछोटी २ गतिहैछोटीमो
रिप्रभुबातकहौंडरडारिकै । रजमानुषकरमूरिकछुमागहु
नाउनिहारिकै ३ । ५० ॥

टी० । निहारिकै राम मृदुबयन कहे नाउमाँगी केवटकी दिशिदेखिकै रघुनाथजी कोमल बचनकहि नाउमांगै भाव हे भैया केवटहमको पारउतारिबेहेतु किनारे नाउलावौ सो सुनि केवटकहत हे राजिवनयन भाव कृपारूप मकरन्दभरे कमलसम आपुके नेत्रहैं सोई कृपादृष्टि मेरे बचन सुनिये १ क्या राजिवनयन सुनिये रावरी पदरजखोंटी आपुके पाँयनकी धूरिखोटी अर्थात् परहानि करनहारीहै काहेते जाके छुवतसंते जो मनुष्य उडिउड़ि जातेहैं जे सबल कठोर पाषाण रूपतेरहे तौ काठकी गतिछोटी है भाव सूखाकाठ हलुका तथा जलमें रहे कोमल ह्वैरहाहै ताके उड़िजाने में कौनबिलम्बहोइगी २ पुनः हेप्रभु मोरिगतिछोटी मेरीजीविका थोरिही है ताते डरडारि आपुको डरत्यागि अभयह्वै साँचीबात कहतहौं रजमानुष करमूरि आपुके पाँयनकी धूरिनहीं है पाषाण काष्ठादि अन्यबस्तुनको मनुष्यकरिदेनहारी कछुमूरिहै ताकेछुइगये नाउकैसे रहिसकी इत्यादि निहारिकै भावमेरी यही ते जीविकाहै सो बिचारि देखिकै तबनाउ मांगौ भाव जामें मेरी हानि न होवै ३ । ५० ॥

मू० । तरनिहोयमुनिकीघरनिमरैसकलपरिवार । कोटिकरौबानन
नछरौंकहौंबचनशतबार १ कहौंबचनशतबारनाउनाहिं
तुम्हैंछुवाऊं । अपनेकुलकीहानिहोयजोतुम्हैंचढ़ाऊं २

तुम्हैंचढ़ाऊंनाथजबचरणप्रक्षालौंनिजकरनि । बिनधोये नचढ़ायहौंतरनिहोयमुनिकीघरनि ३ । ५१ ॥

टी० । क्यामेरीहानिहै कितरनिनाउ मुनिघरनिहोय आपुकेपाँयनकी रज लागे जो मेरीनाउभी मुनिकी स्त्री हैजाय तौ सकल परिवारैमरै नाउखोय गये विनाजीविका भूखते मेरासब परिवारै मरिजाय यहहानि बिचारि जो आपु शतसौबार आनै कोकहौ तथा बान न छरौ बाननते मोको मारौ इत्यादि कोटिन उपाय करौ तवहूंमैं आपनी हानि न करिहौं १ जो सौ बारकहौ तबहूं आपुको नाउ न छुवैहौं काहेते जो तुम्हैं चढ़ावौं तौ आपने मेरे कुलकी हानिहोय अर्थात् आपुके पदछुवतही रजके प्रभावते नाउतौ मुनिपत्नीह्वै उड़िजाय तौ मेरेपरिवारकी जीविकाकी हानिहोय इसहेतु कि- सीभाँति नाउपर न चढ़ायहौं जबतक पाँयनमें धूरिलागिरही २ हे नाथ जब निज करनि चरण प्रछालौं अर्थात् आपने हाथन आपुके पाँय धोयडा- रौं रज न लागि रहिजाय तब आपुको नाउपर चढ़ाऊं अरु बिनापाँय धोये नाउपर न चढ़ायहौं काहेते रजलागिजाय तौ मेरीतरनि नाउसोऊ मुनि घरनि मुनिकी स्त्री ह्वैजायगी ३ । ५१ ॥

मू० । चरणप्रक्षालबिलंबकहरामकह्योमुसक्याय । पानीआन्यो दुहुंकरनिधरयोकठौताआय १ धरयोकठौताआयपाँयपु निधोवनलाग्यो । देवनबर्षैफूलकहतयहिसमकोभाग्यो २ यहिसमबड़भागीकहाशिवविरंचिपदकमलचह । धन्यध न्यकहिसकलसुरचरणप्रक्षालकुटुंबसह ३ । ५२ ॥

टी० । प्रेम परमार्थयुत अटपटी बाणीसुनि श्रीरघुनाथजी मुसक्यायकै कह्यो कि चरणप्रछाल बिलंबकह अर्थात् शीघ्रपाँयधोउ विलंब न करु इति आज्ञापाय केवट पानीभरा कठौता दुहूंहाथन गहिआन्यो आय प्रभुके आगे धरयो १ जलभरा कठौता लैआय आगे धरयो पुनः प्रभुके पाँयधोवन लग्यो ता समय इंद्रादि देवन प्रथमतौ फूलबर्षे पुनः कहत यहि समको भाग्यो यहि केवटके समान बड़ी भाग्यवाला लोकमेंदूसरा कोऊनहींहै २ काहेते केवट बड़ा भाग्यवाला है कि जिन पद कमलनकी शिव ब्रह्मा- दिक चाह करते हैं तिनहूं को प्राप्ती दुर्घट है सोई रघुनाथजी के पद कमलनको कुटुंबसहप्रछालत परिवार सहित केवट धोयरहाहै तौ या-

कसिमान बड़ाभागीकोऊ कहां है इत्यादि कहि सकलसुर सब देवता धन्य धन्य केवट को कहि रहेहैं भाव कुपात्रते सुपात्र ह्वैगया ३ । ५२ ॥

मू० । कीनपारपरिवारकोचरणसुधाजलप्याय । पीछेपारउतारियोनिजकरकोशलराय १ निजकरकोशलरायउतरिसियसहितबहोरी । केवटलीनबुलायलेहुउतराईथोरी २ उतराईथोरीलहौतोहिंभयोश्रमपारको । दीनदेखिम्वहिंदीनबहुपारकीनपरिवारको ३ । ५३ ॥

टी० । पाँय धोय चरणसुधा चरणामृत जल प्याय आपने परिवार भरेको केवटने भवसागरके पारकीन पछि निजकर आपनेहाथ नाउ खेय कोशलरायको भी गंगापार उतारियो १ पारजाय सिय लषण सहित नाउते उतरि बहोरि कोशलराउ निजकर अर्थात् किशोरीजीकी मुद्रिका आपने हाथमेंलैके पुनः केवटको आपने निकट बुलायलीन मुद्रिका दिखाय कहे कि थोरी उतराई लेहु २ काहेते थोरी उतराईलहौ लैलेहु तोहिं पारको श्रमभयो हमको पार उतारनेमें तोको बड़ी परिश्रमपरी इसहेतु उतराईलेहु सो सुनि केवट कहत हे महाराज मोहिं दीन देखि बहुदीन अर्थात् धर्म श्रद्धादि पौरुषहीन दीनजन देखि आपुने मोको बहुत कुछ दीन क्योंकि महापापी अधमजाति सो मेरे परिवारको सहित मोकोभवसागरके पार करि दीन्हेउ तौ मोको क्या चाही ३ । ५३ ॥

मू० । तेपदधोयेआजुमैंशिवबिधियोगकमाहिं । जिनचरणनकोशेषश्रुतिबरणतनिशिदिनजाहिं १ बरणतनिशिदिनजाहिंप्रकटकीन्हीजिनगंगा । अशरणशरणपुनीतपगनिकोबिरदअभंगा २ बिरदअभंगप्रमाणकोधोयेजनकसमाजमैं । सकलसिद्ध सिद्धनदईतेपदधोयेआजमैं ३ । ५४ ॥

टी० । केवट कहत हैं महाराज काहेते आजु मैं बहुत कछु पायों कि आजु मैं ते पदधोये जिनकी प्राप्तिहेतु शिव तथा बिधि ब्रह्मायोगकमाहिं अर्थात् यमनियम आसन प्रत्याहार प्राणायाम ध्यान धारणा समाधि इत्यादि क्रियाकरि जिनपाँयनमें मनथिर करतेहैं पुनः शेषादि कविश्रुतिवेदइत्यादि जिन चरणनको प्रभाव बर्णनकरतसंते निशिदिन जाहिं अर्थात् आदि कालते सदा रातिउदिन बखान करतै बीतततताहूपर अंतनहीं पावते हैं १

शेष श्रुति आदिकनको बर्णनकरत निशिदिनजात तथा जिनचरणन गंगा प्रकट कीनी जो लोक पावन कर्ता हैं पुनः अशरण को शरण पतित पुनीत इति पगनको अभंग बिरद नाशरहित बानाहै अर्थात् जाको शरण राखने वाला कोऊ नहींहै यथा सुग्रीव बिभीषण इत्यादिकनको अभय करि शरणमें राखना पुनःजो धर्म कर्मतेच्युत ऐसे पतित अपावनन को पुनीत पवित्र करत यथा अहल्या दण्डकवन इत्यादि शरण राखनो पु-नीत करनो जिन पदनको बिरदजो बाना सो अभंग कबहूँ मिटता नहीं सदा एकरस बना रहताहै २ सोई पाँयन को जो अभंग बिरदहै ताकी प्रत्यक्ष प्रमाण देखिबेको जनकमहाराज मड़येतर बिवाह समयमें देवता मुनिनकी समाजमें धोये तहां सुर मुनि आदि सबै प्रशंसा पूर्बक जय जय कार करतेरहैं सो सबै सुने पुनः सकल सिद्ध जननको जिन सिद्धि दई अर्थात् जिनकी आराधनाकरि बहुतजन अणिमादिक सिद्धीपाय सिद्धभये जिनके प्रतापते तेई आपुके पदआजु में धोये तौ कौन पदार्थ मोको नहींलाभ भई अर्थात् सबपाय चुका ३ । ५४ ॥

मू० । बिमलभक्तिबरदैचलेरामलषणासियसंग । बनगिरिसरिस
रग्रामपुरदेखतमृगजुबिहंग १ देखतमृगजुबिहंगग्रामपुर
निकसहिंजाई । देखिकहहिंनरनारिरामसियसुंदरताई २
रामसियासहअनुजयुत देखिभागतिनकेभले । प्रेमनेम
जपयोगफलबिमलभक्तिबरदैचले ३ । ५५ ॥

टी० । जबकेवटने उतराई नहींलिया तबबिमलभक्ति अर्थात् बासना रहित शुद्ध आपनासनेह इति बिमलभक्ति बरदानदैकै लषण सिय संगलै कै रघुनाथजीचले तहांमारगमें जो बन तथा गिरिजो पहाड सरिनदी सर तड़ाग तथाग्राम छोटागाँउ पुरबड़ागाँउ इत्यादि देखत पुनः मृगजो हिरना पाठा भोरवा पुष्कलकादि खग शुक सारिका कोकिल पारावतादि यावत् पक्षी मृगबिहंग जो मिलत तिनको देखतसंते चलेजात जब ग्राम अथवा पुरके निकटजाय निसरतेहैं तबरामसिय सुन्दरताई देखि नरनारि कहहि अर्थात् मनोहर श्यामगौर रूपनमें सर्बांग सुठौर बनेहैं जिनके ऐसे रघुनं-दन जनकनंदनीकी सुंदरताई देखि गाँवनकी स्त्री तथा पुरुष सब परस्पर बखान पूर्वक वार्ता कहते हैं २ सियासह राम लषण युत देखि तिनकेभाग

भले हैं अर्थात् लक्ष्मण जनकनंदनी सहित श्रीरघुनाथजी को जो कोऊ राहजातमें देखा ताके बडेभाग्य उदयभये अर्थात् वे परमपदके अधिकारी रामानुरागी ह्वै गये काहेते प्रेमनेम सहित जो मंत्र जपयोगाभ्यास त्यहि किन्हे को फल जो बिमल भक्ति शुद्ध रामसनेह सोई बर सब को दै चलेगये ३ । ५५ ॥

मू० । एककहतमुखचन्दसोंभामिनिभावतमोहि । कलाकोशशशिशीतकरसीताकलितसजोहि १ सीताकलितसजोहि श्यामरेखाशशिमाहीं । सियमुखपरलटश्यामसुभगवरणतकविताही २ वरणतकविमृगअंककहियहमृगनयनअनंदसो।तापहरतयहशशिमुखीएककहतमुखचंन्दसो३।५६॥

टी० । ग्रामकीस्त्री पुरुष परस्पर बार्त्ताकरतमें किशोरीजीकी शोभावर्णन करत यथा सखी प्रति एकसखी कहत हेभामिनि मोहिं भावत मुखचंद सो अर्थात् सीताजीको मुख चंदकी समान मोको नीकलागत काहेते शशि जो चंद्रमा सो कलाकोश षोडशकलाको भराखजाना है पुनः शीत कर शीतलता करने वाला है तथा कलितस सुंदरता सहित सीताको जोहिदेखु अर्थात् चंद्रमामें षोड़शकला हैं तामें चौदह प्रसिद्ध अरु दो गुप्त हैं तथा किशोरीजीके मुखमें द्वै ओठ द्वै कपोल द्वै श्रवण द्वै बरुनी द्वै भृकुटी दश ये अरु माथ शीश नासिका ठोढ़ी इति चौदह प्रसिद्ध अरु दंतावलि रसना द्वै गुप्तइति सर्बांग सुंदरि सोई षोड़शौ कला हैं यथाचंद्र शीतकर तथा किशोरीजी को क्षमावंत शीतल स्वभाव है १ पुनः सीता कलितसजोहि जानकीजीकी सुंदरता सहित देखौ शशि माही श्यामरेखा है अर्थात् यथा चंद्रमामें श्याम चिह्न देखि परता है तथा श्रीजानकीजी के मुखपर छूटे बारनकी लट श्याम सुभग सुंदरिहै ताहीको कबि श्याम रेखाकरि बर्णते हैं २ बर्णत कबि मृग अंककहि अर्थात् चंद्रमा को कबि जन मृगांक करि बर्णन करते हैं भाव चन्द्रमा के अकोरामें मृगहै तथा यह मृगनयन अनंदसो अर्थात् मृगके ऐसे याके नेत्रहैं सो सदा आनंद रहत पुनः यह शशिमुखी ताप हरत अर्थात् चंद्रमा एकलौकिक ताप हरत अरु यह चंद्रमुखी दैहिक दैविक भौतिक तीनिहू तापै हरत ताते एककहत याको मुख चंद्रमासमहै ३ । ५६ ॥

मू०। एककहतिमुखकमलसोऔरनपटतरताहि। अरुणसुवासितअतिमृदुलसोसियमुखअवगाहि १ सोसियमुखअवगाहिशीतसुतवहयहसीता। कविवरणतहैंयाहियहिमुखसुयशपुनीता २ सुयशपुनीतादुहुनकोभ्रमरमित्रयुगसुथलसो औरकहाँउपमालगैएककहतिमुखकमलसो ३।५७॥

टी०। एक कहति मुख कमलसो है अर्थात् एकसखी बोली कि तुमते कहत नहींबना काहेते चंद दिनमें मंद घटत बढ़त कलंकी राहुते दुखित रोगयुत ताते चंद्रमा उपमान योग्य नहीं है जानकीजी को मुख कमल समानहै ताहि पटतर ताहि मुखकी समता योग्य और कछु नहीं है काहे ते कमल समहै अरुण सुबासित अति मृदुल अर्थात् यथा कमल अरुण लालरंगको होत तैसेही मुख अरुण यथा कमलमें सुंदरिबास अरु मृदुल कोमलहोत तथामुखीमें सुगंध अति मृदुल है सो सियमुख अवगाहि अर्थात् मुखपर अगाधजल सम शोभाभरी है तामें नेत्रनद्वारा बुद्धिते गोता लगाय नीकी भाँति समुझिदेखु १ सो सियमुख अवगाहन करि नीकी भाँति निहारिदेखु तौ वह शीतको सुतपुत्रहै अर्थात् जलपंकसहित जहाँ शीतलता होतीहै तहांकमल उत्पन्न होताहै तथा यह सीता जो हलताके ठोकरलागेते महीते उत्पन्नभईहै पुनः याहि कमलको यश उत्तमकवि जन वर्णन करत अरु याहि सीता के मुखको सुयश पुनीता सुंदर पावनयश वेद पुराण बखान करत २ इस बिचारते कमल अरु किशोरीजीको मुख दुहुनको पुनीत पवित्रयश है तथा भ्रमरमित्र अर्थात् कमलको सनेही भ्रमर रसलोभी सदा कमलको रसपान करता है तथा इहां रघुनन्दन को मन लोभी भ्रमर है जानकीजीके मुखको शोभारस सदा पान करता है पुनः युग सुथल सो दोउनको वासस्थल सुंदर है अर्थात् कमल सुंदरे तालमें बसत तथा जानकीजी मिथिला अवध सुंदरे स्थानमें बसती हैं इत्यादि योग्यता बिचारि एककहत कि सीता को मुख कमलसोहै और वस्तु ऐसी कहाँहै जो उपमालागिसकै ३।५७॥

मू०। सीतामुखसोमुखकहौ कमलचंद्रसोनाहिं। कमलमंदहैरजनिद्युतिचंदमंददिनमाहिं१ चंदमंददिनमाहिंराहुहिमिशत्रुसदाई। सीतामुखअरिनाहिंलोकतिहुँखोजहुजाई २ लोक

तिहूँमहँबिदितहैघटैबढ़ैनिशिदिनलहौ । कमलचंदपटतर
कहौंसीतामुखसोमुखकहौ ३ । ५८ ॥

टी० । कमलचंद सो नाहिंसीता मुख सो मुखकहौ कमल ऐसो वा चंद्र ऐसो नहीं कहिबो उचित है काहेते चंदकमल में दूषणहै ताते सीता के मुखकी समताको सीतैकोमुखहै दूसरानहीं यहअनन्वयालंकारहै क्या दूषण है कमल रजनि मंद है अर्थात् कमलदिनै भरि प्रफुल्लित प्रकाशमान रहत रातिको मन्दपरत संपुटित ह्वैजात तथा चंद्रमाकीद्युति प्रकाश सो दिनमें मंदह्वैजात १ एकतौ कमलरातिमेंमंद चंद्रदिनमेंमंद पुनः राहु हिमि शत्रुसदाई अर्थात् चंद्रमाको राहुसदा शत्रुबनाहै तथा कमलको हिमि पाला सदाशत्रुबनाहै अरु सीताकेमुखको अरिशत्रु कहौंनहींहैजाय तिहुलो कखोजहु ढूंढ़िदेखहु कहौं न ठहरी २ पुनः चंद्रमा कृष्णपक्ष भरि घटत है शुक्लपक्ष भरि बढ़त है अरु यह निशिदिन लहौ अर्थात् जानकीजीको मुख रातिउ दिन एकरस सदा प्रकाशमान लहौ देखिलेउ ताते कमल अरु चंद्र पटतर समता देबेयोग्य कहांहै ताते सीतामुख सम सीता को मुखै कहौ और नहीं है ३ । ५८ ॥

मू० । एककहैंपुरधन्यहैमातुपितापुनिधन्य । जिनदेखेतेधन्यहैंज
हाँजातधनधन्य १ जहाँजातधनधन्य बिटपगिरिसारिसिर
जेतेखगमृगनिरखतधन्यबसतथलबैठततेते २ बैठततेते
संगहँसिबोलताचितवतधन्यहैं । धन्यपंथवनधन्यहैंहमदे
खतअतिधन्यहैं ३ ॥ ५९ ॥

टी० । एक कहत वह पुर धन्यहै पुनि मातु पिता धन्य अर्थात् चौथी एक उत्तम ग्रामबधू कहतीहै हे सखीजनौ तुम वृथाही बकतीहौ क्षणमात्र यह अपूर्व लाभहै ताते थिरह्वै मनुलगाय नेत्रनभरि देखिलेउ ये अपूर्व अनूपरूप जहां उत्पन्न भये वह अवध जनकपुर धन्य कृतार्थरूपहै पुनः जिनके ये पुत्र पुत्री ह्वै उत्पन्न भये यथा कौशल्या सुमित्रा सुनयना तथा दशरथ जनक इत्यादि धन्य कृतार्थ रूप हैं पुनः सहवासी वा आवत में मगबासी वा पथिक इत्यादि जेजन इनको नेत्रनभरि देखेते धन्यपरम पदके अधिकारी भये पुनः जहां को ये जातेहैं जिस ठौर यहधन पांवधरैंगे वा जे देखैंगे ते सब धन्य कृतार्थ होयँगे १ जहांकोधन यहस्त्रीजात तहां

के बिटप बृक्ष गिरिपर्बत सरिनदीसिर तड़ागइत्यादि जे इनकेअंगमें स्पर्शी दिहोवें सो सब धन्यहोयँगे तथा खग पक्षी मृगादि जे इनको देखतते धन्य हैं पुनः जहांबसत अथवा बैठत तेते सबथलधन्यहैं २ यथाजेजे थलमेंबैठत तेतेधन्यहैं तथाजे इनकेसंगरहैं वा जासों हँसिबोलैं वा जाकीओर चितवत ते सब धन्य जामेंचलत सोपंथधन्यहै जहांबासकरैं सोबनधन्यहै अरु हम जे नेत्रनभरि देखतीहैं तेसब अत्यंतकरिकै धन्य परम कृतार्थभईं ३।५९॥

मू०। रामलषणसीतासहितदेखिप्रभावप्रयाग। न्हायदानदीन्हे
द्विजनप्रीतिसहितअनुराग १ प्रीतिसहितअनुरागदर्शसु
खसबहिनपाये। दुखसुखसबकोदेतआपुऋषिआश्रमआ
ये २ आश्रमआयेसुनतऋषिभरद्वाजआनंदलहित। आ
सनआदरमुनिकरचोरामलषणसीतासहित ३। ६० ॥

टी०। लषण जानकीसहित श्रीरघुनाथजाय प्रयागजीको प्रभावदेखे भाव गंगा यमुना सरस्वती माधव अक्षयवट इत्यादि सब सबल समर्थ हैं तिनको देखि माहात्म्यकहि पुनः प्रीतिपूर्बक स्नानकरि अनुरागसहित द्विजन प्रयागवार ब्राह्मणको दानदीन्हे१ प्रीति अनुरागसहित रघुनाथजी के दर्शनकोसुख सबहिनपाये अर्थात् जहां जोदेखा सोई प्रयागबासी प्रेमानंदके बशभया जाको वियोग ताकोदुख जाकोसंयोग ताकोसुख इति दुख सुख सबकोदेतसंते आपु श्रीरघुनाथजी ऋषिके आश्रमको आये २ सीता लषणसहित रघुनंदन आश्रमको आये ऐसाबचन किसीके मुखते सुनतही ऋषि भरद्वाज आनंद लहित परमानंदपाये प्रभुको प्रणामकरते देखि आशीर्बाददै उरमेंलगाय आसनदै बैठाये पुनः लषण जानकीसहित रघुनंदनको मुनि आदरकरचो अर्थात् प्रीतिपूर्बक स्वागतपूंछि अर्घ पाद्य आचमन कंद मूल फलादि भोजनकराये ३। ६०॥

मू०। रामतुम्हारेदर्शतेयहफलप्रकटदिखात। नेमप्रेमजपयोग
तपतीरथव्रतदुखगात १ तीरथव्रतदुखगातआजुसबसुफ
लहमारे। राउरआगमलहतनयनमुखसुखदनिहारे २ सु
खदनिहारेसुखभयोतीरथराउरपरशते। भयोमोदमंगलप
रमरामतुम्हारेदरशते ३। ६१॥

टी०। अब भरद्वाजस्तुति प्रशंसापूर्बक प्रार्थनाकरतेहैं हेरघुनंदन तुम्हारे

दर्शपायेते यहफल प्रकट देखात कौन फल प्रत्यक्ष देखिपरता है यथा शौच संतोष तप स्वाध्याय ईश्वरप्रति सनेह इत्यादि नियम तथा ईश्वर के गुणबिचारि प्रीतिउमँगि विह्वलहोना इति प्रेम बिधिवत् मंत्रकी जप पुनः आसन प्राणायाम ध्यानादि अष्टांगयोग पंचाग्नि जलशयनादि तप तीर्थाटन चांद्रायणादि व्रत इत्यादि यावत् गात देहको दुखदेना १ तीर्थ व्रतादि यावत् देहको दुखदै आपुकी आराधनाकीन्ह सो हमारे आजु सब सुफलभये अर्थात् सब साधनको सुंदरफल पायगये काहेते राउर आगम लहत आपुके आवतसंते परिपूर्ण लहतनामप्राप्तभया क्याप्राप्तभया सुखद परमसुखको देनहारा आपुकोमुख सोनयननसोंनिहारे इच्छापूर्वकदेखे २ सुखदेनहारा आपुको मुखनिहारेते परमसुखभयो पुनः राउरपरशते आपुके अंगस्पर्शते तीर्थ प्रयाग परमपावनभया पुनः हे रघुनंदन तुम्हारे दर्श भये ते क्षेत्रभरे में परम मंगल प्रसिद्ध उत्सव तथा मोद सबके मन में आनंदभयो ३ । ६१ ॥

मू० । भोरप्रयागनहायकैरामलषणसियसाथ । चलेमनोहरमन
हरनवंदिचरणमुनिनाथ १ वंदिचरणमुनिनाथमदनरति
ऋतुपतिमानौ । ब्रह्मजीवकेमध्यलसतमायाछबिजानौ २मा
याछबिमयदेखिधौंउमाशंभुगणनायकै । चलेकिधौंसुरपति
शचीभोरजयंतलिवायकै ३ । ६२ ॥

टी० । भरद्वाजके आश्रममें रातिभरि बासकीन्हे भोर प्रयागनहाय त्रिबेणीजीमें स्नानकरिकै लषण जानकीको साथलैकै रघुनाथजी मुनिनाथ भरद्वाजके चरणबंदि प्रणामकरि पुनः मगबासिनके मनहरिलेनेहेतु मनोहर अत्यंत सुंदर तीनिहूं स्वरूप चित्रकूटको चले १ मुनिनाथ के चरण बंदि जब प्रयागते आगेचले तब राहमें तीनिहूं स्वरूप कैसे शोभितहोत मानो मदन अरु रति पुनः ऋतुपति हैं अर्थात् तीनिहुंस्वरूप सर्वांगशोभा भरे कैसे देखात ताकी उत्प्रेक्षाकरत कि आगे रघुनाथजी नहीं हैं श्याम सुंदरस्वरूप मदन कामदेव है तथा बीचमें जानकी जी नहीं हैं हेमबरण सुंदर सुकुमार स्वरूप रति कामकी पत्नी है पुनः पीछे लक्ष्मणजी नहीं हैं सुंदर गौरबर्ण शुद्ध पावन मन सर्वांगप्रसन्न ऋतुपति बसंतऋतु है तीनिहूं मूर्तिमान् लोक जननको मनमोहिबेहेतु चलेहैं यह उपमा शृंगाररस मेंकहे ताते नहीं मनभाई काहे इहां मुनिनकैसो वेष शृंगारमें नहींशोभा

देत ताते ऐश्वर्य दर्शाय शांतरसमें अर्थकरत कि जिनको स्वरूप स्वभाव वेष पावन पुनः दर्शमात्रते सुलभ जीवनको उद्धारकरने हेत कैसे मूर्ति मान् चले जाते हैं जानौ ब्रह्मजीवके मध्यमें माया छबिलसत अर्थात् आगे रघुनाथजी मूर्तिमान ब्रह्महैं पाछे लक्ष्मणजी मूर्तिमान् दिव्यजीवहैं तिनके मध्यमें मूर्तिमान् मायाहै सो छबि शोभा देरही है परंतु वेदांत मतते ब्रह्म जीवके मध्यमें माया अशोभित है अरु इहां शोभित कैसे कहे तहां माया तीनि हैं एक अविद्या जो ब्रह्मजीवते अन्तर करावत ताते अशोभित है दूसरी विद्या मायाजीवको ब्रह्मते सम्बन्ध करावत ताते शोभित है पुनः तीसरी माया आह्लादिनी जो जीवके अन्तर ब्रह्मकाप्रकाश करत ताते अति शोभितहोत इत्यादि यथा अविद्या ब्रह्मजीवके बीचमें अशोभित है तथा इहां माधुर्यलीलामें प्राकृत दृष्टि देखेते विशेष उदासी वेषके बीचमें स्त्री अशोभित है अर्थात् वेषकी शोभा नहीं है पुनः ऐश्वर्यलीलामें विवेक दृष्टिते देखे यथा ब्रह्मजीवके बीचमें विद्या माया शोभित है तथा तीनिहूं स्वरूप लोकोद्धार हेत कैसे चलेजात यथा जीव भक्तिके पीछे लाग अरु भक्तिजीवको लिहे ब्रह्मको मिलावने जात सो प्रसिद्ध सबको उपदेशत है पुनः यथा आह्लादिनी ब्रह्मजीवके बीचमें अतिशोभित तथा ऐश्वर्य मा-धुर्य मिश्रितलीलामें सनेह दृष्टिते देखे इहां राम साकेत विहारी जे ब्रह्मा दिकनको प्राप्ती अगमहै तेई प्रभु दयादृष्टिते राजकुमार रूपह्वै पुनः सबको सुलभ प्राप्तहोने हेतु तापस वेषबनाये थोरेही सनेहते सबको उद्धार करने हेतु विचरते हैं यथा प्रेमाभक्ति जीवको सहज सनेहते ब्रह्ममें लगाये हैं इति ब्रह्मजीवके मध्य माया छबिलसत शोभादेरहीहै २ ब्रह्मजीवके मध्य छबिमय मायादेखिये किधौं शंभुगणनायककै मध्य उमाहै अर्थात् ब्रह्मजीव मायाकीभी उपमानहीं मनभाई काहेते शांतरस लोकते उदासीन रहत पुनः ये उपमान परलोकैके कल्याण कर्ता हैं अरु राजकुमारतौ लोक पर-लोक दुहूंदिशिके कल्याण कर्त्ता हैं ताते करुणा रसमें अर्थकरतकि जीवन को दुखित देखि तिनपर करुणाकरि अर्थात् जीवनके दुखते आपहू दुखि-तह्वै उनको दुखशीघ्रही मिटावने हेत शिवगणेशके बीचमें पार्वती हैं तेभू-तलमें विचरतसंते दयादृष्टिते सबकी तीनौ तापैहरत तापस वेषतेदर्शादै उपदेशत भाव विषय त्यागि परलोक साधौ पुनः दर्शनते पापहत किधौं शची इंद्राणी अरु जयंतको संगलिवाय लैकै सुरपति इंद्रभोरहीचले अ-र्थात् करुणा रसमें तौ चेष्टाउदासीन होतीहै इनकी चेष्टातौ प्रसन्नहै पुनः

यह वेषहू अनित्य अर्थात् प्रयोजनमात्र चारिदिन को हैपुनः नरहैगो अरु वीरता वेष नित्यहै सोवर्तमानहै तातेवीररसमें उपमा कहत कि सहायता हेत आपने पुत्रजयंतको संगलिये पुनः पतिव्रता संगरहेते पतिको तेजप्रताप बढ़ताहै इसहेत इंद्राणी को संगलिये इंद्रदुष्टन को बधकरिबे की प्रतिज्ञा करि प्रयागराजमें स्नान बासकरि शुद्धह्वै विषयत्यागि तापसबेषमें वीरवेषकिहे प्रातःकालही शुभ मुहूर्तमें चलेहैं ३ । ६२ ॥

मू० । पंथचरितसियरामकोसबसुखमंगलदाय।रामलषणसियदर्शतेखगमृगसुखीसुभाय १ खगमृगसुखीसुभायपर्मपदके अधिकारी । कोनलहैसुखसकलसुखदवरवदननिहारी २ बदनानिहारिसप्रेममयभयोपर्मसुखधामको । गिरितरुखगमृगनारिनरदेखिचरितसियरामको ३ । ६३ ॥

टी० । सियरामको पंथचरित सबसुख अरु मंगल दायकहै अर्थात् बनमार्गमेंजातसंते जनकनंदनी रघुनंदनको माधुर्यलीलाहै सोलोकपरलोकादिसबभांति को सुख तथा मंगलप्रसिद्ध उत्सव इत्यादिको देनहाराहै काहेते रामलषण सियदर्शते अर्थात् ऐश्वर्य गुप्तमाधुर्य रूप रघुनंदन जनकनंदनी लषणलालतीनिहू स्वरूपन के दर्शनपायेते चैतन्यमनुष्यनकी कौनकहै खगमृग सुखीसुभाय अर्थात् जे महाअज्ञ पक्षी अरु मृगा तेऊ सहजसुभावते रामसनेही है परमानंदपाये १ खगमृगादि सहजसुभाव कैसे सुखीभये परमपदरामसमीपप्राप्ती के अधिकारीभये जो पशुपक्षिनकी यह दशा है तौसकल सुखद बरबदननिहारिकै कोनलहै सुख अर्थात् सबभांति को सुख देनहारा बर बदनश्रेष्ठ मुख नेत्रनभरि निहारि देखत संते को परम आनन्द नहीं पावत भाव देखतही सब आनन्द पावत २ सप्रेममय बदन निहारि परम धामको सुखभयो अर्थात् सुन्दर श्यामतनमें मुखचंद्र पर दृष्टि परतही प्रेम उत्पन्नह्वै सर्वांगमें भरिपूरिगया सोई प्रेममय हृदय सहित चकोरवत् नेत्रनते मुखचंद्र निहारत सन्ते परमपद मुक्ति स्थान प्राप्तिको सुखभया कौनकौनको सोकहत गिरिपर्वत तथा तरुवृक्ष इत्यादि यावत् स्थावररहे तथा खग पक्षी मृगादि यावत् जडजीव तथा नरनारी इत्यादि सब सियरामको चरित देखि जीवन्मुक्त आनंदपाये ३ । ६३ ॥

मू० । बाल्मीकिआश्रमगये सियालषणरघुराय । आयेमुनिवर

मिलनको भेटेहृदयलगाय १ भेटेहृदयलगाय पूजिपरिपूर
णकीन्हे।आसनआदरदेय फूलफलअंकुरदीन्हे २ अंकुर
दीन्हेअमियसम अस्तुतिआनँदमनभये । सकलसिद्धसा
धनसुफल बालमीकिआश्रमगये ३ । ६४ ॥

टी० । श्रीजानकी लषण सहित रघुनाथजी वाल्मीकिजी के आश्रम कोगये सोदेखिमुनिनमें वरश्रेष्ठ जोबाल्मीकिते मिलनको आगे आये प्रणाम करत देखि रघुनंदन को हृदयमें लगाय भेटे १ वाल्मीकिजी रघुनन्दनको हृदय लगाय भेटि कुशलपूछि पुनः पूजिपरिपूर्णकीन्हे षोड़शोप्रकारपूजन करिपरिपूर्ण प्रसन्न कीन्हे कौनभाँति आदर आसनदेय अर्थात् आसन दैबैठारि आदरसहित अर्घ पाद्याचमनादि करिफूलफल अंकुरादि भोजनदीन्हे २ कैसे फलफूल अंकुरादिदीन्हे अमियसम स्वादिष्ट पुष्टकारक तिनको भोजन कराय पुनः प्रभुकी स्तुतिकरि प्रसन्न देखि मनते आनंदभये क्या जानि आनंदभये कि जपतपादि सकल साधनकी सिद्धि जो ज्ञान सो सफलभयो इति बाल्मीकिके आश्रमगये ३ । ६४ ॥

मू० । जाकेहितमनगोत्रसितसाधतसाधनधाम । मोहमदादिक
गुणतजैअहनिशिजागतयाम १अहनिशिजागतयामजाप
तपयोगबिरागे ।मानसब्रह्मनिरूपरहतनिशिदिनअनुरागे
२ निशिदिनअनुरागेरहैज्ञानध्यानमंदिरलहित । सोप्रत्य
क्षमूरतिलखीजाकेहितमनगोत्रसित ३ । ६५ ॥

टी० । जाकेहित जापरब्रह्मके प्राप्तीहित मनगोत्रसित उज्ज्वल अर्थात् सब इंद्री चित बुद्धि अहंकार इत्यादि जो मनको परिवारहै ताको सित करि अर्थात्विषयमें लागे इंद्रीमलिन होतीहैं तिनकीविषयछुड़ाय उज्ज्वलकरि अंतरमें लौकिक वासना मलताको रोकि उज्ज्वलकरि इति सम दमादिकरि मनकोगोत सितकरि साधन धामजो मुमुक्षु अर्थात् मुक्तिकी चाह करनेवाला चैतन्य देहधारी सो साधत विवेक बिरागादि साधन करते हैं पुनः मोह मदादिक गुणतजै अर्थात् मोहजो अज्ञानता ताके उपजनेके जो कारण यथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध मैथुनादि विषयाशक्ती तथा कामक्रोध लोभ मदादि तथा रजोगुण तमोगुण इत्यादि त्याग करै पुनः अहनिशि जागतयाम अहदिन निशिराति ताकेयाम पहर अर्थात् रातिउ दिनके आठौपहर जागते चैतन्य रहतेहैं १ कौनभांति रातिउदिन

आठौयामजागते हैं जाप तप योग बिराग बिधिवत् मंत्रगायत्री प्रणवादि कोजाप तथा तपस्या पुनः यम नियम आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि इति अष्टांगयोग तथा बिराग संसारसुख को त्याग इत्यादि साधनमें लगेरहते हैं तिन करिकै मानस ब्रह्मनिरूप शुद्धमन में बिज्ञान पूर्वक ब्रह्मबिचार में निशिदिन अनुरागेरहत रातिउदिन ब्रह्मबिषे अचल प्रीति राखेरहत २ निशिदिन अनुरागेरहैं कौनभांति ज्ञान ध्यान मंदिरल- सित ध्यानरूप मंदिरमें ज्ञानरूपते शोभादेतेहैं जो परब्रह्म सो प्रत्यक्ष मूरति लखी नेत्रनभरि देखा जाकेहेतु मन गोत्रसित उज्ज्वलकरतेहैं ३ । ६५॥

मू० । रामकह्योकरजोरिकै मुनिनायकसुनिबैन। आश्रमपावन दीजिये जहाँकरौंशुचिअयन १ जहाँकरौंशुचिअयन दिव- सकछुतहाँबिताऊँ । जानतकारणसकल कहाकहिप्रकटज नाऊँ २ प्रकटजनाऊँआश्रमन देहुमुनीशनिहोरिकै । च- लियकृपाकरिदेहुमुनि रामकहेउकरजोरिकै ३ । ६६ ॥

टी० । करजोरि रामकह्यो मुनिनायक बैनसुनि अगस्त्यसो श्रीरघुनाथ जी हाथजोरि कह्यो हे मुनिनायक मेरे वचन सुनिये पावन आश्रम दी- जिये आश्रम निवास करिबेयोग्य पावन पवित्र भूमिका बतायदीजिये जहां शुचि अयनकरौं पवित्र आश्रमरचौं १ शुचि अयनकरौं जहाँ तहाँ कछुदिवस बास करि बिताऊँ पुनः सकल कारण मेरे बनआयबेको सबकारण आपु जानतेहौ ताते प्रकटकरि कहा जनाऊँ अर्थात् सबतौ हाल आपुजानतैहौ तौ किस हेतु प्रसिद्ध कहि औरनहुको जनावौं भाव आपनी ऐश्वर्य गुप्त राखा चाहतहौं २ प्रकट जनाऊँ आश्रमन अर्थात् जौने कार्यहेतुआयों सो तौ मैं नहीं जनावताहौं परंतु जहाँ जहाँ बास किहेते कार्यहोनेको कारण सहजही बँधिजाय सो सो आश्रमनको आपुते जनावताहौं आपनाप्रयो- जन जनाय स्थान पूंछताहौं निहोरिकै आपुसों निहोरा करावतहौं हे मुनीश देहु अर्थात् कृपाकरि आश्रम बतायदेहु इत्यादि श्रीरघुनाथजी हाथ जोरिकहे कि हे मुनि चलिये कृपाकरि देहु हमारे साथ चलिकै कृपाकरि आश्रमको ठौर बताय देहु ३ । ६६ ॥

मू० । सुंदरगिरिगिणसरितबनदीखजायमुनिसंग । कहतमहात मपर्मथल देखिहोयदुखभंग १ देखिहोयदुखभंगसुखीखग

मृगबनचारी । तरुवरफलितविभागसुधासमसुंदरबारी २
सुंदरजलथलनिरखियह चित्रकूटमंगलभरित । पावनक-
रियविहारथल सुन्दरबनगिरिगणसरित ३ । ६७ ॥

टी० । मुनि संगजाय सुंदर गिरिगण सरित बनदीख वाल्मीकि मुनि के साथ चित्रकूटमेंजाय गिरिगण समूह पर्वत सुंदर तथा सरित मंदाकिनी नदी तथा बन इत्यादि सब देखे कि परम रमणीकहैं पुनः वाल्मीकि जी चित्रकूटको माहात्म्य कहतेभये परमउत्तम जो थल देखि दुख भंगहोहि ऐसा परमोत्तम स्थान है जाके दर्शनमात्र ते जीवन को भव दुख नाश होत१ जाकोदेखि दुखभंगहोत ताते खग पक्षी मृगादिक यावत् बनचारी बनबासी हैं ते सब सुखी हैं पुनः तरुवर फलित विभाग तरुवृक्ष वरश्रेष्ठ ते विभाग नाम अलग अलग ठौर ठौर फलिरहे हैं तथा बारि सुधा सम सुंदर नदिनमें जल अमृत सम स्वादिष्ट पुष्ट रुजहर्त्ता शीतल देखत में सुंदर अमल २ सुंदर जल तथा थल भूमिका भी सुंदर इत्यादि निरखि अर्थात् देखिलीजिये यह चित्रकूट मंगल भरित प्रसिद्ध उत्सवते परिपूर्ण है इत्यादि मुनि कहत हे रघुनंदन यह सुंदर बन गिरिगण पहार समूह सरित जो नदी इत्यादि आपुको विहार स्थलहै ताको पावन करिये अर्थात् बासकरि किंचित्काल विहारकीजिये ३ । ६७ ॥

मू० । रामलषणआश्रमकरयो चित्रकूटसियसंग । मनहुविपिन
बसितपकरत रतिऋतुराजअनंग १ रतिऋतुराजअनंग
रामलखिसुखबनचारी । भरिभरिदोनासफल भेटधरिबदन
निहारी २बदननिहारिनिहारिसब मगनसदनमंगलभरयो ।
विपिनभयोकामदसुखद रामलषणआश्रमकरयो३ । ६८ ॥

टी० । वाल्मीकि मुनिकी आज्ञानुकूल लषण जानकी संग सहित श्री रघुनाथजी चित्रकूटमें आश्रमकरयो पर्णशालरचि बासकीन्हे कैसे शोभित होतेहैं यथा रति कामकी स्त्री पुनः ऋतुपति जो बसंत पुनः अनंग जो कामदेव इत्यादि विपिन बनमें बसि तपकरतेहैं अर्थात् जानकीजी मानों रति हैं श्रीरघुनाथ जी नहीं हैं मानों कामदेवहै लक्ष्मणजी नहीं हैं मानों बसन्तऋतुहै सौंदर्य्यताते रूपनकी उत्प्रेक्षा अरु उदासी वेषते तपस्याकी उत्प्रेक्षाहै १ रतिसम जानकी ऋतुराजसम लक्ष्मण तथा अनंग कामसम

रघुनाथजी तिनकोलखि सुख बनचारी अर्थात् सबंधु प्रियायुत रघुनाथजी को देखि बनबासी कोलकिरातादि सब परम सुखीभये तातेसफल दोना सुन्दर मूलकन्द फलन सहित दोना भरिभरि भेटहितलाय प्रभुके आगे धरि सन्मुखखड़े सब प्रभुको बदन चन्द्रचकोरवत् निहारिरहे हैं २ बदन प्रभुकोमुख निहारि निहारि सब कोलकिरातादि प्रेमानन्दमें मगनहैं पुनः सदन जो उररूप मन्दिर तामें मंगल उत्सवभरेहैं भाव ऐसा आनन्दभये कि रघुनन्दनआय बनमें बासनहीं किये मानों हमारे घरमें ब्रह्माण्डभरेको मंगल भरिभयोआय ऐसे बनबासी हर्षितभये इत्यादि जबते राम लषण आश्रम करयो लषण जानकीसहित श्रीरघुनाथजी इहां पर्णशाल बनाय जबते बासकीन्हे तबते बिपिन जो बन सो कामद सुखद भयो अर्थात् मनोकामना परिपूर्ण देनहारा सुखदायकभयो ३ । ६८ ॥

मू० । अवसुमन्तअवधहिचले रामबिदाजबकीन । हयनचल हिंरघुबरबिरह सचिवभयोदुखदीन १ सचिवभयोदुखदीन शिथिलरथहाँकिनआयो । बिकलबिषादनिहारि अवध केवटपहुँचायो २ केवटगृहआयोबहुरिसाँझपायअवसरभ लोहानिगलानिबिहालउरअवसुमंतअवधहिचले३।६९॥

टी०। श्रीरघुनाथजी चित्रकूटमें पहुँचिगये यह चरितकहि पुनः इधरको चरित कहत अब जा भाँति सुमंत अयोध्याजी को चले सो सुनिये जब श्रीरघुनाथजी बिदाकीन तब सुमंतअवधकोचले तो परंतु हय जो घोड़ेते हांके ते नहीं चलत राम बियोग दुखभरे अशक्ति भये तथा रघुबर बिरह दुखते सचिव दीनभयो अर्थात् रघुनंदनके बियोग जनित बिरह दुखते सुमंतौ दीन महादुखित पौरुष हीनभये १ कौनभाँति सचिव दुखदीन भयो शिथिल रथ हाँकि न आयो ऐसे सब अंगढीले परिगये जाते रथ हाँकत न बना इति बिषाद मानसी दुखकरिकै सुमंतको बिकल निहारि केवट अवध पहुँचायो अर्थात् निषाद राज ने चारिदूत अरु सारथी साथ करि रथ सहित सुमंत को अयोध्याजी के निकट तक पहुँचाय दीन्हे २ पुरनिकटते सुमंत सों बिदा है केवटगण आपने गृह घरको आयो तब सांझ समय जामें कोऊ मिलै न इति भले अवसर पाय हानि रघुनंदन के बियोगते गलानि शोकते बिकल अब सुमंत अवधहि चले महादुखभरे अवधपुर के भीतर राजद्वारको चले ३ । ६९ ॥

मू० । कहुसुमंतकहँरामसिय उठेबिकलनरनाह । सचिवहृदय भेटेउनृपति नयननिनीरप्रवाह १ नयननिनीरप्रवाह सचिवसनबोलिनआयो । रामसियासंदेश सकलमुखकहन न पायो २ कहननआयोमुखवचन ब्रह्मरंध्रपथकढ़्योजिय । लषणरामसियरामसिय कहुसुमंतकहँरामसिय ३।७० ॥

टी० । सचिवको आगमनसुनतही नरनाह दशरथमहाराज विकलउठे पुनःबोले हेसुमंत कहु रामसिया कहाँहैं भाव लौटिआये कि बनकोचले गये इतिबताउ इतिकहि पुनः प्रणाम करते देखि नृपति दशरथजी सचिवको हृदयमें लगाय भेटे अरु नयनन नीरप्रवाह करुणा प्रेम उमगा ताकी वेगते नेत्रनसों आँसुजल जलकी प्रवाह धाराचली १ उहाँते तौ दुख पीड़ित औबैभये इहाँ महाराजकी दशादेखि अधिक बिह्वलभये ताते इनकेभी नेत्रनते आँसु जलकी प्रवाह धाराचली अरु सचिव सुमंतसन बोलि न आयो कंठारोधनते पुष्टाक्षर वचन न कढ़िसके ताते श्रीरघुनंदन जनक नंदिनीको संदेश कहाहुआ हाल सो मुखते कहन न पायो २ जनक नंदिनी रघुनंदनजो संदेश पिताते कहिबेको सुमंतते कहिदियेरहैं सोहाल मुखाग्र वचन सब कहन न पाये अथकहतही ब्रह्म रंध्रपथ जियकढ़्यो शीशमध्य जो छिद्र जो खालते ढका रहत ताको ब्रह्मरंध्र कही ताहीपथ रास्ता है खाल फोरि महाराज के प्राण निसरिगये कौनभाँति जबमहाराजपूंछे हे सुमंत कहु रामसिया कहाँहैं तापर जब सुमंतकहे कि रघुनंदन नहीं लौटे यह सुनतही लषण रामसिय रामसिया ऐसा कहि प्राण त्यागिदिये सुमंत अथकहतही रहिगये ३ । ७० ॥

मू० । भूपभवनरोदनपरचो रानीपुरनरनारि । अवधनाथअथयो मनहुँ रविनिशिअवधनिहारि १ निशिसमअवधनिहारिगा रिसबकुमतिहिदेई । बिपतिवियोगकुयोग कलहदृढ़दीन्हे सिनेई २ दीन्हेसिसबकहँदुसहदुख ज्यहिकेकरतबनृपम रचो । हायहायलायोनगर भूपभवनरोदनपरचो ३ । ७१ ॥

टी० । महाराजकेमरतही भूपभवन राजमंदिरमें रोदनपरचो काहेते यावत्रानी तैसे औरी जे पुरकी स्त्रीरहीं तेसबै रोवनलागीं काहेते अवधनाथ रविमानहुँ अथये अवधपुर देशमें प्रकाश कर्त्ता दशरथ महाराज सूर्यवत्

रहे ते मरणरूप अस्ताचल को गये ताते मानहुँ निशि अवध निहारि अ-
योध्याजी में मनहु रात्री कैसो अंधाकार देखा तो १ सोईनिशि अयोध्या
जीमें देखिकै कुमतिजो कैकेयी ताको सबगारी देतेहैं काहेते कलह जो
परस्पर बिरोध तथा कुयोग अति आनंद समय रघुनाथको बन पठावना
ताते बियोग पाय सबको बिपति इत्यादिकी दृढ़करि पुष्टनेइ दीन्हेसि २
जो सहि न जाय ऐसा दुसह दुख सबैपुरबासिन को दीन्हेसि औरन के
दुखकी कौनकहै ज्याहिके कर्त्तव्य ते नृप दशरथमरे ताते नगरबासीसबै
हायहाय धुनि लायेहैं राजमंदिरमें रोदनै पराहै ३ । ७१ ॥

मू० । राखिभूपतनकरियतन कहवशिष्ठसमुझाय । दूतपठाये
भरतपहँ आतुरचारबुलाय १ आतुरचारबुलाय भूपगति
प्रकटेहुनाही । गुरूबुलायेभरत वेगिलैगमनेहुताही २ ग-
वनकीनाशिरनायतब हयगतिमारगसुनिवचन । मुनिबुझा
यरानीसकल राखिभूपतनकरियतन ३ । ७२ ॥

टी० । नावमें मृतक तनधरि तामेंतेल भरिदिये इत्यादि यत्नकरिभूप
दशरथ जीको तनराखि भाव यावत्भरत आवें तावत् शरीर ऐसेहीबनारहै
इसहेतु यत्नतेराखि पुनः वशिष्ठ जी आतुरचार बुलाय तिनसों समुझाय
कहि दूत भरत पहँ पठाये आतुरचार शीघ्रचलनेवाले चारगुप्तपुरुष अर्थात्
हरकारा तिनको एकांत में बुलाय राजनीतिकी रीति कहि समुझायदीन्हे
तिनदूतनको भरतजी के पहँ पासको काश्मीर को पठाये १ आतुरचार
शीघ्रचलनेवाले हरकारनको बुलाय क्या नीतिसमुझाये कि भूपगति प्र-
कटेहुनाही अर्थात् भूपदशरथ के मरने को हालकहूँ प्रकटेहुनहीं काहूसों
कह्यो न पुनः उहाँभीजाय यही कहियो कि गुरुबुलाये भरत अर्थात् भरत
को गुरुवशिष्ठ ने बुलाया है ऐसा कहिताहिलै वेगिगमनेहु भरत शत्रुहन
ताहिसंगलै वेगिगमनेहु शीघ्रही चलेआयहु २ वशिष्ठजीके बचन सुनितब
माथनाय हयगति मारग गवनकीन हय घोड़े तिनकी गतिअत्यन्त वेगते
मारग रास्तेमें गवनकीन चले अरुइहां मुनिसकलरानी बुझाये कौशल्या-
दि सबरानिनको समुझाय धीर्यकराय भूपतन यत्नसोंराखे ३ । ७२ ॥

मू० । गुरुसँदेशआयेभरत अशकुननगरनगीच । श्वानशृगा
लउलूकखर बोलतअशुभकुनीच १ बोलतअशुभकुनीच

भरतमतिगतिथितिनाहीं । भरतदेखिनरनारि बामदाहिन
चलिजाहीं २बामअवधपुरदेखिकै दुखज्वरसोंछातीजरति ।
धरतपावँडगमगपरत गुरुसँदेशआयेभरत ३ । ७३ ॥

टी० । दूतकाश्मीर पहुँचि वशिष्ठजीको आज्ञासुनाये इतिगुरुवशिष्ठको सँदेश सुनि भरतआये जब अवधनगरके नगीचपहुँचे तब अशकुनदेखे कौन अशकुन श्वानजो कुत्ता शृगालजो स्यार उलूकजो घुघुवा खरजो गदहा इत्यादि कुत्सितनीच पशुपक्षी अशुभ अमंगल वचनबोलत १ कुनीचजीव अशुभ बोलत तिनको सुनि देखिकै भरतकी मतिकी गति थितिनहींबुद्धि बिचारते उरअंतरमें थिरता न रही बुद्धि भ्रमितभई काहेते भरत को आवत सन्मुखदेखि नरनारि पुरके पुरुष स्त्री सन्मुख कोऊनहीं आवता है कोऊबाम कोऊदहिने चलेजाते हैं कोऊ कुशलभी नहीं पूछताहै ताते बुद्धिसंभ्रमभई अंतरमें भय उत्पन्नभई २ काहेते भयउपजी अवधपुर बाम देखिकै पुरजननकी टेढ़ीदृष्टि देखे ताते दुखरूप ज्वरते छातीजरति अर्थात् राम कृपापात्र अवधबासीजन जे सदाहमपर अनुकूलरहैं तेप्रतिकूल देखिपरते हैं तौ याकोकारण भलानहीं है इसदुख तापते छातीतप्तभई ताते पाउँ धरत सोडगमग परत ऐसी भयसमाय गई कि जहाँ पग धरत तहाँ नहीं परत मारग छोंड़ि विलगपरत इसभाँति गुरुको सँदेश सुनिभरतजी अवधपुरको आये ३ । ७३ ॥

मू० । भूषणभाजनसाजिकै सुतआगमनविचारि । लैआईकेकय
सुतासुतआरतीउतारि १ सुतआरतीउतारिभायद्वउभ्रमते
भूले । पियोनजलथलबैठिशूलकेअंकुरशूले २ अंकुरशूल
विचारिकै कुशलपूंछिनिजराजिकै । बोलीसुतदाहकवचन
भूषणभाजनसाजिकै ३ । ७४ ॥

टी० । सुतआगमन बिचारि पुत्रभरतको घरको आवनजानि भूषण भाजन साजिकै तनमें वसन भूषण पहिरि भाजन कंचनथारमें दीपदधि रोचन दलमूल फूल फलादिमंगल पदार्थसजिकै केकय भूपकी सुतापुत्री कैकेयीलैआई सुतपुत्र भरतकी आरती उतारी १ कैकेयी तौ भूषण वसन सजे प्रसन्नमन पुत्रकी आरती उतारत अरु भरत शत्रुहन दोऊभायभ्रम तेभूले अर्थात् और तौ सबदुखित उदासीन देखिपरे अरु अकेले कैकेयी

प्रसन्नहै तौ या में क्या कारणहै इत्यादि बुद्धिमें भ्रमभया ताते ऐसाखेद भया जातेदेहकी सुधिभूलिगई मार्गते प्यासे यद्यपिरहे परंतु बुद्धि भ्रमतें जलनहीं पियो थल बैठक स्थानपर बैठेरहे शंकाकरि शूलपीरा के अंकुर उरमें ऐसेउठे ते शूले पीरा करनेलगे कठिन दुखदायक शंकाते तर्कणा होनेलगी २ शूल के अंकुर उरमें उठत बिचारिकै भरतजी निज राजिकै कुशलपूंछे भाव महाराज के राजकाजमें सबकुशल है सो सुनि सुतदाहक आपनेपुत्रके उरमें दाहताप उपजावनेवाले बचन कैकेयीबोली भूषण भाजन राज्याभिषेक हित पुनः साजिकै भाव शीघ्रही राज्याभिषेक होवै ३ । ७४ ॥

मू० । कुशलराज्यसबकाजमैं राख्योंपुत्रसुधारि । भईमंथरापरम हित दुखदूषणसबजारि १ दुखदूषणसबजारि राजसबतु म्हरेजाग्यो । कंटकभेसबदूरि अगमवरनृपसनमाँग्यो २ अगमसुधारीबातमैं नृपसुरपुरसुखसाजमैं । कलुकबिगा स्योविधियहै कुशलराज्यसबकाजमैं ३ । ७५ ॥

टी० । पुत्रकोदाहकरनेवाले क्याबचन कैकेयीबोली हेपुत्र राज्यमें कुशल है पुनः तुम्हारे हेतु राज्यके सबकाज मैं सुधारिराख्यों है अरु मंथरा भी तुम्हारी परमहितकर्त्ता भई तानेदुःख दूषणादि सब जारिदिया अर्थात् राम राज्यभये तुमको सेवकाई करनापरता सोदुख अरु जो तुम बिग्रहकरते तौ तुमको लोग दूषण देते इत्यादिकन को मंथराने युक्तिसों भस्म करि दिया १ सो दुख दूषणादि सब जारिकै तुम्हारी राज्यके सब अंगसो जाग्यो सहजही उदितभयो काहेते अगमवर नृपसन माँग्यो अर्थात् जामें काहू की गम न रहै ऐसे अगमहै बरदान मैं महाराजते मांगि लिहेउँ ताते तुम्हारी राज्यके यावत् कंटकरहैं तेसब दूरिभे ताते अकंटक राज्यकरौ २ काहेते अकंटक राज्यकरौ अगम बात मैं सुधारी अर्थात् बंधु बिरोध पितु आज्ञा भंग इत्यादि करना तुमको अगमरहै नहीं करिसक्तेरहौ सो सबमैं सुधारि दीन्ही ताते अकंटक राज्यकरौ परन्तु सुखसाज मैं नृपसुरपुर अर्थात् तुम्हारी राज्यके यावत् सुखके साजरहैं सो तौ सबबने हैं तामें जो महाराजा होते तौ अधिक आनन्द रहै परन्तु नृपसुरपुर महाराज तन त्यागि देव लोककोगये तातेतुम्हारे सुखसाजमें यहै कलुकबात बिधाताने

बिगारिदियो भाव महाराज अकेले नहींरहे यही हानिहै और तुम्हारी राज्य के सब काज में कुशलहै ३ । ७५ ॥

मू० । रामलषणसियबनगये मरेभूपत्यहिशोच । तुमकहँराज्य
बिलासअब कीजेछाँड़िसकोच १ कीजेछाँड़िसकोचहोत
सबविधिकोकीनो । मरनजियनजगरीतिलेहुपुरराज्यनवी
नो२ राज्यसुनतब्याकुलगिरयो रोदनकरिमुर्च्छितभये। ता
ततातहातातकहि रामलषणसियबनगये ३ । ७६ ॥

टी० । मेरे बरदानद्वारा सिय लषण सहित रामबनको गये त्यहिशोच ते भूप अवधेश मरे पुनः तुमकहँ राज्य बिलास राज्यपद को सुख यह दूसर बरदान मांग्यों ताते अबसब को सकोच छाँडि राज्यसुखकीजे १ काहेते सकोच छाँडि राज्यकीजे होत सब बिधिको कीनो अर्थात् उचित अनुचित यश अयश जो कछु कार्य जननद्वारा होता है सो बिधाता के प्रेरणाते होता है अर्थात् जो बिधाताने चाहा सो भया तामेंमेरा तुम्हारा कछु दोष नहीं जो कछु होनहाररहै सो भया पुनः मरण जियन जगरीति अर्थात् जो महाराज मरिगये ताको भी शोच न करौ काहेते जो संसारमें उपजताहै सो आयुर्बलमात्र जीवताहै अन्तमें सबैमरिजात इतिलोकरीति बिचारि पितुमरणको शोचत्यागि पुरको नवीनोराज्यलेहु अर्थात् प्राचीन रीतिते तुमको राज्य न मिलती अब मेरेद्वारा तुमको राज्य पावने हेतु बिधाताने नवीनयुक्ति बांधिदिया तातेहर्षित राजकरौ २ राम बनगये तुम राज्यकरौ इति कैकेयी के बचन सुनतही महादुखते ब्याकुलह्वै रोदनकरि भरत गिरयो मुर्च्छितभये कौनभांति रोदनकरि यथा ताततात हा पितामैं न देखनपायो इतिरोदनकरि भूमिपरगिरयो पुनः हायमेरेहेतु रामलषण सिय बनगये ऐसामैं अभागी असकहि शोकते मुर्च्छितह्वैगये ३ । ७६ ॥

मू० । परेनकीरामुहँजरयो वरमांगतजड़तोहिं।कुमतिकठोरननृप
लखीमिथ्याजन्मेमोहिं १ मिथ्याजन्मेमोहिं बाँझतूभईनका
हे।ऐसीकुमतिकठोर कर्मकरिमोउरदाहे २ दाहेउरखलबच
नमुखरामबिपिनकहमनधरयो । कोतूकाकेरूपधरपरेनकी
रामुखजरयो ३ । ७७ ॥

टी० । पुनः धीर्य धरि भरतबोले हे जडभाव तोको आपना हिताहित

हानिलाभनहीं सूझिपरताहै तौ ऐसेघोरअपराधकोफलतोकोक्योंनमिला काहेतेमेरेहेतु राज्ययहवरमाँगतमें तेरेमुखमें कीरानपरे पुनःरामबनजाहिं ऐसावरमाँगत आगि नउठी तेरामुख जरिनगया पुनः तेरीकुमति अर्थात् वृथाही घरमें विरोध तथातेरे उरकी कठोरता अर्थात् रघुनंदन ऐसे उत्तम पुत्रको बनबासदै हर्षितरहना इतितेरी कुमति कठोरता नृप न लखी महाराज पूर्वही न परखिलिये जोतोको प्राणघातक दंडदेते सोसाधुस्वभाव महाराज कैसेजानैं पुनः मरणकाल विधाता ने बुद्धि हरिलिया पुनः तो को जो ऐसाकरना रहै तौ मोहिंमिथ्या जन्मे भावमैं रामसेवक ताकी मातातू रामविरोधी ऐसाहोना उचितनहींरहै अर्थात् मेरेमनकीरुचिबिना विचारि लिहे तू ऐसाअनर्थ करि अपनाको अरु मोको वृथाही कलंकी बनायलिया ताते मोको वृथाही जन्मे तूबाँझकाहेनभई अर्थात् चतुर्थांश पायसभाग तू क्यों अंगीकारकिया तू अर्द्धभागमाँगती जो महाराज इनकारकरते तबजो तेरेपिताको लिखा या दशरथ महाराजको लिखावशिष्ठ गर्गाचार्य की साक्षीत्यहि करारपत्रपर हठिकरि अर्द्धभागमाँगती जोमहाराज देतेतब अंगीकार करती तबतेरेही उदरते रघुनंदन उत्पन्नहोते अरु पीछेजाको चतुर्थांश देते तारानीते मैं पीछे उत्पन्नहोता तबतेरे पुत्रभाइनमें बड़े रघुनंदन को राज्यहोती मैं सेवकाई करता इत्यादि तोकोपूर्वही करना रहै तबतेरे को कुछभी कलंकनहोता काहेते जो प्रथमही अर्द्ध भाग महाराज तोको न देतेतौ तूकुछभी भागनलेती तबमहाराजैकोअयश होता तोको कुछ अयशनरहै इसभाँतितू बाँझकाहे नहींभई सोतौ किया नहीं तबतौ पतिव्रता बनिपतिकी आज्ञामाना कुलवंतीहै कुलकी प्राचीन रीतिधारण करि पिताको लिखाया समयपत्र खारिज करिदिया कुलरीति ते मुख्यरानी कौशल्याको मानि पूर्व बड़ाभाग देवाये आपुछोटी बनिछोटा भागलिहे पुनः रघुनंदन को राज्याभिषेक देनेको तू अनेकबारमेरे सन्मुख महाराज ते कहे इत्यादि छोटीबनि छोटाभागलै छोटाभाईकरि मोको उत्पन्न किहे अरुजन्मभरि पतिव्रता कुलवंती बनीरही अरुअब मेरेसूनेमें तूऐसी कुमति कुबुद्धि धारण किया भावमेरे पुत्रको राज्यहोवै इतिकुमति ते कठोर कराल पापमयी कर्मकरि भावरघुनंदनको राज्यसनय बनबास पठायपतिके प्राणघात किया अवधवासिन को वियोग दुखदिया इतिकठोर कर्मकरि मेरेउरमें कठिनदाह किहे २ काहेते मेराउरदाहे । कि हे खलदुष्टे मुखवचनते रामविपिनकह प्रणधर्यो अर्थात् रघुनंदन निश्चय बनको

जाहिं ऐसीप्रतिज्ञाकिहे ताते तूकोहै काकेनिमित्त यहरूपधर अर्थात् राक्षसी पिशाची पूतना चामुंडायोगिनी यक्षिणी इत्यादि यावत्हिंसकी हैं तिनमें तू कोहै सो कौनके नाशकरिबे हेतु छलते यह मनुष्यरूप धारण किया है जोऐसी कराल अपराधकरि तेरेमुखमें कीरानपरे तथाजस्योन ३ । ७७॥

मू० । पीतममारतनहिंडरी बनपठयेसियराम । प्रेतपिशाचिनि
रूपतू भईकहांकीबाम १ भईकहांकीबाम रामत्वहिंअन
हितलागे । जोहसिसोउठिबैठु ओटतजिआँखिनआगे २
आँखिनआगेतेटरै धिक्मैंजन्म्योंज्यहिघरी । रामसुवनप
ठयेबनहिं पीतममारतनहिंडरी ३ । ७८ ॥

टी० । काहेते तेरे रूपमें सन्देह होती है कि पीतममारत नहिं डरी प्राणप्यारे पतिको मारिडारतमें डरनहीं मानी अर्थात् विधवापन लोकमें अयश पतिद्रोहते यम साँसाति इत्यादिते अभयह्वै हठिकरि पतिके प्राणेलिया तथा सियराम ऐसेउत्तमपुत्र पतोहू तिन्हैंबेअपराध बनकोपठये तातेसन्देहहै कि तू कहांकी किसप्रेतकी पिशाचिनी रूपहै सो मनुष्यकी बामभई १ कहांकी पिशाचिनि है मनुष्य बामभई जो त्वहिंराम अनहितलागे भाव महादुष्टाहै तौतौ रघुनन्दनते बिमुखभई परन्तु अबक्या ह्वैसक्ताहै ताते जो हसि सोहसि क्याकरौं परन्तु उठुआँखिन आगेकोठौरतजि ओटजायबैठु भाव मेरेसामनेते उठिजा तेरामुख देखने योग्यनहींहै २ हेदुष्टे मेरी आँखिनआगेतेटरै पुनः तेरेउदरते जन्म्यों ताते मैंभी धिक्हौं जिसघरी जन्म भया सोभी धिक् है काहेते जो तू रामसुवन रघुनन्दन ऐसे पुत्रको बनहिं पठाये तथा पीतम मारत न डरी ताके उदरते मैं जन्म्यों ताते मोको भी धिक्कार है ३ । ७८ ॥

मू० । आईदुखदायिनितिया नाममंथराजाहि । भूषणभारशृँगा
रितन रिपुहनलखिचषचाहि १ रिपुहनलखिचषचाहि
दौरिपगकूबरमार्‍यो । परीधरणिधरिकेश घसीटततनक
नहार्‍यो २ तनकनहार्‍योबीरतब भरतजायरक्षणकिया ।
उठेत्यागिकुलदाहिवी आईदुखदायिनितिया ३ । ७९ ॥

टी० । तोसबके दुखको कारणहै ऐसी दुखदायिनि तियाजाहि मंथरानाम है सो आई भरतको आवनसुनि राज्यको कारण आपनाको जानि हर्षी

ताते तनको शृंगारि अर्थात् उबटि मंजन करि बारगुहि सेंदुरलगाय अं-जनमिस्सी लगाय पानखाय पुनः भूषण बेंदा बंदी बेसरि ताटंकमाल बाजू कंकण मुद्रिका रसना पायलादि भूषण भारलादि भावकुरूप तनमें भूषण अशोभित ताते भारसोलादे ताको रिपुहनलखि शत्रुहनजीआवत देखि पुनः चषचाहि नेत्रनसों सर्बांग भूषण बसन नवीन भलीभाँतिते देखि १ सब अनर्थको कारण जानि पुनः नवीन शृंगार नेत्रनभरि देखि शत्रुहन उठिदौरि पगहुमकिकै लाततताकेकूबरपर मारे ताकेलागेते धरणि परी भूमिमें गिरिपरी पुनः केश धरिघसीटत अर्थात् जब अरोचक बचन कहि बिलाप करनेलगी अर्थात् भलाकरत बुराफलमिला सो सुनि अधिक क्रोधभया ताते शिरके बारगहि आँगनमें घसीटा कीन्हे तनकनहारे श्रमते नछाँड़े २ जब बीर शत्रुहन तनक नहारे अपनी ओरते नछाँड़े तब भरतके दयालागि ताते जाय रक्षण किया छँड़ायदिये इतिजब दुख-दायिनी तिया मंथरा आई तब कुलदाहिवी रघुकुलमें दाहकरने वाली कैकेयीको त्यागि उठे कौशल्या पासगये ३ । ७९ ॥

मू० । उठतकौशलागिरिपरीं भरतदेखिउठिदौरि । लीन्हेहृदय
उठायकै आँगनगिरींबहोरि १ आँगनगिरींबहोरि रोय
दीन्होंदुहुंभाई । मातुलगाईकण्ठ अश्रुधारानहवाई २
नहवायेचषनीरते बीरभरतधीरजधरी । बिकलभरतसमु
झावती उठतकौशलागिरिपरी ३ । ८० ॥

टी० । भरतको आवत देखि उठिदौरीं बलहीन दुर्बलदेह ताते उठतै कौशल्याजी गिरिपरीं पुनः उठिकै चलीं आँगन में बहोरि गिरीं तब भरत उठायकै प्रणाम कीन्हे तब माता हृदय में लगाये १ प्रथम उठतैगिरीं उठिचलीं आँगनमें पुनःगिरीं सो कौशल्याजीकी दशादेखिकै भरत शत्रुहन दुहुंभाई रोइदीन्हे तब माता कंठलगाये पुनः आँसुनकी धाराते अन्हवाये २ चषजो नेत्रताके नीरते अन्हवाये अर्थात् ऐसेप्रबाह धारा आँसुबहे जासों भरत शत्रुहन भीजिगये इस भाँति उठत कौशल्या गिरिपरीं परंतु भरतको बिकल देखि माता समुझावती भई तब भरत बीरभी धीर्यधरी ३ । ८० ॥

मू० । अंचलनयनलगायकै आँसूपोंछतिमात । तोहिंबिनासुत

यहदशा उठननपैयतगात १ उठननपैयतगातरामसिय बनहिंसिधाये । पुरपरिजनभेबिकल लषणसियबहुसमु झाये २ बहुसमुझायेनहिंरहे रामचलेसँगलायकै । सुनत भरतजलसोंभरे अंचलपोंछतिधायकै ३ । ८१ ॥

टी०। माता कौशल्या आपनाअंचल भरतकेनयननमें लगाय आंसूपोंछत पुनःबोलीं हेसुत पुत्रतोहिं बिना मेरी यहदशा भई गातदेह ऐसी अबल ह्वैगई जासों उठन न पैयत गिरिपरतीहौं भावजो तुम इहाँहोते तौ यह दशा नहोने पावती १ कौनकारण गातसो उठननपैयत है रामसियबन-हिं सिधाये जनकनंदिनी सहित रघुनंदन बनकोचले तब पुरबासी परि-वारजन सबबियोगदुखते बिकलभये अरु लषणसियसंगलगे तिनकोरघु-नन्दन बहुत समुझाये भाव घरमें रहौ बनको न चलहु २ रघुनन्दन बहुतकुछ समझाये परन्तु दोऊ न घर में रहे तब दोऊको संगलायकै रघुनंदनचले इति सुनतभरतकेनेत्रआँसु जलसों पुनः भरिभये तबधायकै पुनः मातुअंचल ते पोंछती है ३ । ८१ ॥

मू० । मातुजगतजन्म्योंबृथा भईनकैकयिबाँझ । रामसियाअ प्रियभयो अयशमूलजगमाँझ १ अयशमूलजगमाँझ जासुहितयहगतितोरी । जन्मतहत्योनमोहिंदेतिविषमाहु रघोरी २ माहुरदैमारयोजगतकुलकुठारिउपज्योयथा । नृ पगतियहरघुपतिविपिनमातुजगतजन्म्योंबृथा ३ । ८२ ॥

टी० । हे मातु मैं वृथाजगमें जन्म्यों अरु कैकेयीबाँझ न भई काहेते रामसिय अप्रिय भयो मेरे हेतु रघुनन्दन जनकनन्दिनी जाको शत्रुवत् देखाने ताहीते जगतमाँझ अयशमूल अर्थात् सबजगभरे में अपयशको कारण कहावैगी १ काहेते अयशमूल जगमाँझ भई जासुहित यहगति तोरी ज्यहिकैकेयीके हितहोनेहेतु हे मातातोरि यहदशाभई कि पुत्रबियोग दुखतेअबल दुर्बलशरीर ऐसाभया कि उठतमें गिरिपरतीहौ इस पश्चा-त्ताप अयशादि शूलनते अबमोको मारिसि तौ जन्मतही मोहिं न हत्यो उसीसमय न मारिडारी कौनभांति बिषमाहुर घोरिदेति संखिया आदि बिष हरदिहा आदि माहुरबाँटि दूधमें मिलाय पिआयदेती तबै मरिजाते तौ यह करालदुख क्यों देखना परता २ अबमाहुरदै सबजगतको मारयो

अर्थात् मोकोराज्यनहींदिया मानो सबसंसारैको माहुरदिया ताते मैं यथा कुलको कुठारउपज्यों अर्थात् जो मैंन होताती कुलको ऐसादुखक्योंहोता काहेते नृपदशरथकी यहगति भाव रामबियोगते प्राणैत्यागे पुनः रघुपति बिपिन बनकोगये ताते हेमाता मैं वृथैजगमें जन्म लीन्हेउँ ३ । ८२ ॥

मू० । सुरगुरुद्विजपातकपरैं जोजानतयहबात । बालबालबधअघअयशगायगोठपुरघात १ गायगोठपुरघातमीतनृपमाहुरदीन्हे । परधनपरतियहानिपरैं अघगोबधकीन्हे २ गोबधनिंदावेदकी परअपकारीअघकरै । जोजननीजानहुँ तनक सुरगुरुद्विजपातकपरैं ३ । ८३ ॥

टी० । अबभरतजी सौंगंदकरतेहैं हेमाता कैकेयीकी यावत् कर्त्तव्यता हैं यहबात जोमैं जानतहोउँ तौ सुरदेवता गुरु द्विज ब्राह्मणइत्यादि बध करिबेको पातकपाप मोकोपरै पुनः बाल जो स्त्री बालक तिनंकेबधको अघ तथा अयश लोक में निन्दा तथा गायरहने को गोठ मनुष्य बासको पुर इत्यादिको घात अग्निआदिलगाय नाशकरिबेको जो अघहोवै १ यथागाय गोठ पुरको घात तथा मीत अरु नृपराजाको माहुर दीन्हेते जो पापहोत अथवा परधन परस्त्रीहरिलेनेते अथवा परहानि किहेते अथवा गोबधगाय मारेते जो अघ पापहोता है २ यथा गोबध वा वेदकी निन्दा अथवा पर अपकार परार हितको होत हानि करिदेना इत्यादि जो अघकरै इनयुत सुरगुरु द्विज पातक मोकोपरै हेजननी माता यामें जोतनक थोरहू हाल जो मैं जानत होउँ ३ । ८३ ॥

मू० । परघरअग्निलगावहीं कुपथपंथपगदेयँ । बलकरितियपरधनहरैंरणभगिअपयशलेयँ १ रणभगिअपयशलेयँमातुपितुविप्रनमानैं । हरिहरपदतेविमुख भूतप्रेतनउरआनैं २ उरआनैंतीरथकुकृतनिजकुटुम्बतृणलावहीं । जोजानौंतौ अघपरैं परघरआगिलगावहीं ३ । ८४ ॥

टी० । जेपराये घरमें आगि लगायदेतेहैं अथवा कुपन्थपथपददेयँ कुमारग चलतेहैं अर्थात् चोरीठगी आदि कुकर्म्मकरतेहैं अथवा परधन परस्त्री बलकरि हरैं अर्थात् जे जबरइन छीनिलेते हैं पुनः रणभागि अपयश लेयँ अर्थात् शत्रुके सन्मुखजाय जे क्षत्री रणभूमिते भागिआय अयशलेते हैं १

रणतेभागि अपयशलेयँ तथा मातुपितु बिप्र न मानैं महतारी बाप ब्राह्मणादि गुरुजननको कुबचनकहि अनादरकरते हैं अर्थात् लोकधर्म्मत्यागे हैं तथा हरिहर पदते बिमुख अर्थात् लौकिक सुखहेतु मनलगाय शिवकेपद कमलसेवनचाहिये तथा पारलौकिकसुखहेतु मनलगाय हरिभगवान्केपद कमलसेवनचाहिये तिनकात्यागिभूतप्रेत न उरआनैं अर्थात्मारण उच्चाटन आकर्षण उद्वेषण मोहन बशीकरणइतिषट् प्रयोगादि अभिचारसिद्धीपावने हेतु भूतप्रेतादिको न्यासध्यान मंत्रजप पूजादिजेकरतेहैं तिनको जैसाअपराधहोत १ तथा तीरथकुकृत उरआनैं अर्थात् तीरथमें जाय परस्त्री प्राप्ती की उपाय वा परधन हरणकी उपाय इत्यादि कुकर्म्म उरमें लावते हैं तिनको जैसापाप लागत अथवा निजकुटुम्ब तृणलावहिं आपनीबड़ाईके आगे परिवारभरेको तिनुकासम तुच्छकरि गनतेहैं इत्यादि तथा परघर में जे आगिलगावहिं तिनको जैसाअघ पापलागता है तैसेही अघमोहिं परपरै पापलागै जोकैकेयीके कर्त्तव्यमें कछुभीहालजानतहोउँतौ ३।८४॥

मू० । लोभमोहफाँसेरहैंसाधुसंगनहिंलेयँ । मीतविप्रकुलकष्टलखिअशननीरनहिंदेयँ १ अशननीरनहिंदेयँकूपसरबाग विध्वंसैं । तनपोषकबिनतोषग्रहतविषधनपरअंसैं २ पर अंशैंजेनितधरैं कुबचनबोलिछातीदहैं । तिनकीगतिविधिदेहुजग लोभमोहफाँसेरहैं ३ । ८५ ॥

टी० । जे लोभ मोह फाँसेरहैं लालच अज्ञानताकी फसरीगरेमें डारे रहतेहैं अर्थात् देहव्यवहारेके मानबश लोभहेतु अनेक छल विद्याकरते हैं पुनः साधु संग नहिंलेयँ साधुनके संगहु जातेहैं तबहूं साधुन के गुण नहीं लेतेहैं भाव ऊपरते बातैंकरतेहैं अंतर दुष्टता बनीरहतीहै कौनभाँति यथामीतजो सदा हितकर्त्ता बिप्र ब्राह्मण जो धर्मोपदेशक लोक त्रिवर्ण पूज्य कुलकेजन इत्यादिको कष्टलखि रुजपीडित दरिद्र दुखित देखि तिनको अशन नीरभोजन जलादि नहीं देते हैं १ ऐसे निर्दयी कि श्रेष्ठ जननको कष्टदेखि भोजन जलादि नहीं देतेहैं पुनः कूपसरबाग विध्वंसैं अर्थात् ऐसे उपद्रई कि कुवाँताल बागादि परस्वारथी बस्तुको नाशकरि देतेहैं पुनः तन पोषक बिनतोष भोजन आदि उत्तम बस्तु जहाँतक होइसो आपही खावँदूसरेको न पूछैं ताहूपर संतोष नहीं जहाँलोपावैं सो बटोरि धरिलेवैं कौनभाँति परअंशैं परारहिस्सा जो बिषवत्धनहै ताहू

को ग्राहत बटोरि धरिलेतेहैं लालचते ऐसे असंतोषी २ परअंशें परार हिस्साजे बरबस बटोरि नित्यही धरिलेतेहैं पुनः कुबचन बोलि छातीदहैं अर्थात् उदासीन अरिमित्रकोऊ होइ जिनसों बार्चाकरें तासों ऐसे कटु बचन बोलैं जामें वाकी छाती जरिउठै ऐसे जे लोभमोहमें फँसेरहते हैं तिनकी परलोकमें जो दुर्गति होतीहै सोईगति बिधाता मोहिं जगमेंदेहु जो कैकेयीके कर्त्तव्यकी बात में नेकहू जानत होउँतौ ३। ८५॥

मू०। तेनरजगहोतैंमरैं करैंजन्मभरिपाप। रणमंडलअपयशलहैं देहिंविप्रगुरुताप १ देहिंविप्रगुरुताप बसतघरलाय उजारैं। संतसभानहिंबैठि मृषामुखबचनउचारैं २ मृषा साखिजगउच्चरैं नित्यरारिउठिगृहकरैं। रामसियाज्यहिप्रिय नहीं तेनरजगहोतैंमरैं ३। ८६॥

टी०। ते नरऐसे मनुष्य जगमें पैदा होतही मरैं कैसे नर जे जन्मभरि पापकरैं जबते पैदाभये तबते परस्त्री पर धनहरण जीवहिंसा परहित हानि परअवगुण प्रकट करन इत्यादि पापकर्म करते जन्मबीतिगया पुनः रणमण्डलते भागे औ रणको जुझाय अपयशलहैं आपने बचावने हेतु अयश लैलेतेहैं अथवा विप्र गुरु तापदेहिं ब्राह्मण गुरु इत्यादि सत्पुरुषनको अनेकभांतिते दुख ताप देतेहैं १ अनादर ताड़न कुवचनादि ते विप्र गुरु आदिकनको ताप देतेहैं तथा औरनको घरसुबास बसत देखि चोर डाकू आगि आदि लायउजारि देतेहैं अरु जन्मभरि संतनकी सभा में कबहूं नहीं बैठे पुनः मृषा झूंठ बोल मुखते उच्चारते हैं अर्थात् औरके कार्य बिगारिबे हेतु झूंठी साखी देतेहैं २ यथा मृषा झूंठी साखी जग में उच्चरैं बोलतेहैं तथा प्रातउठि नित्यही गृहमें रारि घर में वादाविवाद कलहकरतेहैं तथा राम सिया ज्यहि प्रियनहीं जिनको श्रीरघुनंदन जनकनंदिनी नहीं प्रियलागते हैं ते नर जगमें पैदाहोतही मरिजायँ भाव ऐसे जीवनते मरण भला है ३। ८६॥

मू०। तुमसुतशापथनखाँचियो रामप्राणप्रियतोहि। तुमरामहिं अतिप्रियसदा विधिगतिबाँकीहोहि १ विधिगतिबाँकी होहि देहुदूषणजनिकाहू। कर्मप्रधानकिसानबवै लुनियत

स्वयलाहू २ बयोलूनियतजगतमें भूपमरेहमबाँचिये ।
रामचलेप्राणनचले तुमसुतशपथनखाँचिये ३ । ८७ ॥

टी० । कौशल्याजी बोलीं हे सुतपुत्र तुम शपथ न खाँचिये किसहेतु सौगंदें खातेहौ काहेते तोहिं राम प्राणप्रिय अर्थात् तुमकोतौ रघुनंदन प्राणनसम प्यारेहैं तौ तुमसों ऐसीबात कैसे ह्वै सक्तीहै तथा हेभरत तुम-हूंतौ रघुनंदनको सदा अतिप्रिया अत्यंत प्यारेहौ यामें कछुहानि नहीं है सक्तीरहै यह बिधि गति बाँकीहोय बिधाताकी जोटेढ़ीगतिहै अर्थात् शुभा-शुभ कर्मनको फल जो कछु लिखि देताहै सो निश्चय होताहै १ जो बिधिकी बाँकी गतिहै सोईहोहि ओहिभया ताते काहुहि दूषण जनिदेहु अर्थात् मंथरा वा कैकेयी इत्यादि किसीको दोषनहींहै काहेते प्रधानकर्म सोई क्षेत्रहै तामेंजीव किसान जो शुभाशुभबवै सोयलाहु लुनियत अ-र्थात् जोजीवजैसा शुभाशुभ कर्मकरताहै ताहीअनुकूल सुखदुखफललाभ पावताहै २ बयोलूनियत जगत्में अर्थात् संसारमें जीव जैसा कर्म करत सोई दुख सुख भोगत देखिये भूपमरे हमबाँचिये अर्थात् महाराज वियोग होतही प्राण त्यागि सब दुखते छुट्टीलिये अरु हम बचिरहीं ताते अनेक दुख देखती हैं काहेते जब रामचले तब हमारे प्राण न चले यह हमारे कर्मनको फलहै ताते किसीको दोष नहीं अरु तुमको तौ रघुनंदन प्राण प्यारे हैं ताते तुम पुत्र शपथ न खाँचौ ३ । ८७ ॥

मू०। बड़ेभोरमुनिआयगेबैठेहिरैनिबिहानि । भरतबुझायबशिष्ठ मुनिभूपाक्रियाबिधिआनि १ भूपक्रियाबिधिआनिदाहसर यूतटदीन्हो । रानिनकेरप्रबोधभरतपाँयनपरिकीन्हो २ पाँयनपरिकरिकर्मसबतिलअंजलिकृतरायके । भरतासिखा येमृतकरमबड़ेभोरमुनिआयकै ३ । ८८ ॥

टी० । बैठेहि रैनि बिहानि कौशल्या ढिग भरत बार्त्ताकरत संतेबैठेही राति बीतिगई बड़े भोर मुनि आयगे अर्थात् भरतको आवन सुनि कार्य समय जानि वशिष्ठ आदि मुनिगण आय राजद्वारमें सब एकत्र ह्वै बैठे पुनः वशिष्ठ मुनि भरतको बुझाय अर्थात् शोक त्यागि जो अब उचित है सो करौ इत्यादि समुझाय पुनः क्रिया विधिभूप आनि जैसी वेदमेंक्रिया की विधिहै ताहीरीतिते अदग्ध भूमि शोधि बिल्वहरि क्षेत्रको भूप दशरथ

को मृतक शरीर आनि तहाँ क्षौर स्नान नवीन बसन परिधान इत्यादि कीन्हे १ क्रियाकी विधिते भूप मृतकतन आनि सरयू तीर चितालगाय दाह दीन्हो तासमय रानीभी भस्म ह्वै जातीं परंतु भरतजी पायँन परि रानिनकेर प्रबोधकीन्हे अर्थात् रघुनंदनके दर्शन तिनको राज्याभिषेकराज्यमें अनेक आनंद देखनेहेतु तनको राखौ इत्यादि समुझाय धीर्यकराय राखि छाँडे २ पायँपरि समुझाय मातनको राखिकै पुनः भरतजी दाह क्रियादि सब कर्मकरि पुनः रायके तिलांजलि कृतकरत भये अर्थात् महाराजके तृप्तहोनेहेतु तिलांजलि देतेभये इत्यादि बड़े भोर मुनिजन बशिष्ठादि आयकै मृतक कर्म भरतजी को सिखाये ३ । ८८ ॥

मू० । हयगयमणिभूषणदये सिंहासनमहिसाज । धेनुबसनआयुधचवँरछत्रपात्रशिरताज १ छत्रपात्रशिरताजस्वमतिगतिमुनिजसभाषी । शतशतकीनबिधानभरतकरणीअभिलाषी २ करिकरतूतिप्रमाणजस सबप्रकारबिधिवतभये । शुद्धसिद्धकरिकाजसबहयगयमणिभूषणदये ३ । ८९ ॥

टी० । दशगात्र षोड़शी सपिंडी वृषोत्सर्ग बिधिवत् करि पुनः महापात्रको दान कहत हय घोड़े गय हाथी हीरा मुक्तादि मणी कंचन मणि जटित भूषण इत्यादि दिये पुनः सिंहासन अरु महि भूमि ग्रामादि तथा औरहू जो साज यथा सबत्स धेनु दुशाला जामा धोती पटुका उपन्ना पागादि रेशमी जरतारी इत्यादि बसन तथा धनुषबाण तूणीर खड्गादि आयुध चमर छत्र तथा रसोईके भोजनके जलपीबेके इत्यादि सबबिधि के पात्र तथा शिरताजकिरीट१ छत्रपात्र शिरताजआदिकौन बिधिदन्हि मुनि स्वमतिजस भाषी बशिष्ठजी आपनी मति अनुरूप जहाँतक कहतगयेतामें भरतजी ऐसी करणीकी अभिलाषा कीन्हे जोकि शतशत बिधानकीन अर्थात् जो बिधान एकबार करने को बशिष्ठजी कहे ताको सौसौ बिधान ते कीन्हे यथा जहाँ एक गोदान बताये तहाँ सौ गौवैं हर्ष सहित दीन्हे इत्यादि सबजानौ २ वेदप्रमाणते जससुने सो सबबिधिवत् करतूतिकरि एकद्रेने के जगह सौ सौ हयगय मणि भूषणादि दये इसभाँति सबकाज सिद्धकरि शुद्धभये महाराजको क्रियाकर्म करि छुट्टीपाये ३ । ८९ ॥

मू० । शुद्धभयेमुनिवरगये जहांराजदरबार । नगरमहाजनबिप्र

भूपतिके अछेह बचनको गहि भूपको भी शोच न आयो अर्थात् खण्डित होनेको छेहकही जो अखण्डहै ताको अछेहकही सोई जो महाराज कहेहैं यथा ॥ चौ० रघुकुलरीति सदाचलिआई । प्राणजाहिं बरुबचननजाई ॥ इत्यादि जो महाराजको अछेह अखंड वचन अर्थात् जो तीनिहु काल में सत्यहै ताको दृढगहि बनकोचले पुनः दशरथ महाराजके वियोगदुःख अथवा प्राणत्याग इत्यादिको शोचनहीं मनमें आने काहेते सत्यसंध को वचन न जानेपावै तौ शोक प्राणहानि कछु चीज नहीं है याते शोचरहित हर्षित बनकोचलेगये ताते धर्म शीलतादि गुण तथा रघुनंदनको स्वभाव सनेह इत्यादिकनको कौन कहिसक्ताहै किसकी ऐसी मतिहै ३ । ९२ ॥

मू० । कठिनकेकयीकाकहौं कहतहुकहीनजाय । कुमतिकुआगि बरायकै दीन्हीअवधलगाय १ दीन्हीअवधलगाय राम सियबनहिंसिधाये । पुरपरिजनमनशोच भूपहठिप्राणप ठाये २ प्राणगवाँयेभूपबर भावीगतिकोनहिंदहौं । बिधि बिधिताअतिकठिनहै कठिनकेकयीकाकहौं ३ । ९३ ॥

टी० । पुनः वशिष्ठजी कहत कि जैसी कठिन कैकेयी है ताको क्या कहौं काहेते कहतहु कही न जाय अर्थात् जो किसीकी समता कहा चाहिये तौ याकी योग्य उपमा नहीं ढूँढेमिलती है यथा ॥ नीतिशास्त्रे ॥ एते सत्पुरुषाःपरार्थघटिकाःस्वार्थंविरोधेनतु।सामान्यस्तुपरार्थमुद्यमभृताःस्वार्थविरोधेनतु॥ तेमीमानुपराक्षसाःपरहितंस्वार्थायनिघ्नंतुये।येतुघ्नंतुनिरर्थकाःपरहितंतेकेनजानीमहे ॥ अर्थात् जे स्वार्थ हेतु औरको कार्य नाश करतेहैं ते मनुष्य राक्षसके तुल्यहैं अरु जे विनास्वार्थ पराया कार्य नाश करतेहैं तिन मनुष्यनको नहीं जानतेहैं वेकौनहैं इत्यादि कहतनहींबनत किसकी उपमा दीजिये काहेते कुमतिरूपी कुत्सित् अग्नि बरायकै अवध में लगायदीन्ही अर्थात् वृथाही बैरमानि हठिकरि महाराज सों वरदान माँगि शोकरूप प्रचंड अग्निवत् अवधपुर भरेमें सब नर नारिन के उरमें महादाह पैदाकरि दीन्हेसि १ अयोध्याजी में कैसी आगि लगायदीन्हेसि राम सिय बनहिं सिधाये वरदान सुनि लषण जानकी सहित रघुनंदन बनको गये तिनके वियोगते पुरजन परिवार जननके मनमें शोच भया अरु भूप दशरथ महाराज अत्यंत दुःखकरिकै हठि बरबस प्राण रघुनंदन के साथही पठाये २ वरभूप श्रेष्ठ महाराजै जब प्राण गवाँये तब भावी

गति को न दहौ भावी होनहार ताकी गति जो काल की कुचाल रूप शोक अग्नि है तामें को नहीं तप्त होता है ताते विधि की विधिता ब्रह्मा की लिखी जो प्रारब्धहै सो अत्यंत कठिन है भाव बिना भोगे छूटि नहीं सक्ती है अर्थात् जो कर्म जीव करता है ताको फल अवश्य भोगनापरता है यथा ॥ मिताक्षरायां ॥ नोऽभुक्तंक्षीयतेकर्म्मकल्पकोटिशतैरपि । अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्म्मशुभाशुभम् ॥ इत्यादि बिचारि सज्जन अशुभकर्म नहीं करतहैं अरु कैकेयी जैसी कठिन है जैसे कुल विरुद्ध कर्म किया सो क्या कहौं ३ । ९३ ॥

मू० । भूपबचनप्रियप्राणनहिं भरतसुनौसतिभाव । सोफुरकी जियशिरधरिय धर्मस्मृतिश्रुतिगाव १ धर्मस्मृतिश्रुतिगाव तजेरघुबरज्यहिलागी । मातुसचिवपुरलोग जरतज्वर नाशहुआगी २ नाशहुआगीअवधकी अवधिलगेनृप राज्यलहि । दोषनकछुमानसकरौ भूपबचनप्रियप्राण नहि ३ । ९४ ॥

टी० । पुनः वशिष्ठजी बोले हे भरत अब सत्यभावते जो करना उचितहै सो सुनिये भूपदशरथ महाराज को आपने वचनै प्रिय रहे प्राण नहीं प्रियरहे सो फुर कीजिये शिरधरिये अर्थात् महाराजकी जो आज्ञा है ताको शिर धरौ यथा रघुनंदन वचन सत्यकरिबे हेत बनगमन शिरधरे तथा तुम राज्याभिषेक शिरधरि महाराजको वचन सत्य कीजिये सोऊ कैसा उत्तमहै धर्म्म स्मृति श्रुति गाव अर्थात् धर्मशास्त्र वेद यही बातकहि रहाहै कि पिताकीआज्ञा करनाचाहिये १ जो बात धर्म्मशास्त्र अरु वेदगावत पुनः जेहिलागि रघुवर तजे जौने वचनकी सत्यताहेतु दशरथ महाराज रघुनंदनको त्याग किये ऐसा वचन प्रिय ताको सत्यकरौ पुनः मातु कौशल्यादिक तथा सचिव सुमंतादि तथा पुरके सबलोग इत्यादि सब शोक ज्वरकरिकै जरतेहैं तिसआगिको नाशहु अर्थात् धर्म नीतिते राज्यकरि सबको धीर्य दै दुःख भुलाय देहु २ सबकी आगि कौनभांति नाश करहु अवधि लगे अवधनृप राज्यलहि अवधि चौदह बर्ष तक यावत् रघुनंदन न आवहिं तबलगि महाराजाकीदीन्ही राज्य अंगीकार करहु जबरघुनंदन आवहिंगे तबउनको सौंपिदिहेउ तुम सेवकाई कीन्हेउ इसबिचारते दोष न कछु मानसधरौ मनमें कछु दोपन बिचारौ केवल महाराजको बचन

सत्यकरौ काहेते जिनको प्राणनहीं प्यारेहैं केवल आपने वचनन की सत्यता प्रियहै इसहेतु सत्यकरौ ३ । ९४ ॥

मू० । कहतकौशल्यापाँयपरि पूतसुनहुगुरुबात । भूपमरेरघुपति
गयेतुमयहिविधिकदरात १ तुमयहिविधिकदरातअवधउ
त्पातविचारौ । कालकर्मगतिवामकुदिनमुखकीजियकारौ २
कीजियगुरुआयसुमुदितपुरपरिजनशिरभारधरि । पालि
शोचसबकोहरौकहतकौशल्यापाँयपरि ३ । ९५ ॥

टी० । पाँयन परि कौशल्या कहत हेपूतगुरु की बातसुनहु आपत्काले मर्यादा नास्ति ॥ यासमयमें अत्यंत आर्त्त हैं ताते कौशल्याजी भरतके पाँयनपरीं ताको हेतु यथारघुनंदन धर्मधुरीण पिताकी आज्ञाते वनको गये तथाराम भक्ति धर्म्मते लषणौ चलेगये तथाभरतौ रामभक्त हैं सोई दृढ़ करि येभी न चलेजायँ इसभयते आर्त हैं पाँयनपरीं पुनः लौकिक धर्म बिचारि पिताकी आज्ञानहीं प्रधानकीन्ही गुरुकोबचन प्रधान कीन्ही इस हेतु कहत हेपुत्र यह उत्तम धर्महै ताते गुरुकी बात सुनहु वशिष्ठ जी को वचन अंगीकारकरहु भाव राजकाज देखहुकाहेते भूपमरे पुनः लषण सहितरघुपति वनकोगयेरहे तुमसो यहिबिधि कदरात अर्थात् राज्यनहींलीन चाहतेहौ १ हेपुत्रतुम यहिबिधि कादरता धारण करतेहौ सोभलीबातनहीं है काहेते अवध उत्पात बिचारौ अर्थात् बिनाराजाकी भयचोर ठग अभिचारी शत्रुआदि अयोध्याजीमें अरु राज्यभरे में अनेक उपद्रव करेंगे ताते कालकर्मकी जो बामगति टेढ़ीचाल ताते जो कुदिन हैं तिनको मुखकारो कीजिये अर्थात् कराल कालआये जो असत्कर्म्म उदयभये तिनके प्रतापते जो कुदिन लोगनके दुःखदायकदिनहैं तामें अपनी शक्तिबलते सुखदायक आचरणसाजि कुदिनके मुखमेंस्याही लगाइदेउ भागिजाइ २ ऐसाबिचारि गुरुआयसु मुदितगुरु वशिष्ठ जो आज्ञादेवैं सो आनंद सहित कीजिये कौन भाँति पुरजन परिवार जननकोभार सबकीरक्षाको व्यापार आपनेशिरपर धरिपालनकरि सबको शोचहरहु ऐसा उपायकरौ जामेंसबको दुःखभूलि जायइति बचन कौशल्या जी पाँयनपरि कहतीहैं ३ । ९५ ॥

मू० । भरतनयनधाराचलीसुनिगुरुजननीवैन । हाथजोरिबोले
मधुरजलउमड़ेद्वौनैन १ जलउमड़ेद्वौनैन सीखभलि
दीन्हगोसांई । मातुकहेउउपदेशमोहिंपरदयासदाई २ द

यासदाईतेकहतसचिवमातुगुरुहितभले। उतरदेतपातक लहौंभरतनयनधाराचले ३ । ६६ ॥

टी० । गुरुजननकि वयनसुनि भरतनयन धाराचली अर्थात् गुरुवशिष्ठ कहे कि राज्याभिषेक लै पिताको वचन सत्यकरहु ताहीको कौशल्यौ जी पुष्टकीन्ही सो सुनि अयोग्यता विचारि भावजो कैकेयीकृत कलंकहै सोई पुष्टहोता है पुनः गुरुजनन को उत्तर भी न देतबना दोऊसंकट तेऊबि करुणारसपूर्णते शोकस्थायी प्रसिद्धभई ताते भरतजी के नेत्रनते आँशु जलकीधारा चली इसभाँति दोऊ नेत्रनते जलउमडेउ पुनः हाथजोरि मधुरबचनबोले १ दोऊ नेत्रनते जलउमडेउ पुनः बोले कि हेगोसाईं आपुने तौ मोकोभली सिखावन दीन तथा मातुभी जोकहे सोभी उत्तम उपदेश है यहकाहेते कहे मोहिं पर दया सदाईं दोऊ मोपर सदा एकरस दयाराखते हैं अर्थात् मेरे दुःखके निवारण करनहारे हैं २ सबै सदा दया राखते हैं ताते सचिव सुमंतादि मंत्री सब तथामाता कौशल्या अरु गुरु वशिष्ठ इत्यादि सबमेरे भलेहितकी बातकहते हैं अर्थात् पिताकी आज्ञा पुनः परिवार प्रजनको पालन ताहूमें सबको संमत पुनः जबरघुनंदन आवैं तब उनको सौंपिदै सेवकाई करना इसमें कछु दूषणनहीं यहू स्वामिही को कार्यहै तातेभलै उपदेशहै यही मानाचाहिये क्योंकि उतरदेत पातकलहौं अर्थात् सबके बचन काटि डारनेवाला जो उत्तर देउँ तौ गुरु जननसों प्रौढ़ताईते पापलागै इसहेतु भरतके नयननते धाराबही ३।९६॥

मू० । पाँयनपनहींनहिंधरीरामविपिनकियगौन । भूपमरेप्रणपूर करि ताकोशोचबकौन १ ताकोशोचबकौनघावयहतीक्षण लाग्यो । यहैपीरनितदहत रयनभरिशोचनजाग्यो २ शोचनजाग्योंनिशिसबै जातिसबैछातीजरी । रामलषणकटि पटतजेपाँयनपनहींनहिंधरी ३ । ९७ ॥

टी० । प्रथम सबको समाधानकरि पुनः पश्चात्तापपूर्वक भरतजीबोले प्रण पूरकरि भूपतिमरे ताको कौनशोचबहै रघुनंदनमें साँचा प्रेमरहा अवलोकनते जीवतरहे बियोग न सहिसके प्रेमकी पूर्णताकरि तनुत्यागि सुरलोक गये रामलषण ऐसे पुत्र बर्त्तमान तिन दशरथ महाराज को कौन शोचकरनाहै ताते यहशोचहै कि रघुनंदन पाँयनमें पनहीं नहींधारण कि हे

बसनभूषण बाहनकी कौनकहै नाँगेपाँयन बिपिन गौनकियबनको चलेगये मेरेसुख पूर्वक अकंटकहेतु यह तीक्ष्णकारी घावमेरेलागोहै इसके आगे महाराजको जो मरनाहै ताको कौनशोचहै १ जो मेरेसुख हेतु रघुनंदन बनको गयेयहै पीर नितदहत छाती जारत ताहीशोचन रातिभरि जाग्यौं २ शोचनि जाग्यौं निशिकाहेते रातिभरि नींदनहीं परत पश्चात्तापते सबै छाती जरीजाति काहेरामलषण कटिपटतजे लषणलाल सहित रघुनंदनजामा पागादिको कहै कटिपट तजे धोतीतकत्यागि बल्कल बसन धारण किहे पाँयनमें पनहींधरें नाँगे पांयनगये ३ । ९७ ॥

मू० । प्रातकालकरिहौंयहैसुनहुसत्यसबबात । धर्मजायजगअय
शलहिनरकहुदुखसहिगात १ नरकहुदुखसहिगातजन्म
भरिसंकटहोई । सबदुखदाँवादहौंअनलबरुडारहुकोई २
डारहुकोयजुबालज्वरसकलदोष दुखभरिरहै । जाहुँअनु-
जयुतबिपिनकहँप्रातकालकरिहौंयहै ३ । ९८ ॥

टी० । सबसमाज भरिमेरी सत्यबात सुनहुजो मेरेमनमें है यहैकाल्हि प्रातःकालकरिहौं तामें यहांतक निश्चयहै कि चहैधर्मजाय जगमें अयश लहि अर्थात् संसार में अपयशपावौं पुनः अंतमें नरकहु दुःख सहिगात देह में यमसाँसति सहिहौं १ नरकहुको दुःख देहते सहौं तथाचहै जन्मभरि रुज बंधनादि संकट होवै कैसहू संकटहानि बियोग दरिद्रता शत्रुबंधन ताडनादि सबप्रकारके दुःखरूप दावानलमें दहौंजराकरैं अथवाबरु कोई अनल अग्निमें डारि देवै २ अथवा डारहुकोयजुबालज्वर अर्थात् वात पित्त कफादि अन्य यावज्ज्वरहैं ते स्वाभाविक प्राणघातक नहींहोतेहैं अरु जो बालपूतनादिकरि ज्वरहोताहै सो प्राणघातक है सोऊ बालज्वर चहै कोऊ मोपर डारिदेवै इत्यादि सकलप्रकारकेदोष दुःखन करिकै भरिरहौं इत्यादि चहै जो होवै परंतु प्रातःकाल यहैकरिहौं कि अनुजयुत विपिन कहँ जाहुँ शत्रुहन सहित बनको रघुनाथजी के पासको जैहौं ३ । ९८ ॥

मू० । शरणसामुहेदेखिकै रघुपतिकरिहैंछोह । शीलस्वभावसु
स्वामिकोसमुहेजनपरमोह १ समुहेजनपरमोह रामसिय
बामनकाहू । मैंशिशुसेवकनीच कुमतिउरप्रकटेउँताहू २

प्रकटेउविधिअघअयशलै नीचदासशिशुलेखिकै । राम सियाकरिहैंकृपाशरणसामुहेंदेखिकै ३ । ९९ ॥

टी० । जब छलछांडिदीन अधीनह्वै सन्मुखजैहौं इतिशरणसामुहे देखिकै रघुपति छोहमया करि हैं काहेते सुस्वामि रघुनंदनको शीलस्वभाव है अर्थात् नीच ऊँच सबको आदरमानदेतेहैं अरु सामुहे जनपर मोहजोजन मनबचन कर्मते सनेहपूर्बक सन्मुख रहत तापर साँची प्रीति करतेहैं १ सन्मुख जनपर साँची प्रीति करते हैं पुनः रामसिय काहूको बाम टेढ़े नहींहैं अर्थात् रघुनंदन जनकनंदनी भूतमात्र पर कृपादृष्टि राखेहैं अन-कृपा किसी पर नहीं है अरुमैं यद्यपि उरमें कुमति प्रकटेउँ ताहूपरशिशु नीच सेवकहौं अर्थात् उरअंतरमें यद्यपि बहुत बिधिकी कुबुद्धि प्रसिद्ध किहेउँ ताहूपर बालक सहजही अज्ञहोतेहैं ताहू पर नीचसेवक उत्तमता कैसेबनै इति बिचारि क्षमा करिहैं २ प्रकटेउ बिधि अघअयश अघपाप अयश बिधाताने मेरेहेतु प्रसिद्ध कीन्हेउ अर्थात् सेवकके सुखहेतु स्वामी बनकोगये इतिपाप पुनः स्वामीकी राज्य सेवकनेलिया इति अयशह्वै बिधाता मेरेहेतु कैकेयी द्वारा प्रसिद्ध किया परंतु नीचदास शिशुलेखिकै आपना नीचादास मोको बालकविचारि शरणसामुहेदेखिकै जनकनंदनी सहित रघुनंदन मोपर कृपाकरि हैं ३ । ९९ ॥

मू० । भरतवचनलखिरबिजगेरामबिरहनिशिपाय । भूपमरणकै कयकुमतितिमिररहेउपुरछाय १ तिमिररहेउपुरछायमुर्छि सोवतनरनारी । लषणसियाकोबिरहव्याघ्रदृकगर्जतभा री २ गर्जतभारीभयविकलतारागणमुनिद्विजलगे । दुख दसेजसोवतबिकलभरतबचनलखिरबिजगे ३ । १०० ॥

टी० । जोकहे कि प्रातहोतही रघुनंदनके पासकोजैहौं इति भरतजीके बचन को रबिवत् लखि उदित देखि सोवतसे लोगजगे जागिउठे कैसे सब सोवत रहे रामबिरह निशिपाय यथा रातिको सबलोग सोयजाते हैं तथा इहां रघुनंदन की बिरहरूप रातिपाय अवधवासी जन सोयगये रहैं रातिको अन्धकारहोत इहांक्या है कैकेयी कुमति भूपमरण सोई तिमिर अन्धकार पुरमें छायरहेउ अर्थात् कैकेयी कुबुद्धी करि रघुनंदनको बनबास दिये पुनः भूपदशरथजी मरे इति दोऊभाँतिको महादुःख सोई अन्धकार

सरीखे पुरजननके बाहेर भीतर भरि पूरिगयो१ रघुनंदनको बनगवन भूप मरण तिनको वियोग दुःखरूपा तिमिरअन्धकार पुरमेंछायरहेउ तासोंमूर्च्छित जो पुरकेनरनारी सोई मानहुंसोवतेहैं पुनःरात्रीकोबनतेनिसरि बाघ भेड़हादिगर्जताफिरतेहैं तथा इहांलषण जानकीकेबियोगते जोबिरहहै सोई व्याघ्रवृक भेड़हा सोईभारी भयंकरशब्दते गर्जतेहैं तिनकी भयलगी है २ भारीशब्दते गर्जते हैं ताते भयङ्करकरिके सब पुरजन बिकलहैं पुनः रात्रि में नक्षत्र रहतेहैं इहां तारा नक्षत्रगण सम मुनिबशिष्ठ द्विजअपर ब्राह्मण लगे नक्षत्रसम लघुप्रकाशवन्त लागतेहैं इसभाँति दुखद बियोग सेजपर पुरजन सोवतेरहे ते भरतके वचनरूप रबिउदयदेखि जागिउठे ३।१०० ॥

मू० । सबकेमनसबसुखभयोभरतभलोमतकीन । दुखसमुद्रबूड़तसकलज्यहिअवलंबनदीन १ ज्यहिअवलंबनदीनसभासबउठिभेठाढ़े । रामचंद्रसियदर्शमंत्रनरबारिधिबाढ़े २ बारिधिबाढ़ेलोगसबभरतमंत्रसबहीलयो । साजिसाजिबाहनचलेसबकेमनसबसुखभयो ३ । १०१ ॥

टी० । सब अवधबासिनके मनमें सबभाँतिको सुखभयो काहेते भरत जी भलोमत कीन काहेते दुःखरूप अगाध समुद्रमें पुरजन बूड़तरहैं तिन सकलको ज्यहि अवलम्बन दीन ज्यहि भरतने रामढिग गमनरूप जहाजते अनुकूल बचनरूप बहते पकरि सबको बचायराखे१ ज्यहि भरतने ऐसा अवलम्बन आधारदीन जाके बलते सबसभाजन उठि ठाढ़े भये काहेते रामचन्द्र सियदर्श आशरूप मंत्रकोबलपाय नरबारिधि बाढ़े मनुष्यनमें आनन्द समुद्रसमउमँगा २ काहेते सबलोगनमें आनंदसिंधुबाढ़ेउ भरतजीको मंत्र सबहिनलियो भाव बनको गवन सबके मनते भावा इस हेतु सबपुरबासिन के मनमें सब भाँतिको सुखभयो ताते रथ बाजिआदि बाहनसाजिसाजि सबैअवधवासी बनकोचले तयारीकरनेलगे ३।१०१ ॥

मू० । भरतसाजसाजतभयेमातुसकलपुरलोग । चलेचित्रकूटहिभरतकृशतनरामबियोग १ कृशतनरामबियोगचलेसजिसाजसमाजे । पाँयनपनहींत्यागिशीशनाहिंभूषणराजे२ भूषणसाजेत्यागिकेभायमातुसँगसबलये । रामप्रेमपूरणभरेभरतसाजसाजतभये ३ । १०२ ॥

टी० । भरतजी रथबाजि गज पैदर पालकी इत्यादि सबसाज साजत भये पुनः कौशल्यादि सकलमाता अरु पुरके लोग स्त्री पुरुष सब इस भाँति भरतजी चित्रकूटको चले परन्तु रघुनन्दनके बियोग दुःख करिकै तनकृश देहदुर्बल ह्वै रहीहै १ राम बियोगतेतनकृश अरु बाहनादि राजसी साज सजि सेवक सुभट सचिवादि सबसमाज साथ लिहे परन्तु आपु कैसेचलेकि पाँयनते पनहींत्यागि नांगेपाँयन पैदर पुनः शीशनहिंभूषणराजे शिशताजआदि कछुभी भूषण तनमें नहींदेखात सादेवेष २ भूषणकी जो साज किरीट कुण्डल माल केयूरादि सो सब त्यागिकै पुनः भायशत्रुहन तथा कौशल्यादि सबमातन को संग लिये अरु रघुनन्दनके प्रेम करिकै परिपूर्णभरे इसभाँतिते भरतजीप्रभुपासजानेहेतु सबसाजसाजे ३।१०२॥

मू० । तमसातीरनिवासकरिप्रातसमाजसमेत । सुरसरिदेखीजा
यतबकेवटकहतसचेत १ केवटकहतसचेतभरतसेनासँग
लीन्हे । समुझिनिषादविचारिकपटअंतरमहँदीन्हे २ अं
तरकपटविचारिकैसजगहोउसबघाटधरि । रामजानिवन
भरतसाजितमसातीरनिवासकरि ३ । १०३ ॥

टी० । प्रथमदिनचले तमसानदीतीर रातिकोबासकरि प्रातभये सेवक सचिवादि समाज समेत चलेजाय सुरसरिगंगाजीकोदेखा भाव नगिचाने तब सचेत सजग ह्वैकै केवट आपनी समाज में कहताभया १ सचेत ह्वै क्या बात केवटकहत कि भरतजी तौ चतुरंगिणीसेना संगमें लीन्हे आवते हैं सो निषादराज बिचारकरि समुझिलीन्हे कि अन्तरमें कपटदीन्हे हैं अर्थात् मुनिबेषते रघुनन्दन बनबासमें हैं तिनके मिलनहेतु जो भरतजाते होते तौ एकाकी उदासीन चलेजाते अरु जो राजसी साज सेना सहित चले तौ अंतरमें कपटलिहे हैं बैरभावते जाते हैं इति बिचारि समुझि लिया २ सोई समुझि निषादराज कहत कि हे सुभटौ भरतके अन्तरको कपट बिचारिकै सब घाटधरि सजग होहु अर्थात् किसी घाटपर उतरि न जानेपावैं बिनायुद्धजीते काहेते कि तमसातीर निवासकरि ऐसेबेगते चले कि इहांपहुँचिगये तातेयही निश्चयहै कि रघुनन्दनको अकेलेबनमें जानि तिनको मारनेहेतु सेनासजिकै भरतचलेहैं यामेंसंदेह नहींहै ३ । १०३ ॥

मू० । रामकाजजूझहुसुभटभरतरामकेभाय । मैंसेवकरघुवीरको

लोहेदेहुँअघाय १ लोहेदेहुँअघायसुभटबिनकटकनिहारौ।
हयगयरथजलबोरिपाउँपीछेजनिधारौ २ पाउँनपीछेकउध
रहुरामकाजअरुगंगतट । मोरनिहोरबिचारिकैस्वामिका
जजूझहुसुभट ३ । १०४ ॥

टी० । निषादराज आपनी सेनाते कहते हे सुभटहु उत्तम बीरहु रघुनन्दनके काजहेतु आजु सन्मुख संग्राम में जूझहु काहेते भरत तौ रघुनन्दन के छोटेभाईहैं अरुमैं रघुबीरको सेवकहौं परन्तुआजुभरतकोयुद्ध बिषे लोहेते अघायदेहौं भावनिश्शंक सन्मुख युद्धकरिहौं १ कौनभाँति लोहेते अघवाय देहौं सुभटबिन कटकनिहारौ अर्थात् ऐसा ढूंढिढूढि मरिहौं कि सेनामें सुभट उत्तम बीर न देखिपरि हैं पुनः हय जो घोड़े गय जो हाथी रथादि जलमेंबोरिडारिहौं अर्थात् तीनिओरते गाँसिहौं ताते गंगाजीमेंबूड़ि मरैंगे पुनः हे सुभटहु पीछेपाँउ जनिधारौ सन्मुखैयुद्धकरौ२ काहेते पाछे पाँउ न धरौ यासमयमें जयपावना अथवा जूझिजाना दोऊ परमउत्तम हैं काहेते जयपाये लोकमें सुयश अरु स्वामीको कार्य्य पुनः सन्मुख जूझे सुरलोक प्राप्ती पुनः गंगातट रामकार्य्य हेतु मरण परमोत्तम ते उत्तमता पावहौ पुनः मोरनिहोर बिचारिकै स्वामी रघुनन्दन के कार्य्य हेतु सुभटौ जूझौ ३ । १०४ ॥

मू० । पहिरतअगरीधनुधरतभईछींकगतिबाम । सगुनसगुनि
याकहिचल्योसगुनसुमंगलधाम १ सगुनसुमंगलधामभ
रतनाहिंकपटकुचाली । राममनावनजाहिंसंगलैमातुसुचा
ली २ संगमातुगुरुसचिवसबलोगरामशोचनिजरत ।
सहसाकर्म्मनकीजियेपहिरतअगरीधनुधरत ३।१०५॥

टी० । अगरी झिलम पहिरत पुनः धनुधरत हाथ में धनुष लेत समय बामगति बामओर छींकभई ताहसिमयसगुन बिचारनेवाला सगुनिया सगुनको फल कहिचल्यो बखान करनेलगा कि सगुनसुमंगलधाम है अर्थात् जो बामदिशिमें छींकभई है यहिसगुन को फल मंगलानन्द करनहारा है १ सगुन सुन्दर मंगल को धाम मंगलन को भरा मंदिर है ताते निश्चयजानौ कि न भरतकुचाली हैं भाव कुमार्ग पर भूलिहूकैपाँउ न देइँगे अरु न मनमें कपटराखे हैं भाव शुद्धसनेह ते रामसेवक बनेहैं

पुनःसुचालीमातु जो कौशल्यासुमित्रादितिनको संगलै राममनावनजाहीं रघुनन्दनको लौटारि लावनेहेतु चित्रकूटको जातेहैं मातादिके रक्षा हेतु सेनासंग लिहे २ सेनायाते साथलिहे कि संगमें सबमाता हैं पुनः गुरु वशिष्ठ सुमन्तादि सचिव दर्शहेतु जाते हैं ताते भीर अधिकहै ते सब राम शोचनि जरत अर्थात् माता गुरु सचिवादि सहित भरत रघुनन्दन के बियोग जनित बिरहाग्नि तापते सब आपहीतप्तहैं तिनसों युद्धकरने हेतु जो तुम अगरी अर्थात् झिलम पहिरते हौ अथवा धनुष धारण करते हौ बिना बिचारि लिहे मित्रको शत्रु बनायलेना यह सहसा कर्म है सो न कीजिये भावविचारपूर्वक कार्यकरमा चतुरजनकोकार्यहै ३ । १०५॥

मू० । समुझिभेटनृपलैचलेखगमृगधनपटमीन । मिलनसाजस बसंगलियपुरजनपरमप्रवीन १ पुरजनपरमप्रवीनमिल्यो मुनिवरकहँआगे । रामसखासुनिभरतचलेमिलनैरथत्या गे २ रथत्यागेकेवटकह्योनामजातिपुरअनभले । भरत चल्योउमँगतनयनसमुझिभेटिनृपलैचले ३ । १०६ ॥

टी० । नृप समुझि भेटलैचले भरतजी राजाहैं तिनसों खालीहाथ न मिलना चाहिये यह विचारकरि भेटकी सामग्रीलै निषादराज चले क्या सामग्री खग कोकिल मोर चकोरादि पक्षी पुनः हरिण पुष्कलकपाठा भाँखादि मृगमणि स्वर्ण आदि धन दुशालादि पट मीन सगुनहेतु इत्यादि सब मिलनकी साज अरु विद्या बुद्धि वार्तादिमें जे परम प्रवीन ऐसे पुरवासी जननको भी संग लिये १ परम प्रवीन पुरजननको संगलै निषादराज आगेजाय मुनिवर वशिष्ठजीकहँ मिल्यो अर्थात् आपना नाम कहि दूरिहीते दंड प्रणामकीन्हे तब वशिष्ठजी भरतसों बताये कि रघुनंदन को प्रिय सखा निषाद यही है इति रामसनेही सखासुनि भरत रथ त्यागे रथते उतरि निषादके मिलनहेतु चले २ जब भरत रथ त्यागे मिलन हेतु चले तब साष्टांगप्रणाम करतसन्ते केवटनाम जातिपुर इत्यादि अनभले कह्यो यथा हे महाराज नीचजाति मैं निषाद गुह अपावन मेरा नाम श्रृंगवेरपुरको पालनहारहौं भावश्रृंग तीक्ष्णवेरमें भी काँटाऐसेतुच्छ ग्रामको पालनहार इत्यादि नाम जाति पुर इत्यादि एकहू मेरे भलेनहीं हैं ऐसा प्रसिद्ध करि कह्यो भाव रामसनेही तौ ऊँच नीच बहुत हैं ऐसा न होइ रामसखा सुनि उत्तम जाति मानि मिलैं पीछे मेरा कुल करतूति

जानि पश्चात्ताप करैं इसहेतु पूर्वही आपने सब अवगुण प्रसिद्ध कहि दिया सो सब सुनि लिये तिनको कुछ भी न माने भरतजी चले निकट जाय बाँहगहि उठाय रामसनेही समुझि आँशू नयननते उमँगत भेटे उरमें लगायमिले पुनः निषाद नृपभरतकोलैकै पुरकोचल्यो ३ । १०६ ॥

मू० । भरतकुशलपूँछीसबैकेवटबिनतीकीन्ह । अबपदरजलखि
कुशलसबप्रभुदर्शनजबदीन्ह १ प्रभुदर्शनकेलहतसकल
दुखदूरिपराने । चलियेअपनेपुरहिरामजससेवकजाने २
सेवककहेउपुकारिमैंमातुनिलखिसादरजबै । देअशीषजनु
लषणसमहेतकुशलपछीसबै ३ । १०७ ॥

टी० । देश कोश पुत्र परिवार इत्यादि सबभांतिकी कुशल भरतपूछे भाव सर्वांग ऐश्वर्य देह संबंधी कुशलपूर्वक हैं सो सुनि केवट विनती कीन हे प्रभु जब आपु आय दर्शनदीन तौ आपुके पाँयनकी धूरि देखि अब कुशलभई १ काहेते अब कुशलभई प्रभु दर्शनके लहत हेप्रभु आपुके दर्शन पावत सन्ते लौकिक पारलौकिकादि सब प्रकारके दुख दूरिपराने दूरिको भागिगये भाव कुटिल कर्म सर्वनाशह्वैगये अब कहाँते दुःखआवैगो जस रामसेवक जाने तस आपने पुरहि चलिये अर्थात् यथा रघुनंदन आपना सेवक जानि इहाँ वास विश्राम कीन्हे तथा आपने सेवकको पुर आपना जानि इति आपने पुरहि आपहू चलिये २ जब भरतजी पुरको चलना मंजूरकीन्हे तब मातनि लखि कौशल्यादि मातनकी पालकी आवत देखि जबै सादर सहित आदर पुकारिकै कह्यो कि मैं आपुको सेवक निषाद प्रणाम करताहौं इति सुनि जनु लषणसमजानि हेतु सनेह पूर्वक अशीष दैकै पुनः सबै विधिकी कुशल पूछे ३ । १०७ ॥

मू० । सबसुपाससबकोभयोसुरसरिभरतअन्हाय । रामसखासे
वाकरीसबकोबासदिवाय १ सबकोबासदिवायरयनिसबत
हाँगवाँई । एकहिखेवापारकियेकेवटउतराई २ उतराईस
बसेनयुतचलेप्रागमारगलियो । रामदर्शलालचहृदयस
बसुपाससबकोभयो ३ । १०८ ॥

टी० । भरत सुरसरि अन्हायं प्रथम समाज सहित भरत गंगाजी में स्नान कीन्हे पुनः सबको सब सुपास भयो अर्थात् आसन भोजन पान

समय अनुकूलमनभावत सबको मिल्यो कौनभांति सबको वासदेवाय पुनः रामसखा निषादराजने विधिवत् सेवाकरी अर्थात् उत्तम मंदिर बहारि लीपि पोति तिनमें रानिनको वासदै तहाँ निषादराजकी स्त्री जन सेवामेंरहीं तथा बारहदरीआदिमें शत्रुहनादि रघुवंशिनको वासदीन्हे तहाँ गुहके बालकादिसेवामेंरहे हरिमंदिरमें वशिष्ठआदिको वासदिये तहाँ गुह के बंधुवर्ग सेवामेंरहे वृक्षनतर साफबहारि जलछिरिकि तहां सचिवसेनापादिकोबासदिये तहांगुहके सचिवादि सेवामेंरहे बागैसाफकरि तहां सेना को बासदिये तहां गुहके सेनप सेवामें रहे बनमें हाथी घोड़ा वृषभादि पशुनको बासदिये तहां गुहके सेवक सेवामेंरहे जो सभामन्दिर रहै तहां भरतजी को वासदै निषादराज आपु सेवामें रह्यो १ विधिवत् यथा योग्य सबको बासदिवाय भोजनपान अंगसेवादि सबभाँति सेवकाईकियो इसीभाँति तहां श्रृंगबेरपुर में रयनि गवाँई राति बिताई भोरभये चले तहाँ रातिभरे में इतनीनावैं मँगायलिये जामें समाज सहित भरत को केवट उतराई निषादराज ने ऐसा शीघ्रही गंगापार उतराय दिया जो एकही खेवाते पारकिये २ इसीभाँति सबसेनयुत सेना सहित भरत को पार उतराई पुनः आगेचले प्रयाग मारगलियो प्रयागकीरास्तापकरे इस भाँति श्रृंगबेरपुरबासमें सबकोसुपासभया पुनः रामदर्शलालचहृदयरघुनाथ जीको देखनेकी अभिलाष सबकेउरमें है तातेशीघ्रचले ३ । १०८॥

मू० । न्हायप्रयागप्रणामकरिदानदीनसुखपाय । भरद्वाजआश्रमगयेमिलेपूजिबैठाय १ मिलेपूजिबैठायकह्योहमसबसुधिपाई । कसनकरहुयहभरतप्राणसमप्रियरघुराई २ प्राणसमानसनेहपदतजिगलानिजानिहृदयधरि । निशिऋषिकीनसुपाससबप्रातनहायप्रणामकरि ३ । १०९ ॥

टी० । प्रणाम करि प्रयागन्हाय सुखपाय दानदीन प्रयागमें पहुंचि प्रथमतो भरतजी प्रणामकीन्हे पुनः त्रिबेणीजीमें स्नानकीन्हे आनन्दभये पुनः हय हाथी स्वर्ण मणि आदि ब्राह्मणनको दानदीन्हे पुनः भरद्वाज मुनिके आश्रम को गये प्रणाम कीन्हे मुनि भरतको हृदयमें लगायमिले पुनः आसनदै बैठारि षोड़शोपचार पूजा करि अहोभाग्यमाने १ मिलि पूजि पुनः बैठारि कह्यो कि हेभरतजी हमसब सुधिपाई सबहालपूर्वही जानिचुके अर्थात् आपनेधर्म्मते प्रतिकूल कलंकी राज्यमानि माता पिता

को बचन नहींमानेउ तथा अनुचित बिचारि बशिष्ठादिके बचन खण्डन करिडारेउ स्याबासिहै तुम्हारी बुद्धिको अरु दृढ़भक्तिको हेभरत तुमकोतौ रघुनन्दन प्राणनसम प्रियहैं तौ असकस न करहु अर्थात् जो रामानुराग दृढ़है ताके बलते क्योंन ऐसे आचरण करौ २ प्राणसमान सनेहपदकैसे प्राणसमप्रिय रघुराई हैं रघुनन्दनके पदकमलनमें दृढ़सनेह राखेहौ ताते माता के करतबकी ग्लानि भी तजिये जनि हृदयधरि उरमें ग्लानि न राखिये इसभाँति बार्त्ताकरि पुनः निशिरातिको भरद्वाजऋषि भरत को सुपास कीन अर्थात् आसन भोजनपानादि अपूर्वदीन्हे इति सब भाँतिते सुपास कीन्हे रातिभरि बासकीन्हे प्रातःकाल समाज सहित त्रिबेणी में नहाय मुनिके प्रणामकरि भरत आगेचले ३ । १०९ ॥

मू० । रामनामरसनाललितध्यानरामसियरूप । श्रवणकथारघु
पतिसगुणहृदयचरित्रअनूप १ हृदयचरित्रअनूपपरतपग
मगडगडोलैं । शिथिलसनेहगँभीररामसियमुखभरिबो
लैं २ मुखभरिबोलैंरामसियपंथअपंथहुनिश्चलित । बर्षत
सुरजयजयकहतरामनामरसनालसित ३ । ११० ॥

टी० । कैसे भरतजी चलेजात रामनाम ललित रसना में तथा राम सियरूप ध्यान में ललित कहे सुन्दरता सहित राम नाम यथा ॥ रामायरामभद्राय रामचन्द्रायवेधसे । रघुनाथायनाथाय सीतायाःपतये नमः ॥ इत्यादि माधुरी सहित जो रामनामहै ताको रसना जिह्वाकरिकै उच्चारण करते हैं पुनः सब इन्द्री व मनादि की वृत्ति बटोरि एकत्र करि अन्तरमें स्थिर राखना ताको ध्यान कही यथा ॥ योगशास्त्रे ॥ तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् ॥ तिसध्यानमें जनकनंदनी सहितरघुनंदन को रूपकिहे तथाश्रवण कथावाशिष्ठादि पौराणिक हरिकथा कहतजाते हैं ताको कानदिये सुनतजात पुनः रघुपति सगुण अनूपचरित हृदयमेंधरे अर्थात् कृपादया करुणाशील उदारता सौलभ्यतादि उत्तम गुणनसहित जो श्रीरघुनाथजी के अनूप उपमा रहित चरित यथादया करि ऋषि मखरक्षण अहल्या तारण करुणाकरि धनुभंग कृपाकरि निषादको बड़ाई देना इत्यादि जिनकी उपमायोग्य अन्यके चरितनहीं हैं ऐसे अनूपचरित गुणनसहित अंतरमें चिंतवनकरतजाते हैं १ प्रभुको अनूप चरित हृदय में चिंतवन करते हैं ताते मगमें पग डगमगडोलैं अर्थात् रास्ते में जात

समय जहां पांव धरते हैं तहां नहीं परता है हालिडोलिकै अलग परता है कौनकारणते गंभरि सनेहते शिथिल हैं अर्थात् अंतर में रामसनेह बड़ाभारी है ताते सर्वांग ढीलेपरिगये पुनः रामसिय मुखभरि बोलैं प्रेमसहित ऊँची श्वासयुत सीताराम ऐसा नाम मुखभरि उच्चारणकरत जात १ प्रेमभरे श्रीरघुनंदन जनकनंदनी दोऊनाम मुखभरि बोलतजात ताते पंथ जो सुंदर रास्ताहै अपंथ जहां बन नदी नारादि विषम ताते रास्ता नहींहै इत्यादि सुपथ अपथ सर्वत्र निश्चलित प्रेमकी प्रबलताते सीधीराह कहों नहीं चलिसकेहैं अर्थात् सुपथतौ प्रेमते भूलिजातेहैं अरु अपथ में तौ रास्तै नहींचलैं कैसे तहां देवता रास्ताबतायदेतेहैं अरु फूल वर्षि जयजय करतेहैं काहेते जो रसनाकरिकैभरतजी ललित रामनाम कहत जातेहैं ताते देवता जयजय करतेहैं ३ । ११० ॥

मू० । सुन्दरबनगिरिगिणमुदित मृगविहंगकपिभाल । प्रमुदितप्रजासमाजसब राजासुखदसुकाल १ राजासुखदसुकाल सकलतरुफलसुखदायक । सुधासरिससरिबारि कर्मअघऔगुणखायक २ औगुणछलदलदपटदुरिकपटद्विरदकेहरिविदित । केवटभरतबताइयोसुंदरबनगिरिगणमुदित ३ । १११ ॥

टी० । गिरि जोपर्वत तथा बनसुन्दरहै तहां कपि जो बानर भाल जो ऋक्ष हरिणादि मृग तथा विहंग सारस हंस चक्रवाक कोकिल मोर चकोर शुक सारिका पारावतादि यावत् पक्षी इत्यादि मृग विहंगादि गण समूह झुंडते सबमुदित आनन्द सहित कैसे बसते हैं यथा सुखद राजा सुकालपायकै प्रजासमाज सब प्रमुदित रहत अर्थात् जब नीति धर्मवंत राजा भया पुत्रवत् प्रजाको पालन करता है ताके प्रभावते सुन्दरि वर्षा अन्नकी पैदावारी वृक्षसफल गौवनके अधिकदुग्ध इत्यादि तौ होतेहैं अरु अवर्षण महँगी रुज चौर अग्नि परचक्र इत्यादि नहींहोतेहैं इत्यादि सुखदायक राजा तथा सुन्दरकाल सुसमय पायकै प्रजालोग परम आनन्द रहतेहैं तैसे बनमें खग मृग आनन्द हैं १ कौनकारण मृग विहंग आनन्द हैं इहां सुखद राजा श्रीरघुनाथजी हैं ताहीते बनमें सुकाल भी है कौन भाँति सकल तरुफल सुखदायक सबभाँतिके वृक्ष फलिरहेहैं तिनकेफल स्वादिष्ट पुष्टकारक समूह हैं तिनको सब इच्छापूर्वक खातेहैं तथा सरि

जो मन्दाकिनीनदी है तामें सुधासरिस बारि अमृत सम जल स्वादिष्ट शीतल पुष्ट पुनः पावन प्रभाववंतकैसाहै कर्म अघ औगुणखायक अघ जो पाप तिनमय हिंसा परहानिआदि यावत् असत्कर्म हैं तथा तमोगुण ते क्रोधादि रजोगुणते तनपोषकतादि जो अवगुण इत्यादिको खायलेत अर्थात् दर्शस्नानपानते अघकर्म औगुणनाशह्वैजात सुंदर सतोगुणी स्वभाव ते सत्कर्म करनेमें मनलागत २ कैसे अघकर्म अवगुणको खायकहैं यथा छल कपटादि यावत् अवगुणनके दलसमूह सोई द्विरद हाथिन के झुंडहैं तिनपर मंदाकिनी कैसी हैं विदित केहरिदपट प्रसिद्ध सिंहसम दपटत भाव जाकोपावत ताको खायजात नातरु सबदेखतही भागिजातेहैं इत्यादि प्रभाव सहित सुन्दरबन गिरिपर्वत गणादि तिनको मुदित आनन्द मनते केवटने भरतसों बुझायो समुझायकह्यो ३ । १११ ॥

मू० । नाथबिटपबटतरुतरेकीनछावनीराम । सियाबनाईबेदिका निजकरललितललाम १ निजकरललितललामरामशुभ आश्रमनीको । मुनिगणकहतपुराणसुनतदिनकरकुलटीको २ दिनकरकुलमंडनमहीदुखखंडनकहिजयहरे । रामसियालक्ष्मणलखौनाथबिटपतरुबटतरे ३ । ११२ ॥

टी० । रघुनन्दनकोवासस्थान केवटभरतकोदेखावत हेनाथ पाकरिजामुन तमाल रसाल बिटप देखिये तिन चारिहुके बीच में बटतरु बरगदकोवृक्ष है ताकेतरे राम छावनीकीन रघुनाथजी पर्णशालाछाय बासकीन्हि ताके आगे सीय निजकर जानकीजी आपने हाथन ललित ललाम वेदिका बनाई सुंदरि विचित्र भूषित चौतारिया बनाई १ आपनेही हाथ सुंदरि विचित्र वेदिका बनाई ताते राम आश्रम शुभनीको अर्थात् किशोरीजी के हाथबनाहै ताहीते रघुनाथजीको बासको आश्रम शुभमंगलकारी देखतमें नीक है तहां बैठि मुनिगण अत्रिआदि समूह मुनिबैठे पुराणन की कथा कहत ताको दिनकर कुलटीको सुनत दिनकर सूर्य्य तिनके कुलमें टीका अर्थात् श्रेष्ठ जो रघुनाथजी ते बैठिसुनते हैं २ दिनकर कुलमण्डन सूर्य्य बंश के भूषण पुनः महि दुखखण्डन भूमिभरेके दुःखनाश करनहारे ऐसे हरे हरि श्रीरघुनाथजी की जयहोय ऐसाकहि पुनः निषाद कहत हे नाथ इन बिटपन के मध्य बटतरुतरे रघुनन्दन जनकनन्दनी लक्ष्मण को लखौ अर्थात् तीनिहू स्वरूप बैठेहैं देखौ ३ । ११२ ॥

मू०। जायभरतपाँयनपरेत्राहित्राहिभगवन्त।अशरणशरणप्रता
पजगआदिमध्यनहिंअन्त १ आदिमध्यनहिंअन्तप्रणतज
नरक्षकस्वामी। शीलस्वभावविचारिशरणपदरजअनुगा
मी २ अनुगामीशिशुऔगुणी धायआनिप्रभुपदधरे।
त्राहित्राहिरक्षकप्रभोजायभरतपाँयनपरे ३। ११३॥

टी०। भरतजाय रघुनाथजी के पाँयनपरे दण्डप्रणाम करतसंते बोले हे भगवन्त त्राहित्राहि भाव कैकेयी कृत पापन ते सभीत हौं मेरी रक्षा करौ कैसे भगवन्त ऐश्वर्य्यवन्त हौ अशरणको शरण में राखनेवाले ऐसा प्रताप जगमें बिदितहै अरु आदि मध्य अन्तनहीं है अर्थात् जाको शरण राखनेवाला कोऊ नहीं है ऐसे अशरण को आपु शरण में राखि अभय करतेहौ ऐसा आपुका प्रताप तौ जग में सबै जानते हैं भाव वेद शास्त्र पुराणगावत पुनः आदिमें क्या करिआयो अथवा कबतेहौ पुनः मध्यमें क्या करतेहौ वा कैसेहौ तथा अन्तमें क्याकरौगे वा कबतक रहौगे इत्यादि कोई नहीं जानताहै १ आदि मध्य अन्ततौ आपुको नहींहै परंतु हे स्वामी प्रणतजनरक्षकहौ अर्थात् जो भयातुर नम्रतापूर्वक शरण आवत त्यहिजनकी रक्षा करतेहौ पुनः नीच ऊंच जो कोऊ सन्मुख आवत ताही को आदर बड़ाईदेतेहौ इतिआपुको शीलमयस्वभावजानिकै शरणपाल बिचारिअनुगामी आपुको अनुचर जोमैं सो आपुके पदरज की शरणहौं भाव यथा पदरज लागेते अहल्याकोकलंक नाशभया तथा पदरजप्रभावते मेरा भी कलंक दूरि कीजिये २ अनुगामी अर्थात् आपुके पीछे फिरनेवाला सेवक ताहूपर शिशुबालक सो औगुणी अर्थात् यावत् उपद्रवभया ताको कारण महींहौं इति अवगुणको मूल ताते औगुणीहौं ताते धाय आयकै प्रभुपद धरे भाव जोबराबरी को भायहोय वा पद पवादामें बराबरिहोइ सो बाधा करै ताको उचितहै यथा देवासुर सदा परस्पर बिरोधै करते हैं अरु जो सेवक अथवा बालक स्वामीको बाधकहोई सो अवगुणी कहावता है सोई अवगुण मिटावनेहेतु आपुके पदकमलगह्यों ताते हेप्रभो त्राहित्राहि रक्षाकीजिये ऐसा कहतसन्ते भरत जाय प्रभुके पाँयनपरे ३। ११३॥

मू०। भरतप्रेमरघुबरशिथिलउठेशरीरबिसारि। धनुषतीरपटशि
रमुकुटजटादयेछिटकारि १ जटामुकुटछिटकारिनयनउमँगे

जलधारा । दुहुँकरलियोउठायमगननहिंदेहसँभारा २ दे
हसँभारबिचारतजिभायलायउरमेंबिकल । देखिदशासुर
गणत्रसितभरतप्रेमरघुबराशिथिल ३ । ११४ ॥

टी० । भरत प्रेम रघुबर शिथिल भरतको प्रणाम करतेदेखि अन्तरते जो प्रेमउमँगा त्यहिकरिकै रघुनाथजीको सर्बांग ढीलापरिगया ताते शरीर की सुधि बिसारिउठे कौनभाँति धनुष कहाँगिरा बाणकहाँ गिरे ओढ़नेको पट बल्कलादि कहाँगिरा शीशमें बँधेमुकुट ते छूटि जटा छिटकारिदिये १ मुकुटके जटा छिटकारि दिये पुनः दोऊ नयनन ते आँशू जल की धारा उमँगी बहिचली इत्यादि प्रभुको देहकी सँभारतौ नहीं है परन्तु दुहुँकर लियोउठाय प्रभु दोऊहाथन गहि भरतको उठाय लिये २ देहकी सँभार को बिचार तजि कौन अंग कैसाहै क्या करना चाहिये इतिबिचार त्यागि बिकल भाई को उरमेंलायलिये अर्थात् ग्लानि अरु बियोग दुःखते व्याकुल भाई भरतको देखि प्रभु शीघ्रही उरमें लगाय बियोग ताप बुझाय ग्लानि पै सावधानता दिये तासमय भरत के प्रेमते रघुबर शिथिल यह दशादेखि सुरगण त्रसित लौटि जानेकी भयमानि डरे ३ । ११४ ॥

मू० । छोड़िनभावतशिथिलद्वउभायप्रेमपरिपूरि । मनबुधिचित
हितलायकैकरिकुतर्कसबदूरि १ करिकुतर्कसबदूरिरामपु
निकेवटभेटे । लषणभरतपुनिमिलेशत्रुहनउरदुखमेटे २ मे
टिदुसहउरदाहदुखभरतशीशपदधरेद्वउ। सकलसभामुनि
गनमगनछोड़िनभावतमगनद्वउ ३।११५॥

टी० ।भरत तथा रघुनंदन तेदोऊभाय प्रेमकरिपरिपूर्ण भरेहैंताते शिथिलसर्वांगढीले परिगये मिलनसमय छोड़ना नहीं भावत पुनः ऐसे हित पूर्वक मनबुद्धि चितलायकैमिले जातेसबतर्क दूरिकरिदिये अर्थात् भरत केमनोरथ अनुकूल सनेहसहित रघुनाथजी मिलिजो कुतर्कणारहै तिन कोमिटायदीन्हे अंतरमें संतोषकराये १ भरतकीसब कुतर्कणा दूरिकरि पुनः रघुनाथजी प्रणामकरतदेखि केवटको भेटे निषादको उरमें लगाय मिले पुनः लषणको प्रणामकरतेदेखि उरमेंलगाय भरतमिले तथा रघु नंदन लषण दोऊजनेमिलि शत्रुहनको वियोगदुःखमेटे २ जबप्रभुके दोऊ पदनमें भरत शीशधरे तबै प्रभु भरतकी दुसह उरकीदाह दुख मेटिदिये

दुसहजो सहिनजाय ऐसीजो उरमें वियोगते जरनिरहे पुनः विमुखताको जो दुःखरहै सोसब प्रणामकरतही प्रभु मिटायदिये ताते आनंदयुत प्रेम परिपूर्णभये अरु रघुनंदनतौदेखतही प्रेमानंदवशभये इतिदोऊभाइ प्रेम में मगन बूड़ेरहें ताते मिलतमें छोड़िबो नहीं भावतरहा सोदशा देखि सकल मुनिगण प्रेममें मगनभये ३ । ११५ ॥

मू० । केवटगुरुआगमनकहिरामउठेसबसंग । धरेजायमुनिपद
कमलभेंटेमुनिधरिअंग १ भेंटेमुनिधरिअंगचलेआश्रमहि
लिवाई।मातनभेंटेआयमनहुशिशुधेनुतुराई २ धेनुतुराई
गतिमिलीसियसासुनकेचरणगहि । रोदनकरतबिलापक
रिकेवटगुरुनृपमरणकहि ३ । ११६ ॥

टी० । भरत शत्रुहन केवटये तीनिहीजने प्रथम आश्रमको आयेरहें ते सब मिलिचुके तबकेवट गुरुआगमनकहि अर्थात् केवटने कहा हे महाराज बशिष्ठ सबमाता पुरजन सबै आये हैं सो सुनि रघुनाथजउठे तिनकेसंग सबैउठे आगेजाय मुनिपदकमलधरे प्रणामकीन्हे तब मुनि अंगधरि भेंटे उरमेंलगाय मिले १ अंगधरि मुनिकोभेंटि आश्रमको लवायलैचले पुनः रघुनंदन आय कौशल्यादि मातनको भेंटे प्रणामकरिमिले कौनभांति मनहु तुराई धेनुको शिशु यथा शीघ्रकी बियाई गायको बछवा मिलत ऐसे हर्षते मिले २ तुराई धेनुगति पुत्रनको मिली तथा सीयआय सासुन के चरणगहि जानकीजीआय कौशल्यादि सासुनके यथायोग्य पद बंदनकरि आशीर्बादपाये जब सब मिलिकै बैठे तब केवट अरु गुरु बशिष्ठ नृप दश रथ महाराजके मरनेको हाल कहिदीन्हे ताते राम जानकी लषण तथा रानिन सहित सब समाज बिलाप करि उच्चस्वर गुण बर्णनपूर्वक रोदन करत ३ । ११६ ॥

मू० । भयेशुद्धमुनिवचनकहिभरतरामसबभाय । सबसमाजक
रुणाहरषमातुसचिवऋषिराय १ मातुसचिवऋषिरायभ
रतविनतीउठिकीन्ही। श्रीरघुवरसर्वज्ञसकलगतिमातिरति
चीन्ही २ मतिगतिचीन्हिसनेहसबअवश्यकरियस्वइआ
जुलहि । चलियअवधनृपताकरियभयेशुद्धमुनिवचन
कहि ३ । ११७ ॥

टी०। मुनि बशिष्ठ समयअनुकूल बचनकहि महाराज के मृतक कर्म व्यापारमें लगाये सो बिधिवत् करि पुनः भरतादि सबभाय सहित रघुनाथजी शुद्धभये तासमय कौशल्यादिमातु सुमंतादि सचिव इत्यादिसब समाजके मनमें करुणासहित हर्षहै अर्थात् महाराजकोमरण रघुनंदनको बनबास इसकारण करुणा अर्थात् दुःखहै पुनः रघुनंदनके समीप प्राप्त हैं ताते हर्षहै १ पुनः माता सचिव ऋषिराज इत्यादि सबको सम्मतलैकै समाजमें उठिकै भरतजी रघुनंदनसों बिनतीकीन्ही हेरघुबर आपु सर्वज्ञ हौ ताते सकल जननके मतिकी जो गति बुद्धिकी अनुकूलता तथा रति जैसी आपुमें प्रीति है इत्यादिको चीन्हते हौ भाव सबकी बुद्धि आपुकी प्रीतिते परिपूर्ण है २ सबके मतिकी गतिमें सनेहचीन्हि अर्थात् जो सबकी बुद्धिमें आपुको सनेह परिपूर्णहोइ तौ सबकोजो मनोरथहै सोई आजु लहि ग्रहण करि अवश्य वही कार्य करिये क्या ग्रहण करि कार्य कीजिये अवध चलिय नृपताकरिय अयोध्याजी को लौटि चलिये तहाँराज्याभिषेक ग्रहणकरिये पुनः महाराज पदको जो व्यापार है सो कीजिये इत्यादि बचन शुद्ध भये परमुनि बशिष्ठ भी कहे भावजो भरत कहैं सो कीजिये ३ । ११७ ॥

मू० । आयसुनृपबनकोदयोसोईधरिशिरआज । तुमकोपितुपुर
कोदयो पूरणराजसमाज १ पूरणराजसमाजहमहुँतुमआ
यसुकीजै । पालियपितुकोबैनजन्मअभिमतफललीजै २
अभिमतफलतिनजगलह्योपितुआयसुजिनशिरलयो ।
बचननखंडितसोकरौआयसुनृपबनकोदयो ३ । ११८ ॥

टी० । भरतप्रति रघुनाथजी कहत नृप बनको आयसु दयो दशरथ महाराज मोहिं बनबास करने की आज्ञादियाहै सोईआजु शिरधरि करना चाहिये भावपिताकी आज्ञामानि बनैमें रहना चाहिये पुरको जानाअनुचित है यथामोको बनकी आज्ञादिये हे भरतजी तथा पितु पुरको राज समाज पूर्ण तुमको दिये अर्थात् अवधपुरकी राज्यसमग्र पिताने तुमको दिया १ यथा हमकोबनबास तथा तुमकोपुरकोपूर्ण राजसमाजदिया ताते हमहूँ तुमहूंदोऊजने पिताकोआयसुपालनकीजै काहेतेदोऊजनपितुकोबैन बचनपालिये जन्म अभिमतफललीजै मनुष्यजन्मधरेको जोउत्तममनोरथ फल अर्थात् लोकमें सुयश परलोकमें शुभगति सुखपूर्वकजीवन इतिला-

भलीजै २ काहेते लाभलीजै यहीलोक विदित वेदको सिद्धांत है कि जिन पितुआयसु शिरलयो तिनहीं जन जग में अभिमत फललह्यो अर्थात् जिन जनन पिताकी आज्ञा शीशपरधरि अंगीकारकीन्हे तिनहींजनन लोक परलोकमें मनभावत लाभपाये ऐसाबिचारि जो नृपदशरथ महाराज मोको बनवासको आयसु दियो सो बचन खंडितनकरौ पिताको बचन भंगकरि पुरको लौटने को न कहौ ३ । ११८ ॥

मू० । जोश्रुतिकहतसुसत्यहैभरतकहतकरजोरि । पितुआयसु
शिरराखियेपरमधर्मशतकोरि १ परमधर्मशतकोरितदपि
पितुतियवशहोई । सन्निपातअतिवातवारुणीसेवतसोई २
सेवतसोईरोगवशवचनकुयोगअपत्यहै । समुझिनाथकी
जैउचितजोश्रुतिकहैसोसत्यहै ३ । ११९ ॥

टी० । स्वामी के बचनते प्रतिकूल उत्तर सेवकको अनुचित है तिस क्षमाहेतु हाथजोरिकै भरत कहत हे नाथ जो श्रुतिकहै सो सत्यहै जोवेदते प्रमाण होय सोई सत्यधर्म है ताते शतकोरि परम धर्म पितु आयसु शिर राखिये सौ करोरि उत्तम धर्म्मसम पिताकी आज्ञाहै ताको शीशपरधरि अंगीकार कीजिये १ पितुआज्ञा सौ करोरि परम धर्म्म सम यद्यपि है तदपि जो पिता स्त्रीके वशहोइ भाव अपनी इच्छाते नहीं कहत न वेदधर्म बिचारत उचित अनुचित जो स्त्री बतावत सोई पिता कहै अथवापिताके सन्निपात भयाहोय अथवा अतिवात अर्थात् उन्माद भयाहोय अथवा सोई पितावारुणी सेवतहोइ अर्थात् मदिरापान करताहोइ २ सोईवारुणीसेवतहोइअथवाकिसीरोगके वशहोइ इत्यादि कारणते जो बचनतेकुयोग अपत्यहै वैबचन कुयोगते उत्पन्न होतेहैं ऐसे बचनजो पितौकहै तिनको यथार्थ न मानिये बिचारकरि प्रमाण करना चाहिये ताते हेनाथ पिताके बचननमें समुझि बिचारकरि जो उचितहोइ सोकीजिये भावस्त्रीकेवश ह्वैजो वचनते प्रामाणिकनहींहैं तिनको न अंगीकारकरौ अरुजो सावधानी में तुमको राज्यदेने को कहे सो प्रमाणकरौ इति बिचारि उचित कीजिये अरुजो श्रुतिकहै सोतौ सत्यहै तामें बिचारतौ करनाचाहिये ३ । ११९ ॥

मू० । प्रभुरुखलखिमनप्रणकियोगयेगंगकेतीर । जलउठायसं
कल्पकरिजोनचलैंरघुवीर १ जोनचलैंरघुबीरदेहतृणसम

तजिडारो । तनमनअर्पितदेखिगंगतियवेषसुधारो २ वेष सुधारीएकमुखढिगउपदेशसुधारियो । सुनुबिबेकरामानुजे प्रभुरुखलखिप्रणमनकियो ३ । १२० ॥

टी० । प्रभुको रुखलखि गंगतीरगये मन प्रणकियो रघुनंदन प्रभुको रुखदेखि लिये कि अयोध्याजी को न जायँगे ताते भरत मंदाकिनी गंगाके तीरजाय मनमें प्रणकिये कौनभाँति जल उठाय हाथमें लै संकल्प करि कहे कि जो रघुबीर न चलैं १ जो रघुनाथजी अयोध्याजी को न लौटिचलैं तौ देहतृणसम तजिडारौं तिनुकाकी समान देहत्यागिदेउँ इतिसंकल्प करि प्रणकिये सोतनमनअर्पित देखि अर्थात् प्रभुकेबिनालौटे ताकेहेतुमनकरिकै तनकोअर्पणकियेहैं भावतनत्यागकिया चाहतेहैं इति भरतजीको प्रणदेखि गंग तियवेष सुधारौं मंदाकिनीगंगास्त्रीवेषते मूर्त्तिमान् प्रकटभई २ वेषसुधारी एकमुखगंगाजीस्त्रीको वेषकरिपुनःभरतकोमुखआपनामुख एक कीन्हे अर्थात् सन्मुख बैठि ढिगउपदेश सुधारौं भरत के निकट बैठि उपदेश करने लगी क्या गंगा कहत हे रामानुजे रघुनंदन के छोटे भाई जोतुमने प्रभुको रुखलखि मनमें प्रणकियाहै ताको बिवेक सुनिये अर्थात् बिना बिचार प्रणकीन्हेउ ताते बिचार सुनिये सोकीजै ३ । १२० ॥

मू० । सत्यसच्चिदानंदहरिरामसकलसुरईश । ताहिनसुतभ्राता गनौसर्वोपरिजगदीश १ सर्वोपरिजगदीशशंभुबिधिहरिका रणकरापदपतालशिरगगनलोककरउरगिरिसरवर २ गिरि सरवरधरअंगसबभरणहरणथितिपूरिभरि।हठनकरौआय सुधरौब्रह्मसच्चिदानंदहरि ३ । १२१ ॥

टी० । रामसकल सुरईश सत्चित् आनंद रूपहरिहैं भरतसों मंदाकिनी कहत कि रघुनाथजी सबदेवन के स्वामी कैसे ईश्वर हैं सत्यत्रयकाल में एक रस चित् सदा एकरस ज्ञान अखण्ड आनंदरूपहरि हैं ताहिसुत भ्रातानगनौ हे पुत्रभरत तिनरघुनंदन को आपनै भाईकरिकै न गनौकाहेते जगत् के ईश सब संसारभरे के पालनहारहैं १ सर्वोपरिजगदीश सर्व ईशनके परे जगत्के पालनहार पुनः शंभु बिधिहरि कारणकर ब्रह्माबिष्णु शिवकारण जो आदि प्रकृति इत्यादि सबके उत्पन्न करनहारे हैं पुनः ब्रह्मांडसब जिनको विराट् रूपहै कौनभाँति पाताल जिनके पदहै गगन

आकाश जिनको शिरहै लोककर लोकपाल जिनके करहाथ हैं तथा गिरि जो पर्वत सरवर जोसागरश्रेष्ठ२ गिरिसागर धरजो पृथ्वी इत्यादि सबअंग जानिये पुनः भरण जो लोकनको पालन हरण जो प्रलयथितिजो उत्पत्ति इत्यादि करनेवालेते भूतमात्रमें सर्वत्र भरिपूरिरहेहैं इति ब्रह्मसच्चिदानंद हरिजानि रघुनंदनको आयसु शिरधरौ जोकहैंसोकरौ हठनकरौ३।१२१॥

मू०। जनपालनखलगणदहनचलेबिपिनसुरकाज । महीदेवश्रुतिद्विजबिकलमुनिपालनतपसाज १ मुनिपालनतपसाज जातदशकंठहिमारैं । करिप्रमाणनिजकर्मअवधपुरतिलक सुधारैं २ तिलकराजलीलाकरहिंमहीमोदसुखनिर्बहन। उठहुरामआयसुकरौसुरपालनखलगणदहन ३।१२२॥

टी०। आपने जननको पालनहार तथा खलगण दुष्टसमूहनको दहन जरायदेनहारे श्रीरघुनाथजी सुरकाज बिपिनचले देवनको कार्य करने हेतु बनकोचले काहेते बनैचले मही पृथ्वी पापते गरुवातीहै देवनके लोक छूटेपरेहैं श्रुति वेद धर्म लुप्तभया ताते विकलहैं तथा मुनि यज्ञादि सत्कर्म नहीं करने पावत इत्यादिकनको पालन हेतु तपसाज तापसी वेषतेजाते हैं १ मुनिनको पालनहेतु तपसाजते दशकंठहि मारनजात सबंश रावण को नाश करने हित जात सोई निजकर्म प्रमाणकरि जोकछु कियाचाहते हैं सो आपने कर्म सांचेकरि पुनः लौटिआय अवधपुर में तिलक सुधारैं राज्याभिषेक अंगीकार करिहैं २ तिलक सुधारि पुनः राजलीला करहिं राजनीति धर्म सहित उत्तम चरित करहिंगे कौन हेतु महीमोद सुख निर्बहन पृथ्वीभरेमें आनन्द सुख सहित जीवनके निर्बाह हेतु ताते हे भरत उठहु जनपालन खलगण भस्मकर्त्ता जो रघुनाथजी तिनको आयसु करौ आज्ञामानौ ३।१२२॥

मू०। शुभआननसुनिकैभरत मगनभयेसुखबंद। भईअदृष्टिअशीशदैश्रवणसुधाशुभछंद १ श्रवणसुधाशुभछंदभरतआनंदसिधाये । श्रीरघुबरपदकमलप्रेमधरिशीशनवाये २ शीशनायबिनतीकरी देहुपादुकाशिरधरत । करतअटनतीरथबिपिन शुभआननसुनिसिखभरत ३।१२३॥

टी०। शुभआनन गंगाजीको मंगलकारी जोमुख त्यहि करिकै उत्तम

वचन सुनिकै भरतचंद सुखमें मगन गुप्त आनन्दमें बूडिगये अर्थात् माधुर्य में ऐश्वर्य बिचारि अंतर में प्रेमानंद भरिगया तब मंदाकिनी भरत को श्रवण सुधा शुभछंद अशीशदै अदृष्टिभई सुनत में अमृत सम श्रवण रोचक पुनः शुभछन्द मंगलमय आशयहै जामें यथा ॥ अभिप्रायश्छन्द आशयः इत्यमरः ॥ अर्थात् सुनतमें काननको अमृतसमप्रिय तथा अभिप्राय लोक मंगलकारी ऐसेबचनकहि आशीर्बाददै गंगाजी अन्तर्द्धानभईं १ हे पुत्र रघुनन्दनकी आज्ञापालौ इतिसुनतको श्रवणनको सुधासम तथा रावणको मारि भूभार उतारि सुरसाधु मुनिनको पालन करि वेदकोधर्म थापैंगे इति शुभछन्द मंगलकारी अभिप्राय सो बचनसुनि आनन्द सहित भरत सिधाय उठिचले आय श्रीरघुनाथजी के पदकमल प्रेमधरि प्रेम सहित पाँयपकरि पुनः शीशनाये प्रणामकीन्हे २ प्रभुपद कमलनमें शीश नाय पुनः भरत बिनतीकरी हे नाथ प्राण अवलम्ब हेतु पादुका खराऊं देहु तिनको पाय शीशभरत प्रभुकेदीन्हे पादुका भरत शिरपर धरिलीन्हे इति शुभआनन लखि मंगलकारी गंगाजीके मुखते सिखावनसुनि भरत संतोषकरि बिपिन तीरथ अटनकरत चित्रकूट बनमें यावत् तीर्थरहे तिन को देखत फिरतेहैं कहूं स्नान कहूं आचमन कहूं दर्शन करतेहैं ३।१२३॥

मू० । मगनसमाजसमेतसोचित्रकूटबनदेखि। सुखदरामबरबदन
लखिजीवनसफलबिशेखि १ जीवनसफलबिशेषिभरतश्री
रामबुलाये । बिदाहेतुगुरुबचनकहेसबकहँसमुझाये २ स
बप्रबोधभेंटेमिलेचलेसमाजसगेहसों। अवधिआशपुरबास
करिमगनसमाजसनेहसों ३ । १२४ ॥

टी० । सो भरतजी समाजसमेत मगन प्रेमप्रबाहमें बूडे चित्रकूटको बन समग्र देखि पुनः रामबदन सुखदलखि रघुनाथजीको मुखचंद नयन चकोरनको सुखदेनहारा ताको देखिकै जीवन सफल विशेषि जीवन जन्मको विशेषि सफलमानते १ भरतसहित पुरजनतौ श्रीरघुनाथजीको मुख देखतसंते आपना जीवन बिशेषि सफलमानतेहैं भाव प्रभुको छांडि पुरको जाना नहीं भावता है इत्यादि बिचारि श्रीरघुनाथजी भरतको निकट को बुलाये पुनः बिदाहोने हेतु गुरु बशिष्ठसों बचनकहे भाव अब समाजसहित अयोध्याजीको जाइये तथा भरतादि सबपुरबासिन कहसमुझाये धैर्य्यकराये २ प्रभुके बचनसुनि सब प्रबोधकरि मिले भेंटे पुनः

ससमाज गेहकोचले समाजसहित भरत अयोध्याजीको चले घरकोआये रामसनेहसों सब समाज मगन सनेहमें बूडे अवधि जो चौदहबर्ष बांदि रघुनाथजी आवहिंगे यहि आशते पुरमें बासकरि दिन बितावते हैं प्रति दिन सनेह बढ़तहै ३। १२४ ॥

मू०। रामभरतकेप्रेमकोकोकविबरणतपार। नेमक्रियादृढ़धमव्रतकर्म्मपरमआचार १ कर्मपरमआचारबरणिसहसाननहारे। मतिजड़बरणहिंकाहमशकनभअंतविचारे २ मशकअंतकिमिपावइंगगनउड़ैकरिनेमको। तुलसिदासशठक्योंकहैरामभरतकेप्रेमको ३। १२५ ॥

टी०। श्रीरघुनंदन तथा भरतजीको प्रेम अपार समुद्रसमहै तहां को ऐसासमर्थ कवि है जो बर्णनकरतसंते पारपावहि काहेते जो दृढ़ नेम लिहे जो क्रिया पुष्ट नियमसहित जो सत्क्रिया करतेहैं तथा परमधर्मको जो व्रतधारण कर्म है अर्थात् अहिंसा सत्य पावनतादि पुष्ट नेमसहित जप तप पूजा पाठादि करतेहैं इति दृढ़ नियम क्रियाहै तथा परमधर्म जो रघुनंदन में सेवक सेव्यभाव तामें अनन्यता व्रतमें जो कर्महैं यथा श्रवण कीर्तन स्मरण सेवन अर्चन बंदन दास्यता सख्य आत्मनिवेदनादि इत्यादि यावत् आचरण लोगनमें हैं १ भरतादि पुरबासिनमें परम धर्म कर्मादि यावत् आचारहैं तिनको बर्णनकरतमें सहसानन हजारमुख हैं जाके ऐसे जो शेषजी तेऊहारिगये अंतनपाये ताको जड़मतिमूढ़ बिषयी जीव कहा बरणिसकै काहेते बिचारे मसाको कहौं नभ आकाशको अंत मिलिसक्ताहै २ नेमको करिकै भाव में अंतलैलेहों इति दृढ़धरि जोमसा गगन आकाशको उड़ै तौ किमि अंतपाइसकै किसीभांति गति नहीं है तथा रघुनंदन अरु भरतजी के प्रेमको तुलसीदास शठ क्यों कहै अर्थात् विषयी प्राकृतजीवमें ऐसीगति कहां है जो कहिसकै ३। १२५ ॥

मू०। बसेअवधपुरलोगसबभरतबसेपुरत्यागि। नंदिग्रामखनिअवनिथलव्रतमुनिनिशिदिनजागि १ निशिदिनमुनिव्रतसाधिपादुकानृपकरिसेवैं। राजकाजशुभसाजकरतपूजतद्विजदेवै २ देवमनावतअवधिहित रामसमागमहोयकब।

तुलसिदासमुनिव्रतधरे बसेअवधपुरलोगसब ३ । १२६॥

इतिश्रीतुलसीदासकृतेकुण्डलियारामायणेअयोध्याकाण्डं
समाप्तम् २॥

टी० । कौशल्यादि माता गुरु सचिव पुरबासी इत्यादि सबतौलोग अवधपुरमें बसे आपने घरनमें वासकीन्हे अरु भरत कलंकी राज्य बिचारि अवधपुर त्यागि बिलगबसे कौनठौर नंदिग्राममें अवनिथल खनि भूमिमें साढ़ेतीनि हाथगहिरगुफाखोदि तामेंबसे मुनिन कैसोव्रतकरि निशदिन जागि अर्थात् जटा बल्कल बसन फल भोजन ब्रह्मचर्य सहित रातिउदिन जागते हैं १ कुशासनपर बैठे मुनिन कैसो व्रतसाधे रातिउदिन जागते हैं पादुका नृपकरि सेवै प्रभुके खराउनको सिंहासनपर धरे तिनहींको राजा मानि सेवन पूजनकरते हैं अरु राजकाज को यावत् व्यापार है सो शुभ साज जामें प्रजनको कल्याणहोइ ऐसे विधानते करतेहैं पुनः द्विजब्राह्मण तथा देवनको भी पूजतेहैं २ पूजनकरि देवनसों भवधिहित मनावत कि राम समागमकबहोई भाव देवनसों माँगत कि कुशल पूर्वक कबरघुनाथ जी मिलिहैं इसभाँति गोसाईंजीकहत कि अवधपुरमें सबलोग मुनिनकैसो व्रतधारण किहे बसेहैं ३ । १२६ ॥ कुंडलिया ॥ परमातमपरब्रह्मजो सुखसमुद्रपरधाम । सर्वोपरिपररूपत्यहिकहिनसकतयशनाम ॥ कहिनसकतयशनामनेतिश्रुतिशास्त्रपुरानै । पदबंदतबिधिशंभुध्यानयोगीजनआनै॥ आनभांतिजोअगमसुगमकरिभावप्रेमकर । बैजनाथसोप्रकटछटकिछबिफटिकशिलापर १ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथबिर
चितेकुंडलिकारामायणप्रदीपिकाटीकायांअयोध्याकांडसमाप्तम् २ ॥

अथारण्यकाण्डप्रारंभः ॥

कुण्डलिया ॥

मू० । फटिकशिलासुंदरसुखद बैठेसियरघुबीर । सुमनलषणआ-
नहिंसुभग सुरभितसुमुखसमीर १ सुरभितसुमुखसमीर
रामसियभूषणसाजे । अंगअंगप्रतिरुचिरकामरतिलखि
छबिलाजे २ लखिलाजेरतिकामतनइंद्रसुवनभरमेंदुखद ।
परब्रह्मश्रीरामसिय फटिकशिलासुंदरसुखद ३ । १ ॥

टी० । दो० ॥ उरधरि श्रीरघुबीरपद गुरुपदरज शिरधार । तिलकरचौं आरण्य को निजमतिकी अनुसार १ सुंदरसुखद जोफटिक शिलाहै तापर सिय रघुबीर बैठे कामद गिरिते अग्न्येयदिशी मीलभरेपर मंदाकिनी की धाराके बीचमें धवलरंग पत्थरको जो फटिक शिलाहै सो सुंदर अर्थात् समथर चिक्कन श्वेत चमकदार इतिसर्वांग सुठौरबना पुनः सुखदायकअर्थात् समीपही धवल जलभरा चारिहु दिशि ललितवृक्ष लतापल्लवितफूले फले वितानसे तने झूमिरहेहैं तिनपर अनेकभाँतिकेपक्षी भाँति भाँति बोलिरहेहैं तहाँमृगझुंड घूमते हैं शीतलमंद सुगंध पवन बहिरही है इत्यादि सुखद है तापर जनकनंदनी सहित रघुनंदन बैठेहैं तिनकी आज्ञाते लषण समीर सुमुख सुरभित सुमन आनहिं जिनके सुमुख सन्मुख ते समीर जो पवनसो सुरभित सुगंधित आयरही है ऐसे सुगंधित सुमन जो फूल रंगरंगके लक्ष्मणजी लै लै आवते हैं १ जिनके सुमुख सन्मुख ते समीर सुरभित पवन सुगंधित आवतीहै ऐसे बहुरंग फूलनके भूषण बनाय रघुनंदन जनकनंदनी परस्पर साजे बनाय पहिराये अर्थात् बटपत्रको आधारदै ताके किनारन में कलीसकि मध्यमें बिबिधरंगफूलनसों विचित्र बेलिबूटा बनाय तापर अभ्रक पत्रसी दीन्हे इसीभाँति अर्द्धचंद्र किरीट टीका बंदी कर्णफूल पदिकहार बाजू केयूर कंकण पहुँची आरसी रसना जेहरिपगपान हंसकादि रघुनाथ जी बनाय जानकीजीको पहिराये तथा त्रिखंड किरीट कुंडल पदिकहार कंठा केयूर पहुँची मुद्रिका काँची

नूपुरादि जानकीजी बनाय रघुनन्दनको पहिराये तथा सफेद सिंगरफ हरतार जंगालादि सों तिलक मकरपत्र पत्रभंग कपोल पत्रादि शृंगार कीन्हें इत्यादि नखते शिखपर्यन्त अंग अंगप्रति रुचिर सुन्दर शोभा देरहे हैं जिनकी छबि लखि देखिकै काम रति लजात आपनी शोभा तुच्छ मानत २ लखिसाजे रति कामतन अर्थात् श्रीराम जानकी नहीं हैं काम रति हैं ते नवीन रीतिते आपने तनको साजे हैं इत्यादि इंद्रसुवन भरमेउ इंद्रको पुत्र जो जयंत ताके इसभाँति को भ्रमभयो ताते दुखददुखदेनहारा शत्रुवत् बनिगयो जासमय परब्रह्म श्रीराम जानकी सुन्दर सुखद फटिक शिलापर बैठे हैं तबै जयंत दुखदभया सो आगे कहते हैं ३ । १ ॥

मू० । समुझिमनुजअवगुणकरयो हत्योचोंचतनकाग । रुधिर
देखिशरसुमनकोकीन्हक्रोधकरित्याग १ कीनक्रोधकरित्या
गलोकलोकनभ्रमिआयो।मतिगतिविह्वलविकलमोहमाया
भरमायो २ मोहअंधनारदलख्यो पायसीखपायँनपरयो ।
त्राहित्राहिरक्षाकरौसमुझिमनुजअवगुणकरयो ३ । २ ॥

टी० । मनुज समुझि रघुनन्दनको मनुष्य विचारि जयंतने अवगुण अनीति करयो क्या अवगुण करयो काकतन चोंचहत्यो कौवाको तनधरि जानकीजीके पांयमें चोंचमारयो तेहि जनित रुधिरदेखि क्रोधकरि सुमन को शरत्यागकीन जानकीजीके पांयते रक्त बहतेदेखि प्रभु जानिलिये कि जयंत हमाराबल देखने हेतु दुर्भाव कियाहै यह विचारि क्रोधकरि सुमन शर फूलनकी बाण तापर छांडे मानसमें सींकबाण लिखाहै सोभी गाँडर को फूलै है अभिप्राय यह कि कोमल बाणत्यागे १ जब प्रभु क्रोधकरि त्याग कियोसो बडेवेगतेधावाताकी भयतेभागइंद्रपुर,कैलास, सत्यलोक इत्यादि लोकलोकनभ्रमिआयो कहीं बचारा न देखा न ताते भयतेमतिविकलबुद्धि व्याकुलह्वैगई पुनः श्रमते गतिविह्वल अर्थात् अत्यन्तथकिजानेतेभागनेकी गतिन रही कौन कारणते मोहमाया भरमायो प्रभुकीअविद्या मायाने मोह केबशकरि भरमावत फिरयो अर्थात् अज्ञानते ईश्वरमें मनुष्यभाव मानि विरोधकिया इसीकारण बिकलह्वै भागनापरा २ मोहबशते अंध विचार नेत्रहीन नारद लख्यो जयंत को देख्यो तिन पुकारि कह्यो कि अनत कहौं न बचिहै ताते रघुनंदनकी शरणजा इत्यादि नारदते सिखावन पाय आय प्रभुके पांयनपरयो कौन प्रकार जयंत बोल्यो हे रघुनाथजी

आपु को प्रभाव मैं नहीं जानता रहौं मनुज समुझि अवगुण कर्यो मनुष्यजानि दुर्भाव कीन्हेउ आपुकी शरणहौं त्राहि त्राहि रक्षाकरौ अर्थात् आपु दयासिंधुहौ मेरे प्राण बचावो ३ । २ ॥

मू० । एकआंखिकरिप्रभुतज्यो कर्मकीनबड़घोर । कृपानिधानस
मानकोप्रणतपालबरजोर १ प्रणतपालबरजोरचरितसुर
नरमुनिगावैं । चित्रकूटबससुखदजानिसबआश्रमआवैं २
आश्रमविदितविचारिकै विपिनसाजसबतनसज्यो । अ
त्रिजहाँआश्रमगयेचित्रकूटथलप्रभुतज्यो ३ । ३ ॥

टी० । यद्यपि जयंतने बड़ाघोर कर्मकीन भाव भागवतापराध क्षमा करिबे योग्यनहीं है वाकोबध करनैउचितरहै परंतु एकआंखिकरि प्रभुतज्यो अर्थात् प्रभुको बाण अमोघहै बृथानहीं जाइ सकत इसहेतु एकनेत्र हीन करि त्यागिदिये ताते कृपानिधान रघुनंदनकी समानबरजोर प्रणतपाल कोहै जो भूतमात्र रक्षा करिबेको आपहीको समर्थ मानना सोई कृपा है यथा ॥ भगवद्गुणदर्पणे ॥ रक्षणेसर्वभूतानामहमेवपरोविभुः । इतिसाम र्थ्यसंधानंकृपासापारमेश्वरी ॥ इतिकृपाभरे निधानस्थान जो रघुनाथजी तिनकी समान प्रणतपाल शरणागतको पालनेवाला बरजोर श्रेष्ठ बली दूसरा कौनहै एक रघुनाथैजी हैं १ कैसे बरजोर प्रणतपालहैं जिनको प्रणतपालताबरजोरीकोचरित सुर देवता नर मनुष्य मुनि व्यास वाल्मी-क्यादिगावतेहैं चित्रकूट सुखदजानि बस सुखदायक स्थानजानि चित्रकूट में रघुनंदन वासकीन्हेरहैं परन्तु निकटजानि यावत्संबंधी सनेहीरहैंते सबै प्रभुकेआश्रमको सदैआवैं यह बाधाबिचारे २ आश्रम विदित विचारिकै भाव मेरा वास सब जानतेहैं ताते अधिक भीरहोई यह विचारि फूलादि भूषण त्यागिकै विपिनबनकी साज वल्कलादि सब तनमें सब मुनिबेष साजे तब चित्रकूट थल स्थान प्रभु तज्यो उठि आगेको चले जहां अत्रि मुनि वास किहे रहैं त्यहि आश्रम को प्रभुगये ३ । ३ ॥

मू० । ऋषिअनंदभेंटतभये देखिलषणसियराम । आसनबैठारे
मुदित पूजेअभिमतकाम १ पूजेअभिमतकामजानकीलि
नबुलाई । अनसूयापटदीननित्यनूतनसुखदाई २ सुखदा

यनउपदेशदै पतिव्रतधर्मनिसबदये । आदरअस्तुतिमुनि करीऋषिअनंदभेंटतभये ३ । ४ ॥

टी० । लषण जानकी सहित रघुनन्दनको प्रणाम करते देखि ऋषि अत्रि आनन्द ह्वै हृदयमें लगाय भेंटतभये पुनः मुदितमन आनंद सहित आसनदै प्रभुको बैठारे अभिमत कामपूजे अर्थात् मनोवांछितफल पूर्ण करिपाये भाव जप योग तप साधन जिसहेतु करतेरहे सोई प्रभुके दर्शन प्रसिद्धपाये १ यथा रघुनाथजी को पाय मुनि अभिमत कामपूजे तथा मुनि पत्नी अनसूया जानकीजीको बुलायलीन निकट बैठारि आदर पूर्वक नितनूतन सुखदाई पटदीन जोसदा नवीनबनेरहैं अरु सबऋतुनमें सुख देनहारे ऐसे दिव्य पट पहिरनेको दीन २ प्रथम सुखदेनहारे अनेकउत्तम उपदेशदीन्हे पुनः पतिव्रत उत्तम मध्यम नीच अधमादि जो धर्म है तिन सबको बिधिवत् बिस्तार सहित उपदेशदये इत्यादि ऋषि आनंद सहित भेंटि पुनः मुनि आदरकरि पूजनादिकरि प्रभुकी स्तुतिकीन्हे व अत्रिमुनि आदर स्तुतिकीन्हे अन्यऋषि आनंदते भेंटतभये ३ । ४ ॥

मू० । बिदाअत्रिसोंप्रभुभयेसियालषणरघुराय । चलेविपिनआगेसुखदमहामुदितमनपाय १ महामुदितमनपायसकलमुनिभयेसुखारी। निर्भयजपतपकरहिंयोगमखहोमविचारी २ होमविचारिसँभारिहरिआशिषआदरसोंदयो । मंगलमय काननभयोबिदाअत्रिसोंप्रभुभयो ३ । ५ ॥

टी० । अत्रिमुनिसों प्रभु बिदाभये पुनः जानकी लक्ष्मणसहित रघुनाथजी बिपिन बनमें आगेचले तिनहिं सुखदपाय सब मुदितमनभये अर्थात् सुखदेनहारे रघुनंदनको पाय बनबासी मुनि मनते महा आनंद भये १ रघुनंदनकोपाय कैसे महामुदितमनभये मुनिजनसुखारीभयेराक्षसनकी भयमिटिगई तातेनिर्भयह्वै मंत्र जप तपस्या अष्टांगयोग मख जोग यज्ञ साधारणहोम इत्यादि विचार पूर्वक करतेहैं २ विचार पूर्वक होमादि करते हैं पुनः हरिसँभारि आदर सों आशिषदये अर्थात् ईश्वररूपविचारि आदर सहित पूजनादि करतेहैं माधुर्यरूप देखि आशीर्वाद देतेहैं इत्यादि जब अत्रिमुनिते बिदा ह्वै प्रभु आगे चले तब कानन बन मंगलमय भयो ३ । ५ ॥

मू० । बधिविराधमगसुखभये देखिजायसरभंग । परिपूरणलखि रामछबिप्रेमप्रफुल्लितअंग १ प्रेमप्रफुल्लितअंगजोरिकर विनयबड़ाई । करिनिहोररचिचिताअग्निचढ़िदीनलगाई २ दीनअग्नितनअर्पिकै रामलषणसियउरलये । गयोधामश्रीरामलखिबधिविराधमगसुखभये ३ । ६ ॥

टी० । विराधबधि मगसुखभये मग रास्तेमें विराधनामे राक्षस मिला ताको मारि बन बासिनको अभय कीन्हे ताते सब मुनिनको सुखभयो पुनः जाय सरभंग ऋषिकोदेखे ते सरभंग रामकी परिपूर्ण छबि लखिअंग प्रफुल्लित भये रघुनंदनको सर्वांग सुंदर स्वरूपदेखि मुनि के प्रेमउमगा ताते देह में रोमांच कंठारोधन नेत्र सजलह्वैआये १ प्रेमते सर्वांग प्रफुल्लित पुनः कर दोऊ हाथजोरि प्रभुकी बिनय बड़ाई स्तुति प्रशंसादि कीन्हे पुनः निहोरकरि अर्थात् जबतक तनत्यागि आपुकोमिलौं तबतक कृपाकरि इहांरहौ इतिकहि पुनः चिताराचि तापरचढ़ि अग्निलगायदीन्हे भस्म ह्वैगये २ दीन अग्नितनअर्पिकै आगीमें देह जरायदीन्हे देह अग्निकोदैकै पुनः दिव्यरूपते राम लषण सिय उरलये लक्ष्मण जानकी सहित रघुनंदनको ध्यान उरमें धरे हरिधामको गये इत्यादि बिराधको मारे पर मगमें श्रीरघुनाथजीको देखि सबके मनमें सुखभयो ३ । ६ ॥

मू० । मिलेसुतीक्षणधायकैपुलकनयनजलधार । ज्यहिबिधिशिवयोगीशमुनिध्यावतहृदिआगार १ हृदिमंदिरध्यावतसदाआयेतेबनआजुहैं । देखौंनयनसनेहभरिमूरतिसुखरघुराजहैं २ अंतर्य्यामीधारिमिनमूरतिनेहलगायकै । रामजगायेप्रेमपरिमिलेसुतीक्षणधायकै ३ । ७ ॥

टी० । प्रभुको आगमनसुनि प्रेमते तनपुलकि नेत्रनसों आंसुजलकी धारबहत इसी दशाते सुतीक्षण मुनिधायकै मिले क्या विचार करिधाये ज्यहि प्रभु को विधि जो ब्रह्मा शिव तथा योगेश्वर मुनि इत्यादि हृदिआगार ध्यावत हृदयरूप मंदिर में ज्यहि स्वामी को रूप सदा धारण किहेसेवनमें लगे रहतेहैं १ ब्रह्मा शिवादि जिनको सदा हृदयरूप मंदिर में ध्यावते हैं ते प्रभु आजु बनको आयेहैं तिनको सनेह भरिनयनन देखौं क्योंकि रघुराज सुखमूरतिहैं अर्थात् आनंदमूर्त्ति रघुनाथजीको प्रीति पूर्वक

आजु नेत्रन भरि देखिहौं इत्यादि अभिलाष करत चल्यो शुद्ध हृदय में ध्यान थिर ह्वै गयो २ कैसे ध्यान थिरभयो अंतर्यामीमूर्तिमें सनेहलगाय कै मनमें धरिलियो अर्थात् जीवके अंतर जो प्रभुको अंतर्यामी रूप बसा है ताहीमें दृढ़ सनेह लगाइ सोई रूपमनमें धरि आनंदमें मगन ह्वैगयो इति ध्यानमें थिर देहकी सुधि बिसारि राहमें बैठिगयो जब रघुनाथजी जायकै जगायो तब प्रभुको देखि उठि प्रेमते परिपूर्ण सुतीक्षण धायकै रघुनाथजीको मिल्यो ३ । ७ ॥

मू० । संगगयोमगमेंचल्यो जातलखतप्रभुरूप । ऋषिअगस्ति आश्रमगये हर्षिसकलसुरभूप १ हर्षिदेखिसुरभूपमिले मुनिभागबखान्यो । आसनआदरपूजिवेदप्रतिमतिप्रभु जान्यो २ जानठानिसुखमानिप्रभुमधुरवचनबोल्योभल्यो । शुभअस्थानबताइये संगगयोमगमेंचल्यो ३ । ८ ॥

टी० । आश्रमको आनि पूजन स्तुति करि पुनः सुतीक्षण प्रभुकेसंग गयो अगस्तिके आश्रमको संगचल्यो राहमें प्रभुकोरूप लखत देखत चले जात इसभाँति सकल सुरभूप ब्रह्मा शिवादि सब देवनकेदेव श्रीरघुनाथ जी अगस्तिऋषिके आश्रमको गये १ सुर भूप देखि मुनि मिले भाग बखान्यो देवनकेदेव रघुनाथजीकोदेखिअगस्तिमुनि उठिकै हृदयमें लगाय मिले कुशल पूछि आपनी भाग्यकी प्रशंसाकीन्हे यथा मेरी बड़ी भाग्य उदय भई जो आपुआय दर्शनदीन्हेउ पुनः आसनदै बैठारि आदरते पूजि वेद प्रति मति प्रभु जान्यो वेद प्रतिपादित जो परब्रह्म स्वरूप सोई बुद्धि ते जाने माधुर्यमें नहीं भूले २ जान ठानि प्रभुके ऐश्वर्य रूपको प्रसिद्ध मुनि वर्णनकरनेलगे इत्यादि जो मुनि आपना जानपनाठाने ताकोसुख मानि प्रसन्नह्वै पुनः ऐश्वर्यछपाय माधुर्य भूषितकरिबे हेतु प्रभु मधुरवचन भलो बोले हे मुनि हमको बासकरिबेहेतु शुभमंगलीक अस्थानबताइये इत्यादि चरित देखिबे हेतु सुतीक्षण प्रभुकेसंग मग में चलेगये ३ । ८ ॥

मू० । शुभगोदावरिसरितवरसुंदरबटसुखधाम । पंचवटीआश्रम करियअतिपावनश्रीराम १ अतिपावनश्रीराम हर्षिमुनि राजबताई । शुभथलतरुमगदेखि कुटीमंगलमयछाई २

मंगलमयकल्याणथल रामलषणसियशुभचरित। कहत ज्ञानवैराग्यजनु शुभगोदावरिविरसरित ३ । ६ ॥

टी०। वासहेतुस्थान मुनिषतावत शुभमंगलरूप गोदावरी सरितनदी वर श्रेष्ठ ताकेतट सुखकोधाम सुंदरबट बरगदकोवृक्षहै अर्थात् गोदावरीतट जो पंचवटी करि विदितहै सो अतिपावन अत्यंत पवित्र भूमिका है तहां हे श्रीराम आश्रम करिये १ अतिपावन थल जब मुनिराज अगस्ति ने बताई सो सुनि श्रीराम हर्षि आनंद है चलेतहां मगरास्तेमें शुभथल मंगलीक भूमिका अरु बट तरुवृक्ष देखि ताहीठौर मंगलमय कुटी छाई वासकीन्हे २ काहेते मंगलमय कुटीहै एक तौ थल वह भूमिका कल्याण करनहारी है पुनः राम लषण सिय शुभचरित लषण जानकी सहित रघुनाथजी जो चरित कीन्हे सो भी कल्याण कर्त्ताहैं कैसे तीनिहुजन श्रेष्ठ नदी गोदावरी तट शोभित होत जनु ज्ञान वैराग्य अरु भक्ति मूर्तिमान् है ऐसा कवि कहते हैं ३ । ९ ॥

मू०। ज्ञानभक्तिवैराग्यजनुकीविधितियसुतआप । महादेवगिरिजागणपलीन्हेकरशरचाप १ लीन्हेकरशरचाप मदन रतिऋतुपतितीनो। परमारथअरुयोग प्रीतिजनुनरतन कीनो २ नरतनकीनोवीररसशान्तऔरशृंगारभनु। कमठ शेषसुरधेनुकी ज्ञानभक्तिवैराग्यजनु ३ । १० ॥

टी०। पंचवटीमें प्रभु आसीन तीनिहु रूपनकी कवि अनेक उपमा दै वर्णन करत तहां प्रथम शांतरसमें उपमाकहत श्रीरघुनंदन जनकनंदनी लषणलाल तीनिहूं शुद्धस्वरूप मुनिवेषकिंहेदर्श स्पर्श भाषणमात्र जीवन को कल्याणकरनहारे कैसे शोभितहोतेहैं जनु ज्ञान भक्ति वैराग्यहैं अर्थात् यथा ज्ञानहोना दुर्घटहै अरु जामें ज्ञानआवतसो जीवतुरतही मुक्तहोत तथा साकेतबिहारी के दर्शन ब्रह्मादिकी दुर्घट तेई प्रसिद्ध दर्शमात्रते जीवको कल्याण करतेहैं ताते रघुनंदनको ज्ञानकी उत्प्रेक्षाकीन्हे पुनः भक्ति ऊंच नीच जीवमात्रकी सुलभ उद्धारकरनहारी है तथा किशोरीजी जीवमात्र को सुलभ उद्धारकरनेहेतु सदा दयादृष्टिराखेहैं काहेते किशोरीजीकी प्रार्थनाते प्रभु माधुर्यरूपते सुलभ जीवनको उद्धारकरते फिरते हैं इसहेतु किशोरीजीको भक्तिकी उत्प्रेक्षाकीन्हे पुनः वैराग्य संसारसुख को तुच्छ मानि छडाय परमेश्वरकी सन्मुखकरत तथा लक्ष्मणजी सब सुखत्यागि

शुद्ध रघुनंदनकी सेवा में लगेहैं ताते लक्ष्मणजी को विरागकी उत्प्रेक्षा कीन्हे यह उपमा नहीं मनभाई काहेते ज्ञान भक्ति विरागतौ परलोकही के सहायकहैं लोकके सहायकनहींहैं अरु रघुनंदनतौ लोक परलोक दोऊ के हितकर्त्ता हैं ताते वात्सल्यरस में उपमाकहत कीधौं तिय सुत विधि आपु स्त्री सरस्वती पुत्र मनु स्वायंभू सहित ब्रह्मा आपहीहैं अर्थात् यथा ब्रह्मा पुत्रवत् सृष्टि उत्पन्नकरतेहैं विधिवत् कर्मनको फलदेतेहैं तथा प्रभु सुर नर नागादि उजरे लोकनको बसावतेहैं अरु सज्जननको सुख दुष्टनको दुखदेते हैं इसहेतु प्रभुको ब्रह्माकरि कहे पुनः यथा सरस्वती बुधि विद्या अमलकरि जीवनको वेदशास्त्र सिद्धांत दर्शाय धर्म्म कर्मनकीरीति सिखावत तथा जानकीजी परमसुकुमारी राजकिशोरी ते बनबासहू में अनेकदुःखसहि पतिकी सेवैमें आनंद हैं इति पतिव्रतदर्शाय सबजीवन को धर्ममें बुद्धिलगावती इसहेतु जानकीजीको सरस्वतीकरि कहे पुनः यथा मनुमहाराज बिधिवत् धर्मको पालकरि प्रजनकोभी धर्म में आरूढ़ कीन्हे पुनः अंतमें ऐसा परमधर्मगहे कि ईश्वरको स्वाधीन करिलीन्हे तथा लक्ष्मणजी जन्मतही रामसेवा धर्मको दृढ़ गहि औरनको आरूढ़ कराये अब सबसुखछांडि बनवासमें सेवाकरते हैं इति परमधर्म धारण करि राम जानकीको स्वाधीनकिहेहैं इसहेतु लक्ष्मणजीको मनुकरि कहे यहू उपमा नहीं मनभाई काहेते ब्रह्मा सरस्वती स्वायंभू स्वामिवत् उत्पत्ति उपदेशकर्त्ता हैं मित्रवत् किसी के नहीं हैं अरु रघुनंदन जीवमात्रके सुहृद हैं ताते करुणारसमें उपमाकहत करशर चाप हाथनमें बाण धनुष लीन्हे महादेव अरु गणपति तिनके संग गिरिजाहैं अर्थात् यथा सेवकको दुःख महादेव नहीं सहिसक्ते हैं बेलपत्र अर्क धतूरके फूलै पाय प्रसन्नह्वै वाको निहालकरिदेतेहैं तथा जो आरतजन जो एकबार प्रणामकरि कहै कि मैं शरणहौं ताहूको प्रभु अभयकरिदेते हैं इसहेतु रघुनाथजीको महादेवकरि कहे पुनः यथा गिरिजा ग्रामग्राम लोगनकी रक्षाकरती हैं तथा जानकीजी जीवनकी रक्षाहेतु प्रभुसहित लोकमें बिचरती हैं ताते जानकीजीको गिरिजाकरिकहेपुनः यथा गणेशजी सुमिरणमात्रजीवनके मंगल कर्त्ता हैं तथा लक्ष्मणजीके आचरण सुधिकरतही मंगलहोत ताते लक्ष्मणको गणेशकरि कहे यहौउपमा नहीं मनभाई काहेते शिव अमंगल वेष गिरिजा अर्द्धांग गणेशको पशुवत्मुख अरु ये तीनिहूं रूप अत्यंत स्वरूपवंतहैं १ ताते शृंगाररस में उपमाकहत कि कर शर चापलीन्हे मदन अरु

ऋतुनके पति बसंतऋतु तिनकेसाथ रतिहैं अर्थात् रघुनाथजी कैसे शोभितहैं यथा श्यामसुंदरस्वरूप धनुषबाणलिहे सबकोमनमोहिबेहेतु मूर्त्तिमान् कामदेवहै तिनकेसमीप जानकीजी कैसी शोभितहोती हैं हेमबरण सुंदर सुकुमार स्वरूप रति कामकी पत्नीहैं तिनसमीपउत्तमसेवक लक्ष्मणजी कैसे शोभितहोते हैं सुंदर गौरबरण शुद्ध पावन मन सर्वांग प्रसन्न बसंतऋतुहै इति तीनिहूं संग मूर्त्तिमान् सबको मन मोहिलनेहेतु प्रसिद्ध हैं यहूउपमा नहीं मनभाई काहेते काम रति बसंततौ जीवनको भवसागरमें डारनेवालेहैं अरु रघुनंदन तौ तीनिहूं स्वरूप जीवनको उद्धारकर नहारेहैं ताते दासरसमें उपमाकहत कि परमार्थ अरुयोग तथा प्रीति ये तीनों जनु नर मनुष्यकोतन धारणकीन्हेंहैं अर्थात् परमार्थ कहीपरलोक साधनतामें चारिभेद प्रथम लोकते विराग दूसर विवेक असार त्यागि सार ग्रहण करना तीसर षट्सम्पत्ति यथा वासना त्यागशम है इन्द्रियनको रोकनादमहै धर्मानुष्ठान तपहै दुख सुख सम जानना तितीक्षाहै गुरु वेदांतमें विश्वास श्रद्धाहै चित्त एकाग्रता समाधानहै पुनः चौथमेरी मुक्ति निश्चय होवै यह मुमुक्षुताहै यथा तत्त्वबोध प्रकरण वेदांते साधन चतुष्टयंकिम् । नित्यानित्यवस्तुविवेकः इहा मुत्रार्थफलभोगविरागःशमदमादिषट्संपत्तिः मुमुक्षुत्वंचेतिसयथा नित्यस्त्वेकं ब्रह्मतद्व्यतिरिक्तं सर्वमनित्यं अयमेवनित्याऽनित्यवस्तुविवेकः १ विरागःकः इहस्वर्गभोगेषु इच्छाराहित्यं शमदमादिषट्संपत्तिःकाशमोदमस्तपस्तितिक्षाश्रद्धासमाधानंचेतिशमःकःमनो निग्रहः दमःकःचक्षुरादिबाह्येंद्रियनिग्रहःतपःकिम् स्वधर्म्माऽनुष्ठानमेव तितिक्षाकाशीतोष्णसुखदुःखादिसहिस्नुत्वम् श्रद्धाकीदृशी गुरुवेदान्तवाक्येषु विश्वासःसंमाधानंकिम् चित्तैकाग्र्यम् मुमुक्षुत्वंकिम् मोक्षोमेभूयादितीच्छाएतत्समाधानचतुष्टयवन्तस्तत्त्व विवेकस्याऽधिकारिणोभवंतितत्त्व विवेकःकःआत्मासत्यस्तदन्यत्सर्वंमिथ्येतिइत्यादि परमार्थमें विवेकविरागशमदमादियावत् लक्षणहैं ते सबप्रभुमें वर्तमान देखिपरतेहैं ताते रघुनंदनकैसे शोभितहोतेहैं जनु राजकुमार रूपधरे परमार्थ हैं पुनःयोगमें आठ अंगहैं यथा झूठ न बोलै हिंसा न करै परस्त्री त्याग चोरी न करै विषय त्याग इति यमहै १ पावनता संतोष तपस्या सद्ग्रंथावलोकन ईश्वर में सनेह इति नियमहै २ दाहिन पद बाम जाँघपै बामपद दाहिनी जाँघपर धरि सीधे बैठना वज्रासनहै आगे टिहुनी झुकाय बीचमें ऐंडीपर ऐंडीधरे सीधी देहराखना कमलासनहै इत्यादि चौरासी आसनहैं ३ एक श्वासा

बंदकरि प्रणवोच्चारण सहित श्वास खैंचना दोऊ श्वासा बंदकरि थँभे रहना जब न थँभै तब दूसरे ते छोडना इति प्राणायामहै ४ इंद्रिय विषय वासना त्यागि चित्त थिर राखना प्रत्याहारहै ५ अंतर्नाभी देशपै चित्त स्थिर राखना धारणाहै ६ नाभि देशमें ईश्वरमें चित्त लगायेरहना ध्यान है ७ ध्यानमें देहकी सुधि भूलिजाना समाधिहै ८ इत्यष्टावंगानि यथा पातंजलेययोगशास्त्रे। यमनियमासनप्राणायाम प्रत्याहारधारणाध्यान समाधयोष्टावंगानि तत्राहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्य्यापरिग्रहायमाः १ शौच संतोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानिनियमाः २ तत्रस्थिरसुखमासनम् ३ तस्मिन्सतिश्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः ४ स्वविषयासम्प्रयोगेचित्तस्यस्वरूपानुकारइवेन्द्रियाणाम्प्रत्याहारः ५ देशबन्धश्चित्तस्य धारणा ६ तत्रप्रत्ययैकतानताध्यानम् ७ तदेवार्थमात्रनिर्भासंस्वरूपशून्य मिवसमाधिःइत्यष्टौअंगयोगकरनेकोप्रयोजनयहहैकि विषयविकारवासनादि त्यागि शुद्ध मन सनेह सहित ईश्वरमें थिर राखना सो लक्ष्मणजीमें यथार्थही देखिपरताहै ताते प्रभुके समीप लक्ष्मणजी कैसे शोभित होते हैं यथा नर तन धारण किहे योगहै पुनः प्रीतिमें भी आठ अंगहैं यथा दो० ॥ प्रणय प्रेमआशक्ति पुनि लगनलाग अनुराग। नेहसहित सबप्रीति के जानव अंग विभाग। मम तवतव मम प्रणय यह सौम्यदृष्टि तिहिहोइ।प्रीति उमग सो प्रेमहै विह्वल दृष्टी सोइ॥ चित असक्त आसक्ति स्वइ यकटक दृष्टी ताहि। बनीरहै सुधि लगनकी उत्कंठादृगमाँहि॥ जाकेरसमें लीनचितचोप दृष्टिसोइलाग। जासुप्रीतिमें चितरँगो मत्तदृष्टि अनुराग॥ मिलनि हँसनि बोलनि भली ललित दृष्टिसों नेह। प्रीतिहोय सर्वांगउर दृष्टि अधीन सनेह॥ तहाँ प्रणय अरु आसक्ती येदोऊ अहंकारकी विषयहैं प्रेम औ लगन मनकी विषयहैं लाग अरु अनुराग चित्तकी विषयहैं नेह अरु प्रीति बुद्धिकी विषयहैं इत्यादि अहंकार मन चित्त बुद्धि द्वारा सब विषय अनुकूलहै ज्यहि रसको अत्यंत भोगी है सर्वांग परिपूर्ण हैजाय ताको प्रीतिकही यथा भगवद्गुण दर्पणे॥ अत्यंतभोग्यताबुद्धिरानुकूलादि शालिनी। अपरिपूर्णरूपायासास्यात्प्रीतिरनुत्तमा॥ इत्यादि सर्वांगप्रीति जानकी जीमें परिपूर्ण है ताते प्रभुके समीप कैसी शोभित हैं यथा नारी तनधरे प्रीति है इन तीनों रूपनके दर्शमात्र से लोग संसारते विरागवान् ह्वै ईश्वर में प्रीति करि परमार्थ पथपर आरूढ होते हैं २ यहो उपमा नहीं मनभाई काहेते तीनिहूं परलोके के सहायक हैं अरु रघुनंदन

तौ लोक में अनेकन को सहायताकरि दुष्टन को बध करते हैं पुनः सुंदरी स्वरूपवंत शुभगुणनयुत श्यामा पति अनुकूल पत्नी श्रीजानकीजी को संग तथा परमपावन शुद्ध सेवक बंधु लक्ष्मणजी समीप ताते अद्भुतरसमें उपमाकहत कि मानौ बीररस अरु शांतरस तथा शृंगाररस तीनिहूं नरतनु धारणकियेहैं येतीनौरस एकत्रहोना अयोग्यहै ते अनुकूलतासहित एकत्रभये यह आश्चर्यहै ताते अद्भुतरसमें उपमाजानब बीररस यथा स्थायी दो० ॥ सौर्जदानरुदयाबहुरि इनमेंएकतेहोइ । परमितचित्त विकारजो सोउछाहजियजोइ ॥ विभाव यथा ॥ अध्यवसायउछाहकोरुअ विस्मैअविषाद । मोहाविनयबलबीरके येविभावअविवाद ॥ अनुभावयथा । धीरजवीरजशूरता अरुउछाहपरभाव । पराक्षेपदानरुविनय इतेवीरअनुभाव ॥ अर्थात् युद्ध दया दान धार्म्मादि में हर्षबनारहना सो वीररसहै सो पांचभांति बीरता रघुनाथजीमें परिपूर्ण हैं यथाभगवद्गुणदर्पणे ॥ त्याग वीरोदयावीरो विद्यावीरोविचक्षणः । पराक्रममहावीरो धर्म्मवीरःसदास्वतः ॥ पंचवीराःसमाख्याता रामएवसपंचधा । रघुवीरइतिख्यातिःसर्ववीरोपलक्षणः ॥ ताते रघुनाथजी कैसे शोभितहैं मानौ वीररस नरतनधरेहैं पुनः शांतरस यथा दो० ॥ कीनिर्वेदपरिपोषकै सबदोषनकैनाश । शांतकहावतरसनहैयामेंनाटयविलाश ॥ दोषकामक्रोधादितहँभाषतकविसरदार। वैराग्यादिविभावतहँविषयादोषाबिचार ॥ पुलकहर्षगद्गदबचनयेअनुभाव बिचार । आनंदाश्रुहिआदिपुनिहैअनुभावअपार॥उदाहरण यथा॥ येकामादिकबटपराडारिद्वेतद्दढपास।यहिसंसारअसारमेंहरिकीआशमवास॥इत्यादिलक्षण सब लक्ष्मणजीमें हैं तातेलक्ष्मणजीकैसेसोहतमनौ शांतरसनर तनधरेहैं पुनः शृंगाररस यथा॥रसकोजोकारणकहत सोविभावद्वैभाइ ।आलंबनइककहतहैं उद्दीपनइकगाइ ॥ लखैजुनायकनायका मनमेंरससरसाइ । आलंबनकविकहतहैं ग्रंथनकेमतपाइ ॥ षट्ऋतुरागसोहागअरु चित्त आनिरसभासु । वासवासजलवासपुनि उद्दीपनकहितासु ॥ बिनाकहेआकारलखि हियेहेतुदर्शाइ । ताहीकोअनुभावकहि बर्णतहैंकविराइ ॥ स्तंभ कंपरोमांचअरु स्वरभंगस्वेदगनाव । विवरणआसूयाप्रलय आठौसात्त्विक भाव॥बीजरूपसबरसनमेंथिरअस्थाईसोइ।जाकोलैरससंचरै सोसंचारीहोइ ॥ बुधिबिलासयुतजहँरहै रतिकोपूरणअंग । ताहिकहतशृंगाररस केवल मदनप्रसंग ॥ इत्यादि श्रीरघुनंदन जनकनंदनीके संयोगते सबअंगते शृंगाररस परिपूर्णहै ताते मानौ शृंगाररस मूर्त्तिमान्है यद्यपि शांतरस बीर

शृंगार दोऊको बिरोधीहै एकत्र नहीं ह्वैसक्ते हैं तथापि समय कारणपाय एकत्रभी ह्वैजातेहैं यथा दो० ॥ सियनिकटशृंगारवर मुनिढिगशांतप्रमाण। खलविलोकिभोवीररस हर्षिलियेधनुबाण ॥पुनः॥ पितुआज्ञामुनिवेषकिय प्रियसनेहलियसाथ। सुरमुनिहितधनुबाणलिय बेगिहतनदशमाथ॥ यहौ उपमा नहीं मनभाई काहेते शृंगारशांत जगत्के रक्षकनहीं क्योंकि आपनेही आनंदके व्यापारमें रहतेहैं अरु वीर किंचित्सहायकहैं सोऊ तमोगुणी हैं अरु लषण जानकी सहित रघुनंदन जीवमात्रपर कृपादृष्टि राखते हैं ताते कृपा दया उदारतादि गुणनमें उपमाकहत कि रघुनंदन लषणलाल जनकनंदनीहैं किधौं कमठ शेष सुरधेनुहैं अर्थात् कमठ जो भगवान् कच्छपअवतारहैं ते ऐसे कृपासिंधुहैं कि भूतमात्रको सुचित्तराखनेहेतु पृथ्वीको पीठिपर धरेहैं पुनः जब सिंधुमथत नबना देवता बिकलभये तब मंदराचल मथानीको आपनी पीठिपरधरे तथा रघुनंदन जीवमात्रपर कृपाकरि नररूपधरे पुनः देवनकेहेतु मुनिवेषधरि बनबासकिये ताते संदेहकरत कि रघुनंदनहैं किधौं कच्छपजीहैं पुनःशेषजीऐसीदयाधर्मको धारणकिहे जामें भूतमात्रको हितहै कौनभाँति कि नीचेतौ भगवान्की शय्या बनीहैं ऊपर सहसफनसों छायाकिहे सुखसों गुण गानकरते हैं इति धर्म दर्शाय औरनौको धर्ममें आरूढ करतेहैं पुनः निर्हेतु जीवनको सुखदेने हेतु ऐसीदया धारणकिहे कि एकतौ भूभार थांभे पुनः आचार्यह्वै पातांजलि आदि अनेक ग्रंथ बनाय ताकी द्वारा जीवनको परमार्थ मेल गावते हैं तथा लक्ष्मणजी प्रभुकी सेवकाई करतेहैं पुनः धनुष्बाण लिहे रक्षामें आरूढ रहतेहैं पुनः निषादराजको उत्तम उपदेश दीन्हे जाकोसुनि औरहू परमार्थपर आरूढ होते हैं ताते लक्ष्मणजी हैं किधौं शेषजी हैं पुनः कामधेनु कैसी है एकतौ क्षमावंत दूसरे ऐसीउदार कि मनोबांछित फल देती हैं जाके पुत्रै लोकको सब व्यापार करते हैं तथा जानकीजी परम क्षमावंत अरु उदार ऐसीकी सुलभजीव उद्धार हेतु प्रभुको भूमंडलको लाईं राहराह जीवनको कल्याण करत फिरत पुनः जिनके पुत्र भक्तजन सब संसारको हित करते हैं ताते जानकीजी हैं किधौं सुरधेनु हैं यहौ उपमा नहीं मनभाई काहेते कच्छप जलचर शेष त्रियिक धेनु पशु स्वरूपतामाधुरीरहित अरु राजकुमार परम रूपवंत माधुरीके भरे हैं ताते तीनिहू स्वरूप कैसे शोभित होत जनु ज्ञान भक्ति वैराग्य तीनिहूं मनुष्य तनधरे लोकहूपरलोकते जीवको कल्याण करते हैं ३ । १० ॥

मू० । मनमोह्योमुखकहिवचन शूर्पणखालखिराम । मदनबाण उरमेंलगो सुनहुकुँवरघनश्याम १ सुनहुकुँवरघनश्याममो हिंदासीअबकीजै । हौंकुमारिछबिधामभगिनिरावणगनि लीजै २ रावणभगिनीजानिकै रमौसंगकरिकैसदन । सुख संपतिसिधिपाइहौ मनमोह्योमुखकहिवचन ३ । ११ ॥

टी० । शूर्पणखा रामलखि मनमोह्यो मुख वचनकह्यो शूर्पणखा राक्षसी रघुनाथजीको सुन्दर स्वरूपदेखि मनते मोहितभई ताते सुन्दर तनधरि मुखते वचन कहतीभई अर्थात् युवतिनके लज्जा अधिक होतीहै ताते जो मोहितभी होती हैं तौ प्रसिद्ध नहीं कहती हैं मनोरथकी चाल देखावती हैं भाव घूमिघूमि कटाक्ष करि देखना हँसना अथवा गूढोत्तरदै उरकोहेतु जनावना इत्यादि युवतिनकी रीतिहै सोतौ नहींकिया काहेते यहतौ वृद्धाहै ताते लज्जाहीन है पुनः कुरूपहै ताको कौनपूछै इस हेतु अन्तरमें बलहीन कटाक्षादि कैसेकरै अरु जो सुंदरि युवती बनीहै सोबनी वस्तुको बलनहीं झूठेको कौनबल इसहेतु निर्लज्जहै मुखते वचन कहत हे कुँवर घनश्याम सुनहु उरमें मदनबाण लग्यो सजल मेघवत् श्याम सुन्दर हे राजकुमार सुनिये मेरे उरमें कामको बाणलगो भाव आपको देखि मेरे उरमें अत्यन्त कामको वेगउठा है सो सहिनहीं जात इस हेतु मेरे वचन सुनिये अंगीकार कीजिये १ हे घनवत् श्यामकुँवर क्या सुनिये अब मोहिं दासीकीजै आजुते मोको गंधर्वी बिवाहितापत्नीकरि जानिये काहेते कुमारिहौं पुनः छबिधाम पुनः रावणकी भगिनी गनिलीजै अर्थात् एकतौ कुमारीहौं अबहीं मेरा बिवाह नहीं भया पुनः छबिभरी मंदिरहौं मेरारूप सर्वांग शोभाते परिपूर्ण है पुनः राक्षसराज रावणकी बहिनिहौं येभीएक उत्तमगुण गनिलीजै अर्थात् कुमारी स्वरूपवंत उत्तम कुलकी कन्याहौं २ रावणकी बहिनि पावनजानि सदन करिकै घरमें पत्नीकरि स्वाधीन राखिकै मेरी सौंदर्यता विचारि रमौ सुखपूर्वक भोगकरौ पुनः सुख संपति सिधिपाइहौ अर्थात् मेरी स्वरूपता अरु अनुकूलताते सुख पाइहौ पुनः मेरी भाग्यते संपति पाइहौ मेरी विद्याते सिधि पाइहौ इति मनते मोहितह्वै शूर्पणखा मुखते प्रार्थना पूर्वक वचन कह्यो ३ । ११ ॥

मू० । सत्यकहीबाणीमृदुलगजगामिनीविचारि । लषणकुमारेवि नतियामेरेसँगयहनारि १ मेरेसँगसुनिनारिलषणकीओर

सिधाई । लक्ष्मणकह्योसक्रोधलाजित्वहिंतनकनआई २
तनमनलाजनतोहिकछु करतिनिलजऔरेहिसकुल । गई
रामपहँक्रोधकरिसत्यकहीवाणीमृदुल ३ । १२ ॥

टी० । विधवाहै वृद्ध कुरूपहै सो सुन्दर स्वरूप बनाये सोछल कुमारी बताये सोऊ झूँठहै अरु जो रावणकी बहिनि बताये सोसत्यहै ताहिवचन अनुकूल प्रभु उत्तरदेतगजगामिनीबिचारि मृदुलबाणी सत्यकही गजहाथी कैसो मंदगमन इति हे गजगामिनी तुम बिचारिकै जैसा उचितरहै सो समुझिकै मृदुल कोमल बाणीते सत्यबातकह्यो काहेते बिनतिया लषण कुमारेहैं अर्थात् यथा तुम्हारापति मरिगया बिना पतिकी तुम कुमारी हौ तथा इनकीस्त्री घरमेंहै इहां स्त्रीबिना लषण कुमारे हैं तिनकेसंग बिवाह करौ अरु मेरेसंगतौ यह नारि है सो दोनारिनमें भोग में बाधाहोत ताते मोको सपत्नीजानि बिनानारिके पति लक्ष्मणके पासजा १ जब रघुनाथ जीकहे कि हमारे संग यह नारि है सोसुनि शूर्पणखा लक्ष्मणजीकी ओर सिधाई चलीजाइ आपना मनोरथकही सोसुनि सक्रोधसहित बचन लक्ष्मणजी कहे कि तोहिं तनकिउ लाज न आई भाव आपने पतिसों ऐसे साफबचन स्त्री नहीं कहतीहै तू ऐसी निर्लज्जहै कि बिना चीन्हेजाने पर पतिनसे प्रसिद्धभोग मांगतीहै तो तेरेसमान मैं निर्लज्ज नहींहौं २ तोहिं तौ तनमनमें कछुलाज न तथा औरेहि निलजसकुलकरति अर्थात् मनमें लाजहोती तौ ऐसीबात न कहिसक्की तथा जो तनमें लाजहोती तौ संकेतमें कहती तू मेरेसन्मुख रघुनाथजीते कहे उनकेसन्मुख मोसोंकहे ताते तेरे मन तनमें कछुभी लाज नहींहै ताते जैसी निर्लज्ज तूहै तैसेही सकुल आपनेही कुलकेसमान औरहूको करती है भाव आपनीसमान मोको भी निर्लज्ज बनावाचाहतीहै सो मैं तेरेयोग्य नहींहौं अरु रघुनंदन अयोध्याके महाराजहैं उनको सबसामर्थ्यहै चहैजेतेबिवाहकरैं पुनः तोहूं राजा की भगिनी है ताते राजैकेसंग तेरासंयोग चाहिये ताते उनहीं के पासजा मेरे सेवकके संग तेरा कौन प्रयोजनहै तोहूंको सेवकाई करनापरी इत्यादि सहितक्रोध लक्ष्मणजी मृदुल बाणीते सत्यबातकही सो सुनि यथार्थ मानि शूर्पणखा रघुनाथजीके पासको पुनःगई तबजैसे पूर्व कहेरहै तैसेही पुनः रघुनाथजी कहि लक्ष्मणजीके पासपठाये उन पुनः लौटारे ३ । १२ ॥

मू० । हास्यसमुझिधावतभईरामवचनन्वितचाहि । धरेरूपव्यंक

टविकटसभयसियामनमाहि १ सभयसियामनमाहिरामक
हिलषणनिहारे।लक्ष्मणलाघवकाननासिकाकाटिनिवारे २
काटिनिवारेअंगशुभअशुभअमंगलमुखमई।खरदूषणप
हँगयविकलहाससमुझिधावतभई ३।१३॥

टी०। रामबचन चितचाहि हाससमुझि अर्थात् जो पूर्वकहे कि यथा तू कुमारीहै तैसेही बिनास्त्री लषण कुमारेहैं इति रघुनाथजीके बचननको अभिप्राय चित्तसों बिचारिलिया कि मेराछल जानिलिये अंगीकारतौकरैं गेनहीं अरु वृथाही दोऊ दौरावतेहैं इत्यादि हाससमुझि सक्रोध जानकीजीकी ओर धावतभई कौनभांति व्यंकट भयानक बिकट टेढ़ा अर्थात् विषम भयानकरूप धरे घोर शब्दकरत धाई ताको देखि सिय मनमाहि सभय जानकीजी मनमें डरायउठी १ जब जानकीजी मनते सभयभईं तब रामकहि लषण निहारे श्रीरघुनाथजी लक्ष्मणजीकी ओरदेखि श्रुति नासाखंडन संज्ञावचनकहे सोसुनि लक्ष्मणजी लाघव पटेबाजीते शूर्पण-खाके कान नासिकाकाटि निवारे दोऊअंग हीनकरिदिये २ शुभअंग नाक कान ते तौ काटिनिवारे हीनकरिदिये ताते अशुभ अमंगलमई मुखभया कुरूपता सहित बिकल खरदूषणपहँगई सबहालकहे सोसुनि आपनीहास्य समुझि निशाचरी सेना प्रभुपर धावतभई ३।१३॥

मू०।करिप्रबोधसेनासजीखरदूषणमनक्रोध।रामबुझायेलषण
कोसियागिरिराखियशोध १ सियगिरिराखौशोधिदनुजसे
नायहआई।भानुयानछपिगयेधूरिनभमंडलछाई २ छाय
धूरिनभमेंरहीदुंदुभिदीरघअतिबजी।सीतहिराखौकंदरा
करिप्रबोधसेनासजी३।१४॥

टी०। कैसे निशाचरी सेनाधाई शूर्पणखाकी दशादेखि खरदूषण के मनमें क्रोधभयो ताते समुझाय शूर्पणखाको प्रबोधकीन भाव तेरेविरोधि-नको अबहीं पकरे लिहे आवतहौं मनभावत दंड दिहिसु इति कहि पुनः सेना सजे ताकी आसार देखि राम लषणको बुझाये लक्ष्मणजी सों समुझायकै वचन रघुनाथजी कहे हे लक्ष्मण गिरि शोधि सियराखिये गिरि पर्वत ताको शोधिमवास ठौर ढूँढ़ि तहाँ लैकै जाय जानकी सहित रहेउ १ काहेते गिरि शोधि सियको राखौ दनुज सेना यहआई यहदेखि-

ये निशाचरनकी सेना निकट आयपहुँचिगई काहेते बाजी गज रथ पैदरों के पद प्रहारते जो धूरिउड़ी सो नभ आकाश मंडलमें छायरही ताते भानु यान छपि गयो सूर्यनको रथ छपिगयो नहीं देखि परता है २ यथा नभ आकाशमें धूरि छायरही तथा अति दीर्घ दुंदुभी बजी अत्यंत उच्चस्वरते ढंकादि बाजिरहेहैं ताते समुझिपरत कि शूर्पणखाको प्रबोधकरि खरादि सेना सजी है ताते पर्वत कंदरामें जानकीको लैजाउ ३ । १४ ॥

मू० । धरहुधायबोलेवचन लखिछबिदूतपठाय । नारिअग्रकरि मिलहुनृप कहेदूतयहआय १ कहेदूतयहआयरामत्यहि उत्तरदीन्हो । सुनिखरदूषणक्रोधसुभटलैदर्पितकीन्हो २ दर्पितडारहिंअत्रबहु धरिसशूलअसिशक्तिघन । मनहुमे घवर्षतअचलधरहुधायबोलेवचन ३ । १५ ॥

टी० । प्रभुके निकट आयकै खरादि वचन बोले कि हे सुभटौ धाय धरौ दौरिकै पकरिलेउ कब बोले प्रभुकी छबि लखि सर्वांग सुंदरता देखि संधिहित प्रथम दूत पठाय दूत आय रघुनंदनसों यहबात कहे कि नारि अग्र करि नृप मिलहु आपनी स्त्रीको भेट हित आगेकरि नृपराजाखरको मिलहु चलिकै हाजिरहोहु १ नारि अग्रकरि मिलहु यह बात जब दूत आयकहे राम त्यहि उत्तरदीन्हों त्यहि दूतको रघुनाथजी जवाबदीन्हे यथा हम क्षत्रियहैं मृगया करते हैं तुमसे दुष्ट मृगोंको मारने हेतुढूँढतेहैं जोबल होइतौ युद्धकरौ नातरु घरकोजाउ विमुख युद्ध हमनहीं मारेंगे इति प्रभु के वचन दूतनते सुनि खरदूषण क्रोधकरि सुभटलै दर्पितकीन्हो प्रचारि वीरनको अभिमानी बनाये २ दर्पित अभिमानभरे सशूल असिशक्तिघन धरि बहुअत्र डारहिंसहित त्रिशूल असि जो तरवारि शक्तिजो साँग इत्यादि घनधर बहुत धारण कीन्हे दर्पित अभिमानभरे बहुअत्र डारहिं बरछी साँग बाणादि बहुत हथियार प्रभुपर चलावते हैं मानहुं अचलमेघ जल बर्षत ऐसेसमूह बाणादि चलाय रहेहैं इत्यादि युद्ध सहित खर वचनबोलेउ कि धाय धरहु दौरिपकरि लेहु ३ । १५ ॥

मू० । रामसाजिशारंगशरचलेविशिखजनुव्याल । कटेविकटख लउरचरणभुजमहिगिरहिंकपाल १ भुजमहिगिरहिंकपाल विकलभाजहिंलखिशायक । खलदलसभयसशोकनिरखि

खरदूषणधायक २ धायक्रोधिशायकतजे रहेपूरिदिशिगग
नधर।सजिपावकशरजारितमरामसाजिशारंगशर३।१६॥

टी०। शार्ङ्गधनुषमें शरसाजि बाण जोरि रघुनाथजी छाँडे ते विशिख बाणजनु व्याल सर्प फुफकारत चले तिनके लागेते विकट खलकटे टेढ़े दुष्ट बहुत कटिगये उरजो छाती तथा चरण भुजा कपाल जो खोपरी इत्यादिकटि कटि महि पृथ्वीपर गिरतेहैं १ भुज कपालादि महिमें गिरत तथा शायक लखिबाण करालदेखि विकलह्वै भागते हैं इति सभयसशोक खलदल निरखि खरदूषण धायक सशोक अर्थात् घायलतेतौ दुःखसहित परे कहरत अरुजे बाणनकी करालता देखि कदरायगये तेसभय डरसहित भागेजाते हैं इत्यादि खलनकोदल विचलदेखि खरदूषण प्रभुकी सन्मुख धाये २ धाय क्रोधिशायक तजे दौरि क्रोधभरे प्रभुपर बाणछाँडे ते धर गगनदिशि पूरिरहे पृथ्वीते आकाशतक सब दिशनमें भरिरहेहैं ताते अंधकार ह्वैगया तब पावक शरसाजि तमजारि अग्निबाण चढ़ाय मारिदिये ताके ज्वालनते बाणनको अंधकार भस्म करिदिये इत्यादि रघुनाथजी शार्ङ्ग धनुषमें शरबाण साजि युद्ध करते हैं ३। १६ ॥

मू०। खलदलबृंदनिहारिकै प्रभुमनकीनविचार । रामरूपकीनो
कटक सबलरिमरयोअपार १ सबलरिमरयोअपार एकए
कनधरिमारैं । कौतुकलखिसुरमगनरामकोचरितनिहारैं २
चरितनिहारिपुकारिसुरबर्षिप्रसूनसुधारिकै । जयजयजय
महिमारहर खलदलमरननिहारिकै ३।१७॥

टी०।खलनको बृंद समूह दल निहारिकै प्रभु मनमें बिचारकीन भाव दुष्ट बहुत अकेले युद्धकरते देरलागैगी ताते युक्तिकरिशीघ्रही माराचाहिये इति बिचारि कटक रामरूपकीनो सेनामें यावत् सुभटहैं तिनको रघुनाथजी आपनासारूपबनायदीन्हेताते अपारअनगंत सेनासब आपुसैमें लरिमरयो १ अपार सेना सब कैसे लरिमरयो एक एकनधरिमारैं रामरूप आपुस में देखि एकएकको मारिदेतेहैं इसीभांति परस्पर युद्धकरतेहैं प्रभु अलगखडे हैं इत्यादि कौतुक तमाशादेखि सुरमगन देवता प्रेममें बूडेहैं अरु रघुनाथ जीको चरित निहारै आनंदसहित देखतेहैं २ प्रभुको चरित निहारि जय जयकारपुकारि सुर इंद्रादि सुधारि सुमनबर्षि शुद्धमनकिहे प्रभुपरफूलबर्षतेहैं कैसे पुकारतेहैं खलनके दलको मरन निहारिकै भाव कैसी युक्तिते

दुष्टनको नाशकरिदीन्हे इत्यादि देखिकै कहत महिभारहर पृथ्वीको भार हरणहारे प्रभुकी जयहोय जयहोय जयहोय ३ । १७ ॥

मू० । खरदूषणत्रिशिरापरेशूर्पणखालखिनैन । रोवतरावणकी सभाकहिकहिआरतवैन १ कहिकहिआरतवैन देशकी सुरतिबिसारी । शिरअरिडेराकरचोखबरिनहिंतोहिंसुरारी २ खबरिनतोहिंनिहारुम्वहिंअंगसकलशोणितभरे । जुरेजाय भ्रातासमरखरदूषणत्रिशिरापरे ३ । १८ ॥

टी० । खरदूषण त्रिशिरादि जूझिकै भूमिपरे तिनको शूर्पणखा नयन लखि आंखिन देखि निराश है लंकाको गई आरत बैन दुख भरे बचन कहि कहि रावण की सभामें रोवतहै १ कैसे आरतबैन कहि कहि रोवत है देशकी सुरति मुलुककी खबरगीरी बिसारिदिहे काहेते हेसुरारि देवनके शत्रुरावण तोहितौ खबरि नहीं अरु तेरे शिरपर अरिशत्रु आय डेराकीन्हे है २ आपने शत्रुकी तोहिं खबरि नहीं अरु शोणित रक्तभरे सकल अंग मोहिं निहारु अर्थात् अवधेश दशरथके पुत्र रामलक्ष्मण स्त्री समेतपंच-बटीमें हैं ते तुम्हारी भगिनी जानि उपहासहेतु मेरी नाककान काटिलिये तापर क्रोधकरि भ्रातातुम्हारे भाई खरादि जाय राजकुमारन सों सन्मुख समर में जुरे युद्धकीन्हे ते खरदूषण त्रिशिरादि सबजूझे परेहैं भाव जिनको राम ऐसा नामहै तिन अकेले सबको मारिडारे इति शत्रुहैं ३ । १८ ॥

मू० । ताहिसंगबरभामिनीरतिरंभाछबिछीन । रमाभारतीशिवतियाआगाहिंसकलमलीन १ लागहिंसकलमलीनकोटिशशिसमद्युतिशोभा । खगमृगपशुजड़जीववाहिलखिविकलनकोभा २ विकलनारिनरमुनिमगनतजतयोगजपयामिनी । दामिनिबरणतद्युतिकहां ताहिसंगबरभामिनी ३ । १९ ॥

टी० । ताहिसंग बरभामिनी तिनराजकुमारके संगमें एकऐसीउत्तमस्त्री है जानेरतिकामकीस्त्री तथा रंभाअप्सरा इत्यादिकी छबिजाने छीनिलिया है भाववाकी शोभा देखे रतिरंभामें नेकहू शोभानहीं देखातीहै तथा रमा जो लक्ष्मी भारती जो सरस्वती शिवतिया जो पार्वती इत्यादि सकल जाके आगे मलीन लागहिं भाववाकी प्रकाशमान शोभाको देखे रमा

भारती पार्वती धूमिल्ली देखातीहैं १ काहेतेरमादि सकल मलीनलागती हैं कि वा युवतीमें जो शोभाहै सो कोटि शशिसमद्युति कोटिन चंद्रमासम प्रकाशमानहै पुनः चैतन्य के देखनेको कौनकहै खगजो मोर चकोर कोकिल कीर शारिका कपोतादि यावत् पक्षी तथामृग हरिणादि यावत् पशुहैं इत्यादि जड़जीव वाहि लखि वा युवतीको देखि विकल न कोभाको नहीं प्रेमसों विह्वल ह्वैजाताहै २ तथावाको देखि नारिनर सबप्रेमते विकल होतेहैं पुनः औरनकी कहांतक कहौं जाकोदेखि मुनि मगन प्रेममें बूड़ि जातेहैं ताते योग जप तजत भूलिजातेहैं यामिनी रातिभरि वाहीके चितवनमें बैठे रहते हैं ताते ताहि राज कुमार के संग जोवर भामिनी उत्तम युवतीहै ताको बरणत समता शोभा कहत दामिनीमें कहाँ द्युतिहै बिजुली में कहाँऐसी प्रकाशहै जो वाकीउपमादीजिये ३ । १९ ॥

मू० । अवनिअसुरखंडितकरैंप्रबलशत्रुबरिबंड । देखतबालककालसमअतिविशालभुजदंड १ अतिविशालभुजदंड मदनजनुवेषसँवारे । मुनिमनभयेअनंदविपिनविचरतभयडारे २ भयडारेमुनिजयकरहिंखलदलदलिसुरदुखहरैं । भूपकुमारअपारछबिअवनिअसुरखंडितकरैं ३ । २० ॥

टी० । पुनः शूर्पणखा रावण प्रति कहत कि वैराजकुमार तुम्हारे कैसे शत्रु हैं प्रबल प्रकर्ष करिकै बलीहैं पुनः वरिवंड तेजवंतहैं भाव ऐसे बली तेजवंतहैं कि अकेले अवनि असुर खंडितकरैं पृथ्वीभरेके दैत्य राक्षसादिकनको नाशकरिसक्तेहैं काहेते देखतको तौ बालक अवहीं थोरिही उमिरि है परन्तु कालकी समान अजित अरु विशाल बड़ेलम्बे पुष्ट जिनके भुज दंडहै १ कैसे अत्यंत विशाल भुजदंडहैं मदन जनु वेषसँवारे अर्थात् मानों कामदेव राजकुमार रूपधरि मुनि कैसो वेष बनायेहैं जिनकी सहायताको बलपाय मुनि अभय भये काहेते भयडारे राक्षसौंको डरत्यागे आनंद सहित विपिन बिचरत बनमें घूमते हैं २ कैसे भयडारे जयकरहिं यह कहते हैं कि ये राजकुमार खल दल दलि सुर दुखहरैं दुष्टराक्षसादिकी सेना सहित सबको मारिकै देवतनको दुखहरिलेइँगे इत्यादिकहि मुनि उनकी जयजयकार करतेहैं ऐसे भूपकुमारमें अपार छबिहै जाको बखान करि कोऊ पार नहीं पाइसकाहै ऐसे सुंदर स्वरूपवंत अरु तेजवंत बली ऐसे हैं कि अवनि भूमिभरेके असुरनकोखंडित नाश करि सक्तेहैं ३ । २० ॥

मू०। करिप्रबोधरथचढ़िचल्योरावणमनअनुमानि। जहँमारी
चस्थानशुभमंत्रतंत्रमनठानि १ मंत्रतंत्रमनठानिगयोउठि
आदरकीन्हो। मारीचहुमनलख्योकछूस्वारथमनदीन्हो२
स्वारथघातबिचारिजिमिअंकुशधनुअहिछलछल्यो। नवै
बिलारिबिचारिछलकरिप्रबोधरथचढ़िचल्यो ३। २१॥

टी०। शूर्पणखाको समुझाय प्रबोधकरि पुनः रावण मनते अनुमानि लिया राजकुमार नहींहैं परब्रह्महैं ताते हठि बैर करि मुक्तिलेउँ इति विचारि रथ चढ़ि चल्यो जहाँ शुभस्थानमें मारीच मंत्र तंत्र मनठानि मन लगाय मंत्र जप तंत्रनकी विधि सिद्ध करतारहा१ यद्यपि मंत्र तंत्र विधि में मन लगाये बैठारहा परंतु जब रावण गयो ताकोदेखि मारीच उठि आदर कीन्हो अर्थात् बंदनकरि स्वागत पूँछि आसनदै बैठारि पूजनादि कीन्हेसि पुनः नम्रता सहित चेष्टादेखि मारीचहु मनलख्यो मनतेपरखि लीन्हेसि कि रावण कछु स्वार्थमें मन दीन्हेहै तौतौ दुष्ट है नम्रताधारण किहेहै २ कौनभाँति रावण स्वारथ रत नम्रहै जिमि स्वार्थघात विचारि कै अंकुश धनुष अहि जो सर्प बिलारि छल हेतुनवै पुनः छल्यो अर्थात् सुजन गुण पाय नवत वृक्ष सफलह्वै नवत पुनः दुष्ट जब किसीको घात कीन चाहत तब नवत कौनभाँति यथा अंकुश नयकै हाथीको मान तूरि देत तथा धनुष जब नवत तबै बाण प्रहारहोत सर्प जब नवत तबै काटत बिलारि जब नवत तबै चोटकरत इत्यादि छलराखि नवतेहैं पुनः दूसरे को छल्यो गाफिल करि घातकीन्हेउ तैसेही कछु घात विचारि छल राखे कार्य साधनेको प्रबोधकरि रावण रथपर चढ़ि मेरेढिग चल्यो है ३। २१॥

मू०। तातहेतुस्वारथकरौकथासमस्तसुनाय। हरहुँबामनृपतन
यकीबैरसकलबुझिजाय १ बैरसकलबुझिजायहोउमृग
कपटबनाई। भगिनीलखिदुखमोहिकरहुबनमोरिसहाई २
मोरिसहायबिचारिकै निजकुलमंगलमनधरौ। बातजात
घातकभयो तातहेतुस्वारथकरौ ३। २२।

टी०। समस्त कथा सुनाय भाव दशरथपुत्र पंचवटीमेंहैं ते शूर्पणखा को कुरूप किया पुनः सेन सहित खरदूषणको मारे इत्यादि सबकथा मारीचते सुनाय पुनः रावण कहत हे मामा मारीच तातहेतु स्वारथ करौ

भाव मैं तुम्हारा बालकहौं ताके स्वारथ हेतु कछु परिश्रम करौ कौनहेतु परिश्रमकरौं जिस उपायते नृपतनयकी बाम हरहुँ जामें सकल बैर बुझिजाय अर्थात् मेरी बहिनिको कुरूपकिये भाइनको बधकिये यहबैर मेरे उरमें अग्निसम जरिरहाहै ताहेतु जो राजकुमारकी स्त्री में हरि लावौं तौ बैर बुझिजाय १ कौन भांति सकलबैर बुझिजाय हे मारीच कपट ते विचित्र देहबनाय तुम मृगहोहु उनकेलगे ह्वै निसरो जब वै तुम्हारे पाछे धावैं तब मैं उनकी स्त्रीहरिलेउँ इसभांति वनबिषे मेरी सहाय करहु काहेते भागिनी लखि बहिनि को कुरूपदेखि मोको बडादुखहै ताको मिटाइबे हेत अवश्य सहायकरौ २ बलबुद्धि सँभारिकै मोरि सहायकरौ काहेते मनमें निजकुलको मंगलधरौ अर्थात् मेरिहीबात रहेते तुम्हारे राक्षसकुल भरमें मंगलानंद होयगो अरु जो ऐसानभया तौ एकतौ मेरीबात जातीहै दूसरे घातकभयो शत्रु सबल परिजाइँगे तौ राक्षसकुलभरेको घातकरैंगे सबको मारैंगे ऐसा बिचारि बालकके स्वारथ हेतु यहकार्य अवश्यकरौ ३।२२ ॥

मू० । सुनुसुतताहिननरगनौ मैंजानतबलताहि । बिनफरशरस्व हिंमारियो गयोंसमुदनिरवाहि १ गयोंसमुदनिरवाहिमारि ताड़कासुबाहौ । भंज्योशिवकोदंड जनककन्यकाबिवाहौ २ जनकसमाजनृपालबहुमानमर्दिभृगुपतिहनौ । ताहिबिरोधनकुशलहैसुनुसुतताहिननरगनौ ३ । २३ ॥

टी० । मारीच बोल्यो हेसुत ताहि त्यहि राजकुमारकी बलमैं जानत हौं सो मेरी बातको बिश्वासकरौ ताहि नर न गनौ अर्थात् दशरथ नन्दन को मनुष्यनमें न गनौ कैसाबल उनमें है बिन फरशर स्वाहिंमारियो बिश्वामित्रकी यज्ञ रक्षासमयबिना गांसीकोबाण मेरेमारि ताकी बेगते समुद्र निरवाहिगयों उहांको उडा समुद्रकेपार आय गिरयों १ एकबाणकी बेगते मैंतो समुद्रके पार ह्वैरहयों अरु उहां ताडका तथा सुबाहौको मारिडारे अभयह्वै मुनियज्ञकीन्हे पुनः धनुषयज्ञ सुनि जनकपुरको गये तहां शिवको दंडभंज्यो अर्थात् जो त्रिलोकी वीरनते तिलभरि न उठा ऐसागरूकठोर जो शिवजीको पिनाक धनुष ताको तृणवत् तोरिडारे तब जनक कन्यका बिवाहौ जानकी आदि चारिहु कन्यनको चारिहुभाय बिवाहकीन्हे २ कैसे बिवाहे जनकजीकी समाजमें नृपाल बहुराजा महाराज बहुत बटुरे रहैं तिनको मानमर्दि सबको अभिमान नाशकरि पुनः भृगुपति हनौ परशु-

रामको तेज बल नाश करिदिये ताहि तिनसों बिरोधकिहे कुशल नहीं है भाव मारिडारै ते बचिहौं न ताते हे पुत्र ताहि राजकुमारको नर मनुष्य न गनो ईश्वर हैं ३ । २३ ॥

मू० । ज्ञानसिखावतमोहिंकहँमैंसुरनरबशकीन । उत्तरदेहिनउ
ठिचलैडरडरातपुरतीन १ डरडरातपुरतीनसमुझिमनदे
खिबिचारी । यहिमारेथलनरकरामकरसुरपदभारी२ सुरप
दभारीपायहौंचल्योनायशिररामतहँ । रावणआतुरचढ़ि
चल्यो ज्ञानसिखावतमोहिंकहँ ३ । २४ ॥

टी० । रावणबोला कि तूमोको क्या ज्ञान सिखावताहै मैं अपने तेज बलते सुरनर देव मनुष्यादि सबको आपने बशमें करिलीन्हेउँ ताते उत्तर देहि न उठिचलै जवाबदही न करु उठि मेरेसंग चलु काहेते डरडरात पुर तीनिस्वर्ग भूपातालादि तीनिहूलोकवासी सब मेरे डरते डेराते हैं तौ एक मनुष्यकी मेरे आगे क्या प्रशंसा करता है १ जब रावण अभिमान भरा बोला कि मेरे डरते तीनिहूं लोक डरते हैं सोसुनि मारीच समुझि मनते बिचारिदेखे भाव उत्तर देतही यहदुष्ट मारिडारी अरु उहाँगये माराजैहौं तौ इहां की मृत्युते उहांकी मृत्युभली है इति मनमें बिचारकरि समुझि लियो क्या समुझेउ कि यहिमारे थल नरकयहिदुष्ट रावणकेमारेपर मोको नरकस्थानमें बासकरना परी पुनः रामकर सुरपदभारी रघुनाथजीके कर हाथन जो माराजैहौं तब भारी सुरपद उत्तम देवनकोपद सत्यलोक बैकुण्ठादिमें बासपैहौं २ रघुनन्दनके हाथ मरेते भारीसुरपद उत्तम देव-लोक पाइहौं यह बिचारि नाय शिर राम तहँचल्यो मारीच शीशनवाय जहां रघुनाथजी हैं तहांको चल्यो इसभांति रावणकहे कि मोहिं क्याज्ञान सिखावताहै उठिचलु इसभांति मारीचको संगलै रथपरचाढ़ि आतुर अति शीघ्रता सहित रावण पंचबटीको चल्यो ३ । २४ ॥

मू० । मायामयछायाकरीसियआयसुउरमानि । मृगदेख्योशुचि
हेममयखचितरतनमणिखानि १ खचितरतनमणिखानि
लखतजानकीसुखारी । यहिहतिसुंदरछालकरियप्रभुधनु
शरधारी २ धनुशरधारीमनसमुझिजानतआगमकीघरी।
चलेलषणसियसौंपिकैमायामयछायाकरी ३ । २५ ॥

टी० । प्रभुको आयसु उरते मानि सियमायामय छायाकरी जब रघुनाथजी कहेकि हे प्रिय तुम अग्नि में बासकरौ अत्र में बिशेषि नरनाट्य करिहौं यह प्रभुकी आज्ञामनतेमानि किशोरीजी आपनी छायाको माया मय आपना स्वरूप करि राखि आपु अग्नि में प्रवेश कीन्ही तिस माया रूपते शुचि हेममयपावन सुवर्णमय मृग देख्यो कैसा हेममय खचितरत्न मणिखानि पर्वतनकी खानिते हीरादि जो मणी निसरती हैं तिन रत्नन करि ताके सर्वांग खचित जटित देखाते हैं १ खानिकी मणी अथवा कैसे रत्नन सों खचित है यथा मणिनकी खानिहै ताकोजानकी सुखारीलखत सुखपूर्वक देखती भई अर्थात् अद्भुतमृग देखि हर्षित भई ताते कहत हे प्रभु धनुशरधारी यहिहति सुन्दर छाल करिये इस बिचित्र मृगको मारि सुन्दर मृगछाला कीजिये २ धनुशरधारी श्रीरघुनाथजी आगम जो आगे होनहार है ताकी घरी जानत कि यही समयहै ताते मनते समुझिगये कि यह मृगरूप मारीच है यह जानि जो मायामय छायाजानकी हैं तिन्हैं लक्ष्मणजी को सौंपि भाव इनको रखायो ऐसा कहि मृगके पाछे चले ३ । २५ ॥

मू० । मृगमार्‌योदूरीनिकरिरामकठिनशरतानि । हालक्ष्मणप्रथमैकह्योपीछेरामबखानि १पीछेरामबखानिकहतजानकीबिचारी । कहीलषणसोंबातभायतवसंकटभारी २ संकटवश सुमिरततुम्हें जाहुतुरतधनुबाणधरि । असुरसैन्यअरिद्लग्रसेम्मृगमार्‌योदूरीनिकरि ३ । २६ ॥

टी० । भागंत संते बनमेंदूरि निकरि रामकठिन शरतानि रघुनाथजी कठिन करालबाण धनुषमें तानि मृगके मार्‌यो मरतसमय मारीचप्रथमै तौ हा लक्ष्मण ऐसा शब्दकरेरे पुकारिकै कह्यो पीछे रामबखानि पीछे रघुनाथजीको नाम मनै में बखानि प्रशंसा पूर्वक सुमिरण कीन्हो १ पीछे रामबखानिसि सोतौ सुनि नहींपरा अरु हालक्ष्मण यह आरतशब्द प्रसिद्ध सुनिपरा ताको बिचारि रघुनंदनको संकटबशमें समुझि जानकी कहत क्याकहत लक्ष्मणजीसों बातकही हे लषण भाय तव तुम्हारे बड़े भाईको कछुभारी संकटपरो २ ताते संकटबश तुम्हैंसुमिरत तुम्हारानाम लै पुकारते हैं ताते धनुषबाण हाथ में धारणकरि तुरतही जाहु सहायक होहु काहेते असुरसैन्य अरिदल ग्रसे असुर राक्षसी सेना लिहे अरि शत्रु

जिनको वधकिये तिनके भाई पुत्रादि प्रभुको घेरे हैं जहां दूरिजाय मृगा को मारिनिहै तहांको शीघ्रही जाउ ३।२६॥

मू०। रामनसंकटकहुँपरै कालजुरैरणमाहिं। सकलसुरासुरलरि मरैंसमरजीतिहैंनाहिं १ समरजीतिहैंनाहिं शोचमनमांझ निवारौ। रामदीनताबचनबदनकबहूँनउचारौ २ कबहुंन संशयआनियेसत्यबचनमेरेधरौ। छलीविषनिशिचरबिपि न रामकबहुंसंकटपरौ ३।२७॥

टी०। रामैसंकट कबहूं नपरै लक्ष्मणजी कहत हेमहारानीजी रघुनाथजीको कबहूं नहीं संकट परिसक्ता है जो काल रणमाहिं प्रभुके सन्मुख जुरै युद्धकरै ताहूको नाशकरिसक्तेहैं तहां और सुरासुर देवता दैत्य सकल लरिमरैं सब बटुरि प्रभुसों युद्धकरि चहैं जूझिमरैं परंतु समरमें प्रभुसों जीतिहैं नाहिं जीति कोऊ नपाई १ समरबिषे प्रभुसों कोऊ जीतिहै नहीं ऐसा निश्चयजानि शोच मनमांझ निवारौ प्रभुको संकटहोनेको जोमन में शोचकरती हौ सो मिटायदेउ काहेते शोच निवारौ रामबदन दीनता बचन कबहूं नउचारौ रघुनाथजी आपने मुखते दीनता अधीरबचन कबहूं न पुकारिहैं २ हेमहारानीजी रघुनाथजीको संकट है ऐसी संशय मन में कबहूं न आनिये अरु मेरेकहे बचन सत्यकरि मनमेंधरौ जो यह आरत शब्द भयाहै सो बिपिन बनमें निशिचर छली छल कपटते अनेकप्रकार को वेषबनाये फिरते हैं तिनहिनको यहबचनहै सो कौन्यो छलहेतु पुकारे हैं अरु रघुनाथजी को कबहूंनहीं संकटपरो है यहसंदेह बृथै करती हौ सो मिटाइदेउ ३।२७॥

मू०। कह्योबचनसहिनहिंगयोउठ्योरेखधनुखाँचि। यतीवेषद शकंठशठआयोसियढिगयाँचि १ आयोसियढिगयाँचि जानकीताहिबुलायो। देनलागिफलमूलदुष्टतबबचनसुनायो २ बचनसुनायसुखदकहिबँधीभीखनहिंकहुँलयो। भावीवशासियरेखतजिबचनकह्योनहिंसहिगयो ३।२८॥

टी०। जानकीजी ऐसे कठोर बचन कह्यो जो लक्ष्मणजी ते सहिन गयो भावजो सहिलेते अरुजातेन तौक्यों विघ्नहोता पुनः प्रभुकी आज्ञा तेरहैं कुछ अपराध भी नरहै परंतु सहिनगयो तातेउठे आश्रमके चारिहु

दिशिधनुषते रेखाखँचायचलेगये इहाँ सूनबीच देखि दशकंठशठ यती को वेषधरि आयो सियढिग याँचि जानकीजी के पास भिक्षामांगे १ जब सिय ढिगयाँचनाकीन्हो ताहिजानकी बुलायो पुनः फलमूल भिक्षादेन लागि तब दुष्टरावण पुनः बचनसुनायो अर्थात् रेखाकी भीतरते भिक्षा देनेलगी तापर रावणे बचन सुनाये २ कैसे बचनसुनाये सुखद प्रियवाणीते कह्यो कि बँधीभीखनहिं कहुँ लयो आजुतक बँधीभिक्षा में नहींलिया है जो देनाहोय तौ रेखाके बाहर नाँघिदीजिये इतिसुनि भावी होनहार कर्मनके वश सियरेख तजि रेखानांघि बाहरआई तबरावणने ऐसे बचनकह्यो जो जानकीजीते सहि न गयो ३ । २८ ॥

मू० । रेखत्यागिसियजबगईरथपरलईचढाय । गल्योगगनभय तेमगनइतउतदेखतजाय १ इतउतदेखतजायसियारावण जबजान्यो। कहतपुकारिकृपालनाथकहुँदूरिपरान्यो २ दूरि परान्योलषणकहँमोहिंदशाननहरिलई । परीबिवशदशकं ठकेरेखत्यागिजबसियगई ३ । २९ ॥

टी० । रेखाको नांघि जब सिय बाहर आई तबरावणपकरिकै रथपर चढायलई पुनः भय मगनडरसिंधुमें बूडा गगन आकाशमार्गह्वै चल्यो भय वश इतउत सब दिशनको देखतजात भावपीछे कै ऊधावातौ नहीं १ भय ते इतउत देखतजात अरुजब जानकीजी जान्यो कि यहलंकेश रावण है मोहिं हरेलिहेजाताहै तबपुकारिकै कहत हेनाथ आपुतौ कृपालहौ भाव भूतमात्ररक्षा करिबेको आपहीको समर्थ मानेहौं अबमेरी रक्षाकीबार दूरि परान्यो कहौं दूरिचलेगयो २ जो आपुदूरिगयो तौ लषणतुमकहाँहौ इहाँ दशानन रावण मोकोहरेलिहेजात इत्यादि रेखानांघि जानकीजी जबबाहर गईं तबदशकंठ रावणके वशभई हरिलैचल्यो ३ । २९ ॥

मू० । रामरामकहिखगचल्योगृध्रजटायूदेखि । रोक्योरथरघुबर तियादशशिरहरीबिशेखि १ दशशिरहरीबिशेषिमारिरथ भूतलडारयो । सीतहिलईछुडायबिकलदशशिरमहिपा रयो २ दशशिरपारयोभूमितलछत्रचूरउरथलहल्यो । मु कुटअस्त्रशस्त्रहिदपटरामरामसुनिखगचल्यो ३ । ३० ॥

टी० ।रावणवशजानकीजीकोदेखि जटायूनामेखगपक्षीगृध्रजातिरामराम

कहिचल्यो भावदुखित देखिधायो काहेते यह बिचारयो कि रघुबीर की तियजनकनंदनी को बिशेषि करिकै दशशिरहरी यहबिचारि ताको रथरोक्यो १ जबदेख्यो कि बिशेषि दशशिरहरीहै ताकोमारि रथतूरि भूमितलमेंडारिदियो पुनः दशशिर बिकलमहिपरयो रावण घायलमूर्च्छितह्वै भूमि पै गिरिपरयो अरुजानकीजीको छुडाइलई २ कैसे दशशिरभूमितल गिरि परयो छत्रचूर उरथलहल्यो शिरपरको छत्रटूटिपरारावणकी छातीकाँपि उठी पुनः ऐसादपटि चरणचोंच प्रहारकीन्हो जाकीबेगते मुकुट गिरिगये तथा अस्त्रशस्त्र बाण त्रिशूलादि सबहथियार गिरिगयो इत्यादि रामराम सुनिखगचल्यो ३ । ३० ॥

मू० । अतिरिसरावणरणरच्योतीक्षणकाढ़िकृपान । दल्योपक्ष महिखगगिरयोकहिमुखकृपानिधान १ कहिमुखकृपानिधानसाजिस्यंदनसियलीन्ही । लैनभपथफिरिचल्योगीधबिह्वलगतिकीन्ही २ बिह्वलगतिकपिसियलखे नूपुरदैकपिकरसच्यो । तरुअशोकतरराखिकै अतिरिसरावणफिरिरच्यो ३ । ३१ ॥

टी० । सँभरिकैउठो अत्यंतरिसकरि रावणपुनः रणरच्यो युद्धकरनेलगे तब तीक्ष्ण कृपाण काढ़ि पैनी तरवारि निसारि पक्ष हत्यो पखनाकाटि डारेसि तब घायलह्वै कृपानिधान मुखकहि खग महि गिरयो कृपागुणभरे रघुनाथजीको नाम सुमिरत संते पक्षी जटायू भूमिमें गिरिपरो १ जब मुखसों कृपानिधान कहि जटायू गिरा तबरावण स्यंदनसाजि सियलीन्हो रथ सुधारि तापर जानकीजीको चढ़ाय लीन्हेसि नभपथ आकाश मार्ग फिरिचल्यो अरु गीध बिह्वल गति कीन्हो घायल करि जटायूको बेशक्ति करिदीन्हेसि उठनेकी गति न रही २ रावणके लिहेजात संते सियकी कपि सुग्रीव बिह्वल बिकलगति देखेते करुणा आई ताते राम राम उच्चारण कीन्हे तिनतन निहारि किशोरीजी कपिकर नूपुरदै सच्यो आपने नूपुर सुग्रीवके हाथपै डारिदियो ताही द्वारा मानौ साँचा सम्बन्धी बनाय दिये पुनः लंकामें लैजाय तरु वृक्ष अशोकतर जानकीजी को राखि सावधान ह्वै रावण फिरि अतिरिस रच्यो सक्रोध बैठो ३ । ३१ ॥

मू० । लषणबातनीकीनहीं बनसियआयेत्यागि। असगुनममन

होतअतिसियबिनउरबिरहागि १ सियबिनउरबिरहागि लषणपद्गहिसमुझाये । शोचतआश्रमदेखिनयनउमड़े जलछाये २ उमड़ेजलछायेबिकल खोजतगिरिवनसरम ही । रुधिरधनुषआगेपर्योलषणबातनीकीनही ३ । ३२॥

टी० । लक्ष्मणको आवतदेखि प्रभु कहत हेलषण सियको बनमें अकेली त्यागि आये यहबात नीकीनहीं कीन्ही भाव किशोरीजीको कोउहरि लैगया काहेते ममभन अति असगुनहोत मेरेमनमें भयउदासी पश्चात्तापादि अत्यंत करिकै असगुनहोतेहैं पुनः सियबिन उरबिरहागि बिनां जानकी मेरे उर अंतरमें बिरहरूप अग्नि प्रचंड दुःखदायक होइगी १ जबप्रभुकहे कि सियबिनमेरेउरमें बिरहाग्नि प्रचंडपरैगी तुमअकेले उनको क्यों छाँडिआयो सो सुनि लषण प्रभुकेपदगहि पायँनपरि समुझायो अर्थात् बरबस महारानीजी मोको पठाये मेरादोष नहींहै इसीभांति शोच करत आय आश्रम शून्यदेखि करुणाते नयनउमड़े आंसुजल छायगयो २ करुणाते नेत्र उमड़े आँसुजल छायो बिरहते विकल गिरि बन सर मही खोजत पर्वत बन तडाग भूमि इत्यादि सर्वत्र जानकीजीको ढूँढ़त फिरतेहैं आगेजाय देखे रुधिर रक्त टूटा धनु पर्यो देखि प्रभुकहत हेलषण यहौ बात नीकी नहींहै भाव अमंगलीक बस्तु देखानी ताफल भलानहीं है कछु अचाह सुनबे देखबे आई ३ । ३२ ॥

मू० । रामरामरसनारटैं लख्योगीधपतिजाय । कहीकथासियहेतु गति रामनयनजलछाय १ रामनयनजलछाय गोदधरिब चनउचारे । परमारथतुमतात प्राणधनतृणकरिडारे २ तृ णसमानप्राणनिदयो कोपरहितरणमहँकटे । जिओंभोग भोगौंजगत रामरामरसनारटैं ३ । ३३ ॥

टी० । जायगीधपति लख्यो आगेजाय रघुनाथजी देख्यो गीधराज जटायू घायलपरा रसनाजिह्वा सों श्रीरामराम रटिरहाहै ताने सियहेतुगति कही अर्थात् जानकीजीको रावण हरेलिहेजातरहैं तिनके छोडावनेहेतु मैं दौरेउँ तब रावणने मेरी यहगति किया लैकै चलागया सो हाल सुनि जटायूको घायलदेखि अधिक करुणाभई ताते राम नयन जलछाय अधिक आँसुबहिचले १ रघुनाथजीके नेत्रनमें आंसुजल छायरहेउ गीधकोगोद

में धरि पुनः प्रभु वचन उचारे बोले हे तात तुमपरमारथ परस्वारथहेतु आपने प्राणरूपी धन तृणकरि डारे तिनुकासम त्यागि दिये २ यथाआपु आपने प्राणनिको तृणसम देदियो ऐसा और दूसरा कोहै जो परारे हेतु रणमहँ कटै संग्राममें जूझै ताते हे तात जिओ जगतभोग भोगो दिव्य देहते जीवनराखि लोकमेंसबभांतिको सुखभोगकरो कालरूप इच्छामरण रसनाकरिकै रामरामरटै भाव आनंदसहितभक्तिरीति भजनकरो३। ३३॥

मू० ।दर्शलागिजीवनरहेउभागउदयरघुराय।ज्यहिबिरंचिशिवसेवहीं लियोगोदम्वहिंआय १ लियोगोदम्वहिंआयरामकहि प्राणगँवाये । भयोतुरतहरिरूपचारिभुजअस्त्रसुहाये २ अस्त्रसबैशिरमुकुटवर पीतांबरभूषणगहेउ । जोरिपाणिअस्तुतिकरत दर्शलागिजीवनरहेउ ३ । ३४ ॥

टी०। जटायू बोला हेरघुराय आपुके दर्शलगि देखनेहेतु जीवनरहेउ अबतक जीवतरहेउँ आजु मेरी बडीभाग्य उदयभई ऐसापात्र मैं नहींरहौं काहेते ज्यहि बिरंचि शिवसेवहीं ब्रह्मा शिवादि जिनकी सेवामें लगेरह-तेहैं सोई परात्पर परब्रह्म मूर्त्तिमान् आय मोको गोदमेंलियो इतिमेरी बडीभाग्य उदयभई १ सोई प्रभु मोको गोदलिये आय ऐसीमृत्यु किस को मिलिसक्तीहै इत्यादि कहि पुनः रामकहि प्राणगँवायो प्रभुकीगोदीमें रामरामकहतगीधराजप्राणत्यागिदिया पुनः तुरतहीऐसो हरिको दिव्यरूप भयो जाके चारिभुजा तिनमें शंख चक्र गदा पद्मादि अस्त्रसुहाये शोभित हैं २ चक्रादि सबैअस्त्र हाथनमें तथा शिरपर प्रकाशमान मुकुटवरश्रेष्ठ पितांबर भूषणगहेउ माला कुंडल केयूरादि सब भूषण धारणकिहे इसी रूपते जटायू हाथजोरि प्रभुकी अस्तुतिकरत हेप्रभु आपुके दर्शलागि प्राण राखेरहेउँ ३ । ३४ ॥

मू० । परमधामगोगीधपतिक्रियाकीन्हश्रीराम । चलेबिरहअंकुरभयेबिपिनशावरीधाम १ बिपिनशावरीधामअर्घआसन सबसाजे । धूपदीपफलसुजलधरेरघुपतिकेकाजे २ सबरस प्रेमपायँनपरीदर्शपायपावैनगति । रामतुम्हारोरूपलखिपरमधामगोगीधपति ३ । ३५ ॥

टी० । गीधपति जटायूतौ विमानपरचढ़ि परमधामकोगयो ताके देह

की क्रिया श्रीरघुनाथजी आपने हाथन कीन्हे पुनः किशोरीजीको हरण जानि वियोगजनित विरहअंकुरभये नवीन विरहउठी बिपिन शावरीधाम बनमें आगेचले शवरीके घरकोगये १ बनबिषे आपने घरमें शवरी प्रभुको आवतदेखि प्रणामकरि अर्घ आसनादि सबउपचार सजे अर्थात् आसनदै स्वागतपूंछि अर्घ पाद्य आचमन स्नान गंध दल फूलचढ़ाय धूप दीपादि करि मधुरफल भोजनदै पुनः रघुपतिके काजे पान आचमन हेतु सुंदर जल आनिधरे २ सब सप्रेम सहितप्रेम सब उपचारकरि पुनः पांयनपरि कहत दर्शपाय कोन गतिपावै काहेते राम तुम्हारो रूपलखि हेरघुनाथजी आपुको सुंदरस्वरूप देखिकै गीधपति जटायू परमधामकोगयो मुक्तिस्थानपायो इत्यादि स्तुतिकरी ३ । ३५ ॥

मू० । काठसाजिरचिकैचितासियसुधिकहीबहोरि । शवरीजरि
सुरगतिगईक्रियाकरीप्रभुकोरि १ क्रियाकरीप्रभुकोरिचले
बनदूनौभाई । मुनिगणमिलतअनेकदर्शअभिमतफलपा
ई २ पावहिंअभिमतजीवजड़करहिंयोगज्यहिप्रभुनिता ।
साजिसाजिसुरगतिलहीकाठशावरीरचिचिता ३ । ३६ ॥

टी० । काठसाजि भूरईंधन एकत्रकरि ताको चितारचि बहोरि सिय सुधिकहि जानकीजी के मिलनेको उपाय बताय शवरी जरि सुरगतिगई चितापर बैठि शवरीदेह भस्मकरि पुनः दिव्यदेह ह्वै यथादेवनकी गति अर्थात् बिमानपरचढ़ि परमधामको गई क्रियाकरी प्रभुकोरि कोरि कहे करोरिन बिधि बिधानसहित शवरीकी मृतकक्रिया रघुनाथजी किहेउ १ करोरिनभाँति प्रभुक्रियाकरि पुनः दूनौभाई बनमेंआगेकोचले मार्ग जात समय मुनिनके गणअनेकन मिलतते प्रभुके दर्शते अभिमतमनोबांछित फलपावते हैं २ मुनिगणतौ सुकृती हैं तिनके पायबेकी कौनप्रशंसा है काहेते ज्यहिप्रभु नितजौने प्रभुकी प्राप्तिहेत योग क्रियाकरि मनइंद्रियशुद्धकरतेहैं सदाध्यान लगावते ते जो दर्शतेअभिमतपाये ताकी कौनप्रशंसा है प्रभुके दर्शपायेते पशुपक्षी आदिजड़जीव अभिमतपावते हैं अरुमुनिजनतौ योग क्रिया समाधि आदि साजिसाजि सुरगतिलही देवनकीसी गतिपाई बिमानपर चढ़िहरिधामको जाते हैं यथा काठचितारचि शवरी गई ३ । ३६ ॥

मू० । रामसियाखोजतगयेपंपासुभगतड़ाग । सुंदरजलतरुबिहं

गमृगमुनिगणसदनसुबाग १ मुनिगणसदनसुबागकरत जपतपमनलाई । देखिसरोवरमुदितकीनमज्जनरघुराई २ रघुराईमज्जनकस्योनारदमुनिआवतभये । तुलसिदाससुरसुभगसररामसियाखोजतगये ३ । ३७ ॥

इतिश्रीगोसाईंतुलसीदासकृतेकुण्डलियारामायणेआरण्य काण्डसमाप्तम् ॥

टी० । सिय खोजत रामसुभग पंपा तड़ागगये जानकी जीको ढूंढ़त संते श्रीरघुनाथजी सुंदर पंपासर समीपगये कैसा सुभग तड़ागहै जामें स्वादिष्ट अमल शीतल इति सुन्दर जलभरा है ताके चहुंदिशि तरु आ-आदि अनेक वृक्ष लगेहैं तिनपर बिहंग शुकसारिकादि पक्षी बैठे हैं अथवा चक्रवाक सारस हंसादि जल समीप बैठेहैं तथा मृगसमूह जलपानकरते हैं तथा सुंदरी बागै लगीहैं तहां मुनिगण सदन अनेकन आश्रम बनाये समूह मुनि बास किहेहैं १ जो बागनमें सदन बनाये मुनिगणहैं तेकरत जपतप मनलाई शुद्धमन लगाये मंत्र जप योग क्रिया तपस्यादि करते हैं ऐसा सरोवर उत्तम तालदेखि रघुराई मुदित मज्जनकीन लषणलाल सहित श्रीरघुनाथजी आनन्द मन सहित स्नान कीन्हे २ जब श्रीरघुनाथ जी मज्जनकरि बैठे ताहीसमय प्रभुके ढिग नारदमुनि आवत भये इत्या-दि रघुनाथजी जानकीजीको ढूंढ़त संते गोसाईंजी कहत सुर सुभग सर देवनको निर्माण किया हुआ सुन्दर जो पंपासर तहांको गये ३ । ३७ ॥

कुण्डलिया ॥ पाछेनेतिपुकारिश्रुति नितगावतगुणगाथ । बिधिहरिशंकरशेषसुरनितनावतपदमाथ ॥ नितनावतपदमाथयोगिज्यहिध्यानलगावैं । शुकनारदसनकादिजासुगतिभेदनपावैं ॥ बैजनाथप्रणमामिकोटिरतिपतिछबिआछे । करकमलनशरचापफिरतबनमृगकेपाछे १ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथबिर-चितेकुण्डलिकारामायणप्रदीपिकाटीकायांआरण्यकाण्डसमाप्तम् ॥

अथकिष्किंधाकाण्डप्रारम्भ ॥

कुण्डलिया ॥

मू० । चलेबिपिनलक्ष्मणसहितमिलेपवनसुतआय । बिप्ररू पपूछतभयोकोतुमकहौबुझाय १ कोतुमकहौबुझायबिपि नसुकुमारसलोने । नृपदशरथकेसुवनतासुआयसुतजि भौने २ तजेउभवनआयेबिपिननारिगईशोधनलहत । खोजतहमद्विजकवनतुम चलेबिपिनलक्ष्मणसहित३।१ ॥

दो० । सियरघुबर पद उरधरे गुरुपदशीश नवाय ॥
किष्किंधा शुभ कांडको टीकारचौं बनाय १

टी० । पंपासरते उठि लक्ष्मण सहित बिपिन बनमें आगे चले तहां सुग्रिव के पठायेहुये पवनसुवन हनुमान्‌जी आयमिले कौनभाँति विप्र रूपधरि पूछत भयो तुमकोहौ बुझायकै कहौ भाव कौन बर्णाश्रम हौ कहांते आवतेहौ कहांको जाहुगे इत्यादि सबहाल समुझायकै कहौ १ काहेते बुझायकहौ कि सलोने सुन्दर सुकुमार शरीर बिनपनहीं बिपिन बनमें फिरतेहौ जहांपाषाणमय कठोर भूमि कांटा कंकर पहारतहांफिरते हौ इसहेतु पूछतेहैं आपुको कहौ इहां बनमें क्याकाम है इत्यादि सुनि रघुनाथजी बोले कि रामलक्ष्मण दोऊभाई नृपदशरथके सुवन अवधेश महाराज दशरथके पुत्रहैं तासु आयसु भौनेतजि ताही पिताकी आज्ञाते घरत्यागि इहां आयेहैं २ पिताकी आज्ञाते भवनतजे बिपिन बनको आय पंचबटी में बास कीन्हे तहां हमारी नारि हरिगई ताको शोधन लहत वाको ढूंढत खबरि लीन चाहते हैं इत्यादि हमतौ पितु आज्ञाते लक्ष्मण सहित बिपिन बनको आये पुनः खोजत स्त्रीको ढूंढत फिरते हैं इत्यादि आपनःतौ सबहाल हमकहिचुके पुनः हेद्विज तुमकवनहौ किसहेतु हम सों सबहालपूछते हौ सो कहौ ३ । १ ॥

मू० । लैसुग्रीवमिलाइयोप्रभुगुणमनअनुमानि । कहीकथास

बपरस्परनूपुरदयेबखानि १ नूपुरदयेबखानिरामलोचन भरिआये। बिरहबिकलप्रभुदेखिकीशबहुबिधिसमुझाये२ समुझायेसुग्रीवअतिरामलषणसुखपाइयो । प्रभुभेंटेहनुमंतउरलैसुग्रीवमिलाइयो ३ । २ ॥

टी० । प्रभुगुण मनअनुमानिलै सुग्रीव मिलाइयो अद्भुतस्वरूपता तेजवंत शील सुलभ सुभाव इत्यादि गुणदेखि अनुमानकरि जानिलीन्हे कि भूभारहरणहेतु परब्रह्म अवतीर्णभये सोई रघुवंशनाथहैं ऐसाबिचारि प्रभुकोलैकै पर्वतपर जाय सुग्रीवसों मिलाये कौनभांति मिलाये परस्पर कथाकही जब हनुमान्‌जी दोऊ दिशिको हेतुकहि दृढप्रीति कराये तब दोऊजन आपुसमें आपनी आपनी कथाकहे कौनभांति नूपुरदये बखानि जाभांति जानकीजीको आकाशमार्गमें देखेरहैं सो सबहाल कहि सुग्रीव प्रभुको नूपुरदीन्हे भाव मैं रामराम किहेउँ तब ये आभूषण डारिगईं १ परबशता बिलापादि सबहाल बखानि जब नूपुरदये तिनको चीन्हि अधिक करुणाभई ताते रामलोचन रघुनाथजी के नेत्र आंसुजलते भरि आये इतिबिरह करिकै प्रभुकोविकलदेखि कीश सुग्रीव बहुत बिधि बचन कहि समुझाये २ कैसे समुझाये हे प्रभु धीर्यराखिये सबभाँति उपाय करि जानकीजीको मिलावब इत्यादि जब सुग्रीव अत्यंत करि समुझाये तब लषण सहित रघुनाथजी सुखपायो मनमें संतोष कीन्हे इस भाँति जब स्वामीको चीन्हो हनुमंत प्रणाम कीन्हे तब प्रभु उरमें लगाय भेंटे तब हनुमान् लै सुग्रीवको मिलाये ३ । २ ॥

मू० । प्रभुबोलेकारणकवनबसतबिपिनकपिराज । कथाकही सबबालिकीकोपिकहारघुराज १ कोपिकहारघुराजबालि एकहिशरमारौं । संपतिऋधितियसहिततोहिंकपितिलक सँवारौं २ तिलकसँवारौंकाल्हिनाहिंकिष्किंधानृपताभवन । तौनधनुषशरकरधरौंमित्रकरियिकारणकवन ३ । ३ ॥

टी० । सुग्रीव प्रति प्रभु बोले हेकपिराज कवनकारण ते बिपिन बनमें बसतेहौ सो हालकहौ तब सुग्रीवने बालिकी सबकथाकही भावमायावी युद्धबैर को कारण सुनाये सो मित्रकोदुःख सुनि रघुराजकोपि कहादया बीरतातें बालिपर क्रोधकरि आमर्ष बोले १ रघुराजकोपिकै क्या कहा

बालिको एकहि शर अर्थात् दूसरानहीं एकही बाणते मारिहौं किसभाँति नबची पुनः ताकी संपति यथा राज्यकोषादियावत् ऐश्वर्य तथा ऋद्धि अन्नादि यावत् घरमें सामग्री पुनः ताकीतिय सहित हे सुग्रीव तोहिं कपि तिलक सँवारौं बानरनकी राज्यको तिलकतोकोदेहौं २ अरु जो किष्किन्धा भवनमें नृपता तिलक काल्हिन सँवारौं किष्किंधापुरमें राजमंदिर बिषे राज्याभिषेक जो तोको काल्हिन सँवारौंतौ धनुशर करनधरौं धनुष बाणहाथमें न धारण राखौं काहेते जो संकटमें सहायता न करनाहोइतौ कवन कारण मित्र करिये भाव मित्रकी अवश्य सहायकीजै ३ । ३ ॥

मू० । तबसुग्रीवदिखाइयोबालिमहाबलबीर । गर्जिनगरजा
न्योसबहिचल्योक्रोधिरणधीर १ चल्योक्रोधिरणधीरलरे
पुनिदूनौभाई। शरणागतप्रणसमुझिबाणमारयोरघुराई २
मार्‍योबाणप्रमाणकरिगिरयोअवनिमुरझाइयो । रामरूप
लोचनपुलकितबसुग्रीवदिखाइयो ३ । ४ ॥

टी० । जब रघुनाथजी निश्चय मारनेको कहा तब प्रभुको संगलैजाय महाबली बीर जो बालिताको दिखायो कौनभाँति गर्जिनगर जान्यो सबहि प्रभुको दूरि ठाढ़करि सुग्रीव किष्किंधाके निकटजायगर्जे सो सुनि नगरबासीजन सबहिन जान्यो कि सुग्रीवहैं तब रणधीर क्रोधिचल्यो रण में धीर्यमान बालि सुग्रीवपर क्रोधकरि सन्मुख चल्यो १ सुग्रीवतौ खड़ेन रहैं जबरणधीर बालि क्रोधकरि चल्यो तब दूनौभाई लरे मल्लयुद्ध होने लगा तब शरणागत रक्षक आपना प्रणसमुझि सुग्रीवको बिकल देखि रघुनाथजी बालिके उरमें बाणमार्‍यो २ कैसा प्रभु बाणमारे प्रमाणकरि सत्यसत्य प्राणघातक तिसबाणतेव्यथितबालि मुरझायकैअवनि मूर्छित है भूमिपै गिर्‍यो पुनः रामरूप लोचन पुलकि यद्यपि मूर्छितह्वै भूमिपै गिरा परन्तु श्रीरघुनाथजीको श्यामसुन्दर स्वरूप धनुषधारी सन्मुखदेखि बालिके उरते जो प्रेम उमगा ताते सर्वांग पुलकि नेत्रन में आंसुभरि आये इसभाँति प्रभुकोसंगलै सुग्रीवने बालिकोदिखायो ३।४ ॥

मू० । श्यामरामछबिउरधरीबाणीकहतकठोर । नरगतिहरि
गतितजिदईसमप्रकाशसबठौर १ समप्रकाशसबठौरजग
तअप्रियकछुनाहीं । जोअप्रियतवहोयसकलइकसंगबि

लाहीं २ संगरंगनहिंचाहियेविधिपिपीलरचनाकरी। जय तिहरेश्रीरामकहिश्यामरामछबिउरधरी ३।५॥

टी०। श्यामसुंदर स्वरूप राम छबि उरधरी प्रीति पूर्वक उर अंतर में रघुनन्दनको ध्यान थिरराखि पुनः बालि मुखते कठोर बाणी कहत हेप्रभु नरगति धारण करि क्या हरिगति तजिदई अर्थात् हे परब्रह्म श्रीरघुबंशनाथ नरगति जो यह राजकुमार रूप धारणकरि क्या आपुने हरि गति आपने ऐश्वर्य रूपकी रीति त्याग करिदिया जो मनुष्यवत् सुग्रीव सों मित्रता करि ताके सहायक बनि बिनागुनाह मोको मारा यहतौ तुच्छ जीवनकी रीतिहै अरु आपुकीरीति तौ वेद इसभाँतिकहत कि समप्रकाश सब ठौर यथा यजुर्वेदेअध्याय ४० मंत्र ८ सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणम स्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम् कविर्मनीषीपरिभूःस्वयम्भूर्याथातथ्यतोर्थान व्यदधाच्छाश्वतीभ्यःसमाभ्यः॥ अर्थात् सर्वत्र अखंड सदा एकरस व्यापक प्रकाशमानहैं कम ज्यादह किसी ठौर नहीं हैं १ यथा सब ठौर सम प्रकाशमान तथा जगत्में अप्रिय कछुनाहीं जगत्में यावत् चराचरहैं तिन में कोऊजीव ईश्वरको अप्रियनहीं है सब एकरसप्रियहैं अर्थात् भूतमात्र पर कृपादृष्टिहै सबकी रक्षा राखते हैं पुनः जो तव तुमको संसार अप्रिय होय रक्षा न करौ तौ सकल ब्रह्माण्ड इकसंग बिलाई प्रलय काल है जाई २ काहेते कछु अप्रिय नहीं है विधि पिपील रचना करी विधि जो ब्रह्मा इत्यादि बड़े तथा पिपीलिका जो चींटी इत्यादि छोटे इत्यादि यावत्जीवहैं इनसबको रचनाकरी ताको संगरंगनचाहिये अर्थात् जिन प्रभु चराचरको उत्पन्नकिया ताको यह न चाहिये कि काहूको संगकरि मित्र बनै पुनः मित्रके प्रीति रंगमेंरंगेरहि वाकेशत्रु मित्रनको आपने शत्रु मित्र बनावै यह ईश्वरकीरीति नहीं है मनुष्यनकीरीतिहै जो आपु मोपरकिया है इत्यादिकहि श्रीरघुनाथजीके श्यामस्वरूपकीछबि उरमें ध्यानधरे पुनः जयतिहरे श्रीरामकहि हे हरि श्रीराम आपुकी जयहोय ऐसा कहि बालि तन त्यागकिया सो आगेकहत ३।५॥

मू०। प्राणगयेश्रीरामकहिनारिविकलपुरलोग। सुग्रीवहिआयसुदयोकरहुमृतककरयोग १ करहुमृतककरयोगलषण सबकोसमुझायो। राजहेतुसुग्रीवअनुजसँगनगरपठायो २

नगरबुलायेद्विजसकलअंगदादिकपिबोधलहि । बालिशो
चदूषणहरौप्राणगयेश्रीरामकहि ३ । ६ ॥

टी० । श्रीराम ऐसा कहि बालिके प्राण निसरिगये ताको मरणदेखि बालिकी नारि तारा तथा पुरके लोग इत्यादि सब शोकते विकलभये तब रघुनाथजी सुग्रीवको आयसुदियो कि मृतककरयोग बालिकी मृतकक्रिया दाह तिलांजलि पिंडदानादि करौ योगको भाव सपिंडी १ यथा प्रभु सुग्रीवते कहे मृतकक्रिया करौ तथा लक्ष्मणजी यावत् पुरवासी रहे तिन सबको समुझाये जब मृतकक्रियाकरि सावकाशपाये तब सुग्रीवको राज्य देनेहेतु अनुज लक्ष्मणजीको संगकरि प्रभुसबको किष्किंधानगरको पठाये २ नगरमें जायकै लक्ष्मणजी द्विजसकल यावत् ब्राह्मणरहे तिनसबको बुलाये पुनः अंगद आदि कपि बानर मुखिया यावत्रहे तिनको बोधलहि समुझाय सबको सम्मतलैकै अधीरतामें धीर्यदिये कौनभाँति समुझाये श्रीरामकहि प्राणगये ताते बालि शोचदूषणहरौ रघुनाथजीके हाथ मृत्यु भई दूषण पाप नाशभये रामनामकहि प्राणनिसरे ताते परधाम गयो ताको कौनशोचहै ३ । ६ ॥

मू० । रामनामकहिनृपकरौतिलकसारिशिरताज । रामकृपा
निधिजगतमेंबिरदगरीबनिवाज १ बिरदगरीबनिवाज
कियोसुग्रीवसुखारी । गिरिबनबिकलबिहालबालिडरकंपि
तभारी २ कंपितडरनिरभयनहींजातदुसहज्वरउरजरयो ।
धामबामनृपग्रामकोरामनामकहिनृपकरयो ३ । ७ ॥

टी० । रामनामकहि लक्ष्मण सहित सब समाज रामनाम उच्चारण करत संते तिलकसारि शिरताज नृपकरयो सिंहासनपर बैठारि प्रथम लक्ष्मणजी तिलककीन्हे पछि सब तिलककीन्हे इसभाँति तारा समेत सुग्रीवको बानरनको शिरमौर सबते श्रेष्ठ नृपराजा बनाये ऐसे गरीब निवाज विरदवालेजगत्में रामकृपानिधि हैं तहाँ कृपागुणको लक्षण यहहै कि भूतमात्रको रक्षाकरिबेकोहमहींसमर्थहैं यथा भगवद्गुणदर्पणे ॥ रक्षणे सर्वभूतानामहमेवपरोविभुः । इतिसामर्थ्यसंधानंकृपासारपारमेश्वरी ॥ पुनः कैसहू गरीब शरण आवै ताको निवाजतेहैं परिपूर्ण ऐश्वर्यवंत करि देतेहैं इति गरीबनिवाजीको विरद बानाबाँधेहे हैं ताहीहेतु गरीब सुग्रीव को शरणदेखि ताको दुःख निवारणहेतु बल बीरताको अभिमानी देखि

बालिको मारे सुग्रीवको राजाबनाये तथा मरतबार बालि भी शुद्धशरण भया ताको दिव्य ऐश्वर्यदै आपनेधामको पठाये पुनः अंगदकी बाँहपकराय गया ताहीको युवराजपददिये तारा आरतह्वैशरणभई ताको विधवापन दुःख मिटावनेहेतु सुग्रीवकीपत्नीकरे ताहूपर राज्याभिषेकसमय इसी की गाँठिजोराय बड़ी महारानी पदका ऐश्वर्यदिये पुनः जो कहिये कि बिना अपराध बालिको प्रभुमारे सोभी व्यर्थहै काहेते वाकीस्त्री समुझाइसि सो न मानिसि प्रभु फूलमालदै पठाये सोभी न मानिसि इत्यादि आपनो बल बीरता इंद्रके आशीर्वादको अभिमानीरहा ताको मिटावने हेतु प्रभु बाणमारे परंतु जबशुद्धह्वै शरणभया तब प्रसिद्धकहेयथा। अचल करौं तनराखौं प्राना । तबमारना कहाँरहा परंतु उत्तम मृत्युजानि बालि आपही नहीं अंगीकारकिया तथा जो मानत्यागि पूर्वहीशरण आवता तौ क्यों मारते ताते बालि आपनेहाथै बाण चोटसहे पीछे आपनी खुशीते देहत्यागा तौ बालिको नहींमारे संदेहवृथाही करनाहै इति गरीबनिवाजी को बानावाला कृपानिधि जगमें रघुनाथैजी एकहैं दूसरा कोऊनहींहै १ कैसे विरद गरीब निवाजहैं कियो सुग्रीव सुखारी सुग्रीव ऐसे गरीबको परिपूर्ण सुखीकीन्हे कैसा सुग्रीव गरीबरहा बालिके डरकरिकै भारीकंपित अथवा भारीडर बालिकोरहा ताते कंपिततन विकल विहाल गिरि पर्वतन में बनमें भाग भाग फिरतरहा २ बालिके डरते ऐसाकंपितरहै जो किसी समय निर्भयनहीं डरबनैरहै ताते दुसह जो सहिनजाइ ऐसे मानसीज्वर करिकै उरजरयो छाती सदाजरै करतीरहै ताको ग्राम धाम नृप बाम सहितरामनाम कहिनृपकरयो ग्रामजोकिष्किंधापुरतामेंधाम जो राजमंदिर में सिंहासनरहा तापर बैठारि पुनः नृपबाम जो राजपत्नी तारा त्यहि सहित कैसे राजाबनाये तहँ आपु नहींगये लक्ष्मणको पठाये तेरघुनाथ जीको नामकहि प्रभुकीआज्ञा सबकोसुनायराज्याभिषेक करिदीन्हे ३ । ७ ॥

मू० । राजनीतिकहिप्रभुरहेशैलप्रवर्षणआय । अनुजसहितसुंद
रसदनराखेदेवबनाय १ राखेदेवबनायनिरखिवर्षाॠतुआ
ई । घनघमंडनभघोरमनहुरविपरनिशिधाई २निशिधाईरवि
भजिगयेनीरबुंदबाणनगहे । तड़ितकृपाणसुइंद्रधनुराजनी
तिकहिप्रभुरहे ३ । ८ ॥

टी० । राज्याभिषेकभये पीछे सुग्रीवको निकटबुलाय शिक्षादीन्हे यथा

प्रजनको पुत्रवत् पाल्यो सुजनको सुख आततायिनको दंड देशकोश सेना सुभटनकी सँभार कीन्हेउ शत्रुपर साम दामादि जो चलै सो करना इत्यादि राजनीति कहि पुनः प्रभु अनुजसहित प्रवर्षणशैल पर्वतपर आये तहाँ देव इंद्रादि सुंदर सदन मंदिर बनायराखेरहैं तामें वासकीन्हे तहाँ संदेहहै कि न चित्रकूटमें बनायराखे न पंचवटीमें बनायराखे इहाँ कौन कारण पूर्वही सदन बनायराखे तहाँ चित्रकूटमें आये तब चैतमास रहै पुनः पंचवटीआये तबौं चैतरहै तब वृक्षोंतर मिर्वाह भये पीछे मंदिरौ बनिगया अरुयासमय में वर्षा ऋतुआई ताको निरखि अर्थात् बिचार करि देखे कि वृक्षतरनहीं निर्वाह ह्वैसक्ता है इसहेतु प्रथमही गिरिमें गुहा बनायराखे तामें प्रभुवास करिवर्षा की सामग्री बर्णन करत किहे लषण देखिये वर्षाऋतुआये ते घनघमंड नभघोरमेघ घमंडि आकाश में भयंकर शब्दते गर्जते हैं अँध्यारी छायरही सो कैसे देखात मनहुँ रबिसूर्यन पर निशिरात्रीधाई २ कैसे निशिधाई नीरबुंद बाणनिगहे अर्थात् आपना शत्रुजानि रातिसूर्यनपरधाई कौनभाँति जलबुंद रूपबाणन को गहे भाव जलबर्षनेके बुंदनहींहैं मनहुरात्री सूर्यनपरबाण प्रहारकरती है ताकीभय मानिरबिभजिगये अर्थात् बादरमें नहींढके जनुरातिकी भयते सूर्य भागि गये पुनः तड़ित कृपाण बिजुली चमकत सोई जनुतरवारि है पुनः इंद्रधनु उदय सोई जनु धनुष है इत्यादि अस्त्रधारण वीरताकरि रात्रीसूर्य शत्रु को परास्त किया इत्यादि राजनीति बार्ता प्रभुकहिरहे हैं लक्ष्मणजी सों भाव शत्रुपै ऐसेही चाहिये ३ । ८ ॥

मू० । करिमनोजडेराजगतसजिआयोकरिसैन । असितपीतसितघनअरुणतनिबितानसुखचैन १ तनिबितानसुखचैन तड़ितध्वजसुंदरराजै । निशिदिनघनघहरातमनहुवरदुंदुभिबाजै २ दुंदुभिबाजैमोरपिकबकदादुरबंदीलगत । बिरहवंतकारणसज्योकरिमनोजडेराजगत ३ । ६ ॥

टी० । मनोज कामदेव सैनासजिकरि आयो जगत्में डेराकीन्हे अर्थात् बर्षाऋतुनहीं है बिरहिनपर क्रोधकरि कामदेव सेनासाजि करिआयो मानों प्रसिद्ध जगमें डेराकीन्हेउ तहाँअसित जो श्याम पीतपियरे रंगके पुनः सितजो उज्ज्वल अरुण जोलाल रंग इत्यादि जो घनमेघ सोईबहुरंग के जनु बितान सामियाना तंबू आदितानें तामें सुखपूर्वक चैनकरि

रहाहै १ यथासुखचैन हेतु बितानतने तथातड़ितध्वज सुंदर राजै ताढ़ित बिजुली जो चमकिरही सोई जनु जरतारी आदि के सुंदर अनेकन जनु ध्वजा शोभितहैं तथा निशिदिन घनघहरात रातिउदिन जो मेघगर्जत सोई मनहुं बरदुंदुभी बाजैंबहुत उत्तम नगारादि बाजा बाजिरहेहैं २ यथा घनरव दुंदुभीसे बाजत तथामोर मुरैला पिकजो कोकिला बक बगुला दादुर जो मेढक इत्यादि जो बोलिरहे हैं तेबंदी लागत मानहुं बंदीजन यशगायरहे हैं इत्यादि बिरहवंतनके दुःख देनेकारण सेनासज्यो ताते मनोज कामजगत् में डेराकरिरहे हैं ३ । ९ ॥

मू० । सुरपतिकैगिरिगिगणग्रसेबुंदबाणझरिलाय । कहुँकहुँमारतब्र
ज्रशरघनगजशीशचढ़ाय १ घनगजशीशचढ़ायमोरहरब
लपुरआये । बाजैनौबतिजीतिकोकिलासुयशसुनाये २ सुय
शजनावबितानतनिबेलिबिटपगृहगिरिबसे । मुद्रितकरिपा
षाणजड़सुरपतिकैगिरिगिगणग्रसे ३ । १० ॥

टी० । बर्षाऋतुहै कै सुरपति इंद्रगिरिगिणग्रसे समूह पर्वतनको गाँसि [illegible] सब पर्वतनको पक्षहीनकरिबे हेतु गाँसिलियो है तहाँवर्षे जलके बुंदनहीं हैं जनु बाणनकी झरिलगायेहैं पुनः घनगज शीशचढ़ाय कहुँ कहुँ मारत बज्रशर जहाँ तहाँ गाजगिरती है ताकी उत्प्रेक्षा करत घनगज मेघसोई हाथी ऐरावत हैं ताके शीशपरचढ़ेआय इंद्रकहुँकहुँ बज्रबाणमारते हैं १ यथा घनगज शिरचढ़िइंद्रआये तथामोर हरवलपुरआये पुरमंदिरनपरजो मयूर बैठे बोलि रहेहैं सो यथाइंद्र के हरवल अग्रणीय बीरपुरनको आये भावजामें कोऊ पर्वतनको सहायक न होनेपावैतथामेघजो गर्जिरहे हैं सो मानों जीते परनौबति आनंदबधाई बाजिरही है तहाँ जोकोकिल बोलि रहीहैं सोईबंदीजनहैं सुयश सुनाय रहे हैं २ यथाकोकिल सुयश जनावत तथातमाल आमादि बिटपनपर जो बेलि पल्लबित फैलिरही हैं सोयथा गिरि गृहबसे बरबस पर्वतनके घरबसिलियेतहाँ बितानतने सामियानादि हैं तथापाषाण जड़मुद्रित करि अर्थात् पूर्वपर्वत सपक्ष उड़तेरहैं जबइंद्रने पखनाकाटि डारातब जड़है गये तथामुद्रित करि अर्थात् समूह जलभरि भयेते सरितासर समीप पर्बतनके शिला बूड़िगये इति पाषणको मूँदि

जड़करि दिये इसभांति बर्षा है कैधौं सुरपति गिरिग्रस्यो पर्वतनको गांसेउं ३ । १० ॥

मू० । कैंसमुद्रमहिपरचढ़्योमहिमुद्रितकरिदीन । सरसरिता जलदलपरेशरपंजरमहिकीन १ शरपंजरमहिकीनतड़ित बड़वागिनिमानो । बर्षतनभचढ़िबारित्रसितगिरिदिग्गज जानो २ दिग्गजकंपहिघनसदलनादबाददशदिशिबढ़्यो । कंपमानमहिगहिधरीकैंसमुद्रमहिपरचढ़्यो ३ । ११ ॥

टी० । बर्षाऋतु आई कैधौं समुद्रकोपकरि महि पृथ्वीपर चढ़्योताते महि मुद्रितकीन पृथ्वीको जलते बोरिमूंदि दिया काहेते समूह बुंदनकी झरि नहींहै शर पंजरमहिकीन बाणन के समूह प्रहारमें पंजरकरि भूमि को ताके अंतरमें करि लिया पुनः सरजो तड़ाग सरिता जोनदी इत्यादि में जो समूह जलभरा है सो यथा समुद्रको दल परा है १ यथाबुंद सोई पृथ्वी को शरपंजरकीन तथा तड़ित बड़वागिनि मानों बिजुली जो चमकि रही सो मानों समुद्रमें की बड़वानलहै पुनः समुद्रमेघ रूपते नभ आकाशमें चढ़ि बारिजल बर्षत ताको देखि गिरिदिग्गज त्रसित गिरिजो पर्बत सो भूमि थाँभनेवाले दिशा गजहैं ते त्रसित नाम डराते हैं अर्थात् समुद्रको आकाशचाढ़ि बर्षतेदेखि पर्बतरूप दिग्गज डरतेहैं भाव अबहमारि थाँभीभूमि न थँभी इति जनुडरते हैं २ पर्बतनपर पवनलागे जोबृक्ष हालत सोतौ मानों दिग्गज कांपते हैं पुनः घनसदलनाद अर्थात् घन जो मेघ गर्जत तिनकोनाद आकाशते होत तथापवन लागे वृक्षनके दलपत्त्र खरखराते हैं सो दलनको नाद भूमिपरते होत इत्यादि यथा दोऊ दिशि के बरिनको बाद बिवाद दशहूं दिशिमें बढ़्योसर्बत्र अधिकबाद बढ़तजात पुनः किसीसमय जो भूमि हालि उठतीहै ताकीउत्प्रेक्षाकरत जनुमहिगहि धरी सो कंपित है अर्थात् महि जो पृथ्वी ताको समुद्रनेगहि पकरिकैंधरी बँधुवा करि राखीहै सो डरतेकाँपि उठतीहै इत्यादि कैधौं समुद्रमहिभूमि पर कोपकरि चढ़्यो ३ । ११ ॥

मू० । शरदभूपआयोमिलनधवलरूपद्युतिसाजि । कमलको कखंजनचतुरदूतउठेजगबाजि १ दूतउठेजगबाजिचन्द्र जनुछत्रसुहायो । सरिसरानिर्मलबारिपांवड़ेपावसनायो २

पावसदीन्होतिलकजगशरदराजराजतथलन । पावसग
योप्रणामकरि शरदभूपआयोमिलन ३ । १२॥

टी० । वर्षा पृथ्वीपर साँसति करत ताते दुःखदकहे अरु शरद सुखद कहत वर्षाबीति गये शरद ऋतु कैसा शोभित होत यथा धवलद्युति रूप साजि शरदभूप मिलनआयो धवलनाम उज्ज्वलद्युति नामप्रकाश अर्थात् उज्ज्वली प्रकाशते आपनारूप साजि सपेदै भूषण पोशाक पहिरि भूप राजा जो शरदसो प्रीतिपूर्बक पृथ्वीके मिलने हेतुआयो ताते तडागनमें जो कमलफूले तथाकोक जो चक्रवाक ठौरठौर उड़ि रहेहैं तथाखंजन आयगये ते कैसे शोभित होतेहैं यथा शरदराजके चतुर दूतहैं ते जगत् में बाजि उठे बोलि उठे भावजगत् भरेमें आपने राजाको हुक्म सुनायरहे हैं १ यथादूत बाजिउठे तथा चंद्रजनु छत्रसुहायो जो पूर्णप्रकाश मान चन्द्रमा आकाश में उदित है सोई जनुशरद राजके शीशपर श्वेतछत्र शोभित है पुनः सरिसर निर्मल बारिनदी तडागनमें जो जलअमल ह्वै गया सो कैसा शोभित होताहै यथा पांवड़े पावसनायो बिछायो अर्थात् शरद महाराजको आवतजानि पावस बर्षाने राहमें सफ़ेद बसनके पांवड़े बिछाय दिये इसीपर पांवधरि चलें २ काशादि फूलिरहे ते कैसे शोभित होत यथा जगतिलक जगत्भरे को राज्याभिषेक पावसने शरदको दिये ताहीते सबथलन भूतल भरेमें शरदराज राजतशरद ऋतुकी राज्यसर्बत्र ह्वैगई इत्यादि जबशरदभूप पृथ्वीको मिलनहेतु आयो ताको प्रणामकरि पावसगयो बिदाभयो ३ । १२ ॥

मू० । सीयशोधअबलीजियेजाहुजहाँकपिराज । खबरिबिसारी
सुखसुपुरपायनारिधनराज १ पायनारिधनराजबालिथलतु
म्हेंपठाऊं । करधरिकीनोसखाज्ञानदैमनसमुझाऊँ २ मन
समुझायसमेतकपिआपगमनपुरकीजिये । बानरभालुपठा
यकरिसियाशोधअबलीजिये ३ । १३ ॥

टी० । शरदऋतुआया सुग्रीव अबतक सुधि न लिये ताते रघुनाथजी बोले हे लषण जहाँ कपिराज सुग्रीवहैं तहांको तुमजाउ कौनहेतु सीय शोध जानकीजीकी खबरि अब लीजिये पतालगाइये काहेतेजाउ सुग्रीव ने नारि सबराज्यधन पुर इत्यादि सुखपाय आपने भोगमेंपरा अरु हमारे कार्यकी सुधि बिसारिदिया १ सुग्रीवते ऐसाकहिदेना कि नारि धन राज्य

पाय भूलिगये ताते बालि थल जहाँको बालिगया ताहीठौरेको तुम्हेंपठा- ऊं भाव बालिवत् तुमको भी मारिहौं यह यद्यपि होती है परंतु करधरि बाँहपकरि सखाकीन्हेउ ताको मारनो उचित नहीं है इत्यादि ज्ञानदै मनको समुझावतहौं ताते सुग्रीव बचाहै २ ताते हेलषण आपु पुरगमन कीजिये किष्किंधानगरको जाइये मन समुझाय समेत कपि अर्थात् जो सुग्रीवको मन विषयमें परा विमुखहै ताको समुझाय मन शुद्धकरि तब कपि सुग्रीव समेत तुम एकमातिह्वै वानर भालु सबदिशि पठाय अब सीय शोध जानकीजीकी खबरि लीजिये कहाँपरहैं ३ । १३ ॥

मू० । लक्ष्मणचलेलिवायकै प्रीतिप्रबोधरिसाय । बानरभालुबु लायकै गयेजहांरघुराय १ गयेजहांरघुराय मिलेपाँयन कपिनाये। रघुपतिहँसिमृदुप्रकृतिपुलकिगहिकंठलगाये २ कंठलगायबुझायकपिबिनयकरीचितलायकै । बानरभालु बिशालभट लक्ष्मणचलेलिवायकै ३ । १४ ॥

टी० । लक्ष्मणजी किष्किंधाकोगये प्रथमरिसाय सानुकूलकीन्हे पुनः प्रीतिपूर्वक प्रबोधकरि समुझाय धीर्यदै मनथिरकीन्हे पुनः सुग्रीवको संगलैकै लक्ष्मणजी चले कौनभाँति सुग्रीवचले वानर भालु बुलाय तिन को संगलैकै चले जहाँ रघुनाथजीरहैं तहाँगये १ जब उहाँगये तब कपि सुग्रीव प्रभुके पाँयनको शीश नाये तब रघुनाथजी मिले कौनभाँति मृदु प्रकृति कोमल स्वभावते हँसि पुनः प्रेमते पुलकि सुग्रीवकोगहि रघुनाथ जी कंठमें लगाये २ कंठलगाय मिलिकै पुनः कपि बुझाय चित्त लगाय विनयकीन अर्थात् सुग्रीव आपनी भूलको हाल प्रसिद्ध कहिदिये भावमैं पशुइतौ हौं पुनः पाँयनमें चित्तलगाय स्तुतिकीन्हे तब वानर भालु वि- शाल भट वानर ऋक्ष जे बडेभारी योधाहैं तिन्हैं लिवाय निकटबुलायकै लक्ष्मणजीकहे कि ज्ञानकीजीकीखबरिलेनेहेतु सबदिशनकोजाउ ३।१४॥

मू० । कपिलक्ष्मणसबसोंकहेउ सियसुधिखोजहुजाय। पाखदि वसबिनसुधिलिये हमहिंमिल्योजनिआय १ हमहिंमिल्यो जनिआय बहुरिअंगदहिबुलाये। तुममारुतसुतसाथ जा हुदक्षिणशिरनाये २ दक्षिणसियशोधहुसुभट भालुनील

नलसुखलह्यो । मुँदरीदैहनुमंतको प्रभुकपिलक्ष्मणसत्र
कह्यो ३ । १५ ॥

टी० । लक्ष्मणसहित कपि सुग्रीव सब वानर ऋक्षनसोंकहे कि जाय सब दिशनमें सिय सुधि खोजहु जानकीजीकी खबरि पाइबेहेतु सर्वत्र ढूंढहु अरु पाखदिवस पंद्रहदिनमें सर्वत्र ढूंढि लौटिआयहु पुनः पंद्रह दिनबादि जो आयहु तौ खबरिलैके आयहु पुनः बिना सुधि लिहे पंद्रह दिनके बादि जनि आय हमको मिल्यो १ प्राणघात दंडजानि हमें जनि आयमिल्यो बहुरिअंगदहिबुलायो तिनसोंकहे कि तुम अरु मारुतसुतहनुमानजी दोऊ अन्य सुभटनको संगलै दक्षिणदिशिको जाउ सो सुनि अंगद शिरनाये तय्यारभये २ जब तय्यारभये तब सिखावनदेत हे सुभटहु दक्षिणदिशिमें जाय सियशोधहु जानकीजीको ढूंढहु इति सुनि भालु जामवंत नील नलादि वानर सुखलह्यो सुखपाये अहोभाग्य माने जब कपि सुग्रीव अरु लक्ष्मण सबहाल कहिचुके चलैपर तत्परभये तब प्रभु हनुमान्जीको मुँदरी दीन्हे हाल कहे ३ । १५ ॥

मू० । चलेसुभटव्यंकटबिकट खोजतगिरिसरखोह । रामकाज
लवलीनमन बिसर्योतनकरछोह १ बिसर्योतनकरछोह
सघनबनजायभुलाने । तृषावन्तभेबिकल बिनाजलसब
अकुलाने २ अकुलानेहनुमंतलखि चल्योंविवरपैठ्योसु
भट। कथासुनाईशशिप्रभा चलेसुभटव्यंकटबिकट३।१६॥

टी० । व्यंकट भयंकर विकट टेढे सुभट भालु वानरचले गिरि जो पर्वतनके खोह तथा सर जो तड़ाग इत्यादि सर्वत्र खोजत जानकीजीको ढूंढत फिरतेहैं रघुनाथजीको काजजानि लवलीनमन अर्थात् मनको जो लव सो रामकाजमें लीन अर्थात् चाह सहित लाग हैं ताते तनकर छोह देहकी मया बिसरिगई भाव भूख प्यास नहींगनते हैं १ तनकर छोह बिसर्यो ताते ढूंढत सन्ते जाय सघन बनमें भुलायगये सीधीराह न मिलि सकी पुनः तृषावंत प्यास लागनेते विकलभये काहेते बिनाजलपाये सब अकुलाने भाव कैसे प्राण रहिसकैंगे २ सबको अकुलाने जानि हनुमंत लखि पर्वतपर चढ़ि हनुमान्जी जलके पक्षी उड़ते देखि चल्यो तहाँसब सुभटन सहित विवरमें पैठे तहाँ जाय तड़ाग उपवनदेखे मंदिरमें शशि-

प्रभा जो स्वयंप्रभा स्त्री सबको सत्कारकरि आपनी सबकथा सुनाई इति व्यंकट विकट भट चले जातेहैं ३ । १६ ॥

मू० । जलफलखायप्रणामकरि त्यहिपठयेजलतीर । सोसप्रेम पहुंचीतहां लक्ष्मणश्रीरघुबीर १ श्रीरघुकुलमणिबीर पठैब दरीबनदीन्ही । कपिसबसागरतीर सीयहितचिंताकीन्ही २ चिंताकीन्हीकपिनसब सम्पातीलखिकहतडरि । धन्यज टायूसुभटको जलफलखायप्रणामकरि ३ । १७ ॥

टी० । ताको प्रणामकरि आज्ञाते उपबनमें फलखाय जलपानकरि सबकपि पुनः स्वयंप्रभा ढिगआये त्यहि आँखीमुँदाय समुद्र जलके तीर सबको पठायदिया सो सप्रेमसों स्वयंप्रभा प्रेमसहित तहाँ पहुँची जहाँ लषण सहित रघुनाथजीरहैं तहाँ जाइ प्रणाम प्रार्थनाकरि भक्तिवर पाया १ पुनः रघुकुलमणि रघुबीर स्वयंप्रभाको बदरीबनको पठैदीन्ही इहाँ कपिअंगदादि सब सागर समुद्रतीर सीयहित जानकीजीकी खबरि पावनेहित मनमें चिंताकीन्ही भावअवधिबीतिगई खबरि न पाया तौ अब क्याकरें इत्यादि शोच वार्त्ता करतेरहैं २ सबकपि चिंताकरतहीरहे ताही समय गिरि गुहाते निसरि संपाति असहन वचन कहा भाव आजुमोको विधाताने आहारदिया सबको खाइजाइहौं ताकोलखि देखिकै डरसहित अंगद वचन कहत कि जटायू सुभटको धन्यहै जाने जानकीजीके छुडाव ने हेतु रावणसों युद्धकरि प्राण त्यागि राम कृपाते दिव्यरूप विमानचढ़ि परधामगया ताते वह धन्यहै अरु एक यह पक्षी ऐसादुष्टहै कि रामदूतन को खाइलीन चाहत इति जल फलखाय स्वयंप्रभाके प्रणामकरि चले सिंधुसमीप संपातिते इत्यादि वार्त्ताभई ३ । १७ ॥

मू० । सुनिसबकथाप्रणामकरि गयोमुदितसम्पाति । भयेपक्ष जलदीनशुचि कहीपक्षगतिभांति १ कहीपक्षगतिभांति धरहुधीरजसबभाई । पैहौसीतहितबहिं पारसागरजोजाई २ सागरशतयोजनउलंघि प्रबलबीरजाइहिजोपरि । सोसिय पावहिसत्यसुनि कपिसबकथाप्रणामकरि ३ । १८ ॥

टी० । जटायूके मरणकी कथा सब सुनि रामदूत जानि कपिन को प्रणामकरि संपाति सिंधुतीरगयो मुदित मनते आनंदभयो काहेते पक्ष

भये वानरनके दर्शनपाय पक्षजामिआये तब शुचिजलदीन जटायु को तिलांजलिदै शुचि शुद्धभयो पुनः कही पक्ष गति भाँति भाव सूर्यसमीप चलागयों तिनके तेजते पक्षजरिगये गिरिपरयों सो चंद्रमामुनि ज्ञान दै कहे रामदूतनको देखि पंखजामिहैं सो आजु सत्यभया इतिजाभाँतिपक्षनकी गतिभई सो सब हालकहे १ पक्षगति भाँति कहि समुझायो भाव तुम्हारे दर्शनते मेरेपंखजामे तथा स्वामीको भरोसाराखि हेभाई तुमसब धीर्य धरहु तुम्हारा कार्यहोई परंतु तुममें जबकोऊ सागर समुद्र के पार जाइहि तबहीं श्रीजानकीजी कोपैहौ २ जो प्रबलप्रकर्ष करिकै बलीबीर शतयोजन सागर उलंघि पारजाइहि अर्थात् जो ऐसाबली बीरहोइ जो सउयोजन समुद्रफाँदि पारजाइ सोलंकाबिषे जानकीजी को पावहि इति सत्यसब कथासुनि कपिसब बिचार करनेलगे अरुगीध प्रणामकरि गयो ३ । १८ ॥

मू० । गयोकहतयहगीधपतिकपिसबकरतबिचार । बहुरतसंशय जियकहैंअंगदजातोपार १ अंगदजातोपारकहतऋक्षेशबुढ़ाई । नलऔनीलसकोचजानकीकौनदिखाई २ कौनदिखाई जानकीपुनिप्रचारिकहऋक्षगति । कहासमुदहनुमंततवहिं गयोकहतयहगीधपति ३ । १९ ॥

इतिश्रीगोसाईंतुलसीदासकृतेकुंडलिया रामायणेकिष्किंधाकाण्डंसमाप्तम् ॥

टी० । जो सिंधुपारजाइ सोजानकीजी कै खबरिलावै यहकहत गीधपतिसंपातिगयो तवकपि अंगदादि सबबिचार करत पारकौन जाइसकत तहाँ आपना बल सबहिन कहा परंतु पारजाने को किसीनेन कहा तहाँ अंगदतो सिंधुपारजातो परंतु बहुरत संशय जियकहै अर्थात् लौटतसमय मेरेजीमें संशय आवत भावन रघुनाथजी कछु कहे अरुन कछु चिह्नदीन्हे तौ क्या दिखाय जानकीजी सों भेंटकरि वार्ता करिहौं अरुकौने प्रभावते निशाचरों को जीतिकै ऐहों यहसंशय भई १ ताहीसंशयते न जाइसके नातरु अंगद पारजाते अरु ऋक्षेश जामवंत आपनी बुढ़ाई कहत अर्थात्

मेरे तरुणाई को बलरहा नहीं अब बूढ़ाभयों कैसे जाइसकाहौं पुनः नल अरुनील सकोच आपनामें समुद्र पारजानेयोग्यबल न देखे तातेसकोच बश कछु न कहे तौ सबके संदेहभई किअब समाजमें को ऐसाहै जानकी दिखाई खबरि लैआई २ जानकी को देखने के कारण खबरि लावना है सो कौनखबरिलाइ जानकी दिखाई इतिसंदेह करि पुनः ऋक्षजामवंत प्रचारि गतिगह हनुमानजी में जैसेबेग सोगतिचाल है ताको ललकारिकहे किहेहनुमंत त्वहिं समुद कहा हे हनुमन् तुम्हारे बल बेगताके आगे इस समुद्रकी कौनगनती है सुगम नाँघिसकेहौ तौ तुमक्यों चुपबैठे हौ इतिजबसब हालकहि गीधपतिगयो तबसब बानर परस्पर इसप्रकार बार्ताकीन्हे जो पूर्बकहि आये हैं ३ । १९ ॥ कुंडलिया ॥ पावहिं ध्यान बिरंचिनहिं परब्रह्म निरुपाधि । शिवध्यावत ज्यहिनेमकरि योगिन अगम समाधि ॥ योगिन अगम समाधि निगम ज्यहिअंत न पावत । लोमशशुक सनकादि शेष शारदगुण गावत ॥ गावत शास्त्रपुराण प्रबर्षण गिरिशुभ ठावहिं । बैजनाथ स्वइस्वामि कपिन सियशोध पठावहिं १ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमासियवल्लभपदशरणागतबैजनाथ बिरचितेकुंडलिकारामायणप्रदीपिकाटीकायांकिष्किंधाकाण्डंसम्पूर्णम् ॥

अथसुन्दरकाण्डप्रारम्भ ॥

कुण्डलिया ॥

मू० । भयोहेमगिरिकोशिखर सुनतऋक्षपतिबयन । चढ़्योतम
किभूधरअधरफरकिअरुणकरिनयन १ अरुणनयननभुज
दण्डमसकिभूधरजबचंप्यो । जलपतालकोकढ्योशेषक
च्छपपरकंप्यो २ कंपिशेषशिरनमिगयोकूदिचल्योबलवंत
फिरि।मारिदुष्टगिरिपरसिपगभयोहेमगिरिकोशिखिरि३।१

दो० । सिय रघुबरपद उर धरे गुरुपद शीशनवाय ॥
बुधिबल सुन्दर काण्डको टीका रचौंबनाय १

टी० । ऋक्षपति बैन सुनत हेमगिरि शिखर सम भयो ऋक्षनकेपति जामवंत तिनके बचनसुनतही आपने बलकी सुधि ह्वै आई तातेकरुणा सबमें देखि बीररस उदय भयो ताते हनुमानजी कैसेभारी ऊँचे प्रकाश-मानह्वैगये यथा सुमेरु गिरिको शिखरऊँचा कँगूरा पुनः तमकि भूधर चढ़्यो बलकरि उचकि एकऊँचे पहाड़पर चढ़िगये पुनःअधरओष्ठ फरकि उठे नयन अरुणकरि प्रथम पिंगलनेत्र रहे ते लालकरिलिये ये रौद्ररस के अनुभाव हैं भाव क्रोध ह्वैआवा अर्थात् सब कपिन में करुणा देखे ता समय जामवंतके बचन प्रचारकबिभावपाय शीघ्रकाज करिबेकी उत्साह स्थायीभई ताते बीर रसके अनुभाव ते देह बिकासमान भई पुनः कार्य्य करिबे में राक्षसबिघ्नकारी हैं तिनकी सुधि बिभाव पाय क्रोध स्थायी ते रौद्ररस के अनुभावते ओष्ठ फरकिउठे नेत्रलाल भये १ अरुणनयन करि भुजदंड मसकि जबभूधर चप्यो अर्थात् भारी शरीर महाबल के भरे पुष्टभुजनसों तथा पांयनसों धरि दबायकै जब फांदे तब भूधर जो पर्बत सो मसकि ठौर ठौर फाटि गयो अरु चप्यो पृथ्वीमें समाय गयो ताते पाताल को जलकढ़्यो ऊपर निसरि आयो पुनः पृथ्वीथांभे जो क-च्छपजीपर शेषर हैं ते काँपि उठे २ कैसे शेष कांपे शिर नमि गयो भूमि

सहित शेषको शिर नीचे को नय गयो फिरि बलवन्त हनुमान्‌जी कूदिकै आकाश मार्गचल्यो तहां सिंधुमें एकदुष्ट राक्षसी सिंहिकारहै सो पछाहीं गहिलिया ताको मारि पुनः गिरिपरसिसहिताने हेतु मैनाक गिरिसमुद्रमें उतराय आवातापर पांवधरि हेम गिरि को शिखरसम भयो भारी रूपते पुनः बेगसहित चले ३ । १ ॥

मू० । पटकिलंकिनीबामको पैठ्योसियहितबीर । लखीनपुरसिय घरघरन खोजिश्रमितरणधीर १ खोजिश्रमितरणधीर बिभीषणभेदबतायो । गयोबाटिकासीय तहांपुनिरावणआयो २ रावणआयोदेखिकपितरुबैठोविश्रामको । कहेबचन रावणसुने पटकिलंकिनीबामको ३ । २ ॥

टी० । लंकिनी बामको पटकि सिय हित बीर पैठ्यो पुरमें पैठतही लंकापुरी स्त्रीरूपते रोका ताको मुष्टिकमारि पृथ्वीपै गिराय पुनः महाबीर जानकीजी के ढूंढ़बे हेतु लंका पुरीमें पैठे घरघरन खोजि रणधीर श्रमित भये पुरमें सियन लखी यद्यपि हनुमान्‌जी रणमें धीर्यवान् हैं परन्तु एक एक घर ढूंढतसंते श्रमित अर्थात् मनते हारिगये काहेते लंकापुरभरे में जानकीजी कहीं न देखिपरीं १ जब पुरमें ढूंढ़िथके तब बिभीषण भेद बताये अर्थात् रामनामांकित द्वार तुलसीके वृंदहरि मंदिर इत्यादि देखि साधुजानि पहिचान करि पूछे तब बिभीषण भेद बताये अर्थात् पुर में नहीं हैं अशोक बाटिकाको जाउ जहां श्रीजानकीजी रहैं त्यहि अशोक-बाटिकाको गयो तहांकछु वार्त्ता न करनेपाये ताही समय रावण आयो २ जबरावणआयो ताको देखि कपि हनुमान्‌जी विश्राम को तरु अर्थात् जाकेतरे जानकीजीको बिश्रामरहै त्यहिवृक्षपरबैठेपल्लवमें छिपे रावणके कहे बचननकोसुने इत्यादि लंकिनी बामको पटकि पुरमेंजाय ऐसेकार्य किहे ३।२ ॥

मू० । सियउत्तरताकोदयो गयोसदनमतिमंद । सियदुखलखिदै मुद्रिका देखीमारुतनंद १ देखीमारुतनंद जानकीकथासुनाई । मातुधरियमनधीर कह्योनिजमुखरघुराई २ रघुराईआवनचहत कीशकटकदलबलभयो । मुतसमानतरीकटक सियउत्तरताकोदयो ३ । ३ ॥

टी० । जब रावण अनेक भयदायक अनीति बचनकहा ताको सिय उत्तरदयो रावणके जो वचनहैं तिनके प्रतिकूल कठोर बाणी ते जानकी जी जवाबदीन्हे तबमतिमंद रावण हारिमानि सदन आपने घरै चलोगयो तब सियदुखलखि मुद्रिकादै मारुतनंदलखी जबअत्यंत दुखते अशोक वृक्षसों आगिमाँगे तबमुद्रिका डारिदीन्हे अरुप्रभु गुण सुनाय बुलायेपर आय प्रणामकरि कहे हेमातु मैं रामदूतहौं इतिमुद्रिकादै मारुतनंद हनुमान्जी निकटजाय देखी १ मारुतनंद निकटते बिवर्ण दशाभी देखीपुनः जानकीजी आपनेदुःखकी कथासब सुनाई भावहमको एकपलक कल्प समानबीतत सोसुनि हनुमानजी बोले हेमातु मनमें धीर धरिये काहेते रघुनाथजी निज आपने मुखते कह्यो है कि धीर्यराखि हैं २ काहेते धीर्य राखिये रघुनाथजी शीघ्रही इहाँ आवन चाहत पुनः कीश कटक बानरन कीसेना सोई समूहदल बलभये युद्धहेतु सहायकभये तिनसहित आयहैं सोसुनि हनुमान्जी को छोटारूप देखिसंदेह भई भाव ऐसे बानर निशाचरनसों कैसे युद्धकरिसकिहैं इसहेतु जानकीजी पूछतीभईं हे सुतकटकतेरिही समान है इत्यादिता हनुमान्को जानकी उत्तर दियो अर्थात् तुम्हारिही समानछोटे तनवाले बानरनकी सेना है ३ । ३ ॥

सू० । रामप्रतापसँभारिकै भयोहेमगिरिरूप । रघुबरकृपाबिचारु
तृण होयवज्रअनुरूप १ होयबज्रअनुरूप सर्पशिशुगरु
डहिमारै । तिमिरखायशशिरविहि मशकगिरिहेमउखारै २
मशकसुमेरुउखारही समुद्रपिपीलनिवारिकै । जरोजगत
खद्योततव रामप्रतापसँभारिकै ३ । ४ ॥

टी० । संदेहभरे किशोरीजीके बचन सुनि ताको निवारणहेतु हनुमान्जी श्रीरघुनाथजी को प्रताप उरमें सँभारि हेमगिरि रूपभयो आपना रूप सुमेरु गिरिसम ऊंचाभारी करिदेखाये आपना मानप्रौढ़ता निवारण हेतुरामप्रताप उरमें सँभारिलिये पुनःबोले हेमातु छोटातन अबलअथवा बड़ातन बली इत्यादिन बिचारु रघुबर कृपा बिचारुजाके बलते तृणबज्र अनुरूप होय अर्थात् राक्षस यद्यपि भारीतनके बड़ेबली हैं परंतु रघुनाथ जीते विमुख तिनको कुछ कियानहोइगा तथाबानर यद्यपि लघुतन अबलहैं परंतु इनपर रघुनाथजीकी कृपातौ है ताते रामप्रतापते देखीदेखा राक्षसों को नाशकरि देइँगे काहेते तिनुका महाकोमल सोऊ रामप्रताप

ते बज्रसम कठोर ह्वै सकाहै १ यथा तृणबज्र अनुरूपहोय तथाप्रभुकीकृपाते सर्प शिशु साँपको छोटाबच्चा सो गरुड़को मारिसकाहै तथा तिमिर अंधकारसो रविशशिहिखाय प्रभुके प्रतापते अंधकार सूर्य अरुचंद्रमा को खायसक्ता है तथामशक हेमगिरिहि उखारै प्रभुके प्रतापते मसाचहै सुमेरु गिरिको उखारि डारै २ यथातुच्छ मसा महाभारी सुमेरु पर्वत को उखारि सकततथा प्रभुके प्रतापते पिपील समुद्र निवारिकै समग्र जल पानकरि चींटी समुद्रको सूखा करिसक्ती है तथा हे माता तवतुम्हारे राम प्रतापते खद्योत जगजरो जुगुनूचहै तौ जगत् भरेको जरायदेवै भावआपु के स्वामी को प्रताप सबल है ३ । ४ ॥

मू० । बूड़िजायँखुरकुंभजो शेषडारिमहिभार । बारिखायबड़वा
अनल शंभुचंद्रशिरडार १ शंभुचंद्रशिरडारिचारिमुखसृ
ष्टिनशावै । गिरिसरसागरडारिधरणितजिधीरजधावै २
धीरजधरणीउरतजै जलहिमिलैगिलिद्वैरजौ । रामबाणख
लनाबचै बूड़िजायँखुरकुंभजौ ३ । ५ ॥

टी० । पुनः हे माता कुंभजौ खुरबूड़िजायँ अर्थात् जे समुद्र पीगये ते कुंभज अगस्त्य ऋषिचहैं गौके खुरमें बूड़िजायँ पुनः जेसदा भूतल को शीशपर राखते है ते शेषचहैं महिभूमिको भारडारिदेवैं पुनः बड़वा अनल समुद्रमें सदाजल को भस्म करत ताको बारिजलचहै खाय अर्थात् बुझाय डारै पुनः जाको सदाधारण किहेहैं तिसचंद्रमाको शंभुचहैं शीशते उतारि भूमिपरडारिदेवैं १ यथाशंभु शिरते चंद्रडारि देवैं तथाजे चराचर को उपजावनेवाले चारिमुखजो ब्रह्मातेचहैंसृष्टिकोनशावैंनाशकरिदेवैं पुनःधीर्य किहेपृथ्वी चराचरको शीशपर राखेहैताकी प्रतिकूल गिरिजोपर्वत सरजो तडाग सागर जो समुद्र इत्यादिको डारि धरणि धीरजतजिधावै अर्थात् पर्वतादिको डारिदेवै तथा जौनेधीर्यते सदाथिररहतीहैतिसधीर्यको त्यागि धरणिजो पृथ्वी सो धावति फिरै २ यथा धरणी उरअंतरते धीर्यतजै तथा द्वैरजौजलहिमि गिलिलै धूरिकी द्वैकणचहैसबजल अरुपालाको गिलिलै लीलिलेवै अर्थात् द्वैरजकणेचहैं ब्रह्मांड भरेके जलपालाको शोषिलेवैं इत्यादि सहित कुंभजचहै गायखुरमें बूड़िमरें इति सब आश्चर्य चहैहोवैं परन्तु रामबाण खल न बचै जापर रघुनाथजी बाणसाधैं वह दुष्ट किसी भांति न बचिसकै ३ । ५ ॥

मू० । मातुदेहुआयसुमुदित लखौंबाटिकाजाय । सुंदरफललागे
बिटप भोजनकरौंअघाय १ भोजनकरौंअघाय जानकीउ
त्तरदीन्हो । सुतरखवारेप्रबल पवनपरवेशनकीन्हो २ पव
नशूरपरवेशनहिं लखिनसकहिंरविशशिउदित । कहकपि
यहभयतनकनाहिं मातुदेहुआयसुमुदित ३ । ६ ॥

टी० । हनुमान्‌जी बोले कि हेमातु मेरे भूखलगी है ताते मुदित आयसु देहु जाय बाटिका लखौं आनंदमनते आज्ञादीजिये तौ जाय इसबाग में देखौं कौनभांति देखौं बिटपवृक्षनमें सुंदर फललगे हैं तिनको तूरि अघायकै भोजनकरौं १ जब हनुमान्‌जी कहे कि बागमें जाय मैंअघायकै भोजनकरौं तापर जानकीजी उत्तर जवाबदीन्हो सुत रखवारे प्रबल हे पुत्र इसबागमें प्रकर्ष करिकै बलीबीर रखावनेवाले हैं जिनकी भयते अन्य जीवकी कोकहै जामें पवन परवेश न कीन्हो पैठि न सक्यो वेगते बयारि नहीं जाइसक्ती है २ जिसबागमें पवन ऐसे बली शूरबीरकी प्रवेश नहीं तथा रविजो सूर्य शशिजो चन्द्रमा येभी उदितभये पर लखिनसकहिं परिपूर्ण दृष्टिते देखिनहीं सक्तेहैं अर्थात् दलफल गिरिजानेकी भयते पवन नहीं पैठत तथा पल्लव मुर्झाय जानेकी भयतेसूर्य अधिक तापनहींकरते हैं तथापालाते मारिजानेकी भयते चन्द्रमा अधिक शीतनहीं करिसक्तेहैं तिसबागमें तुम अकेलेजाय फलखाय पुनः कैसे कुशल सहित बचिसकहुगे सो सुनि कपिहनुमान् कहे कि हेमातु जोतुम मुदित आनन्द मनते आयसुदेहु तौ यहराक्षसोंकी भय मोको तनकौ नहीं है मेरा क्याकरि सक्ते हैं ३ । ६ ॥

मू० । करिप्रणामकूद्योसुभट लग्योफूलफलखाय । मूलचलावैस
मुदमहँ रक्षकपहुँचेजाय १ रक्षकपहुँचेजाय मर्दिमहिगर्द
मिलाये । पुरीपर्‌योअतिशोर अक्षरावणपठवाये २ अक्ष
वृक्षलैकपिहन्यो मेघनादआयोबिकट । भिरेप्रबलरघुपति
सुमिरि करिप्रणामकूद्योसुभट ३ । ७ ॥

टी० । आज्ञापाय जानकीजीको प्रणामकरि पुनः सुभट हनुमान् बाग में कूद्यो फूलफल खायलग्यो पुनः मूलजर सहित वृक्ष उचारि समुद्र महँचलावै फलखाते वृक्ष उचारते देखिजाय रक्षक पहुँचे १ जब रखवार

जाय निकट पहुँचे तिनहिं हनुमान् महिमर्दि भूमिपर मींजिमारि गर्दमें मिलाय दीन्हे जब बहुत मारेगये घायलजाय खबरिकीन्हे तब पुरीपरयो अतिशोर लंकापुरीमें अत्यंत हल्लामचा तब अक्षरावण पठवाये हनुमान् के पासको रावणने अक्षयकुमारको पठावा २ कपिवृक्षलै अक्षको हन्यो अक्षयकुमारको आवतदेखि कपिहनुमान्ने वृक्षप्रहारकरि वाको मारिडारे ताको मरण सुनि रावणके पठायेते बिकट कठिनयोधा मेघनाद आयो ताकोदेखि रघुनाथजीको सुमिरि जानकीजीको प्रणामकरि पुनः सुभट उत्तमबीर हनुमान् कूद्यो तब प्रबलभिरे प्रकर्ष करिकै बली दोऊ भिरे युद्धकरने लगे कोऊ किसीको जीति न सका ३ । ७ ॥

मू० । ब्रह्मबाणकपिसाधिकै धरिलैगयोबहोरि । रावणआगेकरि
दियो कहिकटुबचनकरोरि १ कहिकटुबचनकरोरिकहीरा
वणतबबानी । कोमर्कटइतकहां काहिबलफलकरहानी २
फलदलमूलविध्वंसिकरि रणकीन्होअवराधिकै । कहकपि
तवसुतछलकरयो ब्रह्मबाणकरसाधिकै ३ । ८ ॥

टी० । ब्रह्मबाण साधिकै बहोरि कपि धरिलैगयो जब किसीभांति न जीतिपाया तब मेघनादने ब्रह्मास्त्र संधानकियो ताकी महिमा विचारि हनुमान्जी ताकी चोट अंगीकारकरि मूर्च्छित ह्वैगिरे बहोरि कपिको धरि पुनः हनुमान्जीको नागफांसमें बांधि लङ्काको लैगयो करोरिन कटुबचन कहत संते लैकै रावणके आगे करिदियो १ तहीं करोरिन प्रकारके अनादर गारी निंदादि कटु बचन कहि पुनः सन्मुख बैठारि तब पुनः रावण बाणी कही कोमर्कट हेबानर तू कौनहै भाव क्या तेरा नामकहां तेआया है पुनः इत कहां इहांकौन हेतु आया है पुनः काहि बल फलकर हानि अर्थात् किसके बलते तू अभय ह्वै फल वृक्षादि तोरि हमारी हानि करि दिहे २ किस इष्टदेव को अवराधि पूजा जप तपादि करि बरदानादि बल किस देवतासों पाय तासों अभयह्वै फल दल मूल सहित विध्वंसि बागको नाशकरि पुनः बली बीरनसों रणयुद्धकीन्हे इतिकिसके बलतेसबकार्य्यं कीन्हेंसो कहु इति रावण पूंछा तब कपिहनुमान् कहत हेरावण तव सुत तेरा पुत्र मेघनादने ब्रह्मबाणकर साधिकै हाथोंसों ब्रह्मास्त्र मारि मूर्च्छित भयेपर छलकिया भावमें चैतन्यनहींहोनेपायों नातरुनबांधिपावता ३।८॥

मू० । विधिहरिहरदिग्पालसब व्यालयक्षगंधर्व । पितृप्रेतपशुम

नुजजग सचराचरसुरसर्व १ सचराचरसुरसर्व गगनधर णीगिरिघेरे । मैंतेंपुरपरिवार धामधनतियसुततेरे २ तिय सुततेरेलोकसब भयेरहेपुनिहोहिंअब । तासुदूतज्यहिजग सृज्यो विधिहरिहरदिग्पालसब ३ । ९ ॥

टी० । जो रावणने पूछा किं तू कोहै किसके बलतेअभयहै ऐसा उपद्रव किया तापर हनुमान् जी बोले कि विधि जे सृष्टि कर्त्ता हरि पालनकर्त्ता हर संहार कर्त्ता दिग्पाल इन्द्रादि सब दिशन के पति यावत् हैं ते सब तथा व्याल यथा शेष अनन्त बासुकि कर्कोटकादि नाग पाताल के पालनहारे पुनः यक्ष कुबेर की जाति गंधर्व तुंबरादि पितृ कश्यपादि प्रेत यमपुरमें यावत् हैं पशु कामधेनु आदि यावत् चतुष्पद हैं मनुज भूतलमें यावत् मनुष्यहैं तथा यावत् चर अचरहैं पुनः सुर देवता सर्व १ सचर अचर सुर सर्व तथा गगन जो आकाश धरणी जो भूमि गिरि सुमेरादि यावत् पर्वत हैं तिनको घेरे जो सातो समुद्रहैं इत्यादि यावत् सृष्टि रचना है इत्यादि जाकीमायाको स्थूलरूपहैतथासूक्ष्मरूप यथामैंमेरा तैं तेराइत्यादि जो पुर ग्रामादि परिवार बन्धु पौत्रादि धाम घरकी यावत् सामग्री धन मणि सोना चांदी आदि तिया स्त्री पुत्र इत्यादि यावत् तेरेहैं २ यथा तेरे तिया सुत अर्थात् स्त्री पुत्र धनादि को यथा तू आपना मानेहै तथा सब लोकके स्त्री पुत्रादिभये रहे पूर्व पुनि भविष्यमें होहिंगे तथा अबहैं इत्यादि विधिहरि हर दिग्पाल सबचराचरादिज्यहि जग सृज्योउत्पन्न कीन्हेउ तासु दूत मैं अर्थात् ब्रह्मा विष्णु शिवादि सब ब्रह्मांड जिनकी उपजावा है ऐसे परब्रह्म साकेतबिहारी सोई रघुवंश में अवतीर्ण है पितु आज्ञा ते बनवास कीन्हे जिनकी स्त्रीतुम हरि लायो तिन रघुनाथजी को मैं दूत हौं खबरि लेने हेतु इहां आयो हौं ३ । ९ ॥

मू० । अतिरिसपावकबारिकै तेलबस्त्रघृतबोरि । चढ्योअटारीक नककी विधिशरकरतेतोरि १ विधिशरकरतेतोरिसकलपु रदीन्हीआगी । क्षणमहँसबपुरबारिविभीषणभवननलागी २ भवनभस्मभूषणभये समुदसुदर्पनिवारिकै । सियमणि लैकूदतभयो अतिरिसपावकबारिकै ३ । १० ॥

टी०।नीतिमित दूतको मारना न चाहिये अरु अपराध बडाकिया इसहेतु

रावण के रिस अत्यन्त है ताते तेल घृतसों वस्त्र बोरि लंगूरमें लपेटि पावक अग्नि सों बारिकै छोड़ि दिये तब विधिशर करते तोरि विधिशर जो ब्रह्मास्त्र बंधन रहा ताको करसों हाथन सों हनुमान् जी तोरि डारे पुनः कनक सोनेकी अटारी पर कूदि चढ्यो १ विधिशर ब्रह्मास्त्र हाथन सों तोरि जब अटारिन पर चढ्यो तब सकल पुर दीन्हीं आगी लंकापुर भरे में सर्वत्र आगि लगाय दीन्हे तब एक क्षणमें दशपलमें सब पुर बारि जराय दीन्हे एक विभीषण के घरमें आगि नहीं लागी और सब पुर बरि-गया २ भवन तौ बरिन गये जो मणिजटित भूषण रहे सो भी भस्म ह्वै गये पुनः सुदर्प समुद निवारिकै सुनाम सुन्दर दर्प कही अभिमान अर्थात् राक्षसन को दण्ड देने हेतु जो भारी करालरूप किहे तथा लंगूरमें जो प्रचण्ड अग्नि बरत रहै इत्यादि जो सुन्दर अभिमान रहा ताको समुद्र में निवारि मिटाय दीन्हें अर्थात् जल में पैठि अग्नि बुझाय डारे तथा भारी भयंकर रूप मिटाय छोटा रूप धरि लीन्हे इति समुद्र सुदर्प नि-वारिकै इत्यादि अत्यन्त रिसते हनुमान्जी पावक अग्नि ते लंका बारि पुनः सहिदानी हेतु जानकी जी सों चूड़ामणिलै पुनः समुद्र के इस पार आवने हेतु प्रणाम करि बिदा ह्वै कूदत भयो ३ । १० ॥

मू० । करिप्रबोधसाथीसकल मधुबनकेफलखाय । हर्षिगहेप्रभुप
दकमल उरभेंटेरघुराय १ उरभेंटेरघुराय दीन्हमणिप्रभुहँ
सिलीन्ही । सियदुर्दशानिहारि पवनसुतप्रकटितकीन्ही २
प्रकटितकीन्हीसियदशा सुनतहालरघुपतिबिकल । बिजय
करियसियआनिकै करिप्रबोधसाथीसकल ३ । ११ ॥

टी० । इसपारआय हनुमान्जी आपनेसाथी अंगदादि सकल बीरन को समुझाय प्रबोध कीन्हे भाव हम खबरिलै आये सब धीर्य करौ इति कहिचले किष्किधा समीपआय मधुबनके फलखाय सुग्रीवसहित प्रवर्षण पर जाय हर्षि प्रभुकेपद कमलगहे आनंदसहित साष्टांग प्रणामकीन्हे तब उरमेंलगाय रघुरायभेंटे १ उरछातीमें लगायभेंटि कुशलपूछि रघुनाथजी सबको बैठारि आपहूबैठे तबहनुमान्जी चूड़ामणिदीन्ह ताकोदेखि साँची खबरिजानि प्रभुहँसिकै हाथमें लैलीन्हे पुनः सियकी दुर्दशा जो लंकामें निहारिआयेहैं सो पवनसुत हनुमान्जी प्रकटित कीन्ही प्रसिद्ध कहि सुनाये २ हे महाराज शत्रु के वश कुवचननको सहन निशाचरिन की

साँसतिते दुर्बल मलिनबसन वृक्षतर बैठे बीतत इत्यादि दुःखददशा जानकीजीकी जबहनुमान्जी प्रसिद्ध कहिसुनाये सोहालसुनि रघुनाथजी करुणाते बिकलभये पुनः प्रबोध करि धीर्यधरि सुग्रीवादि सकल साथिन सों प्रभुकहे चलिये राक्षसनको बिजयकरिये रावणादिकोमारि जानकीजी को आनिकै दुःखमिटाइये ३ । ११ ॥

मू० । रामबचनकपिदलचल्यो दिग्गजअहिसकुचंत । भालुबली
मर्कटसुभट यूथयूथबलवंत १ यूथयूथबलवंत अंतकोपा
वहिंलेखा । रामकटककोविभव रूपजानहिंजिनदेखा २
जिनदेखातेजानहीं नभअहिपुरभूतलहल्यो । समुदतीरडे
रापरे रामबचनसुनिदलचल्यो ३ । १२ ॥

टी० । रघुनाथजीके बचन सुनतही कपि बानरनको समूहदल चल्यो जिनके भारते दिग्गज अहि सकुचंत भूमिको थाँभनेवाले दिशा गज हाथी तथा अहि शेषजी इत्यादि सकोचकरतेहैं भाव यह भार न थँभि सकैगो काहेते भालु जे ऋक्ष ते महाबली तथा मर्कट जे बानर ते सुभट बड़ेसुंदर बली योधाते यूथ यूथ सब बलवंतहैं १ एकजातिके असंख्यन एकत्र तिनको यूथकही ते यूथ यूथ बलवंत ऐसे समूहहैं जिनको लेखा गनतीकरि को अंतपावै भाव संख्या कोऊ नहीं पायसक्ताहै ताको अब कोऊ कैसेकहै काहेते रामकटकको विभवरूप रघुनाथजी की सेनाको ऐश्वर्यरूप सो जानै जो वासमयमें आपनी आँखिनते देखाहोय सो चहै किसीभाँति कहिसकै अब नहीं कहतेबनत २ जिन आँखिन देखाहोय ते वाको विभव जानै परंतु अब इतनी जानिये कि नभ स्वर्गलोक अहिपुर पाताल भूतल मृत्युलोकते सब हाल्यो अर्थात् सेनाके वेग तथा भारते तीनिहूंलोक हालिउठे इत्यादि श्रीरघुनाथजीके बचनसुनि बानरन को दल चल्यो जाय समुद्रकेतीर डेरापरे ३ । १२ ॥

मू० । बचनसुनतरावणकह्यो मंत्रीमित्रबुलाय । मंत्रकहौपूछत
सबहि कह्योविभीषणआय १ कह्योविभीषणआय मंत्र
मणिमानियमेरो । सीतहिसौंपहुजाय मिलहुरघुनाथसबेरो
२ सुनिगुनिउठिलातनहत्यो मिलहिशत्रुकोउरदह्यो । च
ल्योहृदयअनुमानकरि बचनसुनतरावणकह्यो ३ । १३ ॥

टी० । सिंधुपारसेनसहित रघुनंदन आयगयेइत्यादिदूतनते बचनसुनत रावण मंत्री मित्रनको निकट बुलाय बचनकह्यो कि मंत्रकहौ भाव शत्रु सेना निकट आयगई तासों क्या करना उचितहै सो बिचारकरि मंत्र कहो इत्यादि सबहिनसों पूछतैरहै ताही समयमें विभीषण आयकह्यो १ विभीषण आयक्याकह्यो मंत्र मणिमानिय मेरो हेमहाराज सबमंत्रन को शिरोमणि मेराबचन मानिये क्या मानिये कि रघुनाथको सबेरे मिलहु जाय सीतहि सौंपहु अर्थात् अबहीं सबेरहै बिग्रह रात्री परिपूर्ण नहींभई ताते शुद्ध मनसों जाइ रघुनाथजीको मिलहु अरु बिग्रहकी मूल जानकीजी तिनकोलैकै सौंपिदेहु तौ तुम्हारा सबभाँति कल्याणहै २ विभीषण के बचन सुनि उरदह्यो पुनः गुनि उठि लातनहत्यो अरु कह्यो कि तू जाय शत्रुको मिलहि अर्थात् रावणको सिद्धांत है कि मैं तामसहीं भजन तौ है नहीं सक्ता हैं ताते प्रभु के हाथन प्राणतजि मुक्त होउँ इससिद्धांतके प्रतिकूल शुद्ध शरणागती उपदेश कियाइसहेतु विभीषणके बचन सुनतही रावणको हृदय क्रोधाग्निते जरिउठा भावपात्र देखिताकी योग्य बस्तु धरना चाहिये मेरातामसी तनतामें शुद्धभक्ति कैसे ह्वैसक्ती ताते उपदेश उत्तम नहींहै इसकारण क्रोधकिया पुनः सबबात मनमें गुनि अर्थात् शुद्ध शरणागती योग्य बिभीषण है सो अयशडरते सहज तौ जायगो नहीं तातेमैं अनादरकरि इसको खेदिपठावों तौ भलीबातहै इति गुनि रावण उठि बिभीषणको लातनमारि पुनः कह्यो किशत्रुको तू मिलु जाइ भावप्रीतिभाव तेरा है तूजातेरी लोकहूपरलोकमें कुशल होइगो अरुमैं बैरभावतेहौं मेराकल्याण मरेपरहै इत्यादि बचनजब रावण कह्यो ताको सुनत बिभीषण हृदयमें अनुमान करि भावप्रभुकी शरणैमें भलाहै इति बिचारि चल्यो ३ । १३ ॥

मू० । मनगलानिहरिहैकवन चल्योताकिप्रभुपांय । दीनबंधुदाया
हृदय लीन्हेतुरतबुलाय १ लीन्हेतुरतबुलाय तिलकपुनि
निजकरसारयो । रावणपुरसबदियो मिल्योजबशीशउता
रयो २ शीशउतारेशिवदयो तबपायेलंकाभवन । सोपुरधन
पांयनपरत मनगलानिहरिहैकवन ३ । १४ ॥

टी० । बराबरिको बंधु पुनः हितोपदेशदेतेमें लातनमारयो इत्यादि जो मनमें ग्लानि है ताको सिवाय रघुनाथजी और दूसरा कौन है जो हरिहै

इति अनुमान करि प्रभुपाँयतकि रघुनाथजीके पदकमलनकी शरणागती में आपना कल्याणदेखि बिभीषणचल्यो इहांआयेपर दीनबंधु दायाहृदय तुरतहीबुलायलीन्हेअर्थात् बंधुसमहितकरनेवालेदीनजनकेपुनःदयाहृदय मेंहै जिनके अर्थात् निर्हेतुदीननके दुखहरनेवाले श्रीरघुनाथजी बिभीषण को आवन सुनतही तुरत आपने समीप को बुलायलीन्हे १ तुरतही बुलाय प्रणामकरते देखिहृदयमें लगाय मिलि कुशल पूछिसमीप बैठारे पुनः निजकर तिलकसारयो समुद्रते जलमँगाय रघुनाथजी आपने हाथ सों बिभीषणके शीशमें राजसी तिलककरि दीन्हे पुनः रावणपुर सबदियो सो पुररावणकोकबमिल्योरहै जबशीशउतारयोशीशकाटिकाटिअनेकनबार शिवकेअर्थ हवनकरिदिये २ इसीभाँति अनेकनबार जब रावणशीशउतारे तापर शिवदियो तबलंकाभवनको विभव लंकापुरकी सब ऐश्वर्य रावण पायोरहै सो पुरधन पाँयनपरत सोई लंकापुरकी राज्यलंकापुरको सर्वस धन प्रणाम करत मात्रमें रघुनाथजी विभीषणको देदीन्हे इत्यादि प्रभुको उदार स्वभाव बिभीषण पूर्व्हीं बिचारि लिया कि बिनारघुनाथजी मेरे मनकी ग्लानिको हरिहै ३ । १४ ॥

मू० । सखानिकटबैठारिकैं पूछीसागरपाय । केहिबिधिउतरैकपिकटक तेहिबिधिकरियउपाय १ तेहिबिधिकरियउपाय मंत्र करिव्रततटकीन्हो । क्षुद्रनद्रवहिंविशेषि तबहिंप्रभुधनुशर लीन्हो २ धनुशरउरमारयोबिकल मिल्योरत्नलैआयकै । पंथदेहिकपिकटककहँ सखानिकटबैठायकैं ३ । १५ ॥

टी० । लंकाजानेकी राहकेबीचमें समुद्र मिल्यो बिनायाको उतरेकैसे आगे जायसक्के हैं इति सागरपाय विभीषण सुग्रीव जामवंतादि सखाआपने निकट बैठारि प्रभुपूछी हे सखा कपिकटक बानरीसेना क्यहि बिधि समुद्रके पारउतरै ताके हेतु जैसामंत्र कहौ तेहिबिधिउपाय करिये १ जो कहौ ताही बिधिकी उपायकरी इत्यादि जबप्रभु पूछे तबमंत्रकरि सबकी सलाहते सिंधुतट प्रभुव्रतकीन्हे अर्थात् राहमाँगने हेतु व्रतकीन्हे तीनि दिनप्रभुबैठे रहेतहाँ उत्तमहोय तौ बिनती कीन्हे द्रवैमनपाघिलै अर्थात् प्रसन्नहोइ अरु क्षुद्रजोनीचहै सोबिनती कीन्हे बिशेषि नद्रवै भावसाधारणचहै मानिजाय बिनती कीन्हे निश्चयकरि नमानै काहेते जड़दंडदीन्हे शुद्धहोताहै यहबिचारे तबहिं प्रभु धनुशर धनुष बाणहाथ में लीन्हो २

धनुष में शरबाण चढ़ाय उरमारयो बीचसमुद्र में मारयो ताकी अग्निते बिकलरत्नलैआयकै मिल्यो कंचनथार में मणि मुक्तादि भरे भेंटहितहाथ में लीन्हे बिप्ररूपते समुद्र आय प्रभुको मिल्यो तबसखासमसमीपसिंधु कोबैठारि प्रभुकहे कि कपिकटक उतरिबे कहँ पंथरास्ता देहि ३ । १५ ॥

मू० । नाथसुगममारगरच्यो जलमहिपावकपौन । बिटपशैलस
रजड़रचे इनकोसिखवतकौन १ इनकोसिखवतकौन कर
हुप्रभुएकउपाई । गिरिगणबाँधहिंसेतु नीलनलदूनहुँभाई
२ दूनहुँभाईबांधिहैं शैलसकलमर्कटसच्यो । आपुप्रताप
सहायमम नाथसुगममारगरच्यो ३ । १६ ॥

टी० । समुद्र बोला हे नाथ सुगम मार्ग आपही रचो है अर्थात् सुलभ सृष्टि उपजावने हेतु मार्ग आदि कारण पंचतत्त्व जड़करिआपही ने बनायाहै कौन पाँचतत्त्व कैसे जड़हैं यथा जल पावक जो अग्नि महि जो पृथ्वी पवन आकाश इत्यादि कारणते बिटप जो वृक्ष शैल जो पर्वत सर तड़ाग समुद्रादि सब जड़रचे कौनभाँति जड़ यथा जलको जिसनारी में लै चलौ तहाँ तौ न जाय अरु स्वइच्छित पर्वत फोरिजात तथा पृथ्वी जहाँपरि खादि खोदौ सो तोपिजाइ स्वइच्छित गुम्भज भीटखुदि जातेहैं अग्नि बारेते सूखे ईंधनमें नहींबरत स्वइच्छित ओदा बनजराय-देत पवन जहाँ चाहौ तहाँ नहीं आवत अनचाहत मंदिरमें प्रवेश करि जात इत्यादि सबमें जड़ता आपहिकी बनाई है तिनको आपही चहौ सिखावो और कौन सिखाय सक्ता १ इनको कौन सिखावत भाव और के योग्य यहकाम नहींरहै आपुने मोको सिखावन दियो सोतौ उचितैहै हे प्रभु अब मेरे कहेते एक उपायकरहु कौनभाँति नील नल दोनों भाई लरिकाईमें मुनिते आशिषपायाहै इनके करपरते शिला जलमें नहींबूड़ते हैं ताते दोऊभाई गिरिगण पहाड़ समूह लैलै सेतु बाँधहिं २ नल नील दोनोंभाई सेतु बाँधिहैं तथा सकल मर्कट शैलसचौ अपर सबबानर पर्वत लैलै आय ढेर लगावैं तिनकोलै सेतुरचैं इसभाँति हे प्रभु आपुके प्रतापते अरु मम मेरीसहायताताते सेतुबँधिजाई हेनाथ श्रीरघुनाथजी यहिभाँति सुगम मार्ग रचौ सहजही कपिसेन पारउतरि जाने हेतु मोपर मार्ग रास्ता बनाय लीजिये यही सुगम उपायहै ३ । १६ ॥

मू० । सुनिसाँचेसागरबचन कपिपतिकोशबुलाय । धावहुगिरि

मू० । तरुआनिकै नलहिदेहुसुखपाय १ नलहिदेहुसुखपायधर
हिंगिरिसागरमाहीं । सुनिआयसुकपिवृंदचलेचहुँदिशिभ्र
मनाहीं २ भ्रमनहिंशिरचंगुलकराहिं कोटिकोटिगिरिधरिर
चना।देहिंआनिनलनीलकहँसुनिसांचेसागरबचन३।१७॥

इति सुन्दरकाण्ड समाप्तः ॥

टी० । सागर समुद्रके कहेहुये साँचेबचन सुनि प्रभुकी आज्ञाते कपिपति जो सुग्रीवते सब कीश बानरनको निकट बुलाय ऐसा कहते भये कि भूतलपर सबदिशिको धावहु गिरि जो पर्वत तरु जो भारीवृक्ष इत्यादि जहाँ पावहु तहाँते उखारि आनिकै सुखपाय आनंद सहित नलहिदेहु १ तुम सब आनंद सहित आनि नलकोदेहु पुनः नल नील दोऊभाई गिरि सागर माहीं धरहिं सेतुरचना हेतु गिरि जो पर्वत तिनकोलैलै समुद्रमें जोरते चलेजाहिं इत्यादि सुग्रीवको आयसु आज्ञा सुनि कपिवृंद बानर समूह चारिहू दिशिको निशंकचले राक्षसनकी कछुभ्रमनहीं मनमेंकरते हैं अथवा भारी पर्वत उठावतमें गुरुताकी भ्रमनहीं करतेहैं २ नेकहू भ्रम नहीं करतेहैं किसी पर्वतको शिरपर धरिलेतेहैं किसीकोचंगुलकराहिं हाथ हीसे गहिलेतेहैं इसीभाँति रचना तमासामात्रमें कोटिकोटिगिरिकरोरिन पर्वत बानरलोग आनिकै नल नीलकहँदेहिं इसभाँति सागरकेसाँचेबचन सुनिसेतु बाँधते हैं ३ । १७ ॥ कुंडलिया ॥ पाहि कहत संकट हरत जासु नाम भवसेत । अर्थ धर्म कामादिजग मुक्ति सुगम यशदेत ॥ मुक्ति सुगम यशदेत धामत्रयतापनशावत । रूप सुगुण अवगाहथाह बिधि शंभुनपावत ॥ पावत पारन शास्त्र नेतिनितनिगमकहाहीं । बैजनाथ स्वइराहमाँगि प्रभु सागर पाहीं १ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथबिरचितकुण्डलिकारामायणप्रदीपकाटीकायांसुन्दरकाण्डसमाप्तम् ॥

अथ लंकाकाण्डप्रारम्भ ॥

कुंडलिया ॥

मू०। बांधिसेतुमारगभयो चलीबिपुलकपिसयन। गर्जहिंमर्कट भालुसब आयेराजिवनयन १ आयेराजिवनयन मदोदरि बहुसमुझायो। मृतकनरावणसुनै कालकेहिमतिनभ्रमायो २ मतिलैअंगदपुरचल्यो शुभउपदेशनकोगयो। चेतुचेतु करिहेतुनिज बांधिसेतुमारगभयो ३। १॥

टी०। समुद्रमें सेतुबँधि सुन्दर मार्ग रास्ताभयो तापर बिपुल बड़ीभारी कपि बानरन की सेन चली तामें मर्कट जो बानर भालु जोऋक्ष इत्यादि संगमें गर्जत संते राजिव कमल नयन श्री रघुनाथ जी समुद्रपार आये सुबेल पर डेरा कीन्हे १ जब सुन्यो कि राजिवनयन इस पार आइगये तब मन्दोदरी आपने पति को बहुत भांति ते समुझायो कि तुम रघुनाथ जी सों न जीति सकौगे ताते कछु बिगरा नहीं है जानकी जी को लैके जाय मिलौ इत्यादि बहुत कहे परंतु मृतक मौत बशते रावण कछु न सुना काहेते काल केहिकी मति न भ्रमायोजब मृतक काल आवता है तब किसकी बुद्धि नहीं भ्रमित करि देता है भाव हितमें अनहित अहित में हितमानि लेता है २ इहां मतिलै अंगद पुरचल्यो सबकी सलाहलै प्रभु आज्ञा दिये ताते अंगद लंकापुरको चल्यो शुभ मंगलकारी उपदेश देने को रावण के पास गयो पुनः निज हेतु जिस काजको गयेहैं तिस आपने प्रयोजन साधने हेतु रावण प्रति अंगद बोले कि चेतु चेतु सेतुबांधि मारग भयो अर्थात् तेरा बड़ा रक्षक समुद्र रहै तामें सेतु बँधि सुगम रास्ता ह्वैगया आजु सेना उतरि आई ताते चेत करु आपना हित समुझि जानकी जी को दै प्रभु को मिलौ तौ कुशल नातौ सब मारि डारे जाहुगे ताते चेतु ३। १॥

मू०। रुंडमुंडसागरपरैरामबाणपरचंड। मधुमुरबालिबिध्वंसि ज्यहि खरदूषणबलवंड १ खरदूषणबलवंड खंडिताडका सुबाहे। सागरसडारतिभयो देखुमारीचकहांहे २ कहांक

हांतर्कसपरयो बारबारउठिउच्चरै । मिलौजायसियलायसँग रुंडमुंडसागरपरै ३ । २॥

टी०। पुनः अंगद बोले हे रावण जो न चेतकरिहै तौ रघुनाथजीकेबाण ऐसे प्रचण्ड तेजवन्तहैं जिनकेलागेते तुम्हारे रुण्डते भिन्नह्वै मुण्ड उड़िकै सागर में परैंगे कैसे बाण प्रचण्ड हैं ज्यहि बाणनते मधु पूर्व दैत्य तथा मुर अरुवर्त्तमानमें बालि ऐसा बली पुनः खरदूषण ऐसे बलवंड तेजवन्त बली इत्यादि सबको बिध्वंसि क्षणमात्रमें नाशकरि दीन्हे १ यथा खरदूषण बलवंड तथा ताड़का सुबाहौ महाबलीरहे तिनहूंको खंडि एकहीएक बाणते प्राणघात कीन्हे पुनः सागर सडरितभयो जिनके बाणको प्रतापदेखि समुद्र डरायउठो बिप्ररूपते आइमिल्यो पुनः जाको संगहीलैगयो तिस मारीचको देखु कहाहि भाव वाकोभी एकही बाणते मारे २ अब तेरे हेतु प्रभुके तरकसमें कहां कहां परयोहै अर्थात् रावण कहां है कहां है इत्यादि शब्द बारंबार तरकसमें बाण उच्चारकरि उठते हैं भाव अब तेरे शोणित के प्यासते बाण तल्मलाते हैं ताते जानकीजीको संगलैके जाय प्रभुको मिलौ नाहींतौ रुंडतेकटिकै तुम्हारे मुंड सागरमें उड़िकै परैंगे ३ । २ ॥

मू० । मैंरघुबरकोदूतहौं तूनिशिचरकुलराय । सेनसहितलागौ सुभट सकलउठावोपांय १ सकलउठावोपांय बचनहारेप्रणरोप्यो । शेषशीशमेंचोटभई अंगदजबकोप्यो २ अंगद पांवउखारियो कहरावणभटयूथहौं । हारेभटरावणउठ्यो मैंरघुबरकोदूतहौं ३ । ३ ॥

टी० । अनेकप्रति उत्तरहोत संते जब रावण प्रभुकी निंदाकिया तब कोपि अंगद हाथ पटके तब भूमिहाले ते रावणके मुकुटगिरे सो चारि अंगद उठाय प्रभुपासको फेंकिदिये तापर रावण सक्रोधित बोला हेसुभटौ इस बंदरको मारौ तापर अंगद बोले कि मैंतौ रघुनाथजीको दूतहौं अरु हे रावण तू निशाचर कुलभरेको राजा है भाव मेरीतेरी समता नहीं है परंतु निशाचरी सेना सहित यावत् सुभट बड़ेबड़े बली तुमहौ ते सकल लागौ मेरापांव उठावो १ काहेते सकल पांव उठावो बचनहारे प्रणरोप्यौ भाव मैं यह प्रणकिहे बचन कहताहौं जो मेरापांव उठायसकौ तौ सेन सहित रघुनाथजी हारिगये लौटिजायँ इति प्रणकरि अंगद जबकोप्यो

क्रोध सहित पाँवरोप्यो तबभूमि नीचे को दबी अत्यन्त भारते शेष के शीश में भारआयो ताते चोटभई शिर पिराय उठ्यो २ अंगद के बचन सुनि रावण कहत आपनी समाज में भटयूथहौ अत्यंत बली योधा झुंडन बैठेहौ ताते अंगदको पाँव उखारिये आव पाँवपकरि उठाय याको पटकिडारौ सोसुनि मेघनादादि बलीबीर उठावनेलगे किसीकोउठावा न उठिसका जबसबै भटबली योधाहारे छोड़ि छोड़ि अलग बैठे तबरावणउठा जब पाँवपकरनेलगा तब अंगदबोले कि मैं रघुबरको दूतहौं आवमेरे पद गहे तेरा बचाव नहीं है इसीभाँति रघुनाथजीके पदगहु तौ तेरे अपराध क्षमाकरैंगे बचिजाइ है ३ । ३ ॥

मू०। मेरुहल्योपगनहिंहल्योअस्तहल्योगिरिशृंग । उदयशैल कंपितभयोमंदरहरगिरिभंग १ मंदरहरगिरिभंगसप्तपाता लबिहाले । सप्तसमुद्रउच्छलतकमठदिग्गजदिशिचाले २ चालेदशकंधरबदनलंकसदनढहिढहिचल्यो । थकेजके सबदनुजभटमेरुहल्योपगनहिंहल्यो ३ । ४ ॥

टी०। मेरुहल्यो पगनहिंहल्यो अर्थात् इधर अंगद पावँधरि दबाये उधर महाबली मेघनादादि उठावनेलगे दोऊ दिशिके जोरते सुमेरु पर्बत तकहालि उठ्यो अरु अंगदको पाँव न हाल्यो क्याक्या हाल्यो जहाँ सूर्य अस्तहोतेहैं त्यहिगिरि पर्बतके शृंगहाल्यो तथा जहाँ उदय होतेहैं सोऊ शैल पर्बत काँपि उठ्यो तथा मंदराचल अरु हर गिरि कैलास सो भी भंग टूटि फूटिगयो १ यथा मंदर हरगिरि भंगभयो तथा सप्तपाताल बिहाले पातालादि नीचेके सातौलोक बिशेषिहाले अथवा तहाँके बासीबिकल बिहालभये तथा सातौ समुद्रनकोजल ऊपरकोउछरत तथा कमठ कच्छप अरु भूमिथाँभनेवाले दिशागज सोभीचाले हालिडोलिगये २ दशकंधर बदनचाले रावणके मुख हालिउठे तथा लंक सदन ढहिढहिचल्यो लंका पुरी ऐसीहाली जाते मंदिर गिरिपरेपुनः दनुजभट राक्षस योधा उठावतमें थकिकै जकिगयो जड़वत् बैठि रहिगये इत्यादि मेरुहल्यो अंगदको पावँ नहींहल्यो ३। ४ ॥

मू०। हारिगयेदलबलअसुरचल्योबालिसुतबीर । मुकुटधरेप्रभु पाँयतर मिलेहर्षिरघुबीर १ मिलेहर्षिरघुबीरबालिसुतका

रणभाख्यो । गढ़घेख्योकरिमंत्र जहांलायकत्यहिराख्यो २ राखिबीरपुरभयदयो भयोलंकअतिप्रबलजुर । भयोयुद्ध क्रुद्धितसमर हारिगयेदलबलअसुर ३ । ५ ॥

टी० । असुरन को दल अनेकभाँति बलकरिकै हारिगयो पाँवनउठा तब बालिसुत अंगदबीर लंकाते चल्यो इहाँआय मुकुटधरे प्रभुपायँतर भावलंका जीतिबेको चिह्न सूचितकरि रावणके मुकुट प्रभुकेआगे भेंटधरि प्रणामकीन्हे तब हर्षसहितरघुनाथजीउठिकै अंगदकोउरमें लगायमिले १ हर्षिमिले पुनः रघुनाथजी निकट बैठारि हालपूँछे तबबालिसुतअंगद बिग्रहको कारणभाष्यो भावबिना मारिडारे जीवतरावण जानकीजी को नदेइगो इत्यादिसुनि मंत्रकरि सुग्रीव बिभीषण जामवंतादि बिचारपूर्वक बार्त्ताकरि चारिअनीकपिसेना बनाय एक एक मुखिया अग्रणीयकरि लंका गढ़घेरयो पुनः जो जिसद्वारपर युद्धकरिबेलायकरहै ताको तहैं राखे २ इत्यादि द्वारनपर बीरनको राखि पुरभयदयोलंका पुरपर भय दायक आचरण करतेभये अर्थात् पर्वतादि चलावनेलगे तिनकोदेखि लंकमें प्रबलज्वरभयो पुरबासी डरायउठे ताते सबके उरमें अत्यंत दाहभई तब रावणकी आज्ञाते राक्षसीसेना अस्त्रधारणकरि सन्मुखजुटे क्रुद्धितयुद्धभयो दोऊ दिशिके बीरक्रोधभरे युद्धकरतेरहे परंतु समरभूमिबिषे असुरराक्षसी दल बलकरि हारिगये भागनेलगे ३ । ५ ॥

मू० । मेघनादयोधासुभट लक्ष्मणहन्योबिचारि । भईमूरछाप्रभु लखे हनुमतलीनप्रचारि १ हनुमतलीनप्रचारि ओषधीलेनपठायो । दुष्टहन्योकपिबीच शैलशिरराखिसिधायो २ शैलशीशदेखतभरत तानिमारिशायकबिकट । रामकहतभेंटतकह्यो लषणघायपीड़ासुभट ३ । ६ ॥

टी० । लक्ष्मणको सुभटबिचारि मेघनाद योधाहन्यो अर्थात् जबकिसी भाँति बाणबिद्यामें सावकाश नपाया तब बिचार कियाकि सबल सुभटहै मेरेप्राणलेने चाहत इतिबिचारि मेघनादने ब्रह्माकीदीन्हीशक्ति लक्ष्मणजी केमारिसिताके लागेमूर्च्छाभई हनुमान्जी उठायलाये प्रभुलखेरघुनाथजी मूर्च्छित देखि हनुमत प्रचारिलीन निकटको बुलायलीन १ हनुमान्जी को निकटबुलाय पुनः औषधीलेनेहेत द्रोणागिरिपरकोपठाये तहाँबीचमें

दुष्टकालनेमि बाधकभया मुनिवेषते बिलमाचाचाहा ताको कपिहनुमान् हने मारे पुनः शैल शिरराखि औषधी न चीन्हे पहारै उखारि शीशपर धरिधाये बड़े बेगते चले अवधपुर के ऊपरह्वै निसरे २ शीशपर शैलदेखत भरत बिकट शायक तानि मारिदिये शिरपर पहार लिहे बड़े बेगतेआवत देखि भरत जाने कोऊ राक्षस है इसभ्रमते धनुषतानि कठिन बाण मारिदिये ताके लागत रामराम कहिगिरे मूर्च्छित ह्वैगये जबजगायकैराम जन जानि भेंटनेलगे तबहनुमान्कहे किलषण सुभटके घावकी पीड़ा है भाव रावण जानकी हरे ताहेत युद्धहोतमें लक्ष्मण घायल मूर्च्छित हैं तिनके हेत मैं औषधी लिहेजातारहौं याको बिस्तार गीतावलीके तिलक में हम लिखा है ३ । ६ ॥

मू० । अतिसनेहभेंट्योभरत कह्योकीशचढुबाण । बिलमहोहिं मारगअगम पठवोंतोहिंप्रमाण १ पठवहुँतोहिंप्रमाण समुझिपुनिकहतकपीशा । तवप्रतापतेनाथ जाउँजहँप्रभुजगदीशा २ प्रभुजगदीशबिचारिकै द्वउपगधरिपायँनपरत । धन्यधन्यहनुमंतजग अतिसनेहभेंट्योभरत ३ । ७ ॥

टी० । सबहाल सुनिरामदूत जानि हनुमान्जी को अत्यंत सनेह सहितभरत भेंटे पुनः कह्यो कि हेकीश हनुमान् कपि मेरे बाणपर चढु काहेते बन पहार समुद्रादि मारग अगम हैं तहाँ चलतमें तोको बिलंब होई अरुबाणपर बैठुतौ प्रमाण सत्यसत्य जानु शीघ्रहीतोहिं प्रभुके पास को पठवों भावमेरे बाणपरजात बिलंबनलागी १ जबभरतजी कहेप्रमाण तोहिं पठवों तबबाणपर चढ़ि समुझिलिये किजो कहतेहैं तामें संदेहनहीं है यहबिचारि पुनः कपीश हनुमान् कहतभये हेनाथ आपुके प्रतापतेजहाँ जगदीश प्रभु श्रीरघुनाथजी हैं तहाँ शीघ्रही जाउँगो कृपादृष्टि आज्ञादीजे २ प्रभुजगदीश रघुनाथैजीकी तुल्य भरतको बिचारिकै दोऊपगधरि हनुमान्पायँन परतभये तबभरत अत्यंत सनेहसहित मिले भेंटि बिदाकीन्हे पुनः भरत बोले कि जगत् बिषे हनुमान्जी धन्यतर धन्य हैं भाव ऐसा रामसेवक दूसरानहीं है ३ । ७ ॥

मू० । लक्ष्मणउठिठाढ़ेभयो कीन्होवैद्यउपाय । सुनिरावणसंशय भयो भ्राताजायजगाय १ भ्राताजायजगायकहेकारणसब

जेते । तेहिंतबकह्योनमनुजब्रह्मप्रभुकपिसुरतेते २ कपि
सुररघुबरब्रह्महैं त्यहिविरोधकोनाहिंगयो । यहकहिरणमंड
लगयो लक्ष्मणउठिठाढ़ेभयो ३ । ८ ॥

टी० । औषधीपाय वैद्य सुषेणने उपाय कीन्ही तबलक्ष्मणजी चैतन्य ह्वै उठिठाढ़े भये सो हालसुनि रावण के मनमें संशयभयो भावमेरीसेना तौ आधीनाश ह्वैगई उहाँ लक्ष्मण घायलौभयेपर पुनः निरुजह्वैगये यही शोचमें जायभ्राता आपने भाई कुम्भकर्णको सोवतसंते जगायो १ जाय भाई कुंभकर्ण को जगाय पुनः रावण जेते कारणभये रहैं ते सबकहे अर्थात् अवधेश पुत्र रामलक्ष्मणस्त्री सहित वनकोआये शूर्पणखाको कुरूप किया खरादि को मारे तिनकी स्त्री मैंहरिलायों तेवानरी सेनालै सिंधुमें सेतु बाँधिआयपुर घेरेहैं बहुत राक्षस मारेगये इत्यादि सुने तबत्यहि कुंभकर्ण ने कह्यो न मनुज रघुनंदन प्रभुमनुष्य नहीं हैं परब्रह्म अवतीर्णभयेहैं तथाकपि सुरतेते जेतेबानर हैं तेते सबदेवता हैं बानर तनधारण कीन्हे हैं २ हे रावण कपिसुर हैं रघुवर परब्रह्महैं त्यहिसों बिरोधकरि को नहिंगयो अर्थात् ताडका सुबाहु बिराध खरदूषण कबंध बालि इत्यादि विरोध करिको नहीं नाशभया तैसे तुमहूं जाउगे असकहि कुंभकर्ण रण मंडल समरभूमिको गयो ताको देखि युद्धहेत लक्ष्मणजी उठिकै ठाढ़े भये ३ । ८ ॥

मू० । मारिदुष्टरणदलिमलेसुरदुंदुभीबजाय । लक्ष्मणकोआयसु
दियोतातलंकपुरजाय १ तातलंकपुरमाहिंहतहुरावणसु
तजाई । आयसुशिरधरि लषणहत्योदेवनदुखदाई २ दुख
दायीमारेसकलरावणमनशोचतचले । जयजयजयरघुबंश
मणिमारिदुष्टरणदलमले ३ । ९ ॥

टी० । कुंभकर्ण संग्राममें बहुते बानरनको मूर्च्छित करि दिया तब रघुनाथजी सन्मुखआय मारिबाणन दुष्टको दलिमले कुंभकर्णके अंगअंग काटिडारे ताको मरणदेखि सुर देवता दुंदुभी नगारा आदि बजाये पुनः बिभीषणते हालपाये कि मेघनाद यज्ञ करताहै ताकेमारनेहेत प्रभुलक्ष्मण जीको आयसुदियो कया आज्ञादिये हेतात तुमहनुमानादिबीरनको संगलै कै लंकाको जाउ १ किसहेत लंकापुरकोजाहु हेतात लंकामें जायरावण

सुतहतहु रावणकोपुत्र मेघनादयज्ञकरताहै ताकोमारहु सो प्रभुकोआयसु शिरधरि लक्ष्मणजी उहाँजाय युद्धकरि देवन दुखदायी हत्यो देवतनको दुखदेनहारा जो मेघनाद ताको रणमें मारे २ दुखदायी राक्षस सकल मारे अर्थात् कुंभकर्ण मेघनाद महोदर प्रहस्त इत्यादि यावत् मुखिया दुष्ट रहे तेसब मारेगये तिनकोदेखि देवता सब आनंदह्वै कहतेहैं कि जे प्रभु दुष्टनको मारि रणमें दलमले सबको नाशकीन्हे ऐसे रघुवंशमणिकी जय होय जयहोय जयहोय तथा सेनप सुभट बंधु पुत्रादि मारेगये तिन को शोच दुख पूर्वक बिचार करत रावण समर भूमिको चलतभयो ३ । ९ ॥

मू० । रणरावणआतुरचल्योअसुरसैनदलसाथ । करतयुद्धदेवन डरतधरतशरासनहाथ १ धरतशरासनहाथचलतमहिदि ग्गजडोलैं। क्षुभितउदधिजलशृंगशैलखसिमहिधरबोलैं २ महिधरबोलैंअतिसभयरबिमुद्रितसबथलहल्यो । भुजप्र चंडरणमंडियो रावणरणआतुरचल्यो ३ । १० ॥

टी० । असुर राक्षसनकी सेना सब बटोरि पुनः दलसाजि अर्थात् हाथी घोड़े रथ पैदरादिको व्यूहबाँधि ताको साथलै रावण रणभूमि को आतुर वेगसहित चल्यो कैसाहै रावण धरत शरासनहाथ देवनडरत जा समय हाथमें धनुष धारणकिया तासमय किसीदेवतनको डरनहींमानता सबसों अभय युद्धकरत सबको परास्त करिदिया १ पुनः शरासन धनुष हाथमें धारणकरि चलत समय महिदिग्गज डोलैं अर्थात् मृत्युकाल तौ आयगयो परंतु तेज प्रताप पूर्ववत् बनाहै ताते हाथमें धनुष बाणलै जा समय समर भूमिको चल्यो तासमय महि जो पृथ्वी तथा दिशा गज इ-त्यादि सब हालिउठे ताते उदधिजल क्षुभित समुद्रको जल उछरनेलगा तथा शैल शृंग खसिपरे महिधर बोलैं अर्थात् जब अत्यंत पृथ्वीहाली तब पहारनके जे ऊँचेकँगूरारहे तेतौ फाटि फाटिपरे तथा जो भारी महिधर पर्वतहैं ते फाटे तामें घोरशब्द होनेलगा २ अथवा महिधर पृथ्वीको धरण हारे दिग्गज शेषादि ते अति सभयबोलैं अत्यंतडरमानि चिल्लानेलगे इत्या-दि पृथ्वी सब थल द्वीप द्वीपांतर सर्वत्र हालिउठी पुनः धूरि ऐसी समूह उड़ी जाके आवरणते रवि मुद्रित सूर्य मूँदिगये इसभाँति रावण आतुर चल्यो आय प्रचंड भुजदंडन सों रणमंडियो दंडसमान पुष्ट प्रचंड तेज

प्रताप बलके भरे जो बीस भुजाहैं तिनकरिकै प्रभुके सन्मुख निशंकयुद्ध करने लगा ३ । १० ॥

मू० । श्रीरामरावणायुद्धकोकोकबिपावहिपार । शेषशारदानिगमबिधिशंकरमुनिअवतार १ शंकरमुनिअवतार कल्पकोटिनकहिहारैं । बलदलसमरप्रचंडमंदजेकहनबिचारैं २ कहनबिचारैंमतिकवनसबकहिहारेबुद्धको । तुलसिदाससोकिमिकहैरामरावणायुद्धको ३ । ११ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी सों रावण प्रति युद्धको जो चरितहै सो अपार समुद्रवत्‌है ताको वर्णनकरत संते को ऐसा कविहै जो पारपावहि काहेते अन्य कविनकी कौन गनती है शेष ऐसे कवीश्वर शारदा ऐसी विद्वती निगम जो वेद विधि जो ब्रह्मा शंकर ऐसे समर्थ तथा मुनि अवतार अर्थात् वेदको अवतार बाल्मीकि भगवत्‌को आवेशावतार व्यास इत्यादिकनको परिपूर्ण कहनेकी गति नहीं है १ कैसे गति नहींहै जो शंकरादि देवता मुनिअवतार इत्यादि कल्प कोटिन करोरिनकल्पतक कहतसंते हारिजायँ तबहूंपार न पावहिं तौनेचरितमें जैसासमूह दोऊदिशिदलरहा दोऊदिशिकेसुभटनमें जैसाबलरहा तथा जैसे प्रचंड समरभई ताको जेकहनविचारैं कि हमकहिकै पारहोयँगे इत्यादि जेबिचारैंते मतिमंदहैंयथा मसाआकाशकी थाह लीनचाहै यथा खद्योत लोकको तमनाश कीनचाहै तैसेही निर्बुद्धीहैं जे रामचरित परिपूर्ण कहने को बिचारकरैं २ काहेते मंदहैं कि जाको ब्रह्मा शिवादि सबकहिहारे पार नपायेतौ दूसरा कौन ऐसा बुध विद्वान् कविहै अरुकौन ऐसीमति है जो कहबेको बिचारकरै सोई श्रीरामरावणके युद्धको अपार चरित सो तुलसीदास प्राकृत जीव क्यहि बिधिते कहै ३ । ११ ॥

मू० । प्रभुमारयोप्रभुह्वैगयोताकोबरणैकौन । बलपौरुषअरुबीरताजानतरबिशशिपौन १ जानतरबिशशिपौनबड़ोरणरावणकीन्हो । निजदलसमगतितातहिपर्मपदपावनदीन्हों २ पावनपदलखिदेवसबपुष्पवृष्टिदुंदुभिदयो । करहिंबिनयसादरसकलप्रभुमारयोप्रभुह्वैगयो ३ । १२ ॥

टी० । प्रभुरघुनाथजी रावण को मारयो सोऊ प्रभुह्वैगयो अर्थात् बद्ध

जीवकोटी तेमुक्तह्वै नित्यमुक्त जीवकोटीमें प्रभुकीसमान ह्वैगयो ऐसेअगम ऐश्वर्य्य चरितको कौनऐसा कबिहै जो बर्णनकरै भाव यामें किसीकिगति नहींहै पुनःजबरावण बर्त्तमान रहातासमयको बलपौरुष बीरता इत्यादि रबिशशि पवन जानते हैं अर्थात् कैसहू कठिन कामपरै ताको करिडार नेमें श्रमनआवै ताको बलकही यथा कौतुकही कैलास उठायलिया पुनः पौरुषकही पुरुषार्थ को भाव कैसहू दुर्घटकार्य्य प्रारंभकरै ताको बिनापूरा करिलिहे छाँड़ैन यथा सब लोकपाल दिग्पालन को स्वाधीन करि राखा पुनः कैसहू सुभट सन्मुख आवै यावत् मरिनजाय तावत् युद्धमें उत्साह बनीरहै ताको बीरताकही सो प्रभुकेसन्मुख प्रसिद्ध देखिये इतिबलपौरुष बीरताजैसे रावणमेंरहेहैं सो रबिसूर्य ऐसेप्रतापवंततेजानतेहैं भाव रावणके प्रतापकेआगे सूर्यनकोप्रताप मंदपरिगयापुनः शशिचन्द्रमा ऐसे प्रकाशवंत तेजानते हैं भावरावणके यशप्रकाशके आगे चंद्रमन्दपरिगये पुनः पवन ऐसे बलवंत ते जानते हैं भावरावण के बलको देखि पवन अबल ह्वै गये १ काहेते रबिशशि पवन जानतेहैं कि रावण सबसों बड़ोरणकीन्हो अथवा सबको तौ स्वाभाविकही जीतिस्वाधीन किहेरहा ताते सबजानते हैं रघुनाथजीके सन्मुख रावण बड़ोरणकिया ताहि रावणको प्रभुनिज दलसमगति पावनपरमपददीन्हो अर्थात्जोयुद्धकरै ताको शत्रुमानिदुखद गतिदेना उचित अरुयुद्ध समय जो आपनी सहायताकरै ताको मित्र मानि सुखदगति देना उचित सो नहीं जो युद्धकरि शत्रुरहै ताहूकोआपनीसेनासम शुभगति कियेकौनभाँति यथासुग्रीवादि यावत्बानररऋक्षसेनासहायकरहे तिनसबको प्रभु आपनेसाथै परधामको लैगये तथापरिवार सहित रावण को इसी समय पावन परधामकोप ठैदिये ऐसेकृपासिंधु हैं २पावन पदलखि रावणको परमपद पावत देखि देवतासब पुष्पवृष्टि दुंदुभिदयो प्रभुपर फूलनकी बर्षाकरि नगारा आदि बाजाबजाये पुनः सकल देवगण बिनय करहिं अनेकभाँति स्तुति करि पुनः कृपासिंधु उदारताकी प्रशंसा करते हैं हे प्रभु आपु रावण को मारयो सोऊ प्रभु भयो ३ । १२ ॥

मू० । सियसंकटदूरीकरयोराजबिभीषणदीन । सत्यसुयशकपि कोकह्योशपथसीयशुचिकीन १ शपथसीयशुचिकीनचढ़ेपु ष्पकरघुराई । कपिसियलषणसमेतचलेसुरजयतिसुनाई २

जयजयप्रभुखलदलदल्योसुरमुनिद्विजमहिदुखहरयो। अ
मरनागभूतलसुखीसियसंकटदूरीकरयो ३ । १३ ॥

टी०। सकुल रावणकोमारि जानकीजीको जो संकटरहासोतौ दूरीकरयो मिटाइ न दीन्हे पुनः बिभीषण दीनहै शरणआयो ताको प्रभु लंकाकी राज्यदीन तथा कपिको सत्य सुयशकहयो आपने मुखते प्रशंसाकरि सुग्रीवादि बानरनको सुंदरयश आपने चरितकेसाथ सत्यकरिदीन्हे पुनः शपथलै सीयशुचिकीन अर्थात् लंकामेंरहेकोक्षोभरहा सो अग्निमेंप्रवेशकरायजानकीजी को पावनकीन्हे १ शपथलै जानकीजीको पावनकरिरघुनाथजी पुष्पक बिमानपर चढ़े कौनभाँति कपिसिय लषणसमेत सुग्रीव हनुमान् अंगदादि यावत् मुखियाबानर बिभीषण जामवंत जानकी जी लक्ष्मणजी इत्यादि समेत अयोध्याजीको चले तासमय सुरजयतिसुनाइ इंद्रादि देवताप्रभुकी जयजयकार सुनायरहेहैं २ कैसे सुनावते हैं कि जिन रावण ऐसे खलको दलदल्यो सबको नाशकरि देवता मुनि ब्राह्मण भूमि इत्यादि सबको दुखहरयो ताते अमर लोक स्वर्ग नागलोक पाताल भूतल मृत्युलोक इत्यादि सबसुखी भये अरुजानकीजी को संकटतौ दूरि न करयो सबको सुखभयो ३ । १३ ॥

मू०। पूजाशंकरकीकरीसेतुसियादरशाय । पंचबटीकुंभजहिमि
लिअत्रिआदिऋषिराय १ अत्रिआदिऋषिरायमिलेअ
नसूयहिजाई। आशिषआयसुपायचलेआगेरघुराई २ रघु
राईआयेतहाँ चित्रकूटमंगलथरी। पैअन्हायमुनिगणमिले
पूजाशंकरकीकरी ३ । १४ ॥

टी०। सेतु सियदरशाय लंकातेचलिआय समुद्रमें जो सेतु बँधायेरहैं सो प्रभु जानकीजी को देखाये तहाँ उतरि रामेश्वर शंकरकी पूजाकरी पुनः आगेचलि पंचबटीको आये तहाँ कुंभज अगस्त्य आदि ऋषिन को मिले पुनः ऋषिराय ऋषिनमें उत्तम अत्रिको मिले १ यथाअत्रि तथा उनकी पत्नी अनसूया को जायमिले तहाँ प्रणामकरि आशिष पाय बिदा माँगि आयसुपाय रघुनाथजी आगेको चले २ मंगलथरी मंगलकारी जो प्रथमप्रभुको आश्रम जहाँरहै तहाँ चित्रकूटमें रघुनाथजी आये पयस्विनी

नदी में अन्हाय अपर मुनिगणन को मिले पुनः शंकर महादेव की पूजा कीन्हे ३ । १४ ॥

मू० । आयसुपायोमुनिदयो चलेहर्षिश्रीराम । यमुनहिपूजिसप्रे ममयप्रमुदितकीन्हप्रणाम १ कीन्हप्रयागप्रणाममिलेमुनि गणप्रभुजाई । करिमज्जनसियसहितबिप्रमान्यताबड़ाई२ मानबड़ाईपूजिकै पुनिबिमानआतुरगयो । मिलेनिषाद हिगंगतटआयसुपायोमुनिदयो ३ । १५ ॥

टी० । मुनिबाल्मीकि को दियो पुरगमनको आयसुपायो ताते हर्षिकै श्रीरघुनाथजी चले आय यमुनाजी को प्रेमसहित पूजाकीन्हे पुनः प्रेम-मय प्रमुदित मनते प्रेमानंद समेत प्रणामकरि चले १ आय प्रयाग को प्रणामकीन्ह पुनः प्रभुजाय भरद्वाजादि मुनि गणनकोमिले पुनः जानकी जी सहित प्रभु त्रिवेणीजी में मज्जनकीन्हे पुनः बिप्रमान्यता ब्राह्मणन को मान नम्रतापूर्वक दानदीन्हे पुनः कृपाकरि बडाई ऊंचापदकरिदीन्हे२ प्रयाग वारन को मानबड़ाईदै पूजिकै पुनः आतुर शीघ्रही बिमान गंग तट शृंगबेरपुरको गयो तहां निषादराजको जाइ मिले इत्यादि मुनि के दिये आयसुपाइ शृंगबेर पुरतक आये ३ । १५ ॥

मू० । कपिहनुमंतपठाइयो भरतकुशलतादेखि । आवतसियल क्ष्मणसहित यहतुमकहौविशेखि १ यहतुमकहौविशेषिप्रा तउठिभरतनिहारौं । पुरवासिनपुनि मिलौंमातुकोशोचनि वारौं २ शोचनिवारौंअवधकोसबप्रकारसमुझाइयो । भरत प्रबोधनहेतप्रभु कपिहनुमंतपठाइयो ३ । १६ ॥

टी० । हनुमंत कपिको प्रभु अयोध्याजी को पठायो क्या कहिकै हे हनुमान् अयोध्याजीको तुमजाउ प्रथम भरतकी कुशलता मनतनकी प्र-सन्नतादेखि पुनः तुमयहबात बिशेषिकरिकै कहौजाय किजानकी लक्ष्मण सहित रघुनंदन आवते हैं १ पुनः तुमजाय यहौ विशेषि करिकै कहौ कि प्रातउठि भरत निहारौं अर्थात् आजुरात्री हम निषादराजके यहांबासक-रब प्रभात उठिजाय प्रथम भरतको भेंटब पुनः पुरवासिन को मिलौंगो पुनः मातुको शोच निवारौं कौशल्यादि मातनको मिलि तिनको वियोग दुखहरिहौं २ पाछे अवधको शोच निवारौं अर्थात् पुरको राज्याभिषेक

हसत्यागि आयेरहैं ताते पुरी उदासीन है सो राज्याभिषेक अंगीकारकरि अयोध्यापुरी को दुखहरिहौं पूर्ण आनंदित करिहौं इत्यादि सबबातौ करि पुनः भरत को सबभाँति समुझायो भावअब किसी भाँतिको शोच मनमें नराखिहैं इत्यादि कहिपुनः भरतजी को प्रबोधकरने हेत रघुनंदन प्रभुने हनुमंत कपिको अयोध्याजी को पूर्वही पठाये ३ । १६ ॥

मू० । पुनिनिषाददउरलाइयो रघुपतिकरुणापुंज । लैआयोमंदिरपरमसुजलधोयपदकंज १ सुजलधोयपदकंजरुचिरआसनबैठारयो । धूपदीपनैवेद्यफूलफलअंकुरधारयो २ अंकुरखायेप्रेमयुतरामबहुतसुखपाइयो । प्रातसमाजबिमानचढ़ि पुनिनिषाददउरलाइयो ३ । १७ ॥

टी० । हनुमानको अयोध्याजीको पठै पुनः निषाद उरलाइयो शृंगबेरपुरको आये निषादराजआय प्रणामकिया ताको उठाय रघुनाथजी उर छातीमें लगाय मिले काहेते करुणापुंजहैं अर्थात् सेवकके दुखते आपु दुखितहै वाको दुख शीघ्रही निवारै ताको करुणा कही तिस करुणागुण के पुंजसमूहभरेहैं इहाँ निषाद नीचजातिसमाजमें महाराजसोंमिलनेको संकोचकिया इति आरतदेखि करुणापुंज सबके सन्मुख निषादको उरमें लगायो इत्यादि भेंटि पुनः निषाद प्रभुकोपरमसुंदरमंदिरकोलैआयो पुनः सुंदर गंगाजललै प्रभुके पदकमल धोये १ सुजलपदकंज धोय पुनः रुचिर सुंदरे आसनपर बैठारे धूप दीपादि पूजनकरि नैवेद्यहित सुंदर स्वादिष्ठ फूल फल अंकुरादि प्रभुके आगे धरयो २ अंकुरफलादि प्रेमसहित खाये पुनः प्रभु बहुतभांतिको सुखपाये रातिभरि विश्रामकीन्हे प्रातपुनः निषादको उरमेंलाय बिदाभये समाजसहित विमानपर चढ़ि प्रभु अयोध्याजीको चलते भये ३ । १७ ॥

मू० । भरतदेखिहनुमंतजब कृशशरीरदुखदीन । जटाशीशमुनिव्रतधरम प्रेमपांवरीलीन १ प्रेमपांवरीलीन रामसियवदन उचारै । कुशआसनआसीन बसनभूषणतजिडारै २ भूषणतजिभजिनामप्रभु अवधिअंतदिनआहिअब । अहह मोहिंधिक्धिक्कहत, भरतदेखिहनुमंतजब ३ । १८ ॥

टी० । जब हनुमान भरतजीको देखे कौनी दशाते बैठेहैं कृश शरीर

दुखदीन रघुनंदनके वियोग दुखते दीनहैं ताते शरीर भी कृश दुर्बल हैरहा है शीशमें जटा रखाये ब्रह्मचर्यादि मुनिनकैसो व्रतकीन्हे पुनः धर्म कथा धारण कीन्हेहैं प्रेम पाँवरीलीन पाँवरी जो प्रभुकीखराऊं तिनमें प्रेमसहित मन लगाये हैं १ यथा अंतरको प्रेम प्रभुकी पाँवरीमें लीन तथा राम सिय वदन उचारे सीताराम इत्यादि नाम मुखते उच्चारण करिरहेहैं अरु राजसी वसन भूषणादि तजिडारे अर्थात् जरी कौशेय आदि जामा पाग दुशालादि वसनकिरीट कुंडलमालादि भूषण त्यागिदिये वल्कलादि वसन धारणकिहे कुशासनपर आसीन बैठेहैं २ इसभाँति भूषणादितजि विराग वेषते प्रभुकोनाम भजतेहैं पुनः विचारतेहैं कि अब आजु प्रभुकेआवनेकी अवधि वादेको अंतदिन है अबहीं रघुनाथजी नहींआये तौ अहह मोहिं बारंबार धिक्कार है भाव मेरे हेत रघुनंदन बनवासकीन्हे ताते मेराजन्म वृथाही भया अरु अब जीवन राखना भी वृथाहै इत्यादि प्रेमकी दशाईं दशा भरत में आइ चुकीरहै जासमय तैसेही जाय हनुमानजी देखे आधारभये ३ । १८ ॥

मू० । सुनहुभरतहनुमतकही आयेलक्ष्मणराम । सियसमेतमंग
लकुशल जीतिअसुरसंग्राम १ जीतिअसुरसंग्राम देवसब
स्वथलबसाये । राजबिभीषणदीन्ह सुयशनारदशिवगाये२
नारदशारदशंभुशुक प्रभुकीरतिपावनलही । सोप्रभुआ
वतअवधपुर सुनहुभरतहनुमतकही ३ । १९ ॥

टी० । प्रेमसिंधु वियोगमें बूडतेरहैं ताहीसमय आधारभये कौनभाँति हनुमान् कहे कि हेभरत सुनिये सिय लक्ष्मणसमेत रघुनाथजीआये कौन भाँति असुर संग्रामजीति राक्षसी सेनासहित रावणको रणभूमिमें नाश करि आपु मंगल कुशलसहित आवतेहैं १ असुरनको संग्राममें जीतिपुनः देव सब स्वथल बसाये जे रावणकी भयते भागे फिरतेरहैं ते इंद्र वरुण कुबेरादि सब देवतनको स्वथल आपना जो वास स्थानरहा तहां अभय करि सबको बसाये तथा बिभीषणको लंकाकी राज्यदीन्हे इत्यादि प्रभुके बाहुबलकरिकै धर्म स्थापनकी प्रशंसा इत्यादि सुयश नारदादि मुनि शिव आदि देवतागाय रहेहैं २ तथाजो प्रभुकीरतिलही अर्थात् जो अस्तुति दानादि ते प्रशंसा होती है ताको कीरतिकहीं इहां राक्षसन कोमुक्तिदान दवेतनका अभयदान ऋषिनको सन्मान इत्यादिकी प्रशंसा

जो पावनकीरति प्रभुपाये ताको नारदादि भक्त मुनि शारदादि कोबिद शंभुआदि देवता शुकदेवादि परमहंस इत्यादि सबगावते हैं इत्यादिकही पुनः हनुमंत कहत हे भरत सुनिये सोई रघुनाथजी अयोध्याजी को आवते हैं ३ । १९ ॥

मू० । सुनतभरतआनँदलह्योपर्मभावतीबात । चकितथकितसु
खसपनधौंकहतकोईसाक्षात १ कहतकोईसाक्षातभरतपुनि
नयनउघारे । पुनिहनुमतकहरामअवधआयेसुखभारे २
सुखभारेउठिभरतकरहियेभेंटिआनँदगह्यो । अश्रुपातगा
तनपुलकिसुनतभरतआनँदलह्यो ३ । २० ॥

टी० । पूर्व बियोगदुखते दुखीरहैं जब हनुमान्जी के बचनसुने तबभरत आनँद लह्यो आनंदपायो काहेते पर्मभावती बात अत्यंत मनभाई बातसुने तहाँ पूर्व थकित रहैं जब मनभाई बातसुने तब चकितभये अर्थात् अत्यंत आरतरहैं जब अत्यंत सुखकी बातसुने तबआश्चर्य लिहे आनंदभया इसहेतु विचारकरत कि यह सुख सपनेभया है किधौं कोई साक्षात्कहत १ पूर्वमहादुखते नेत्रमूंदेरहे जब निश्चयजाने कि कोऊ साक्षात् कहत है तबपुनः जब भरत नयनउघारे तब हनुमतपुनः कहे कि भारी सुख सहित रघुनाथजी अयोध्याजी को आये इत्यादि प्रसिद्ध बोधकरि हनुमान्जी प्रणामकीन्हे २ जब निश्चय प्रभुकोआवनजाने तब भारीसुखसहित भरतउठिकरहियेभेंटि आनँदगह्यो करहाथनसों हनुमान् को उठाय हियेमें लगाय भेंटे रामदूत चीन्हि सत्यप्रभुको आवनजाने ताते पूर्वको दुखत्यागि आनन्द को पुष्टकरे कैसे आनँदगह्यो गातन पुलकि अश्रुपातप्रेम उमँगि सर्वांग पुलकितभये अर्थात् रोमांच कंठावरोध तथा नेत्रनते आंसुगिरनेलगे इसभाँति हनुमानके बचनसुनत भरत आनंद लह्यो पायो ३ । २० ॥

मू० । आयेयहसंदेशलैकहादेहुँत्वाहिंतात । यहिपटतरत्रयलोक्य
नहिंकहीअमृतसमबात १ कहीअमृतसमबातरामसियकु
शलविशेखी । लक्ष्मणसहितसुक्षेमअवधआवततुमदेखी २
आवतदेखिबिशेषितुमकहहनुमंतप्रदेशलै । मिलिबहुरिकि
पिकंठलगिआयेयहसंदेशलै ३ । २१ ॥

टी०। भरतजी बोले हेतात हनुमान् यह अमूल्य संदेशलै तुमआये तौ त्वहिं कहादेउँ कुछनहींदैसक्ताहौं तेराजन्मभरिऋणीरहौंगो काहेतेतुम अमृत सम बातकही अर्थात् इसीक्षण मेरे प्राणजातेहैं सो तुम्हारे बचन-रूप अमृत श्रवण द्वाराउरमें जातही जीवनरहिगया इसहेतु यहिपटतर यहि संदेशके योगदेनेवाली बस्तु तीनिहूलोकमें नहींहै तौ क्यादेउँ १ कैसी अमृतसम बातकही श्रीरघुनंदन जनकनंदिनी की बिशेषि कुशल पुनः लक्ष्मण सुक्षेम सहित अवधकहँ आवत इत्यादि तुम देखिकै आय कह्यो इहाँ द्रोणागिरि लैजात समय हनुमान्जी कहिगयेरहैं कि जानकी हरिलैगया रावणताके युद्धमें लक्ष्मण घायलहैं येदोऊ शंकारहैं सोमिटि गईं इसहेत कहत कि प्रभुको आगमन कहेउ सो सुखद पुनः जानकी कुशल सहित संगहैं यह बिशेषि सुखदताहू में लक्ष्मणजी सुंदरी क्षेमस-हितआवत तिनको देखिआइ आगमनशुभसुनाय अपूर्बआनन्द दीन्हेउ २ कैसा आनंद दीन्हेउ हे हनुमंत इहाँ को बिशेषि करि प्रभुआवते हैं सो देखि तुमआययह संदेश कैसाकहा यथा उत्तम प्रदेश लैकै मोको दियाप्र-देश कही भेंट सामग्री को जो राजादि को दीन्ही जात ३। २१॥

मू०। अवधआयप्रकटीसबैगुरुपुरजनसमुझाय । मातुकुशल आयेलषणसीयसहितरघुराय १ सीयसहितरघुरायसजहु मंगलपुरनारी। बंदनवारपताकचर्मचामरगजभारी २ ग जभारीरथतुरंगसंगसाजिभरतमंगलतबै। चलेनगरबाहि रमिलनपुरशोभाप्रकटीसबै ३। २२॥

टी०। हनुमान् जी सों सबहाल सुनि भरत अवधमें आयसबै प्रकटी सबहाल प्रसिद्धकहे कौनभाँतिगुरु पुरजनसमुझाय प्रथमगुरुबशिष्ठजीसों कहे पुनः पुरजननसों कुशल प्रसन्नतापूर्वक आवनेको सबहाल समुझाय कैकहे पुनः कौशल्यादि के पासजायकहे कि हेमातु लषण जानकी सहित रघुनाथजी कुशल पूर्वक आये १ सीय सहित रघुरायपुर को आये ताते पुरकी नारी बुलाय मंगल साजसजो पुनः सेवकन अरुमंत्रिन सों कहेकि आंगनमें द्वारनपर बंदनवार बाँधो मंदिरनपर पताका रचौ मृगचर्म चाम-रादि एकत्रकरि धरो तथाजे भारीगज बड़ेहाथी २ भारीगज तथारथ अरु बाजी जोघोड़े इत्यादि सबमंगल साज साजिसो सबसंगलै तब भरतजी प्रभुको मिलनहेत नगरते बाहिरचले तबप्रभुंको आवत जानि पुरशोभा

प्रकटी सबै अर्थात् बनगमन समय जो शोभा लोप ह्वैगईरहै ताते अबतक उदासी रहै अबशोभा प्रसिद्ध भयेते पुरमांगलिक देखिपरा ३ । २२ ॥

मू० । भरतसंगहनुमंतलैदेखतगगनबिमान । नगरनारिनरदेखिकैउतरेकृपानिधान १ उतरेकृपानिधानमिलेगुरुप्रथमगोसाँई । आशिषदेयसनेहकुशलपूछीमुनिराई २ मुनिराईप्रभुभेंटिकैभरतहृदयभगवंतलै । अतिसनेहपूरेमगनभरतसंगहनुमंतलै ३ । २३ ॥

टी० । हनुमानजीको संगलै आगेजाय भरतजी गगन आकाशमें प्रभुको बिमान देखते हैं पुरसमीप आय बिमान भूमिपर उतर्यो तथानगर के नारि नर ठाढ़े देखिकै रघुनाथजी बिमान परते उतरे काहेते कृपानिधान हैं अर्थात् भूतमात्र के रक्षाकरिबे को आपही को समर्थ मानना सोईकृपा गुण है यथा भगवद्गुणदर्पणे ॥ रक्षणेसर्वभूतानामहमेवपरोविभुः । इति सामर्थ्यसंधानं कृपासापारमेश्वरी ॥ इति कृपागुण के भरे स्थान हैं सो सबकी रुचि अनुरूप मिला चहते हैं ताते उतरिकै भूमिपरचले १ कृपानिधान बिमानते उतरे पुनः गोसाईं सबको पालनहारे स्वामी रघुनंदन प्रथम गुरु बशिष्ठ को प्रणाम करि मिले तबमुनिराय आशीर्वाददै पुनः सनेह सहित ललितप्रीति समेत रघुनंदनते कुशल पूछे प्रभुबोले आपु की दयाहमारी कुशल है २ मुनिराय बशिष्ठ को प्रभुभेंटिकै पुनःभगवंतऐश्वर्यवंत श्रीरघुनाथजी प्रणाम करते देखि भरत को उठायलैकै हृदयमें लगाय लिये तासमय अति सनेहते दोऊपूरेभरे तामें मगन अर्थात् प्रेमानंद मेंबूड़ेहैं इत्यादि हनुमानकोसंगलै भरत प्रभुकोमिलनेहेत आगेगये ३।२३॥

मू० । मिलेसकलपुरजनमुदितरामचरितयहकीन । सबजानतप्रथमैंमिलेहमकहँरामप्रवीन १ हमकहँरामप्रवीनऊँचमध्यमनरनारी । यथायोग्यमिलिसबहिबहुरिभेंटीमहतारी २ भेंटीमहतारीसबै प्रथमकैकयीपर्महित । बिरहबिथानाशीसकलमिलेसकलपुरजनमुदित ३ । २४ ॥

इति लङ्काकाण्डंसमाप्तम् ॥

टी० । सकल पुरजनन को मुदित आनंद मन सहित मिले तासमय

श्रीरघुनाथजी यह चरितकीन कैसाचरितकीन अनेकरूप धरि सबकोसा-थहीं मिले इस कारण सबयहै जानत किराम प्रवीन रघुनंदन सुजान शिरोमणि हमकहँ प्रथमहि मिले १ रामप्रवीन हमको प्रथमै मिले ऐसा सबहिनजाना इसी भाँति नीच ऊंचमध्यम यावत् नरनारिरहैं तिनसबको यथायोग्य जासों जौनी भाँति मिलना उचितरहै तासों ताहीबिधि सबहि मिलि बहुरि रघुनाथजी महतारिनकोमिले २ प्रथम परमहित अत्यंतप्री-तिसहित कैकेयीकोमिले पीछे कौशल्यादि सबै महतारिन को प्रणामकरि भेंटी इसी भाँति मुदित आनंदमन सहित प्रभुसकल पुरजननको मिले अरु बिरहकरिकै जो बिथारही सोसकल नाशी प्रीतिपूर्वक मिलि बियोग पीरको नाशकरि सबको आनंदित करिकै मंदिर को चले ३ । २४ ॥ कुंडलिया ॥ कीन्हे पितुआज्ञा मुदित केवट कीन सनाथ । शबरी गीधसु मुक्तकृत सुग्रीवहु कपिनाथ ॥ सुग्रीवहु कपिनाथ दुष्टहति धामपठाये । राज्य बिभीषण देय यानचढ़ि भवन सिधाये ॥ आये पुरकृतराज्य प्रजन को बहुसुखद्दीन्हे । बैजनाथ इमिनाथ लोक पावन यशकीन्हे १ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथबिर-चितेकुंडलिकारामायणप्रदीपिकाटीकायांलंकाकांडसमाप्तम् ॥

अथउत्तरकाण्डप्रारम्भ ॥

कुण्डलिया ॥

मू०। रामअवधआयेकुशल घरघरमंगलसाज। पुरीभईअमरावती रामराज्यकेकाज १ रामराज्यकेकाज भरतसबसाज सजाई। सुरगंधर्वमुनीश सकलआयेसुरसांई २ सुरसाईं मंगलसजे बजेअवधदुंदुभिविमल। वर्षिसुमनजयजयकहत रामअवधआयेकुशल ३। १ ॥

टी०। श्रीरघुनाथजी कुशलपूर्वक अयोध्याजीको आये तेही आनंद ते पुरजन घरघरमें मंगलसाज यथा चित्राम्र बंदनवार पताका कलश इत्यादि साजिरहे हैं तासमय कैसी दिव्यशोभा देखाती है जैसे रघुनंदन के राज्याभिषेकके काजहेत अयोध्यापुरी अमरावती भई अर्थात् मनुष्य सब देव देवी सम अरु पुरी इंद्रपुरीसम शोभितभई इहाँ माधुर्यलीलामें पुरी को अमरावती कहे १ काहेते पुरी अमरावतीभई राम राज्याभिषेक के काज हेत पुरीमें भरतजी ध्वजा पताकादि सबमंगलकेसाज सजाये ताते दिव्यपुरी देखातीहै सुर देवता गंधर्व तुंबुरादि मुनीश कश्यप अगस्त्य नारदादि पुनः सुरसाईं देवतनमें स्वामी यथा ब्रह्मा शिव इंद्र वरुण कुवेर सूर्य चंद्र अग्नि पवन यम इत्यादि सकलआये २ सुरसाईं जेआये ते भी मंगलसाजसजे संगमें लैआये ताते अवध विमल दुंदुभि बजे अयोध्याजीमें आनंद मांगलिक उत्तमशब्दते अनेक नगारादि बाजा बाजिरहे हैं पुनः सुमनफूल बर्षिकै जय जय कहत काहेते कुशलपूर्वक रघुनाथजी अयोध्याजी को आये इति पुरी अमरावती भई ३। १ ॥

मू०। शुभसिंहासनशुचिबन्यो रघुपतिबैठेआप। भूषणमणिगणजगमगत कोटिन्नभानुप्रताप १ कोटिनभानुप्रताप वेदधुनिविप्रउचारैं। छत्रचँवरधनुबाण दंडभरतादिकधारैं २

भरतादिकसुखमयमगन सियआईभूषणघन्यो। रामसिया शोभितभये शुभसिंहासनशुचिबन्यो ३ । २ ॥

टी० । शुभ मंगलमय सिंहासन शुचि पावन बन्योहै तापर आप श्री रघुनाथजी बैठे कौनभाँति बैठे जरीज़रवक्त जामा पीताम्बरादि दिव्य बसन तथा किरीट कुंडल माला कंठा केयूर पहुँची मुद्रिका कांची इत्यादि जो भूषण धारणकिहे तिनमें मणिगण हीरा पन्ना मोती पिरोजा नीलक मरकत इत्यादि समूह मणि जगमगत प्रत्यंगदीप्ति ह्वै रहीहैं तिन करि कोटिन भानुप्रताप करोरिन सूर्यन कैसो प्रताप देखिपरत १ अंगमें कोटिन भानु कैसो प्रताप देखात अरु विप्र वेदधुनि उच्चरैं ब्राह्मण लोग मांगलिक वेद ऋचा पढ़िरहेहैं पुनः छत्र चमर व्यजन भरतादि अनुज धारण किहेहैं तथा धनुषबाण दंडादि जो प्रभुके अस्त्रहैं तेबिभीषण सुग्रीवादि सखा धारणकिहेहैं २ पुनः भरतादिक सब समाज सुखमय सर्वांग में आनंद परिपूर्ण तामें मगन बूड़ेहैं तालमय सिय आई भूषण वन्यो बहुत भूषण सर्वांगमें धारणकिहे जानकीजी आईं तब राम सिया शोभितभये मंगलमय पावन जो राजसिंहासन तापर जनकनंदिनी सहित रघुनंदन शोभितभये सिंहासन सहित तनकी शोभा प्रकाशमानहै ३ । २ ॥

मू० । प्रथमतिलकगुरुउच्चरयो विप्रनआयसुदीन। देवमुनिनिजयउच्चरी दुंदुभिहनेनवीन १ दुंदुभिहनेनवीन सबहिबरअस्तुतिठानी । मातनआरतिसाजि गीतगावहिंमृदुबानी २ मृदुबानीसुरमुनिसबै जयतिरामजयजयकरयो । बंदिवेद बिरदावली प्रथमतिलकगुरुउच्चरयो ३ । ३ ॥

टी० । जब सिंहासनपर प्रभु आसीन भये तब प्रथम गुरु बशिष्ठजी अभिषेक ऋचा उच्चारणकरि प्रभुके माथमें तिलक करिदीन्हे पुनः अन्य ब्राह्मणनको आयसुदीन सब तिलक करनेलगे तब देवता मुनिन जय जयकार शब्द उच्चरी अरु नवीन दुंदुभिहने नईरीति अत्यंत उत्सवदर्शित शब्दते नगारादि बाजा उच्चगंभीर धुनिते बजाये १ बाहेर द्वारपर नवीन दुंदुभिहने प्रभुके सन्मुख सबहिन स्तुति ठानी विनती करनेलगे पुनः कौशल्यादि सब मातनि कंचनथारनमें माणिक दीप फूल फल दलरोचन मणि सोनादि आरती साजि मृदु कोमल बाणीते मंगलगीत गान करती

हैं २ पुनः सुर देवता सब अरु मुनिगण इत्यादि सबै मृदुबाणीते जयति राम जय जय कर्यो अर्थात्भूतमें रघुनंदनकी जयभई बर्त्तमानमें जय होतीहै तथा भविष्यमें जयहोयगी पुनः वेद बंदीरूपते बिरदावली पतित पावनतादि बानाके समूह चरित बखानिरहेहैं इत्यादि तिलककरिकै सब ते प्रथम बशिष्ठजी स्तुति बचन उच्चारण कीन्हे ३ । ३ ॥

मू० । कहिवशिष्ठप्रथमैवचनसबप्रकारसामर्थ । सुरपालेखलदल दलेद्विजमहिसज्जनअर्थ १ द्विजमहिसज्जनअर्थ भयेदशर थकेबारे । निगमसेतुप्रतिपालि सुयशजगमहँविस्तारे २ विस्तारेअद्भुतचरित पालयलयकृतपुनिरचन । जयजय नरअवधेशसुत कहवशिष्ठप्रथमैवचन ३ । ४ ॥

टी० । बशिष्ठजी प्रथमै क्या स्तुति बचनकहे हे महाराज यथाऐश्वर्य रूपतथा माधुर्यरूप आपुसब प्रकारते समर्थहौ अर्थात् शक्तिबल तेजवीर्य प्रतापादि जैसाआपुमेंहै तैसादूसरे किसीमें नहींहै कैसे समर्थ हौ माधुर्यमें सुरपाले खलदलदले खलदुखद जोरावण ताको दलराक्षसी सेनातेहिदल सहित खलरावणकोनाशकरिदेवतनकी रक्षाकीन्हेअभयकरि स्ववशबसाये सो केवल देवतनै के हेतनहीं द्विजमहि सज्जन अर्थ खलदल बिशेषिदले द्विज ब्राह्मणन के हेतयथा विश्वामित्रके हेत ताडका सुबाहु को मारयो महिभूमिपर अत्यंतपाप को भाररहै सो उतारयो तथा सज्जन यथा सुग्रीव विभीषण तथाअनेकन साधुमुनिनको संकट रहै तिनके सुखके अर्थ १ द्विजमही सज्जननको सुखी करनेअर्थ दशरथ के बारेभये जगत् के पिता सदास्वाधीन ते महाराज के पुत्र ह्वै पराधीन भये पुनः निगम सेतुप्रतिपालि निगमजो वेदताको सेतुजो लोकमें धर्मकी मर्यादाहै ताको परिपूर्ण पालन कीन्हे यथामाता पिताकी आज्ञाते हर्ष सहित राजत्यागि बनवास लीन्हे पुनः धर्म के बिरोधी यावत् रहे तिनको मारि सबकोशुद्ध धर्मपर आरूढ़ कीन्हेउ इत्यादि बाहुबलते वेदधर्मको स्थापित करि सुयश जगमहँ बिस्तारयो सुंदरउत्तम पावन यश जगत्भरेमें बिस्तारकीन्हेउ फै- लायो २ पुनः अद्भुतचरित बिस्तारयो अर्थात् माधुर्यमें ऐश्वर्य मिश्रित जाको देखिसबके बिस्मय होतकाहेते जो राजकुमारबने मातापिता साधु ब्राह्मण तीर्थ देवादिको मानसत्य शौचतप दानादि धर्मपर आरूढ़ क्षत्री कुलरीतिपर आचरण इत्यादि शुद्धमाधुर्यहै पुनः ऐश्वर्यतेपालयलयकृत

पुनिरचनपूर्व ब्रह्माण्डरचि पालनकरतेहौ समयआये प्रलयकरतेहौ समय पाय पुनः ब्रह्माण्ड रचनाकरतेहौ इतिशुद्ध ऐश्वर्यहै पुनः माधुर्यमें ऐश्वर्य मिश्रितसो अद्भुतचरितहै यथाबालकेलिमें कौशल्या काकभुशुंडिकोभ्रमाये पुनःकोमल राजकुमारै बनेरहे मारीचकोउडाय ताडका सुबाहुको तृणवत् नाशकीन्हे तथा अहल्याको पावनकरि शिवधनुदलै परशुरामकोमानभंग कीन्हे मनुष्यवत् स्त्री बियोगते बिलाप करतेही जटायू को दिव्यरूपते परधामपठाये सिंधुतेमार्गमाँगत बाणबेगते प्रतापदेखायबुलाये पाषाणते सेतुबाँधे रावणको मारि आपुमें लीनकीन्हे देवनको अभय कीन्हेते जब प्रसिद्ध ऐश्वर्य दर्शाय स्तुति कीन्हे ताही समय बिभीषणते निहोरा कीन्हे कि हमको शीघ्र जानेकी उपाय करु इति ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित अद्भुत चरित विस्तारथो ऐसे अवधेशसुत महाराज कुमारकी जयहोय जयहोय इत्यादि बचन बशिष्ठजी प्रथमही कहे ३ । ४ ॥

मू० । कहिविधिसबहिसुनायकै रामचरित्रअपार । निगमशेषशं
करसकल कोजगजाननहार १ कोजगजाननहार अमित
अवतारबिहारी । सुरसज्जनकेहेतकरतलीलाबपुधारी २
लीलातनमंगलभवन खलदलिभुवनबसायकै। जगमंगल
कारणकरण कहबिधिसबहिसुनायकै ३ । ५ ॥

टी० । सबहि समाज भरेको सुनायकै बिधिकहि ब्रह्माकहतभये कि रघुनाथजीको चरित्र अपार समुद्रवत्है काहेते निगमादि यावत् सिद्धांत ग्रंथहैंशेषादियावत् कवीश्वरहैं शंकरादियावत्समर्थहैं इत्यादि सकलकहने वालेनमेंको जाननहार भाव रामचरित परिपूर्ण कोऊनहींजानिसक्ताहै १ जगत् बिषे यावत् देहधारीहैं तिनमें राम चरितको जाननहारकोहै काहेसे ते अमित अवतार बिहारी लोकोद्धार हेतु असंख्यन अवतार धारण करते तिनमें अनेक प्रकारको बिहार अद्भुत लीला करते हैं तामें किसीकीबुद्धि नहीं कामकरिसक्ती है काहेते सुरसज्जनके हेतु बपुधारी लीलाकरत अर्थात् आपुतौ रूपरंग कारण रहित सदा एकरस अखंड आनंद सदा ज्ञान रूप हैं परंतु सुरजो देवता सज्जन जो हरिभक्त इत्यादि के सुखके अर्थ वपु देह धारण करिकै प्राकृतवत् अनेक भाँतिकी लीलाकरते हैं ताही को देखि सबकी बुद्धिभ्रमितह्वै जातीहै यथासती काकभुशुंडि गरुड़ इत्यादि २ सोई मंगल भवन जामें सब प्रकार के मंगल उत्सव परिपूर्ण भरे ऐसे

लीलातन राजकुमार रूपते खलदलि रावणादि दुष्टनको नाशकरिकै अभय भुवन बसाय सुरमुनि नरनागादि स्ववश बसायकै राजसिंहासन पर आसीनहौ ऐसेजग मंगल कारण करण जगत्में मंगल प्रसिद्ध उत्सव ताको कारण जो वेद धर्म ताके करन हार वेद धर्मके स्थापित करनेवाले हौ इत्यादि बचन सबको सुनाय ऐश्वर्य दर्शाय कै ब्रह्माकहे ३ । ५ ॥

मू० । उठिशंकरजयजयकहत रामस्वरूपतुम्हार । मंगलमय मूरतिमधुरसुमिरतसबदातार १ सुमिरतसबदातार लहत सुखसुंदरध्याये । गुणगणपावनगायतरतभवनिधिसुखपाये २ सुखपायेमुनिगणमनहिं ज्ञानध्यानसोज्यहिचहत । रविकुलकमलदिनेशप्रभुउठिशंकरजयजयकहत ३ । ६ ॥

टी० । जब ब्रह्मा स्तुति करिभये तबशंकर उठि कहत कि महाराज की जयहोय जयहोय हे श्रीरघुनाथजी आपुको स्वरूप कैसा है मंगलमय मंगलानंद समूह तनमें परिपूर्ण भरेहैं काहेते मधुर मूरति सुमिरत सब दातार मधुर मूरति जो सुंदर राजकुमार स्वरूप सो कैसा सुलभ उदारहै किजाको सुमिरत मात्रही सबफल को देनहारा है भावजो मनोरथकरै सोई देतेहौ १ सुमिरतमात्र सब मनोरथ के देनहारहौ तथाध्याये सुंदर सुखलहत पावत अर्थात् जोसेवन पूजन दास्यतादिकरताहै सो सुंदरउत्तम लोकहू परलोकमें सब प्रकार को सुखपावताहै भाव किसी भाँतिकोदुःख काहूकी भयनहीं रहिजात २ पुनः सुखपाये आनंद सहित मुनिगण मनमें ज्ञान ध्यानकरि ज्यहि चहत अर्थात् देह व्यवहार त्यागि शुद्धआत्मरूपते ध्यानकरि ज्यहि परमात्मा परब्रह्म की प्राप्ती चाहत सोई प्रभु रबिकुलकमल दिनेश रबिसूर्य तिनका कुल यावत् सूर्यबंशी हैं ते कमल को बन हैं तिनको प्रफुल्लित कर्त्ता दिनेश सूर्यहौ ऐसे रघुनंदन प्रभुकी जयहोय जयहोय इत्यादि उठिकै शंकर कहते भये ३ । ६ ॥

मू० । सुरपतिकहतप्रणामकरि सुनहुरामसुरभूप । प्रतिअवतार अपारगुण बर्णतवेदअनूप १ बर्णतवेदअनूप दुष्टजनखंडनहारे । मनगोतनकोत्रसित रामतुमताहिपियारे २ ताहिपियारेतुमलगत बचेमोहमदनामके । हमनिशिदिनविषयाविवशसुरपतिकहतप्रणामके ३ । ७ ॥

टी०। सुरपतिइंद्र प्रभुको प्रणाम करि पुनः कहत हेराम सुरभूप सुनहु आपने रूपमें सबको रमावनहारे पुनः सुरजो ब्रह्मादिक तिनमें महाराजहौ मेरी बिनती सुनिये यावत्आपुके अवतारभये तिन प्रतिरूपा दया करुणा शील क्षमा सुलभ उदारतादि अपार गुण हैं जिनको अंत कोऊ नहीं पायसक्ताहै तिनगुणनको अनूपकरि बेदबर्णत जिनकी उपमा नहीं कहौंढूंढे मिलती है अर्थात् माधुर्य ऐश्वर्य जैसे गुण आपुमें हैं तैसे और किसी रूपमें नहीं हैं १ आपुको अनूप रूपकहि वेद बर्णत पुनः दुष्टजन खंडनहारेहौ दैत्य राक्षस वा कोऊ अधर्म अनीति पर चलता है ऐसे दुष्टजननको नाशकरनहारेहौ तथा सुजननको पालन करतेहौ पुनः हे राम जो मनगोतनको त्रसित ताहि तुमप्यारेहौ अर्थात् अंतरमें मनको त्रासदंड देते हैं भावजे समकरि मनादिकी बासनारोकि शुद्धकरतेहैं तथा मनको चंचल करनेवाली गोनामइंद्री यथा श्रवण नेत्ररसना नासिका त्वचा लिंगादि तिनको त्रासदेते हैं अर्थात् दमकरिकै इंद्रिनकी वृत्तिविषय ते रोकि देतेहैं पुनः सबतनको त्रासदेतेहैं अर्थात् तपस्याकरि पाप नशाय देहौको शुद्धकरतेहौ इत्यादि तनइन्द्रीमनकरिकै जेशुद्धहैं ऐसेजननको आपुप्रियहौ भावजे योग ज्ञानादिते शुद्धहैं तिन्हें प्रियहौ २ अथवा जे आपुके नामके अवलंब करिकै मोहमदादि बिकारनते बचतेहैं ऐसे भक्तजनजे हैं ताहितुम प्रियलागतेहौ ये दोऊ आचरण हममें नहींहैं काहेते हमानिशि दिन बिषया बिबश भावहमारा मनतन इन्द्रिय बिशेषि बिषयकेबशहैं ताते रातिउदिन देहै सुखभोगमेंपरेहैं तौ हम किसीभाँति आपुके सन्मुखहोने योग्यनहींहैं इत्यादि प्रणामकरि इंद्रकहत भावआपुकी शरणयोग्ययद्यपि हमनहींहैं परंतु बाल्मीकीयमें आपुको बचनहै यथा॥ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते।अभयंसर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतंमम॥ अर्थात्जो एकहू वार प्रणामकरि कहै कि मैं शरणहौं ताको सबभूतनते अभयकरि देत हौ इसबचनके भरोसे मैंभी प्रणाम करताहौं ३ ।७ ॥

मू०८। रविअंजलिजोरेकहत रामसुनहुममबैन । कृपाकरियनिज
चरणरति निशिदिनराजिवनैन १ दीजियराजिवनयनतोष
बड़हृदयहमारे । जबतेममकुलजन्मरावरेनरतनधारे २
नरतनधरियशविस्तरचो चिरंजीवजोरीरहत । जयजयर
विकुलरविविमल रविअंजलिजोरेकहत ३ । ८ ॥

टी० । रविअंजलि सूर्य हाथजोरे कहत हे रघुनंदन मेरे बचन सुनहु राजिव कमलसम आपुके नयनकृपारसते परिपूर्णहैं तातेनिशिदिन निज चरणकीरति मोपरभी कृपाकरिये अर्थात्रातिउदिन आपुके पदकमलन में मेरीप्रीति लगीरहै यहबर कृपाकरि मोकोभी दीजिये १ हेराजिवनयन पदरति दीजिये काहेते जबते मम मेरे कुलमें रावरे आपुजन्मलै नरतन धारे मनुष्यरूपते अवतीर्णभये तबतेहमारे हृदयमें बड़ातोष संतोष है भाव लोकरीतिहै बेदते प्रमाण है कि जौने कुलमें कोऊउत्तमजीव जन्म लेत सो पितृनको नरकते निकारि सुगति करिदेता है अरुमेरे कुलमेंतौ आपु परब्रह्म अवतीर्णभयो ताते मोको बड़ा संतोषरहा आजुराजसिंहासनपरतें मेरामनोरथ सफलकीजिये २ काहेते आज सफलकीजिये कि नरमनुष्यको तनधरि यश बिस्तरचो दुष्टनको मारि उत्तम धर्म स्थापित कीन्हेसोईसुंदरयश लोकमें फैलिरहाहै तातेयासमय निजभक्तिदानमोको भीदीजियेपुनः जोरी चिरंजीविरहत यामेंऐश्वर्यमाधुर्य मिश्रितआशीर्बादहै भावयह बरदानमाँगितौनहींसक्ताहौं परंतुउरकीअभिलाषप्रकटकरताहौंकि राजसिंहासनासीनयहजोश्रीरघुनंदन जनकनंदिनीकी जोरीहैसोचिरंजीवि बहुत कालतक ऐसही बनीरहत ऐसे रबिकुलकमल प्रकाशक अमलरबि श्रीरघुनाथजीकी जयहोयजयहोय इत्यादि हाथजोरे सूर्यकहतेहैं ३ । ८ ॥

मू० । अनिलअनलधरविनयकरि खलखंडनतुमराम । राजआ
जत्रयपुरविशद राजहिजगअभिराम १ राजहिजगअभि
रामसंतसज्जनसुखकारी । नरतनधनुधरिहाथहरचोधरणी
अघभारी २ धरणीमंडनखंडिखलराजाविराजतभुवनभरि ।
जयजयश्रीसीतारवनअनिलअनलधरविनयकरि ३ । ६ ॥

टी० । अनिलजो पवन अनलजो अग्निधर जो पृथ्वी येतीनिहूबिनय करि कहत खलखंडनतुम रामहे रघुनाथजी आपु दुष्टनको नाश करन हारेहौ पुनःआजु जगअभिराम जगतभरेको आनंद देनहारा पुनः बिशद उज्ज्वल त्रयपुरस्वर्ग भूपातालादि तीनिहूं लोकनमें आपुको राजराजहि बिराजमानहै भावदुष्टनको मारि तीनिहूं लोकनके राजनको अभयकरि बसायो तेसब आपुके शरणहैं ताते सर्बत्र आजु आपहीको राजहै पुनः कोऊ प्रतिकूलनहीं सबकृपादृष्टि चाहते हैं ताते बिशदराज्यहै पुनःसबपर दयादृष्टिराखेहौ तातेजग अभिरामराज्यहै १ काहेते आपुकी राज्यजगअभि-

रामराजहि किसंत आत्मदर्शी सज्जनहरिभक्त इत्यादिकनको सुखकारी सबसुख देनहारेहौ पुनः नरमनुष्य तनधारणकरि हाथमें धनुषबाणधरि धारणकरि धरणीको भारी अघपाप हरयो अर्थात् रावणादि दुष्टन को मारि भूमिको बड़ा भारी पाप भार हरि लीन्हेउ २ खल खंडिनाशकरि धरणी मंडन पृथ्वी को भूषित कीन्हेउ आनंद दीन्हेउ ताते भुवननभरे में आजु आपुको राज विराजतहै ऐसे सीतारवन श्रीरघुनाथजीकी जय होय जयहोय इत्यादि पवन अरु अग्नि यथा धरणी विनतीकरतहैं ३।९॥

मू०। निगमविप्रतनकरिकहत रामसुनहुसुरईश। कोटिकोटियत्न नकरत नहिंपावतयोगीश १ नहिंपावतयोगीश हृदयशंक रपचिहारे। विधिसनकादिकनेम धर्मकरितुम्हेंनिहारे २ तुम्हेंनिहारतसुखलहैं तेकपिभालुहिकरगहैं। जयतिराम लीलाअगम निगमविप्रतनकरिकहैं ३। १०॥

टी०। निगम वेद विप्रतनकरि कहत ब्रह्मादि सुरनके ईश्वर हेरघुनाथ जी सुनिये आपुकी प्राप्ती ऐसी अगमहै जाकेहेतु योगीश योगिनमें जेउत्तम ते यम नियम आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि इत्यादि कोटिन कोटि करोरिन यत्नकरि ढूँढ़तेहैं ताहूपर आपुको नहींपावतेहैं १ पुनः योगीश शंकर पचिहारे अनेकन युक्तिते श्रमकरि थकिगये सोऊ हृदय ध्यानमें नहीं पावत ताते सुलभ प्राप्तिहेत प्रेमसहित अंतर में नाम जपत मुखसों सदा गुणगानकरत अरु नेत्रनसे लीलारूपके दर्शन करि तृप्तहोत तथा विधि जो ब्रह्मा सनकादि परमहंस इत्यादि भी नेम धर्म करि तुमहिं निहारे भाव ध्यानमें येभी नहींपाये जीवको धर्म भक्ति सेवक सेव्यभाव सो नियम सहित भक्ति धर्मकरि आपुको लीलारूप नेत्रन भरिदेखे २ तुमहिं निहारत सुखलहैं ध्यानमें निहारि किसीने आनंद ऐसी न पावा जाभाँति शिव ब्रह्मा सनकादिक इत्यादि सब आपुको लीलारूप देखत सन्ते परिपूर्ण सुखपावतेहैं ऐसे तौ आपु सबको अगम तेई सुलभ लोकोद्धार हेतु कैसे सुगम ह्वैगयो कि देव मुनि साधु मनुष्यन की को कहै कपि भालुहि करगहैं बानर ऋक्षनको हाथदैदेतेहौ तेआपुको हाथपकरे संग संग फिरतेहैं इत्यादि अगम जाको जानिबेको किसी में गति नहींहै ऐसी अगम लीला जाकी त्यहि श्रीरघुनाथजीकी जयहोय इत्यादि वेद ब्राह्मण तनकरि कहतेहैं ३। १०॥

मू० । शारदनारदजोरिकर विनयकरतचितलाय । अद्भुतचरित
तुम्हारप्रभु सुनियेश्रीरघुराय १ सुनियेश्रीरघुरायपितादश
रथसमनाहीं । तृणसमतनतजिदीनसुयशजाकोजगमाहीं
२ सुयशकियोज्यहिजन्मभरि गयोबिरहलैअमरघर । गीध
क्रियानिजकरकहैं शारदनारदजोरिकर ३ । ११ ॥

टी० । शारदा तथा नारदते दोऊकरहाथजोरि दीनतादर्शाय पुनः चित लाय अंतस्थिरकरि विनयकरत हे श्रीरघुनाथजी प्रभु सुनिये आपुको चरित अद्भुतहै आश्चर्यमयी है १ क्या अद्भुत चरितहै हे श्रीरघुनाथजी सुनिये यथा आपुके पिता श्रीदशरथ महाराज जैसेहैं तैसा दूसरा किसी के पिता नहींहै काहेते जे आपुके वियोगते तृणसम तिनुका समान तन तजि प्राण निसारिदिये भाव आपुके दर्शमात्रते जीवन आधार राखेरहैं पुनः सुयश जाको जगमाहीं जिनको सुयश जगमें सब गावतेहैं २ क्या सब गावतेहैं ज्यहि दशरथ महाराज जन्मभरि सुयशकियो यावत् जीवत रहे तावत् उत्तम उदार कर्मकरि उत्तम यश बिस्तारे पुनः बिरहलै अमर घरगयो आपुके वियोगभयेपर समूह विरह ग्रहणकरि तनत्यागि देवलोक को गये ऐसे पितुते अधिक मानि गीध जटायूकी क्रिया निजकर आपनेही हाथन कीन्हेउ इति अधम उद्धार प्रीतिपालतादि आपके अद्भुत चरित है इतिशारद नारद हाथजोरि कहत ३ । ११ ॥

मू० । अस्तुतिकरिमुनिसुरगयेरामभरतबुलवाय । कपिपतिऋक्ष
बिभीषणै नलनीलहिअन्हवाय १ नलनीलहिअन्हवाय
भरतभूषणपहिराये । अंगदसहितसमाजरामसबनिकटबु
लाये २ रामनिकटबैठारिकै मधुरवचनबोलतभये । कपि
कीरतिप्रभुउच्चरत अस्तुतिकरिमुनिसुरगये ३ । १२ ॥

टी० । राज्याभिषेकभये पीछे सुर ब्रह्मादि मुनि नारदादि प्रभुकी स्तुति करिकै बिदाह्वै चलेगये तब राम भरत बुलवाये इहां प्रेरणार्थक क्रिया है भरतद्वारा रघुनाथजी सबसखनकोबुलवायेकौनसखा कपिपतिवानरन के राजा सुग्रीव ऋक्ष जामवंत तथा नल नील इत्यादिकनको बुलाय अन्हवाये १ नल नीलादि सब समाजभरेको अन्हवाय पुनः भरतजी सब को बसन भूषण पहिराये तब अंगद सहित सब समाजको रघुनाथजी

अपने निकटको बुलाय बैठारे निकट बैठारिकै बानरन प्रति रघुनाथजी मधुर श्रवणरोचक बचन बोलतभये क्या बोलतभये कपिकीरति प्रभु उच्चरत भाव नम्रता पूर्वक मेरी सेवकाई कीन्हे तथा सबसुख त्यागियुद्ध में मोको सहायता दीन्हेउ इत्यादि जब सुर मुनि प्रभुकी स्तुति करि चलेगये तब प्रभु बानरनकी कीरतिकहनेलगे सो आगेप्रसिद्धहै ३ । १२ ॥

मू० । मुनिनायकयेनीलनलकीन्हेअद्भुतकर्म । शतयोजनसागर बँध्योसेतुउपलगुरुधर्म १ सेतुउपलगुरुधर्मशीशरावण केफारे । मंदिरसुवरणखंभकलशमहिधरबहुडारे २ महिधरडारिसँघारिअरिरणमंडलहतिअसुरदल । महावीरबानैतबलमुनिनायकयेनीलनल ३ । १३ ॥

टी० । वशिष्ठ प्रति रघुनाथजी कहत हे मुनिनायक येदोऊभाई नील नल अद्भुत आश्चर्यमय कर्मकीन्हे कैसा अद्भुत कर्म गुरु धर्म उपलगरोई जाको धर्म ऐसे उपल जो पत्थर तिनकरिकै इनकेहाथ शतयोजन सागर में सेतु बांध्यो अर्थात् जिनपत्थरनमें ऐसीगरोईहोत्त जेआपुबूडैं औरहूको बोरिडारैं तिन पत्थरनते जलयानकी नाईं इनके हाथनके प्रभावते सो योजन चारिसै कोशतक समुद्रमें सेतुबँधिगयो ताहीपर सब सेना उतरि लंकाघेरी १ गुरुताहै जाको धर्म तिन उपल पत्थरनते सेतु बाँधे पुनः रावण ऐसाबली बीर ताके शीश फारिडारे तथा लंकापुरीमें खंभ कलश मंदिरादि सब सुवर्णके रहैं तहाँ महिधर पर्वत बहुत डारे भाव पर्वतन डारिकै मंदिर तोरिडारे २ तैसेही महिधर पर्वत डारि अरि संघारि शत्रुन को नाश करिदीन्हे भाव इनके चलाये पर्वत जहांगिरे तहां शत्रुबहुत दबि कै मरिगये पुनः रणमंडल जहाँ सन्मुख जुटिकै युद्धभया तहाँ भी असुर राक्षसनको दलकर चरण चपेटनसों हति मारिडारे ऐसे महाबली बनैतबीर बीरताको बाना धारणकीन्हे हेमुनिनायक ये नल नीलहैं ३ । १३ ॥

मू० । मुनिनायककपिराजयेकरेहमारेकाज । बानरकोटिपठाइयो सियशोधनशिरताज १ सियशोधनशिरताजकरयोरणमंडलभारी । मंत्रतंत्रसबसुदृढ़सैनबलअबलबिचारी २ अबलबिचारीठौरजहँतहँबलदियेसमाजये । महाबलीबुधिवंतअतिमुनिनायककपिराजये ३ । १४ ॥

टी० । हे मुनिनायक ये कपिराज बानरनके राजा सुग्रीवहैं ये हमारे सबकाजकरे कौनभाँति पूर्व सियशोधन शिरताज जानकीजीके खोज करावनेमें मुखिया येईहैं काहेते सब दिशनको खोज हेतु कोटिन बानर पठाइदियो रहै थोरेहीकालमें शोधमँगाय लीन्हे १ यथा सिय शोधन में शिरताजहैं तथा करयो रणमंडल भारी बानरऋक्षनकी समूह सेनालैकै रावणको पुरघेरि बड़ाभारी संग्रामरचे पुनः मंत्र तंत्रनकी जो युक्तीहै सो सब सुदृढ़ सुंदरी प्रकार पुष्टकरि जानतेहैं पुनः सेना बलीहै अथवा अबल है इत्यादिके बिचारी बिचारने वाले युद्ध ज्योतिषमें भी प्रवीणहैं २ कैसे जाना कि बल अबलके बिचारीहैं कि जहां ठौर अबल बिचारी तहां ये समाजको बलठौर बतायदिये यथा ब्रह्मयामले ॥ भूम्यक्षरचतुर्गुणंतिथिवारेणसंयुताः । त्रिभिश्चैवहरेद्भागंशेषंभूमिशुभाशुभम्॥एकेचजीवताभूमिः द्वितीयेसमताभवेत् । तृतीयेचमृताभूमिः इत्युक्तंब्रह्मयामले ॥ इत्यादि विधि ते जहाँ अबल भूमिकामें सेनाठाढ़ि देखे तहाँते हटाय जहां बली भूमिदेखते रहैं तहाँ सेना ठाढ़िकरि युद्धकरावते रहैं ऐसे बुधिवंत पुनः महाबली हैं हे मुनिनायक अत्यंत चतुर महाबलवंत ऐसे ये बानरनके राजा सुग्रीव हैं ३ । १४ ॥

मू० । सुनहुबिभीषणबहुकियोमिल्योमोहिंतजिभाय । रावणअरुघननादकीदईमीचुदर्शाय १ दईमीचुदर्शायगदापुनिरावणमारयो । लक्ष्मणघायलभयेवैद्यकोनामउचारयो २ नामउचारयोशत्रुदलकरिउपायलक्ष्मणजियो । रामकहतमुनिराजसोंसुनहुबिभीषणबहुकियो ३ । १५ ॥

टी० । हे मुनिनायक सुनिये ये लंकेश बिभीषण हमारे बहुत कार्य कियो काहेते भायतजि बड़ेभाई रावणको त्यागि आयमोहिं मिल्यो पुनः युद्धसमय रावण को तथा मेघनाद की मीचु दर्शायदई अर्थात् रावण की नाभी में सुधाकुंड है ताके शोषिलीन्हे रावणमरी इति रावण की मृत्यु बताये तथा मेघनाद यज्ञकरता है ताको बिध्वंसि शीघ्रही मारौ नातरु सिद्धिभयेपर न मरी इति मेघनाद की मृत्यु बतायदिये १ दोउन की मृत्युदर्शायदीन्हे तथा युद्धसमय रावण ऐसेसबलबीरके सन्मुखजाय गदामारे पुनः जासमय मेघनाद शक्तिमारी लक्ष्मण घायल भये तब बैद्यको नाम उचारयो भावलंकामें सुखेण वैद्यहै २ कैसे नामउचारयो शत्रुदलमेंजहाँ

शत्रु रावण की सेनारहै लंकामें तहाँते वैद्य लैआवने की युक्ति बताय मँगाय लीन्हे ताकी उपाय किन्हेते लक्ष्मण जिये इत्यादि मुनिराज बशिष्ठतों रघुनाथजी कहत सुनिये येबिभीषण हमारेबहुत कार्यकियो ३।१५

मू०। ऋक्षनाथबलदलमहारावणहत्योप्रचारि । मेघनादकोपाँ
उधरिलंकगयोफटकारि १ लंकगयोफटकारिअसुरदलद
लेसमाजन । सेतुबाँधिधरियूथहाथशिरधरिगिरिराजन २
शिरधरिगिरिरावणदलेसभयशत्रुरणनहिंरहा । मुनिनाय
कलायकसबैऋक्षनाथबलदलमहा ३ । १६ ॥

टी०। ये ऋक्षन के नाथ जामवंत हैं बलदल महा इनमें महाबल है तथा दल महासेनाभी बहुत है ये प्रचारि रावण हत्यो सन्मुख ललकारि रावणकी छातीमें लातमारे सो मूर्च्छित ह्वैगया ऐसेबलीहैं पुनः पाँउधरि मेघनाद को फटकारि दिये सो लंकागयो अर्थात् पदगहि पटके जब मरत न देखे तबफेंकिदिये सो जायलंकामें गिरा १ यथामेघनादको फटकारिदिये सो लंकागया तथा असुर दल समाजनदले झुंडकेझुंड राक्षसनकी सेना को नाशकरि दीन्हे पुनः यूथ इनको समूह दल सो गिरिराजन बड़े बड़े पर्वतन को हाथन पर तथा शिरपर धरिलाये तिनते सेतुबाँधिलीन्हे २ शिरधरि गिरि रावणदले शीशपर भारी पर्वत धरिलै आय रावणपै डारि रथादि दलिडारे शत्रुसभय रणनहिं रहा शत्रुरावण सडरह्वै भागिगया इनके सन्मुख भूमिमें ठाढ़न रहा इत्यादि हे मुनिनायक ये ऋक्ष जामवंत को दलभारी अरु आपु महाबली ताते सबै कार्य करिबेलायक हैं प्रशंसा कहाँ तक करौं ३ । १६ ॥

मू०। येअंगदमुनिअतिबलीजिनरावणपुरजाय । मानज्ञानअ
रिदलदल्योरोंपिसभाधरिपाँय १ रोंपिसभाधरिपाँयकेश
धरिरावणरानी । महिकठोरिपुनिहत्योशीशदशचरणडरा
नी २ चरणधरेकंपतअसुरसैनसमरअतिदलमली । रण
विजयीशुभसुयशदायेअंगदमुनिअतिबली ३ । १७ ॥

टी०। हे मुनिबशिष्ठजी बालिके पुत्र ये अंगद अत्यंत करिकै बली हैं काहेते इनको बल प्रसिद्धभया जिन पूर्वही रावणके पुर लंकामें जाय रावणकी सभामें धरि पायँरोंपि अरिदलको मानज्ञान दल्यो बलको मान

बुद्धिको ज्ञान सबनाश करिदीन्हे अर्थात् रावण के सन्मुख बीचसभा भूमिपै धरि प्रणकरि पाँयरोंपि दिये ताको उठावतमें अनेक भाँति बुद्धि बिचारकरि बलकरि मेघनादादि बड़े बली बीर सब हारिगये काहूको हलावा पाँउनहाला उठनेकी कौनकहै १ यथासभामें धरिपाय रोंपि जीतिकै चलेआये तथा रावणके मन्दिरको निशंकचले गये दशशीश रावणके यज्ञकरत समय चरण हत्यो लातमारे तहूँ जबरावण न उठा तब पुनः रावणकी रानी मंदोदरीके केशधरि महि कठोरि बार पकरि भूमि पै घसीटि लायेते डरानी डरमानि चिल्लानी तब रावणयज्ञ त्यागि उठा इस भाँति यज्ञ बिध्वंसकरि चलेआये २ पुनः जिनको देखत डरायकै असुर राक्षस कंपत चरणधरे पाँयन परतेरहे पुनः समरसेन अतिदल मली युद्ध समय राक्षसी सेना समूहको भूमिपै दलिमींजि मलिडारेऐसे रण में विजयी बिशेषि जय पावनेवाले पुनः शुभ मंगलीक सुयशसदा देनहारहैं हे मुनिये अंगद अतिबली हैं ३।१७॥

मू०। येहनुमंतबिचारिमुनिप्रथममिलायेमोहि। कपिपतिपुनिद
लजोरिकैलैमुद्रिककरजोहि १ लैमुद्रिककरजोहिबीरलैसु
भटासिधायो। तृषितलगेसबमरणजायत्यहिसुजलपिआ
यो २ सुजलपिआयोसबहिकोसमुद्रतीररचिमंत्रपुनि। प
क्षतक्षसंपातिदैयेहनुमंतबिचारिमुनि ३। १८॥

टी०। हे मुनिबिचारिये ये हनुमंतहैं कपिपति सुग्रीवको मोहिं इनहीं प्रथम मिलायो पुनिवानरनको दलजोरि बटोरिकै सियशोध लेनेहेतु जब तयार है मेरेसन्मुख आये तिनको जोहि देखि कार्य करिबेयोग्यइनहिं बिचारि सहिदानी हेतुमैं मुद्रिका दीन्हेंउ ताको करलैहाथमेंलैकै १ सबमें जोहि इनको मुद्रिका दीन्हेंउ ताको येबीर हाथमेंलैकै अन्य सुभटनको संगलै सिधायो सिय शोधहेतु चलेकहीं बिषमबनमें भूलिगयेतहाँ तृषित प्यासनके मारे सब मरनेलगे तब इनहीं ढूंढि सबको लैजाय सुंदर जल पिआयो २ बिवरमें पैठि स्वयं प्रभाको मिलि तहां फल खवाय सबको सुंदर जल पिआये पुनः समुद्र तीरजाय मंत्ररचि परस्पर सलाह बार्ता करतसंते संपाति को तक्षकहे तुरतही पक्ष जमाय दीन्हें इत्यादिइनके आचरण बिचारिये हे मुनि येहनुमंतहैं ३। १८॥

मू०। गयोउदधिपारैसुभटसाथीतटबैठाय। देखिसीयमणिहाथलै

बनउजारिफलखाय १ बनउजारिफलखायअसुरमारेभट भारी। करिउपायपुरलंककूदिघरघरपुरजारी २ जारिबा रिपुनिबारिनिधिकूदिचल्योव्यंकटबिकट । गर्जतघोरकठो रअतिगयोउदधिपारैसुभट ३ । १६ ॥

टी०। समुद्र तीर मंत्रकरि अंगदादि सबसाथिनको तट किनारे पर बैठारि सुभट हनुमान् फाँदिकै उदधि समुद्रके पारैगयो तहां जानकी जीको देखि भेंटि बार्ताकरि तिनते चूड़ामणिलै हाथमें करि पुनः फल खाय बन उजारि बनके वृक्ष उचारि फेंकिदीन्हे १ यथा फलखाय बन उजारि दन्हि तथाभारी भट असुरमारे अर्थात् जब रखवार जाइ खबरि कीन्हे तब अक्षय कुमारादि बड़ेभारी बलीराक्षसनको रावणपठा-ये तिनको भी नाशकरिदीन्हे पुनः उपायकरि अर्थात् मेघनाद के बश बंधनते चलेगये जब सतैलपटलपेटि लंगूरमें फूँकिदिये इत्यादि लंक पुरमें जाय उपाय करि अग्नि प्रचंड देखि कूदि अटारिन परचढ़ि घरघर प्रति आगि लगाय पुरभरि जराय दीन्हे २ पुरको जारि बारि पुनःबारि निधि समुद्र में कूदि लंगूरकी अग्नि बुझाय पुनः चल्यो कौनरूपते व्यं-कटकराल बिकटटेढ़े अर्थात् तीक्ष्ण करालरूपते घोरभयंकर कठोरशब्द ते गर्जत अत्यंत बेगते सुभट पुनः उदधि पारैगयो इसपारआये सब को आनंददै संगलै मेरेपास आय मणि दै खबरि सुनाये ३ । १९ ॥

मू०। सियमणिदैदललैचल्योदिग्गजदरकतअंग । पारजायघे र्योअरिहिदुर्गकियोपुरभंग १ दुर्गकियोपुरभंगसमरल क्ष्मणदुखपायो । द्रोणागिरिधरिशिशिरयननभमारगधायो २ मारगधावतशरलग्योभरतकोपिउरथलदल्यो । लषण शोचउरमानिकेंसियहितगिरिशिरलैचल्यो ३ । २० ॥

टी०।जानकीजीकी चूड़ामणि हमकोंदै खबरि सुनाय पुनःऋक्षबानरन को समूहदल लैकै जब लंकाको चले तिसभारते भू थाँभनेवाले दिशा गजनके अंगदरकतर हैं सेतु बाँधि समुद्रके पारजाय अरिहि घेर्यो पुर दुर्गभंग कियो अरिशत्रु रावणकोपुर घेरि दुर्गजो कोटताको तोरि फोरि-डारे १ लंकापुर को दुर्ग भंगकिये पुनः मेघनाद सों समरकरि शक्ति लागेते लक्ष्मण दुखपायो मूर्छित ह्वैगये तिनके हेतु द्रोणागिरि पर्बत

शीशपर धरि रयन नभमारग धायो रात्री बिषे आकाशमार्ग बेग सहित चले २ आकाशमार्ग धावतै समय शरबाण लग्यो काहेते भरतकोपि उरथल दल्यो राक्षस जानिकै क्रोध सहित भरतछाती में बाणमारि दिये ताहू व्यथामें लषण शोचउरआनि भाव रातिनभरेमें औषधमिलैतौ प्राणबचैं नातरु भोरभये प्राणैनरहैंगे इतिलक्ष्मणजी को शोच उर अंतर में आनि पुनः बिना लक्ष्मणजीके निरुजभये प्रभु युद्ध कैसे करैंगे तब जानकीजीकी बिपति कैसे निवारण होइगी इति सियहित द्रोणागिरि शिरपर धरिलैकै पुनः बेग सहित चल्यो तुरतही लंकामेंपहुँचे ३ । २० ॥

मू० । कहँलौंगुणमुनिमैंकहौंकपिसमाजकेकाज । भरतलषणते प्रियसदाकपिनायकशिरताज १ कपिनायकशिरताजमिलेउठिसबहिबहोरी । बिदाकियेसन्मानिपरस्परप्रीतिनथोरी २ प्रीतिनथोरीप्रभुकरीसबप्रणामकरिसुखलहौ । बार बारयशप्रभुकहैंकहँलौंगुणमुनिमैंकहौं ३ । २१ ॥

टी० । पुनः प्रभु बोले हे मुनि वशिष्ठजी सुग्रीवादि कपिनकीसमाज के कीन्हे यावत् उत्तम काजहैं तिनके गुणमैं कहाँलौंकहौं भाव असंख्यन हैं परंतु इतनी मुख्यबात कहतहौं कि कपिनायक बानरनमें यावत् स्वामी कहावतेहैं पुनः सबमें शिरताज जो सुग्रीवहैं इत्यादि सब भरत लषणते अधिक मोको सदा प्रियहैं १ अंगद नील नलादि यावत् कपिनायकहैं तिनमें शिरताज जो सुग्रीव जामवंत बिभीषण इत्यादिकनको बिदाकरने हेतु प्रभु उठिकै पुनः सबहिनको मिले सन्मानि आदर सहित बिदाकीन्हे पुनः परस्पर प्रीति न थोरी सेवकसेव्यभावकी दोऊदिशिकीप्रीति अधिक है २ प्रभुथोरी प्रीति नहींकरी अर्थात् सेवक सखन के दिशिकीप्रीति तौ स्वाभाविकही है परंतु रघुनाथोजी बहुत प्रीतिकीन्हे तब सुग्रीवादि सब समाज प्रभुको प्रणामकरि सुखलहौ भाव आनंदपाय बिदाह्वैचले तबहूं बार बार सबको यश कहते हैं पुनः प्रभु कहत हे मुनिनायक कपिनके गुणमैं कहाँलौंकहौं यामें प्रीतिपालता कृतज्ञता गुणप्रभुको है ३ । २१ ॥

मू० । रामराजराजतभयोगयोसकलदुखभागि । रोगशोकअपगतिमरणकालकर्मगुणत्यागि १ कालकर्मगुणत्यागिभई सतयुगकीकरणी । बारिदमनगतिबारिभईसुरभीसुरधर

णी २ सुरभीसुरधरणीभईकपटदंभपाखँडगयो । धर्मवि
बेकविचारनररामराजराजतभयो ३ । २२ ॥

टी० । रामराज राजतभयो जबते श्रीरघुनाथजी राजसिंहासनपर आसीनभये तबते तीनिहूँ तापादि सकल प्रकारके दुःख लोकते भागिगये कौन दुःख ज्वरातीसार शूल कुष्ठादि सबप्रकार के रोग पुनः शोक यथा हानि वियोग संकट बध बन्धनादि दुख पुनः अपगति यथा घोर नीचयोनिनको जाना प्रेत होना नरक जाना तथा अकालमरण पुनः जैसा कालआवत तैसी जीवकीबुद्धी ह्वैजात तथा कालपाय पूर्वके कर्म आपनाफल भोगकरावतेहैं तथा रज तम इत्यादि जो गुण अधिक होत ताही अनुकूल जीवको स्वभावहोत स्वभाव अनुकूल कर्म करत इत्यादि सब लोकत्यागि गये शुद्ध सतोगुणी जीव धर्मवंत हरिसनेही भये १ काल यथा युग संवत् अयन ऋतु मासपक्ष तिथिवार नक्षत्र योग करण लग्न मुहूर्त दंड पलादि जैसा कालहोत तैसाहीकार्यहोत कर्म दो एकशुभ यथा यज्ञ दान तप तीर्थ व्रत मंत्र जप पूजा पाठ संध्या तर्पण परोपकारादि दूसरे अशुभ यथा हिंसा चोरी परस्त्रीरत जुआँ परअपवाद परहानि इत्यादि तथा रजोगुणते कामी स्वभावतमोगुणते क्रोधीस्वभाव इत्यादि सबत्यागि शुद्ध सतोगुणी निर्वासिक धर्मवंत रामसनेही सब जीवभये तातेलोक बिषे सतयुगकी करणीभई कौनभाँति बारिद मेघमन गति मनोरथ अनुकूल बारि जलदेतेहैं अर्थात् जब कृषीकार इच्छाकरतेहैं तबै मेघ जलवर्षि देतेहैं तथा धरणी पृथ्वी सुर सुरभी कामधेनुभई प्रजनके मनोरथ अनुकूल अन्नादि सब पदार्थनको देती है २ धरणी सुर सुरभी भई पुनः कपट छल चातुरी ते कार्य्य साधन तथा दम्भ झूठही बेष बनाय पुजावना तथा पाखंड बेदप्रातिकूल आचरण करना इत्यादि मिटिगये पुनः धर्म्म यथा धर्म्मशास्त्रे ॥ इज्याध्ययनदानानि तपःसत्यंधृतिःक्षमा । अक्षोभइतिमार्गोयं धर्म्मश्चाष्टविधःस्मृतः ॥ पुनर्यथा ॥ पात्रेदानंमती रामे मातापित्रोर्निषेवनम् । शुद्धवाणीगवांग्रासःषड्विधोधर्मइत्यपि॥पुनः बिबेक देहव्यवहार असत्यमानि आत्मरूप सत्यमानना पुनःबिचारनीति पूर्बक कार्य करना इत्यादि सब नरकरते हैं जबते रघुनाथजी राजसिंहासनपर आसीनभये ३ । २२॥

मू० । कामक्रोधअघरोगसबमानमोहमदगर्व । दोषदुःखज्वरपी

रखलदारिद्दाहनसर्व १ दारिद्दाहनसर्वत्रैरपरधनपरना री । गेसुभायसबळूटिगईमतिपरअपकारी २ परउपकारी लोगसुखभोगयोगमाहिप्रकटअब । गयेश्रमंगलकृतजगत कामक्रोधअघरोगसर्व ३ । २३ ॥

टी० । कामगण यथा मनुस्मृतौ॥मृगयाक्षादिवास्वप्नःपरिवादःस्त्रियो मदः।तौर्यत्रिकंवृथाटनाटयं कामजोदशकोगणः ॥ पुनःक्रोधगणयथा॥ पैशून्यंसाहसंद्रोह ईर्ष्यासूयार्थदूषणं। वाग्दण्डञ्चपारुष्यं क्रोधजोपिगणोष्टकः पुनः अघहिंसादि यावत् पापकर्म रोग कुष्ठादि सबमान अपना को श्रेष्ठ मानना मोह अज्ञानता मदधन बिद्याराज्य पाइहर्ष बढ़ावना गर्वऐश्वर्य बल बीरतादिते दूसरेको कछु न गनना दोष अनुचित हिंसायथा गो ब्राह्मणादि बधदुःख राजदंड प्रियबियोग हानिताडन ज्वर उदरादि पीरखल वृथादुःख देनेवाले राक्षसादि दरिद्रता सर्व दाहन तीनिहुतापै १ दरिद्र सबतापै तथा परस्पर बैर तथा परधनहरणपरस्त्रीरतहोना इत्यादि सहज स्वभावते सबजनके छूटिगये तथा पर अपकारी पराईहानि कर्त्ता मति गई २ सब बिकार रहित शुद्ध स्वभावतें लोग पर उपकारी पर स्वारथ रतभये ताते अबसुख भोग योगमाहि पृथ्वीमें प्रकटभयो अर्थात्सर्व प्रकार को सुख स्वाभाविकही लोगनको प्राप्तरहत काहेते कामक्रोध अघरोग सत्र इत्यादि अमंगल कृतकरने वाले सब मिटिगये ताते सदा मंगलै रहत ३ । २३ ॥

मू० । नेमप्रेमप्रकटेजगतदयाक्षमासंतोष १ योगयज्ञजपतपसुपथवेदसुमंगलपोष १ बेदसुमंगलपोषरहौपरमारथपूरी । परअघनिजकृतदुःकृतकुकृतदुस्तरभयदूरी २ दुस्तरभय दूरीकरेरामतेजरबिजगमगत । कमलकोकसबधर्मवरनेम प्रेमप्रकटेजगत ३ । २४ ॥

टी० । रघुनाथजीके प्रतापते जगमें नियम प्रेमक्षमा संतोषादि प्रकटे अर्थात् त्रिकाल स्नान सद्ग्रंथपाठ इत्यादि निश्चय धर्म कर्मकरना सो नियमहै पुनः रघुनन्दनकी प्रीतिउरमें उमगि पुलकावली कंठारोधनेत्रन में आँसुभरि आवना इतिप्रेम पुनः बिनास्वारथ परदुख हरना ताकोदया कही अर्थात् जीवनकी रक्षा पुनः कैसहू अपराध करि सन्मुख आवै ताहू

को कछु नकहना ताको क्षमाकही पुनः जो कुछ स्वाभाविक लाभहोइ तामें तुष्टहोना ताको संतोषकही इत्यादि जगत्जननमें स्वाभाविकहीहोते हैं पुनः यमादि अष्टांगयोग अश्वमेध गोमेधराजसूय इत्यादि यज्ञबिधिवत् मंत्रजपजलशयनपंचाग्निआदि तपस्याइत्यादि बेदसुमंगल पोषसुपथबेद में जो पुष्टधर्म मंगलानंदकारी सुमार्ग है ताहीपर सबचलतेहैं १ बेदबिषे मंगलकारी पुष्टधर्म, परमार्थ परलोक साधनमार्ग सो परिरह्यो सबलोग इसीमार्गपरचलतेहैं ताते परअघ परारेपापदेखि हर्षेगाये सोभीलागिजाते हैं पुनः निजकृत आपनेकिये दुष्कृत जो पाप इत्यादि जो कुकृतकुकर्म जो दुःखोकरि नतरिये ऐसोदुस्तर भयङ्कर इत्यादि सबदूरि भये भावपापकर्म होतहीनहींहै २यहकाहेतेभई सो कहत रामतेज रबिजगमगत रघुनन्दनको तेजरूप सूर्य सदाएकरस प्रकाशमान रहत सोई दुस्तरभय दूरिकरे दुःखौ करि जो न तरिजाय ऐसीदुस्तर भयरूप रात्रीको नाशकरिदीन्हे भाव रघु-नंदन को प्रतापरूप सूर्य उदयभयेते अधर्म अनीतिरूप रात्री मिटी नीति धर्म रूप दिनभया ताते वर उत्तम धर्म सब कमलसम प्रफुल्लितभये तथा कोक चक्रवाक सम नेम प्रेम जगमें प्रकटे एकत्रभये ३ । २४ ॥

मू० । एकरामगुणगायबोयहकलिकर्मनऔर । तातेतुलसीदास
केमंत्रयहैशिरमौर १ मंत्रयहैशिरमौररामशुचिकीरतिगा
ऊँ । साधनउत्तमजानिसुमतिनिजमनहिदृढ़ाऊँ २ मनहि
दृढ़ाऊँमंत्रयहजिहिप्रसादसुखपायबो । शुकनारदकीसी
खयहएकरामगुणगायबो ३ । २५ ॥

टी० । रामगुण गायबो यहएककर्म कलिमें है और नहीं अर्थात् श्रीरघुनाथजीके गुणानुबादनको सदागावना कलियुगमें सुगमजीवके कल्याण हेत एक यही उत्तमकर्महै ताते सदा प्रभुगुण गान करिये इसकी सेवा योग जप तपादि और कर्मनहीं ह्वैसक्ते हैं यथा विष्णुपुराणे॥ ध्यायन्कृतेयजन्यज्ञैस्त्रेतायांद्वापरेऽर्चयन् ।यदाप्नोतितदाप्नोतिकलौश्रीनामकीर्तनात्॥इत्यादि विचारि ताते तुलसीदास के मते सब साधनको शिरमौर एकयहै मंत्र है १ क्या यहै शिरमौरहै राम शुचि श्रीरघुनाथजीकी पावन कीरति सोई सदा गाऊँ काहेते जप तप योग विराग यज्ञ विवेकादि यावत् उत्तम साधनहैं तिन सबते उत्तम यह साधन जानि सुमति निज आपने मनहिं दृढाऊँ पुष्टकरावतहौं अर्थात् मनमें पुष्टविश्वास राखि सुंदरि बुद्धि श्रीर-

घुनंदनकी कीरति गानमें लगावतहौं २ काहेते यही मंत्र मनमें दृढावत हौं पुष्ट विश्वास राखतहौं जिहिके प्रसादते लोक परलोकादिको सुखपा-यबो पाइहौं पुनः रघुनंदनके गुणानुबादको गायबो शुकदेव तथा नारदकी भी यही सिखावनहै भाव पराभक्तिके अधिकारी शुकदेव तथा प्रेमा भक्ति के अधिकारी नारद दोउनके वचन भागवतमें प्रसिद्धहैं यथा दशमे शुक-वाक्यं। मर्त्यस्तयाननुसमेधितयामुकुंदं श्रीमत्कथाश्रवणकीर्त्तनचिंतयेति ॥ तद्धामदुस्त्यजकृतांतजवापवर्गं ग्रामाद्वनंक्षितिभुजोपिययुर्यदर्थाः ॥ सप्तमे नारदवाक्यं॥श्रवणंकीर्तनंचास्य स्मरणंमहतांगतेः।सेवेज्यावंदनंदास्यंसख्य मात्मनिवेदनं ॥ इत्यादि दोऊ महात्मनको सिखावनमानि श्रीरामगुण गान मैं पुष्टकरि पकरयों ३ । २५ ॥

मू० । एकराममुखनामधृतध्यानरामकोरूप । रामचरितगावतप रमधर्मपवित्रअनूप १ धर्मपवित्रअनूपकरियजबलौंजग जीजै । रसनारसकरिचरितसरितनिशिबासरपीजै २ नि शिवासरश्रमतजिभजैतुलसिदासयहशुभसुकृत । कामधे नुकलिकल्पतरुएकराममुखनामधृत ३ । २६ ॥

इतिश्रीगोसांईतुलसीदासकृतेकुंडलियारामायणेउत्तर काण्डंसमाप्तम् ॥

टी० । कौनभाँति चरित गानकरिये सो कहत मुखएक रामनाम धृत धारणकरि अर्थात् मुखमें कंठविषे एकछोटी जिह्वाहै त्यहिकरिकै सदाएक रामनाम उच्चारण करतरहिये पुनः ध्यान रामकोरूप नाभस्थानकमल विषे श्रीरघुनाथजी के रूपको ध्यानराखिये अर्थात् इंद्रियमनादिकी वृत्ति एकत्रकरि रूप अवलोकनमें सदा लगायेरहिये ताके थिर राखने रक्षाहेतु सदा श्रीरघुनाथजीको चरित गावत रहिये यही पवित्र अनूप धर्म है १ पवित्र याते कहे कि हरिचरित गानरहित साधारण धर्मपर आरूढ होते इंद्रियनकी विषय वासनादि अपावनता बनीरहत कौनभाँति किरजोगुण ते कामी स्वभाव तमोगुणते क्रोधी स्वभाव पुनः कराल कालके प्रभावते अधिक स्वभाव कुटिल हैजात तबहूँ कुसंग अधिकताको पाय असत्कर्म

प्रियलागत तब काम क्रोध लोभ मद मात्सर्य्य प्रचंडपरि मनेन्द्रिनको स्वाधीनकरि देह सुखके व्यापारमें लगायेरहत तब जो जीव परमारथो पर आरूढ़होत तौ इंद्री विषयवशते ध्यान भजनमें मन एकरस थिरनहीं रहत सोई जोमनेन्द्रिनमें विकारआवत यही अपावनताहै यह बिचारि जब श्रीरामचरित गानमें लगारहै तब सब इंद्री मनकी वृत्ति बटुरि उसी में लगीरहत पुनः प्रभुके गुण विचारि प्रेम आवत तब मनादि थिरह्वै जात इत्यादि सहायताते नाम स्मरणरूपको ध्यान थिररहत इति पावनता है पुनः यह जो दास्यताधर्महै ताकीसमान उत्तम दूसरा धर्म नहींहै यथा हारीते।दास्यमेवपरंधर्मंदास्यमेवपरंहितम्।दास्येनैवभवेन्मुक्तिरन्यथानिरयंभवेत्॥ तस्माद्दास्यंपरांभक्तिमालंब्यनृपसत्तम। नित्यंनैमित्तिकंसर्वंकुर्य्यात्प्रीत्यैहरेःसदा॥तस्यस्वरूपंरूपञ्चगुणांश्चापिविभूतयः।ज्ञात्वासमर्च्चयेद्विष्णुंयावज्जीवमतन्द्रितः॥तमेवमनसाध्यायेद्वाचासंकीर्त्तयेत्प्रभुम्।जपेच्चजुहुयाद्भक्तोतद्दानेकविलक्षणः॥पुनःशिवसंहितायां॥सर्वेभ्योविष्णुभक्तेभ्योरामभक्तोविशिष्यते। रामादन्यःपरोध्येयोनास्तीतिजगतांप्रभुः॥ तस्माद्रामस्यये भक्तास्तेनमस्याः शुभार्थिभिः॥ इति सर्वोपरिउत्तम रामदास्यताधर्म जाकी उपमा योग्य दूसरा नहीं ताते अनूपहै इति पवित्र अनूप धर्म है ताको तबलौं कीजिये जबलौं जगमें जीजे अर्थात् जगमें यावत् जीवन रहै तबतक यही आचरणमें लगेरहिये कौनभाँति रामचरित रूप सरित जो नदी ताको रस प्रेमरूप जल ताको रसना जिह्वा करिकै निशिवासर पीजे रातिउ दिन गानकीजिये अर्थात् प्रेमसहित जिह्वाकरिकै रामचरित गान कीनकरिये २ तुलसिदास यह शुभ सुकृत श्रमतजि निशिवासरभजै अर्थात् मुखते रामचरितको गान कंठमें नामस्मरण हृदयमें ध्यान यहजो शुभ मंगलकारी सुकृतिहै ताही रीतिपर आरूढ़ ह्वै अरु योग तपस्यादि परिश्रम त्यागि रातिउदिन रघुनाथजीको भजतहौं काहेते एक रामनाम मुखमें धारण करना यह कलियुग विषे कामधेनु कल्पवृक्ष समान मनबांछित फल देनहाराहै यहलोक शीक्षात्मक आपनासिद्धांतकहे ३।२६॥

कुं० । कीन्हे गुरुजनको स्वबश करि अस्तुति सन्मान । बाणन सों जीते बली दीनन दैदै दान ॥ दीनन दैदै दान सत्य सों धर्मिन जीते । पावन तप ब्रत धारि मान मुनि मनकृत रीते ॥ रीते कृत जग दुष्ट नाग नर सुर सुखदीन्हे । बैजनाथ रघुनंदलोक पावन यश कीन्हे १ भूख न ग्वहिं कउजानही नहीं जक्तकर मान । मानरहित सन्मानऊ मानव देव

समान ॥ मानव देवसमान मानसर हरियश सेवन । बन घर सरिस अचाह चाह करि मिलत सबैजन ॥ बैजनाथ तजि आश असन बाहन पट भूषण । षण षण सबहि उदास दास रघुबंश विभूषण २ ॥

दो० । ऊनविंश सयतालिसो शुभ सम्बत गुरुबार ॥
फाल्गुणसितदशमीतिथौ रामकृपासोंपार ३

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथ
विरचितेकुंडलिकारामायणप्रदीपकाटीकायां
उत्तरकाण्ड समाप्तम् ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी
जनवरी सन् १८९२ ई० ॥

इस किताब का कापीराइट महफ़ूज़ है बहक इस छापेखाने के ॥

National Library,
Calcutta-27.